Ñfr % fo'knbUnz/otegke.Myfoèkku

Ñfrdkj % i-iw- lkfgR;jRukdj]{kekewfrZ
vkpk;Z Jh 108 fo'knlkxjthegkjkt

laLdj.k % izFke&2013* izfr;k¡%1000

ladyu % eqfu Jh 108 fo'kkylkxjthegkjkt

lg;ksxh % {kqYyd Jh 105 folkselkxjthegkjkt

laiknu % cz-T;ksfrnhnh¼9829076085½cz-vkLFkkrhnh]cz-liukrhnh

la;kstu % cz-lksuwrhnh]cz-fdj.krhnh]cz-vkjrhnhnh]cz-mekrhnh

lEidZ lw=k % 9829127533] 9953877155

izkfIrLFky % 1 tSu ljkoj lfefr] fueZydqekj xksèkk]
2142] fueZy fudqat] jsfM;ks ekdsZV
efugkjksa dk jkLrk] t;iqj
Qksu%0141&2319907¼?kj½eks-%9414812008

2 Jh jkts'kdqekj tSu Bsdsnkj
,&107] cqèk fogkj] vyoj] eks-%9414016566

3 fo'kn lkfgR; dsUnz
Jh finxEcj tSu eafnj dqvk¡ okyk tSuiqjh
jsokM+h ¼gfj;k.kk½] 9812502062] 09416888879

4 fo'kn lkfgR; dsUnz] gjh'k tSu
t;vfjgUr VªsMlZ] 6561 usg: xyh
fu;j ykyc Ùkh pkSd] xka/khuxj] fnYyh
eks- 09818115971] 09136248971

eY; % 150@&#-ek=k

eqnzd%ikjlizdk'ku] fnYyh
Qksuua-%09811374961] 09818394651] 07503788649
E-mail : pkjainparas@gmail.com, parasparkashan@yahoo.com

अपनी बात

–आचार्य विशदसागर

धम्मेण परिणदप्पा अप्पाजदि शुद्ध सम्पजोग जुदो
पावदि णिव्वाण सुहे सुहावे जुत्तो च सग्ग सुहं।

दोहा– जिन पूजा गुरु वन्दना, भक्ती का आधार।
करे भाव से जो विशद, पाएँ शिव उपहार॥

धर्म परिणत जीव शुद्धोपयोग से निर्वाण पद प्राप्त करता है। तथा शुभोपयोग से स्वर्गादिक के सुख प्राप्त करता है।

शुद्धोपयोग में अधिक समय तक स्थिर रहना बहुत मुश्किल काम है। किन्तु शुभोपयोग में अधिक समय तक स्थिर रहा जा सकता है। किन्तू उसके लिए कोई आलम्बन की आवश्यकता होती है। अत: स्वपर उपकार के लिए साधुजन आगम में अवगाहन करते हैं। और उसका विस्तार करने के लिए नित निरन्तर प्रयत्न करते हैं। इसके पूर्व मेरी कुछ लघु विधानों की कृतियाँ मुनि मार्दवसागर जी ने देखीं तो मेरी शैली से बहुत प्रभावित हुये और हमारे पास ब्र. आरती दीदी से आग्रह भेजा कि आचार्य श्री से कहें कि इन्द्रध्वज विधान इसी शैली में लिखें।

यही आधार मानकर इन्द्रध्वज विधान को लिखने का साहस किया। इस हेतू विषय साम्रगी हेतू पूर्वाचार्यों कृत ग्रंथ और पूर्व रचयिताओं के द्वारा रचित कृतियों का सहारा लेकर इस विधान की रचना मेरे द्वारा की गई है। इस विधान में देवागम विधि के अन्तर्गत इन्द्रों का आह्वान किया गया है। तथा आठ दिशाओं एवं विदिशाओं में आठ महाध्वजाएं एवं 458 इन्द्रध्वजाएँ चढ़ाईं जाती हैं। इसलिए इसका नाम इन्द्रध्वज है। सर्वप्रथम सिद्ध पूजा करके विधान की समुच्चय पूजा करते हुए विधान का प्रारम्भ किया जाता है। जैनागम में 10 प्रकार के चिन्हों वाली ध्वजाओं का कथन किया है।

ध्वजाओं का वर्णन

विधान के रचयिता ग्रन्थकार ने इन मन्दिरों के ऊपर ध्वजा चढ़ाने के लिए उन ध्वजाओं में दस प्रकार के चिन्ह बतलाए हैं। यथा–

''मालामृगेन्द्रकमलांबरवैनतेय मातंगगोपतिरथांगमयूरहंसाः''

अर्थ–माला, सिंह, कमल, वस्त्र, गरुड़, हाथी, वृषभ, चकवा-चकवी, मयूर और हंस ये दस प्रकार के चिन्ह उन ध्वजाओं में बनवाने चाहिए।

प्रमुख विधानकर्त्ता का आद्य कर्तव्य

सबसे पहले इस महान् विधान के लिए आचार्य प्रवर गुरुदेव के पास जाकर उन्हें नमस्कार करके उनकी पूजा भक्ति विनय करके उनके चरणों के सन्मुख श्रीफल चढ़ाकर यह प्रार्थना करें कि–हे भगवन्! मैं इन्द्रध्वज विधान करना चाहता हूँ सो आपकी कृपा प्रसाद से मेरी इच्छा पूर्ण होवे। गुरु की आज्ञा व आशीर्वाद प्राप्त करके पुनः गुरु से निवेदन करें कि भगवन्! आप चतुर्विध संघ सहित इस उत्सव की निर्विघ्न समाप्ति हेतु वहाँ पर पदार्पण कीजिए। गुरु की स्वीकृति मिलने पर यदि गुरु अन्यत्र हैं तो उन्हें अपने यहाँ ठाट-बाट से विहार कराके लाना चाहिए और अपने यहाँ उचित वसतिका में गुरुओं को ठहरा कर उनकी समुचित व्यवस्था करना चाहिए। पुनः विधानाचार्य को आचार्य निमंत्रण की विधि से सम्मान पूर्वक बुलाकर उनकी आज्ञा के अनुसार सर्वकार्य करने चाहिए।

अनन्तर शुभ दिन, शुभ मुहूर्त में विशाल मंडप बनवाकर उसके प्रांगण में एक चबूतरे पर ऊँचा विशाल ध्वज आरोहण करें पुनः उसके तृतीय या पाँचवें दिन विधिवत् अंकुरारोपण करें।

विधानकर्ता कैसे हों?

विधानकर्ता इन्द्र सौ होवें, जो अपनी इंद्राणियों सहित होवें। और यदि सौ इन्द्र नहीं हो सकें तो कम से कम बारह इन्द्र होवें। यदि बारह भी न होवें तो जितने भी हों अपनी श्रद्धा भक्ति के अनुसार अनुष्ठान करें। ये विधान करने वाले श्रावकगण और श्राविकाएँ सच्चरित्र हों, दुर्व्यसनी न हों, हीनांगी या अधिकांगी न हों, कुष्ट आदि रोगों से ग्रसित न हों, जातिच्युत अथवा हीन न हों। ऐसे महाविधानों में योग्य पुरुष ही भाग लेने के अधिकारी होते हैं।

विधानाचार्य का कर्तव्य

विधानाचार्य विद्वान् इस 'इन्द्रध्वज विधान' के प्रारम्भ में श्रेष्ठ मुहूर्त में सबसे प्रथम मांगलिक ध्वजारोहण करावें। पुनः विधान प्रारम्भ के तृतीय या पाँचवें दिन अंकुरारोपण करावें। मंडल की शुद्धि के लिए व प्रभावना हेतु जलयात्रा भी करा सकते हैं। अनन्तर मंडप बनाकर उस पर मन्दिर व ध्वजाओं का आरोपण करें।

मंडल मांड़ने की विधि

मंडल के पूर्व दिशा या उत्तर दिशा में मुख करके सुन्दर वेदी बनवानी चाहिए और उस वेदी के सामने बहुत बड़ा सा चबूतरा। यह चबूतरा मध्यम रूप में 40×40 फुट का होना चाहिये। यह चबूतरा पक्का नहीं हो तो लकड़ी के तख्तों को मिला कर भी मंडप बनाया जा सकता है। इस चबूतरे पर सफेद वस्त्र की चांदनी बिछावे। उस पर तेरह द्वीप के लिए क्रम से गोल रेखाएँ खींचे। उसके मध्य में सबसे प्रथम 5×5 का गोल घेरा जम्बूद्वीप के लिए खींचे। इसके मध्य सुमेरू का चित्र बनाकर उस पर सोलह चैत्यालय रखें या मन्दिर में धातु के 2, 3 फूट के मेरू यदि हों तो उन्हें ही उस स्थान पर एक चौकी पर विराजमान कर देवें। मेरू की विदिशा में चार गजदन्त बनावें तथा मेरू के उत्तर में ईशान कोण में जम्बू वृक्ष और दक्षिण में नैऋत्य कोण में शाल्मलि वृक्ष बनावें। पुनः भरत आदि सात क्षेत्र, हिमवान् आदि छह पर्वत बनावें। उसमें मध्य के विदेह में मेरू के होने से मेरू के पूर्व और पश्चिम भाग में विदेह के दो भाग हो जाने से पूर्व विदेह और पश्चिम विदेह हो गये हैं। इनमें क्रम से नक्शे के अनुसार सोलह वक्षार बनावें। विदेह के बत्तीस देशों में बत्तीस विजयार्ध बनावें तथा भरत व ऐरावत क्षेत्र के मध्य में भी एक-एक विजयार्ध बनावें ऐसे चौंतीस विजयार्ध बनावें। पुनः हिमवान्, महाहिमवान्, निषध, नील, रुक्मि और शिखरी इन छह पर्वत ों पर पूर्व दिशा की तरफ एक-एक चैत्यालय बनावें। इस प्रकार से मेरू के 16+गजदंत के 4+ जम्बू शाल्मलि वृक्ष के 2+ वक्षार के 16+ विजयार्ध के 34 और कुलाचल के 6=78 चैत्यालयों को स्थापित

करें। क्षेत्रों में गंगा सिंधु आदि नदियाँ हैं व पर्वत ों पर जितने-जितने कूट हैं, उतने-उतने कूटों को भी बनावें।

पुनः 1/2 फुट का गोल घेरा इस जम्बूद्वीप को वेष्टित करके बनावें जिसमें लवण समुद्र की रचना करें। उसके बाद उसे वेष्टित कर 6 फुट का घेरा खींच देवें। इसका नाम धातकी खंड है। इसके दक्षिण और उत्तर में 1-1 इष्वाकार पर्वत बना देवें। इन दो पर्वत ों से धातकी खंड के पूर्व और पश्चिम ऐसे दो भेद हो गये हैं अब पूर्व धातकी खंड के मध्य में विजय मेरू और पश्चिम धातकी खंड के मध्य में अचल मेरू की रचना करके उनकी विदिशा में गजदंत आदि सारी रचनाएँ जम्बूद्वीप के समान कर देवें। इनमें भरत आदि क्षेत्र व हिमवान आदि पर्वत आरे के समान हो जावेंगे। पुनः 1/2 फुट का कालोदधि समुद्र इस द्वीप को वेष्टित करते हुए बनाना चाहिए।

अनन्तर इस समुद्र को वेष्टित करते हुए 7 फुट का घेरा खीचें, जो कि पुष्करार्ध द्वीप है। इसमें भी दक्षिण-उत्तर में इष्वाकार बना देवें जिससे इस द्वीप में भी पूर्व पुष्करार्ध और पश्चिम पुष्करार्ध ऐसे दो भेद हो गये हैं। पूर्व पुष्करार्ध के मध्य में मन्दिर मेरू और पश्चिम पुष्करार्ध के मध्य में विद्युन्माली मेरू बना देवें। अनन्तर सारी रचना धातकी द्वीपवत् बना देवें। इस अर्ध पुष्करद्वीप को घेरे हुए मानुषोत्तर पर्वत जो कि 2-3 अंगुल चौड़ा हो ऐसे बना देवें उस पर चारों दिशाओं में चार चैत्यालय की रचना करें।

आगे एक-एक अंगुल के द्वीप समुद्र एक-दूसरे को वेष्टित करते हुये सातवें समुद्र तक बना देवें।

पुनः आठवाँ नन्दीश्वर द्वीप बनाने के लिए 2 फूट का घेरा खींच देवें। इसमें पूर्व आदि चारों दिशाओं के मध्य में अंजनगिरी पर्वत बनावें। उस पर्वत के चारों तरफ चार बावड़ी चौकोन बनावें। इन बावड़ियों के मध्य दधिमुख पर्वत बनावें तथा बावड़ियों के दो-दो कोनों पर रतिकर ये 13 पर्वत के 13 चैत्यालय हो जाते हैं जोकि चारों दिशा सम्बन्धी 13×4=52 हो जाते हैं।

इसको भी अंगुल प्रमाण के समुद्र व द्वीपों से वेष्टित करके ग्यारहवाँ कुण्डलवर द्वीप 1/2 फुट का बनावें जिसके मध्य कुण्डल पर्वत तीन अंगुल का बना देवें। इसके बाद अंगुलमात्र के समुद्र द्वीपों से वेष्टित कर पुनः 1/2 फुट का रुचकवर द्वीप बनाकर उसमें भी तीन अंगुल का रुचकवर पर्वत देवें। इन कुण्डल पर्वत व रुचक पर्वत के चारों दिशाओं में भी चार-चार मन्दिर बना देवें।

इस तरह जम्बूद्वीप के 78+धातकी खण्ड के दो मेरू सम्बन्धी 78=78 व इष्वाकार के 2+ ऐसे ही पुष्करार्ध के 148+मानुषोत्तर के 4+नन्दीश्वर के 52+कुण्डलगिरी के 4+और रुचकगिरी के 4=कुल मिलाकर 458 चैत्यालय हो जाते हैं।

इस तरह मण्डल को रंग-बिरंगे चावलों से या नाना रंग की रंगोली से बनाकर उस पर सुन्दर-सुन्दर मन्दिर रखें। ये मन्दिर लकड़ी के, काँच के, मिट्टी के अथवा पीतल आदि किसी धातु के बनवा लेने चाहिए।

इस मण्डल को चन्दोवा, छत्र, चामर, घंटा, किंकणी, आठ मंगल द्रव्य, माला आदि से सुसज्जित करके रंग-बिरंगी लाइट से जगमगा देना चाहिए। चारों तरफ में तोरण द्वार, मंगल कलश, धूप घट आदि से खूब सुन्दर बनाना चाहिये। पुनः सुन्दर वस्त्रों की ध्वजायें बनावें और उसमें निम्नलिखित चिन्ह बनावें।

ध्वजाओं के चिन्ह

मेरू के 80 मन्दिरों की 80 ध्वजाओं में माला का चिन्ह
गजदंत के 20 मन्दिरों की 20 ध्वजाओं में सिंह का चिन्ह
कुलाचल के 30 मन्दिरों की 30 ध्वजाओं में कमल का चिन्ह
वृक्ष के 10 मन्दिरों की 10 ध्वजाओं में वस्त्र या तोता का चिन्ह
वक्षार के 80 मन्दिरों की 80 ध्वजाओं में गरुड़ का चिन्ह
इष्वाकार के 4 मन्दिरों की 4 ध्वजाओं में हाथी का चिन्ह
मानुषोत्तर के 4 मन्दिरों की 4 ध्वजाओं में हाथी का चिन्ह
विजयार्ध के 170 मन्दिरों की 170 ध्वजाओं में बैल का चिन्ह

नन्दीश्वर के 52 मन्दिरों की 52 ध्वजाओं में चकवा-चकवी का चिन्ह
कुण्डलगिरी के 4 मन्दिरों की 4 ध्वजाओं में मयूर का चिन्ह
रुचकगिरी के 4 मन्दिरों की 4 ध्वजाओं में हंस का चिन्ह

इनसे अतिरिक्त मंडल के चारों तरफ में चार दिशा और चार विदिशा संबंधी आठ दिशाओं में जो आठ महाध्वज स्थापना करना है उन आठ महाध्वजाओं में भी क्रम से–चक्र, हाथी, बैल, कमल, वस्त्र, सिंह, गरुड़ और माला इन चिन्हों को बनाना चाहिए।

इन ध्वजाओं को मंडल पर रखे हुए उन-उन मंदिरों में आरोपित कर देवें। एक मेरू के व एक गजदंत आदि में एक-एक मंदिर की ध्वजाओं को पास में रखना चाहिए। पुनः ध्वजारोपण की विधि के समय मंत्र पढ़कर उन ध्वजाओं को वहाँ चढ़ा देना चाहिए तथा अन्य ऊपर रखी हुई ध्वजाओं पर पुष्पांजलि क्षेपण कर देना चाहिए।

'विधान प्रारम्भ दिवस की क्रिया

विधान प्रारम्भ के दिन सबसे प्रथम 'पूजामुखविधि' करावें, सकलीकरण इसी में आ जाता है। पुनः महाभिषेक व शांतिधारा करावें। इसके बाद मंडल की आराधना के लिये अर्हंत पूजा, सिद्धपूजा, महर्षिपूजा व स्वस्त्ययन विधि करावें। पुनः 'यज्ञदीक्षाविधि' कराकर 'भूमिशोधन' व 'मंडपप्रतिष्ठाविधि करावें। इसी 'यज्ञदीक्षाविधि' में 'इन्द्रप्रतिष्ठाविधि' आ जाती है।

उस समय विधानाचार्य सभी विधान करने वाले इन्द्र, इन्द्राणियों को पाँच अणुव्रत, तीन गुणव्रत व चार शिक्षाव्रत ऐसे बारह व्रत देवें। एक भुक्ति व ब्रह्मचर्य व्रत देवें। आजकल एक भुक्ति के साथ सायंकाल में फलाहार की छूट भी दे देते हैं। इससे अधिक छूट नहीं देनी चाहिए। तथा विधान पर्यंत एक भुक्ति व फलाहार में आटा, घी, जल आदि सब पदार्थ शुद्ध ही काम में लेने चाहिए। तथा चर्म व ऊन के वस्त्रों का त्याग करा देवें और उस ग्राम से कहीं बाहर जाने का भी नियंत्रण होना चाहिए। यह सब नियम जितने दिन तक विधान होता है उतने दिन तक का ही है।

पुनः विधानाचार्य 'नवदेवता पूजा' अथवा स्वरुचि अनुसार नित्य पूजन की पूजाएँ करावें। पुनः जय-जयकार की ध्वनि और गाजे-बाजे के साथ इन्द्रध्वज विधान' प्रारम्भ करें उसमें 'मंगलस्रोत' आदि कराके मंडल पर पुष्पांजलिं क्षेपण कराके 'देवागम विधि' करावें पुनः मंडल पर ध्वजाओं के आरोहण की विधि से ध्वजाएँ आरोपित करावें। उसके बाद सिद्धपूजा व समुच्चय पूजा करावें। प्रथम दिवस इतनी ही विधि में समय बहुत हो जायेगा अतः आरती करके 'पूजा अन्त्यविधि करावें। इसी में शांतिपाठ व विसर्जन पाठ आ जाता है। उसी दिन जाप्यानुष्ठान विधि से जाप्य-कर्ताओं से निम्नलिखित जाप्य करने का संकल्प करावें।

''मंत्र–ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा मध्यलोक संबंधि-चतुःशताष्टपंचाशत् श्री जिनचैत्यालयेभ्यो नमः।''

जाप्य का संकल्प सवालाख या इच्छानुसार जितना भी हो करा देना चाहिये। द्वितीय दिवस 'पूजामुखविधि' व अभिषेक विधि करावें। पुनः नवदेवता पूजा या नित्य पूजन की पूजाओं के बाद आगे की विधान की पूजायें करावें। ऐसे ही विधान पूर्ण होने तक प्रतिदिन पूजामुखविधि अभिषेक विधि व पूजा अन्त्य विधि करानी होती है।

अन्त में जाप्य के दशांश भाग प्रमाण आहुति करने के लिए 'हवन' विधि' करना चाहिए। उसमें त्रिकोण, गोल व चौकोण ऐसे तीन कुण्ड कटनीदार शास्त्रोक्त विधि से बनवाकर होम करावें। अन्त में आशीर्वाद श्लोक बोलकर सभी पूजन कर्ताओं के मस्तक पर पुष्प क्षेपण करे।

विधानाचार्य स्वयं भी विधान पूर्ण होने पर्यन्त एकभुक्ति, ब्रह्मचर्यव्रत, अणुव्रत आदि को धारणकर संयमपूर्वक रहें।

''इन्द्रध्वज व्रत कथा''

दोहा– करो भव्य जन इन्द्रध्वज, पावन परम विधान।
पूरी होगी कामना, रखना यह श्रद्धान।।

इस जम्बुद्वीप के भरत क्षेत्र में भूषण नाम के देश में भूमितिलक शहर में वज्रसेन नाम का राजा राज्य करता था। उसकी रानी का नाम भूषणा था। एक दिन नगर के उद्यान में चन्द्र व वरचन्द्र नामक दो चारण ऋद्धिधारी मुनिश्वर पधारे। ऐसे समाचार वनपाल से सुन राजा ने मुनिराज को परोक्ष नमस्कार किया और नगर वासियों के साथ उद्यान में गया। चारण ऋद्धिधारी मुनिश्वरों को नमस्कार करके वहाँ नजदीक में बैठ गया। कुछ समय धर्मोपदेश सुनकर राजा की पटरानी भूषणा हाथ जोड़कर नमस्कार करके मुनिराज को कहने लगी कि हे गुरुदेव मेरे संतान नहीं है इसका क्या कारण है। तब मुनिराज ने कहा कि हे बेटी। तुमने पूर्व भव में कनकमाला की पर्याय में व्रत को धारण कर पूर्ण पालन नहीं किया। बीच में ही व्रत को छोड़ देने से ही तुम को पुत्र उत्पन्न नहीं हुआ। अगर तुम्हें संतान चाहिए तो तुम इन्द्रध्वज व्रत को विधि पूर्वकपूर्ण करो, तब तुम को इन्द्र के समान प्रभावशाली पुत्र रत्न उत्पन्न होगा, ऐसा कहकर मुनिराज ने व्रत की विधि कह सुनाई जिसे सुनकर उसे बहुत आनन्द हुआ। भूषणा देवी ने गुरु को नमस्कार करके व्रत ग्रहण किया। सभी नगर में वापस आये, रानी अच्छी तरह से व्रत को पालन करने लगी। थोड़े ही दिनों में रानी को एक पुत्र उत्पन्न हुआ। राजा रानी बहुत काल पर्यन्त सुख का अनुभव करते रहे। क्रमशः स्वर्ग सुख की प्राप्ति करके मोक्ष सुख को प्राप्त किया।

इस व्रत में 458 उपवास या एकाशन करना चाहिए इसमें तिथि का कोई नियम नहीं है।

जाप्य–ॐ ह्रीं इन्द्रध्वज संज्ञाय नमः।

संकलन–मुनि विशालसागर

मंगलाचरण

(शम्भू छन्द)

सिद्धों के चरणों में वन्दन, जग में सिद्धि प्रदाता हैं।
चिदानन्द चैतन्य सुधारस, परम सिद्धि के दाता हैं।।
कर्म नाशकर सिद्ध अनन्तों, जग से मुक्ती पाए हैं।
नित्य निरंजन अक्षय अव्यय, गुण अनन्त प्रगटाए हैं।।1।।
जिनने कर्म घातिया नाशे, वे अर्हत् कहलाए हैं।
लोकालोक प्रकाशी केवल, ज्ञान विशद प्रगटाए हैं।।
तीन योग से उनके चरणों, सादर शीश झुकाते हैं।
प्राप्त करें उनके वह गुण, यही भावना भाते हैं।।2।।
वर्तमान की चौबीसी में, वृषभादिक चौबिस तीर्थेश।
केवलज्ञानी हुए लोक में, धारे आप दिगम्बर भेष।।
प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ जिन, धर्म प्रवर्तक हुए महान।
देवों ने पृथ्वी पर आकर, यहाँ मनाए पंच कल्याण।।3।।
महावीर अन्तिम तीर्थंकर, शासन नायक कहलाए।
दिव्य देशना उनकी भविजन, गणधर स्वामी से पाए।।
परम्परागत आचार्यों ने, जैनागम का किया कथन।
क्रमशः आचार्यों के द्वारा, श्रुत का किया गया लेखन।।4।।
जैनागम का पठन श्रवण कर, साधू चर्या पाल रहे।
मोक्ष मार्ग के राही बनकर, सम्यक रत्न सम्हाल रहे।।
इस प्रकार से देवशास्त्र गुरु, पावन पूज्य हमारे हैं।
धर्म मार्ग पर बढ़ने हेतू, अनुपम एक सहारे हैं।।5।।
भक्तिभाव से देव शास्त्र गुरु, को निज हृदय सजाया है।
प्रत्यक्षाप्रत्यक्ष सभी का, शुभाशीष जो पाया है।।
विघ्न विनाशन हेतु शुरू में, देव शास्त्र गुरु को ध्याते।
भाव सहित उनके चरणों में, नत होके महिमा गाते।।6।।
लेखन पूजन पठन श्रवण की, सारी बाधा नाश करो।
पावन जैन धर्म का जग में, अतिशय रूप प्रकाश करो।।
ऋद्धि सिद्धि सौभाग्य जहाँ में, जैन धर्म धारी पावें।
स्वास्थ्य लाभ ग्रह पीड़ा तजकर, अनुक्रम से शिवपुर जावें।7।।

इन्द्रध्वज विधान रचना

यह इन्द्रध्वज विधान पूजा, जीवों को मंगलकारी है।
जिसमें जिनेन्द्र की भक्ती शुभ, की जाती अतिशयकारी है॥

मुनि मार्दव सागर का आग्रह, दो बार पास मेरे आया।
इस इन्द्रध्वज विधान लेखन, का भाव हृदय में उमगाया॥

श्री देव शास्त्र गुरु का हमने, पाया जो श्रेष्ठ सहारा है।
वश स्वात्म सिद्धि शुभ भाव रहें, पावन यह लक्ष्य हमारा है॥

है कहाँ ज्ञान हमको इतना, जो महत कार्य हम कर पायें।
इस ग्रन्थ की रचना करने में, बृहस्पति भी शायद थक जाएँ॥

विश्वभूषण योगी ने पहले, संस्कृत विधान की रचना की।
हिन्दी में ज्ञानमती गणिनी, आर्यिका जी ने संरचना की॥

है ढाई द्वीप में चैत्यालय, शास्त्रों में जिनका कथन किया।
इस ग्रन्थ के लेखन में हमने, इन सबका भी आधार लिया॥

माहात्म्य

है महिमाशाली यह विधान, ऐसा लोगों ने माना है।
दुर्भिक्ष रोग दुर्भाग्य टलें, ऐसा इस जग ने जाना है॥

मन वांछित कार्य पूर्ण होते, जो भक्ती से पूजा करते।
सब रोग व्याधि पीड़ा अपनी, जिन अर्चा कर प्राणी हरते॥

गृह भूत पिशाच की पीड़ा भी, करके विधान नश जाती है।
सब ईति भीति संकट टलते, ऐसा जिनवाणी गाती है॥

ज्वर कुष्ट भगन्दर सिर पीड़ा, सारे क्लेश नश जाते हैं।
इष्टादि वियोग हो जाए यदि, संयोग शीघ्र वह पाते हैं॥

अनुपम श्रद्धा से जो प्राणी, इस इन्द्रध्वज का पाठ करें।
वह अपने जीवन की बाधा, नर अल्प काल में शीघ्र हरें॥

यह फल शुभ प्राणी पा करके, जीवन यह सफल बनाते हैं।
अन्तिम पाकर वे मोक्ष सुपद, फिर सिद्ध शिला को जाते हैं॥

पूजक का कर्त्तव्य

करने विधान यजमान तथा, याजक सब जिन मंदिर जावें।
श्रीफल करके अर्पित चरणों, गुरुवर से भी आशिष पावें॥
सानिध्य प्राप्त हो सके श्रेष्ठ, सौभाग्य मान गुरु को लावें।
विद्वान को श्री फल देकर के, पूजा की विधि शुभ करवावें॥

सामग्री

दोहा– अष्ट द्रव्य की शुद्ध ले, सामग्री यजमान।
प्रासुक जल शुभ गंध ले, अक्षत पुष्प महान॥

चरु ताजे ले दीप अरु, धूप सरस फल सार।
धोती चादर वस्त्र हो, शुद्ध दिखें मनहार॥
मुकुट हार धारण करें, बाँधे बाजू बन्द।
मन वच तन से शुद्ध हो, पूजक हो निर्द्वन्द॥

मण्डल बनाने की विधि

पूरव या उत्तर दिश अभिमुख, शुभ चबूतरा हो चौकोर।
जहाँ कोई कोलाहल हो या, किसी प्रकार ना होवे शोर॥

जिस पर श्रेष्ठ चँदोवा बाँधे, सज्जित करें जिसे शुभकार।
छत्र चँवर लटकाएँ जिसमें, मंगल द्रव्य रखें मनहार॥

रंग बिरंगी लड़ियों से जो, श्रेष्ठ सजाएँ मंगलकार।
मंगल कलश धूप घट आदिक, और सजाएँ तोरण द्वार॥

भाँति-भाँति के रंग लेकर या, लेवें कई प्रकार के धान्य।
या चावल को रंग वा मण्डल, श्रेष्ठ बनाएँ जो जग मान्य॥

सर्व प्रथम अभिषेक विधि कर, मण्डप रचना करें प्रधान।
शुभ मुहुर्त्त में विधानाचार्य का, श्री फल देकर करें सम्मान॥

मध्य लोक में जिनगृह शाश्वत, तेरह द्वीपों तक गाये।
जम्बू द्वीप मध्य है जिनके, गोलाकार में बतलाए॥

लवण समुद्र घेरे है जिसको, उसको घेरे द्वीप कहा।
आगे इसी तरह रचना का, जिन शास्त्रों में कथन रहा॥

पंच मेरू में अस्सी जिनगृह, गजदन्तों में बीस रहे।
तरु शाखाओं में जिनगृह दश, वक्षार में अस्सी गेह कहे॥

एक सौ सत्तर विजयार्धों के, तीस कुलाचल में जानो।
इक्ष्वाकार के चार जिनालय, मानुषोत्तर पर भी मानो॥

नन्दीश्वर के बावन जिनगृह, कुण्डलगिर पर चार कहे।
रूचिकगिरी पर चार जिनालय, मध्य लोक में श्रेष्ठ रहे॥ऽ॥

चार सौ अट्ठावन सब जिनगृह, तेरह द्वीपों में गाये।
काल अनादी अकृत्रिम यह, जैनागम में बतलाये॥

इस प्रकार तेरह द्वीपों की, रचना मंगलकार करें।
शुभ मुहुर्त्त शुभ घड़ी देखकर, दोषों का परिहार करें॥

पूजा का प्रारम्भिक वर्णन

सकली करण आदि विधि करके, जिनवर का अभिषेक करें।
स्वस्ती इन्द्र प्रतिष्ठा करके, जिन यज्ञ दीक्षा ग्रहण करें॥

घट यात्रा मण्डप शुद्धीकर, देवागम कर स्थापन।
ध्वज आरोहण करके पावन, करें प्रभु के पद अर्चन॥

क्षेत्रपाल आदी का विधि से, यथा योग्य करके सम्मान।
गीत वाद्य नृत्यादिक करके, प्रतिदिन मनहर करें विधान॥

प्रतिदिन जाप्य आदि विधि करके, कुण्ड बनाकर हवन करें।
भाव सहित पुण्याह वाचन कर, नियम आदि भी ग्रहण करें॥

महोत्सव रथ यात्रादिक, करके धर्म को फैलावें।
जिनवाणी जिन गुरु की पूजा, करके मन में हर्षावें॥

दान चतुर्विध साधु संघ को, और उपकरण दान करें।
आर्यिका ऐलक क्षुल्लक त्यागी, को भी वस्त्र प्रदान करें॥

यथायोग्य साधर्मी जन का, भाव सहित सम्मान करें।
दीन दुखी जीवों को भोजन, आदिक दे उत्थान करें॥

शांति विसर्जन करें पाठ का, हो प्रसन्न घर को जावें।
कर्त्तव्यों का पालन करके, जीवन में समता पावें॥

पूजा दानादिक में जितना, धन का खर्च किया जाता।
कुएँ के जल सम अल्प काल में, धन की वृद्धी वो पाता॥

इस भव में सौभाग्य सुयश पा, परभव पुण्य बढ़ाते हैं।
पुण्य के फल से उत्तम पद पा, अन्त में शिव पद पाते हैं।

दोहा– इस प्रकार उत्सव सहित, करें इन्द्र ध्वज पाठ।
इन्द्रों का वैभव मिले, होंगे ऊँचे ठाठ॥

॥इत्याशीर्वाद॥

इन्द्र ध्वज समुच्चय पूजन

(स्थापना)

रत्नमयी अकृत्रिम अनुपम, स्वयं सिद्ध जिनगृह अभिराम।
वन्दनीय हैं तीन लोक में, चार शतक अट्ठावन धाम॥
सुरनर किन्नर विद्याधर सब, पूजन करते चरणों आन।
जिनबिम्बों का हृदय कमल में, करते भाव सहित आह्वान॥

दोहा– पुष्पित पुष्पों से यहाँ, करते जिन गुणगान।
मेरे हृदय विराजिए, हे मेरे! भगवान॥

ॐ ह्रीं मध्यलोकसंबंधिचतु:शताष्टपंचाशत्शाश्वत्जिनालयस्थ जिनबिंब-समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। ॐ ह्रीं...अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनम्। ॐ ह्रीं...अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शम्भू छंद)

झर-झर नीर बरसता नभ से, जग की प्यास बुझाता है।
चेतन की जो प्यास बुझाए, वह अर्हत् पद पाता है॥

मध्य लोक में शाश्वत् जिनगृह, पूज रहे हैं हम शुभकार।
स्वयं बोध जागे मम उर में, जीवन हो यह मंगलकार।।1।।

ॐ ह्रीं मध्यलोकसंबंधिचतु:शताष्टपंचाशत्शाश्वतजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

दाह मिटाने को शरीर की, चन्दन बहुत लगाये हैं।
भव संताप मिटे अब मेरा, नाथ शरण में आए हैं।।
मध्य लोक में शाश्वत् जिनगृह, पूज रहें हैं हम शुभकार।
स्वयं बोध जागे मम उर में, जीवन हो यह मंगलकार।।2।।

ॐ ह्रीं मध्यलोक सम्बन्धिचतु:शताष्टपंचाशत्शाश्वतजिनालयस्थ जिन-बिंबेभ्यो संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्व. स्वाहा।

चर्म चक्षु से जो भी दिखता, वह तो क्षय के योग्य रहा।
ज्ञान चक्षु में जो भी आता, वह अक्षय पद सिद्ध कहा।।
मध्य लोक में शाश्वत् जिनगृह, पूज रहे हैं हम शुभकार।
स्वयं बोध जागे मम उर में, जीवन हो यह मंगलकार।।3।।

ॐ ह्रीं मध्यलोकसम्बन्धिचतु:शताष्टपंचाशत्शाश्वतजिनालयस्थ जिनबिंबेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्व. स्वाहा।

पुष्प सुगन्धित मुरझा जाते, गंध भी ना रह पाती है।
आत्म तत्त्व की याद हमेशा, हे जिन! सतत् सताती है।।
मध्य लोक में शाश्वत् जिनगृह, पूज रहे हैं हम शुभकार।
स्वयं बोध जागे मम उर में, जीवन हो यह मंगलकार।।4।।

ॐ ह्रीं मध्यलोकसम्बन्धिचतु:शताष्टपंचाशत्शाश्वतजिनालयस्थ जिन-बिंबेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

पर द्रव्यों से भूख मिटी ना, क्षुधा रोग घेरा डाले।
निज अनुभव के चरू चढ़ाते, मुक्ती जो देने वाले।।
मध्य लोक में शाश्वत् जिनगृह, पूज रहे हैं हम शुभकार।
स्वयं बोध जागे मम उर में, जीवन हो यह मंगलकार।।5।।

ॐ ह्रीं मध्यलोकसम्बन्धिचतु:शताष्टपंचाशत्शाश्वतजिनालयस्थ जिन-बिंबेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

मोह महातम नाश हेतु यह, दीपक श्रेष्ठ जलाए हैं।
अन्तर घट में हो प्रकाश हम, विशद भावना भाए हैं।।
मध्य लोक में शाश्वत् जिनगृह, पूज रहे हैं हम शुभकार।
स्वयं बोध जागे मम उर में, जीवन हो यह मंगलकार।।6।।

ॐ ह्रीं मध्यलोकसम्बन्धिचतु:शताष्टपंचाशत्शाश्वतजिनालयस्थजिन-बिंबेभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

अष्टकर्म के नाश हेतु हम, चिन्मय धूप जलाते हैं।
नित्य निरन्तर पद पाने को, तव पद में सिरनाते हैं।।
मध्य लोक में शाश्वत् जिनगृह, पूज रहे हैं हम शुभकार।
स्वयं बोध जागे मम उर में, जीवन हो यह मंगलकार।।7।।

ॐ ह्रीं मध्यलोकसम्बन्धिचतु:शताष्टपंचाशत्शाश्वतजिनालयस्थजिन-बिंबेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

दुष्कर्मों के फल पाके हम, चतुर्गती में भरमाए।
मोक्ष महाफल पाने को अब, श्री जिनेन्द्र पद में आए।।
मध्य लोक में शाश्वत् जिनगृह, पूज रहे हैं हम शुभकार।
स्वयं बोध जागे मम उर में, जीवन हो यह मंगलकार।।8।।

ॐ ह्रीं मध्यलोकसम्बन्धिचतु:शताष्टपंचाशत्शाश्वतजिनालयस्थजिन-बिंबेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्व. स्वाहा।

नाथ आपका दर्शन पाकर, निज दर्शन ना पाये हैं।
सिद्ध शिला पर आसन पाने, अर्घ्य बनाकर लाए हैं।
मध्य लोक में शाश्वत् जिनगृह, पूज रहे हैं हम शुभकार।
स्वयं बोध जागे मम उर में, जीवन हो यह मंगलकार।।9।।

ॐ ह्रीं मध्यलोकसम्बन्धिचतु:शताष्टपंचाशत्शाश्वतजिनालयस्थजिन-बिंबेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा– **तीर्थंकर पद प्राप्त हो, सोलह कारण भाय।**
शांतीधारा दे रहे, भाव सहित हर्षाय।।
।।शान्तये शान्तीधारा।।

श्री जिनेन्द्र की अर्चना, तीर्थंकर पद देय।
पुष्पांजलि करते यहाँ, पाने सुपद अजेय।।
।।दिव्य पुष्पांजलि क्षिपेत।।

जयमाला

दोहा– **चैत्यालय हम पूजते, मध्य लोक के खास।**
जयमाला गाते यहाँ, बने चरण के दास॥

(चौपाई छन्द)

जय-जय जगत पूज्य जिन स्वामी, तीन लोक के अन्तर्यामी।
महिमा तुमरी जग से न्यारी, सारे जग में मंगलकारी॥
वीतराग पद तुमने पाया, निज चेतन को निज में ध्याया।
प्रभू आप रत्नत्रयधारी, अनुपम अचल बने अविकारी॥
कामधेनु चिंतामणि गाए, कल्पवृक्ष सम प्रभु कहलाए।
पार्श्वमणि हो हे जिन! स्वामी, मुक्ती पथ के हे अनुगामी॥
भक्ती से मन में हर्षाए, पूजा करने को हम आए।
श्रेष्ठ भावनाएँ शुभकारी, जीवन कर दें मंगलकारी॥
अशुभ दूर हो जाए हमारा, शुभ हो जाए जीवन सारा।
शुद्ध ध्यान को फिर हम पाएँ, अपने सारे कर्म नशाएँ॥
यही भावना रही हमारी, जीवन हो यह मंगलकारी।
पंच मेरू के जिन हम ध्याएँ, पद में सादर शीश झुकाएँ॥
गिरी वक्षार के जिन गुण गाएँ, गिरी विजयार्द्ध की महिमा गाएँ।
गजदंतो के जिन मनहारी, और कुलाचल के शुभकारी॥
वृक्षों पर जिनमंदिर सोहें, इष्वाकार के भी मन मोहें।
मानुषोत्तर के मंदिर भाई, नन्दीश्वर के हैं सुखदायी॥
कुण्डलगिरी पर जिनगृह जानो, रुचक गिरी पर भी पहिचानो।
रत्नमयी जिन मंदिर भाई, बने अकृत्रिम हैं सुखदायी॥
उनमें शुभ जिनबिम्ब निराले, शिव पथ को दर्शाने वाले।
जिन अरहन्त पूज्य शुभकारी, संत विरागी मंगलकारी॥
प्रभु के दर्शन करने वाले, होते हैं वह लोग निराले॥
ऋद्धीधारी ऋषिवर जाते, विद्याधर भी दर्शन पाते॥

अपने मन में हर्ष जगाते, पूजा भक्ती कर गुण गाते।
जिनबिम्बों के दर्शन पाते, ऋद्धि सिद्धि सौभाग्य जगाते॥
कर्म निर्जरा करते भाई, जीवन होता मंगलदायी।
हम परोक्ष ही दर्शन पाते, पद में सादर शीश झुकाते॥

(छन्द घत्ता)

जय जय मनहारी, मंगलकारी, जिन चैत्यालय शुभकारी।
जय महिमा धारी, शुभ अविकारी, जिन प्रतिमाएँ शिवकारी॥

ॐ ह्रीं मध्यलोक सम्बन्धिचतु:शताष्टपञ्चशत् शाश्वतजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यो जयमाला अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **जीवन मंगलमय बने, मंगलमय परिणाम।**
नाथ! आपके चरण में, बारम्बार प्रणाम॥

इत्याशीर्वाद:

सुदर्शन मेरू जिनालय पूजा–1

स्थापना (गीता छन्द)

मेरू सुदर्शन के जो दर्शन, भक्ति से करते रहे।
भण्डार वह अपना स्वयं ही, पुण्य से भरते रहे॥
आह्वान जो करते हृदय में, जिन प्रभु का भाव से।
मुक्ती के वह राही बनें सब, निज गुणों के चाव से॥

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसम्बन्धिषोडशजिनालयस्थजिनबिम्बसमूह! अत्र अव तर अवतर संवौषट् आह्वाननं। ॐ ह्रीं श्री...अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनम्। ॐ ह्रीं श्री...अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम्।

(शम्भू छंद)

जल मल को धोने वाला है, मन शुद्धी करने आये हैं।
भक्ती के भाव भरे मन में, उसका प्रतीक जल लाए हैं॥
हम मेरू सुदर्शन के जिन की, अब अर्चा करने आए हैं।
यह आठ द्रव्य का अर्घ्य चढ़ा, सौभाग्य जगाने आए हैं॥1॥

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसम्बन्धिषोडशजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यो जलं निर्व. स्वाहा।

मम निर्मल मन के ऊपर कई, आशाएँ घेरा डाले हैं।
अज्ञानी होकर के यह मन, फिर भी इच्छाएँ पाले हैं।।
हम मेरू सुदर्शन के जिन की, अब अर्चा करने आए हैं।
यह आठ द्रव्य का अर्घ्य चढ़ा, सौभाग्य जगाने आए हैं।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसम्बन्धिषोडशजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यो चंदनं निर्व. स्वाहा।

है अक्षतपद उज्ज्वल अखण्ड, उस पद को हम बिसराए हैं।
अब नित्य निरंजन पद पाने, यह अक्षतअक्षय लाए हैं।।
हम मेरू सुदर्शन के जिन की, अब अर्चा करने आए हैं।
यह आठ द्रव्य का अर्घ्य चढ़ा, सौभाग्य जगाने आए हैं।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसम्बन्धिषोडशजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यो अक्षतं निर्व. स्वाहा।

आतम में खुशबू है अनन्त, यह जान नहीं हम पाए हैं।
अब शाश्वत् खुशबू पाने को, यह पुष्प सुवासित लाए हैं।।
हम मेरू सुदर्शन के जिन की, अब अर्चा करने आए हैं।
यह आठ द्रव्य का अर्घ्य चढ़ा, सौभाग्य जगाने आए हैं।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसम्बन्धिषोडशजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यो पुष्पं निर्व. स्वाहा।

पापी यह पेट सताता है, संयम से दूर हटाए है।
इच्छाओं को तजने वाले, निज चेतन रस को पाए हैं।।
हम मेरू सुदर्शन के जिन की, अब अर्चा करने आए हैं।
यह आठ द्रव्य का अर्घ्य चढ़ा, सौभाग्य जगाने आए हैं।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसम्बन्धिषोडशजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

हम चारों गतियों में भटके, इस मोह से बहुत सताए हैं।
अब ज्ञान दीप की लौ पाने, यह दीप जलाकर लाए हैं।।
हम मेरू सुदर्शन के जिन की, अब अर्चा करने आए हैं।
यह आठ द्रव्य का अर्घ्य चढ़ा, सौभाग्य जगाने आए हैं।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसम्बन्धिषोडशजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यो दीपं निर्व. स्वाहा।

लाचार किया है कर्मों ने, भव सिन्धु में गोते खाए हैं।
अब नाश हेतु उन कर्मों के, यह धूप जलाने लाए हैं।।
हम मेरू सुदर्शन के जिन की, अब अर्चा करने आए हैं।
यह आठ द्रव्य का अर्घ्य चढ़ा, सौभाग्य जगाने आए हैं।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसम्बन्धिषोडशजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यो धूपं निर्व. स्वाहा।

अपने जीवन के हर क्षण को, हम व्यर्थ बिताते जाते हैं।
अब निज चेतन की निधि पाने, यह श्री फल चरण चढ़ाते हैं।।
हम मेरू सुदर्शन के जिन की, अब अर्चा करने आए हैं।
यह आठ द्रव्य का अर्घ्य चढ़ा, सौभाग्य जगाने आए हैं।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसम्बन्धिषोडशजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः फलं निर्व. स्वाहा।

आलस जीवन में भरा हुआ, सद कार्य नहीं कर पाते हैं।
अब रत्नत्रय का फल पाने, यह अनुपम अर्घ्य चढ़ाते हैं।।
हम मेरू सुदर्शन के जिन की, अब अर्चा करने आए हैं।
यह आठ द्रव्य का अर्घ्य चढ़ा, सौभाग्य जगाने आए हैं।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसम्बन्धिषोडशजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा– **कर्मजाल को काट कर, पाया पद निर्वाण।**
शांतीधारा दे रहे, करते हम गुणगान।।

।।शान्तये शान्तिधारा।।

सुख अनन्त निज में भरा, खोजो मत संसार।
जिनपूजा करके विशद, मिले मोक्ष का सार।।

।।पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्।।

अथ प्रत्येकार्घ्य

दोहा– **मेरू सुदर्शन पर बने, जिन मंदिर शुभकार।**
पुष्पांजलि कर पूजते, मिले मोक्ष का द्वार।।

।।मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्।।

(शम्भू छन्द)

मेरू सुदर्शन पृथ्वी तल पर, भद्रशाल बन रहा महान।
पूर्वदिशा के जिन चैत्यालय, में जिन बिम्बों का गुणगान।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, पूज रहे हैं बारम्बार।
रोग शोक भय संकट हारी, जिन अर्चा है अपरम्पार।।1।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप सुदर्शनमेरूसम्बन्धित भद्रशाल वन पूर्वदिक् जिन चैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मेरू सुदर्शन भद्रशाल वन, में जिन मंदिर का स्थान।
दक्षिण दिश में सुर नर किन्नर, विद्याधर करते गुणगान॥
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, पूज रहे हैं बारम्बार।
रोग शोक भय संकट हारी, जिन अर्चा है अपरम्पार॥2॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप सुदर्शनमेरूसम्बन्धित भद्रशाल वन दक्षिणदिक् जिन चैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मेरू सुदर्शन भद्रशाल वन, में जिन मंदिर रहे महान।
पश्चिमदिश में जिनबिम्बोयुत, अतिशय गाये सौख्य निधान॥
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, पूज रहे हैं बारम्बार।
रोक शोक भय संकट हारी, जिन अर्चा है अपरम्पार॥3॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप सुदर्शनमेरूसम्बन्धित भद्रशाल वन पश्चिमदिक् जिन चैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मेरू सुदर्शन भ्रशाल वन, उत्तर में जिन गृह शुभकार।
अक्षय निज निधि पाने हेतु, भविजन अर्चे बारम्बार॥
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, पूज रहे हैं बारम्बार।
रोग शोक भय संकट हारी, जिन अर्चा है अपरम्पार॥4॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप सुदर्शनमेरूसम्बन्धित भद्रशाल वन उत्तरदिक् जिन चैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौबोला छंद)

मेरू सुदर्शन नन्दन वन में, पूर्व दिशा शुभकारी है।
जिनगृह में जिनबिम्ब मनोहर, अतिशय मंगलकारी है॥
जिन प्रतिमाओं की पूजा से रोग शोक, दुख टलते हैं।
विघ्न और बाधाएँ नशतीं, सर्व मनोरथ फलते हैं॥5॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप सुदर्शनमेरूसम्बन्धित नन्दनवन पूर्वदिक् जिन चैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रथम मेरू के नन्दन वन में, दक्षिण के जिन मंदिर जान।
रत्नत्रय निधि पाने हेतू, सुर नर पूजे जिनपद आन॥

जिन प्रतिमाओं की पूजा से, रोग शोक दुख टलते हैं।
विघ्न और बाधाएँ नशतीं, सर्व मनोरथ फलते हैं॥6॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप सुदर्शनमेरूसम्बन्धित नन्दनवन दक्षिणदिक् जिन चैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रथम सुराचल नन्दन वन में, पश्चिम दिशा रही शुभकार।
जिनगृह में जिनबिम्ब शोभते, जिसकी महिमा अपरम्पार॥
जिन प्रतिमाओं की पूजा से, रोग शोक दुख टलते हैं।
विघ्न और बाधाएँ नशतीं, सर्व मनोरथ फलते हैं॥7॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप सुदर्शनमेरूसम्बन्धित नन्दनवन पश्चिमदिक् जिन चैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मेरू गिरी के नन्दन वन में, उत्तर दिश का है स्थान।
जिन मन्दिर में पूजा करते, सुर नर विद्याधर सब आन॥
जिन प्रतिमाओं की पूजा से, रोग शोक दुख टलते हैं।
विघ्न और बाधाएँ नशतीं, सर्व मनोरथ फलते हैं॥8॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप सुदर्शनमेरूसम्बन्धित नन्दनवन उत्तरदिक् जिन चैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

मेरू सुदर्शन में रहा वन, सौमनस शुभकार है।
पूरव दिशा में जिन भवन की, वन्दना शत्बार है॥
जिनबिम्ब हैं अनुपम अलौकिक, महत् महिमा वान हैं।
सुर नर सुविद्याधर करें, जिनका विशद गुणगान हैं॥9॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप सुदर्शनमेरूसम्बन्धित सौमनसवन पूर्वदिक् जिन चैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दक्षिण दिशा में सौमनस वन, मेरू गिरी में गाए हैं।
जिनगृह सुशाश्वत् श्रेष्ठ अनुपम, लोक में बतलाए हैं॥
जिनबिम्ब हैं अनुपम अलौकिक, महत महिमा वान हैं।
सुर नर सुविद्याधर करें, जिनका विशद गुणगान हैं॥10॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप सुदर्शनमेरूसम्बन्धित सौमनसवन दक्षिणदिक् जिन चैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मेरू गिरी शुभ सौमनस वन, दिशा उत्तर जानिए।
त्रिभुवन तिलक जिनगृह वने शुभ, शाश्वत् अकृत्रिम मानिए॥
जिनबिम्ब हैं अनुपम अलौकिक, महत् महिमा वान हैं।
सुर नर सुविद्याधर करें, जिनका विशद गुणगान हैं॥11॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप सुदर्शनमेरूसम्बन्धित सौमनसवन पश्चिमदिक् जिन चैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पश्चिम दिशा में सौमनस वन, स्वर्ण मय जिनधाम हैं।
जिसमें बने उस देव गिरी का, मेरू सुदर्शन नाम है॥
जिनबिम्ब हैं अनुपम अलौकिक, महत् महिमा वान हैं।
सुर नर सुविद्याधर करें, जिनका विशद गुणगान हैं॥12॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप सुदर्शनमेरूसम्बन्धित सौमनसवन उत्तरदिक् जिन चैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

पाण्डुक वन मेरू में जानो, दिशा पूर्व उसकी पहिचानो।
रत्नमयी जिनगृह शुभ गाये, तीन लोक में पूज्य बताए॥13॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप सुदर्शनमेरूसम्बन्धित पाण्डुकवन पूर्वदिक् जिन चैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाण्डुक वन दक्षिण में पाये, अकृत्रिम शाश्वत् बतलाए।
रत्नमयी जिनगृह शुभ गाये, तीन लोक में पूज्य बताए॥14॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप सुदर्शनमेरूसम्बन्धित पाण्डुकवन दक्षिणदिक् जिन चैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाण्डुक वन पश्चिम शुभकारी, मेरू सुगिरी की है मनहारी।
रत्नमयी जिनगृह शुभगाये, तीन लोक में पूज्य बताए॥15॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप सुदर्शनमेरूसम्बन्धित पाण्डुकवन पश्चिमदिक् जिन चैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाण्डुक गिरी पाण्डुक वन भाई, उत्तर दिश अनुपम सुखदायी।
रत्नमयी जिनगृह शुभ गाये, तीन लोक में पूज्य बताए॥16॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप सुदर्शनमेरूसम्बन्धित पाण्डुकवन उत्तरदिक् जिन चैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **मेरू सुदर्शन में रहे, सोलह श्री जिन धाम।**
उनमें जो जिनबिम्ब हैं, तिन पद विशद प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसम्बन्धिषोडशजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।
॥शान्तयेशांतिधारा पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्॥

जाप्य–ॐ ह्रीं अर्हं शाश्वत् जिनालयस्थसर्वजिनबिंबेभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा– **मंगलमय मंगलमयी, हैं अरहंत महान।**
जयमाला गाते यहाँ, करके शुभ गुणगान॥

(चौपाई)

प्रथम सुदर्शन मेरू बताया, मध्य लोक के मध्य में गाया।
इन्द्र समान रहा शुभकारी, जिसकी महिमा जग से न्यारी॥

जिसमें उपवन चार बताए, वृक्ष लताओं युक्त कहाए।
पृथ्वी तल पर है मनहारी, भद्रशाल वन अतिशयकारी॥

पंचशतक ऊपर शुभ जानो, नन्दनवन अतिशय शुभ मानो।
साढ़े बासठ सहस ऊँचाई, सौमनस वन की है सुखदाई॥

ऊपर छत्तिस योजन गाया, पाण्डुक वन सबके मन भाया।
मेरू सुदर्शन की ऊँचाई, एक लाख योजन की भाई॥

श्रेष्ठ चूलिका ऊपर जानो, चालिस योजन की शुभ मानो।
इन्द्रराज स्वर्गों से आते, सब मिल अतिशय हर्ष मनाते॥

तीर्थंकर बालक को लाते, पाण्डुक शिला पे न्वहन कराते।
हैं जिनबिम्ब चतुर्दिक भाई, जग में फैली है प्रभुताई॥

वीतराग जिन हैं अविकारी, तीन लोक में मंगलकारी।
परम शांतिमय मुद्रा प्यारी, दिखती है अतिशय मनहारी॥

ज्यों साक्षात् बोलने वाली, छवि दिखती है अजब निराली।
देव स्वर्ग से चलकर आते, हर्षित होकर पूजा गाते॥

रक्षक देव महल में रहते, बावड़ियों में क्रीड़ा करते।
चारण ऋद्धीधर मुनि जाते, श्री जिनेन्द्र की भक्ती गाते॥

हम परोक्ष ही भाव बनाते, पूजा भक्ती कर हर्षाते।
ऐसी शक्ती हम भी पावें, प्रभु दर्शन करने को जावें॥

दोहा– **शक्ति हीन हम भक्त हैं, भक्ती अपरम्पार।**
भक्ती का फल यह मिले, पाएँ शिव का द्वार॥

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसम्बन्धिषोडशजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

।।शान्तयेशांतिधारा पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्।।

इन्द्रध्वज की पूजा करने, का अवसर शुभ आया है।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा करने, का सौभाग्य जगाया है॥
'विशद' सौख्य शांति पाते वह, जो प्रभु के गुण गाते हैं।
उच्चादर्श प्राप्त करते जो, शिखर पे ध्वजा चढ़ाते हैं॥

इत्याशीर्वादः

सुदर्शन मेरू सम्बन्धि चार गजदन्त जिनालय पूजा–2

(स्थापना)

जम्बूद्वीप के मध्य सुदर्शन, मेरू शोभित है शुभकार।
चारों विदिशाओं में अनुपम, अकृत्रिम गजदंत हैं चार॥
अकृत्रिम चैत्यालय अनुपम, रत्नमयी शुभ रहे महान।
हृदय कमल में आओ भगवन्, करते हैं हम प्रभु आह्वान॥

दोहा– **चरण वन्दना कर रहे, आन पधारो नाथ।**
कृपावन्त हो भक्त पर, चरण झुकाते माथ॥

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसम्बन्धिचतुर्विदिशायां चतुर्गजदंतस्थितसिद्ध कूटजिनालयस्थजिनबिंबसमूह! अत्र अवतर- अवतर संवौषट् आह्वाननं। ॐ ह्रीं....अत्र तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं....अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधीकरणम्।

(चाल छंद)

हमने शुभ भाव बनाए, जिनवर के चरणों आए।
अब जन्म जरा नश जाए, यह नीर चढ़ाने लाए॥
प्रभु भक्ती करने आए, भक्ती के भाव बनाए।
हम सुगुण आपके गाते, पद सादर शीश झुकाते॥1॥

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसम्बन्धिचतुर्गजदन्तस्थितसिद्धकूटजिनालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन से वन्दन करते, प्रभु के पद मस्तक धरते।
भवताप नाश हो जाए, अब मुक्ती भी मिल जाए॥
प्रभु भक्ती करने आए, भक्ती के भाव बनाए।
हम सुगुण आपके गाते, पद सादर शीश झुकाते॥2॥

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसम्बन्धिचतुर्गजदन्तस्थितसिद्धकूटजिनालयस्थ जिनबिंबेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

है अक्षय पद शुभकारी, पाते हैं जिन अविकारी।
हम अक्षय पद पा जाएँ, भव सिन्धु से मुक्ती पाएँ॥
प्रभु भक्ती करने आए, भक्ती के भाव बनाए।
हम सुगुण आपके गाते, पद सादर शीश झुकाते॥3॥

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसम्बन्धिचतुर्गजदन्तस्थितसिद्धकूटजिनालयस्थ जिनबिंबेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पों के थाल सजाए, हम काम नशाने आए।
न हमको भोग सताएँ, भोगों से मुक्ती पाएँ॥
प्रभु भक्ती करने आए, भक्ती के भाव बनाए।
हम सुगुण आपके गाते, पद सादर शीश झुकाते॥4॥

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसम्बन्धिचतुर्गजदन्तस्थितसिद्धकूटजिनालयस्थ जिनबिंबेभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

व्यंजन सदियों से खाए, पर तृप्त नहीं हो पाए।
नैवेद्य बनाकर लाए, अब क्षुधा नशाने आए॥

प्रभु भक्ती करने आए, भक्ती के भाव बनाए।
हम सुगुण आपके गाते, पद सादर शीश झुकाते।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसम्बन्धिचतुर्गजदन्तस्थितसिद्धकूटजिनालयस्थ जिनबिंबेभ्य: नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अज्ञान अंधेरा छाया, न ज्ञान दीप जल पाया।
अब मोह नशाने आए, यह दीप जला कर लाए।।
प्रभु भक्ती करने आए, भक्ती के भाव बनाए।
हम सुगुण आपके गाते, पद सादर शीश झुकाते।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसम्बन्धिचतुर्गजदन्तस्थितसिद्धकूटजिनालयस्थ जिनबिंबेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

सदियों से कर्म सताते, न उनसे हम बच पाते।
अब आठों कर्म नशाएँ, अग्नी में धूप जलाएँ।।
प्रभु भक्ती करने आए, भक्ती के भाव बनाए।
हम सुगुण आपके गाते, पद सादर शीश झुकाते।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसम्बन्धिचतुर्गजदन्तस्थितसिद्धकूटजिनालयस्थ जिनबिंबेभ्य: धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

हम फल की आश लगाए, चारों गतियाँ भटकाए।
अब मोक्ष महाफल पाएँ, हम फल यह सरस चढ़ाएँ।।
प्रभु भक्ती करने आए, भक्ती के भाव बनाए।
हम सुगुण आपके गाते, पद सादर शीश झुकाते।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसम्बन्धिचतुर्गजदन्तस्थितसिद्धकूटजिनालयस्थ जिनबिंबेभ्य: फलं निर्वपामीति स्वाहा।

निज शाश्वत् पद न जाना, पर पद को अपना माना।
यह पावन अर्घ्य चढ़ाएँ, हम पद अनर्घ्य पा जाएँ।।
प्रभु भक्ती करने आए, भक्ती के भाव बनाए।
हम सुगुण आपके गाते, पद सादर शीश झुकाते।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसम्बन्धिचतुर्गजदन्तस्थितसिद्धकूटजिनालयस्थ जिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **शांतीधारा दे रहे, है भक्ती का भाव।**
जग के दुख को दूर कर, पार लगाओ नाव।।

।।शान्तये शान्तिधारा।।

दोहा– **वीतराग छवि को नमूँ, पुष्पांजलि के साथ।**
अहंकार को त्यागकर, झुका रहे पद माथ।।

।।पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

अर्घ्यावली

दोहा– **पुष्पाञ्जलि के भाव से, लाए सुरभित फूल।**
शिवपथ के राही बनें कर्म होंय निर्मूल।।

(मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(चौबोला छन्द)

आग्नेय में 'महा सौमनस', रजतमयी गजदंत महान।
सप्त कूट युत शोभित होता, सुरनर करते हैं गुणगान।।
मेरूगिरी के निकट जिनालय, सिद्ध कूट पर सिद्ध महान।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, पाने को हम पद निर्वाण।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरो: आग्नेयविदिशि महासौमनसगजदन्तसम्बन्धिसिद्धकूट जिनालयस्थसर्वजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मेरू के नैऋत्य दिशा में, विद्युतप्रभ' है गिरी गजदंत।
वर्ण तपाए हुए स्वर्ण सम, नव कूटों युत शोभावंत।।
मेरूगिरी के निकट जिनालय, सिद्ध कूट पर सिद्ध महान।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, पाने को हम पद निर्वाण।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरो: नैऋत्यविदिशि विद्युत्प्रगजदन्तसम्बन्धिसिद्धकूट जिनालयस्थसर्वजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'गंधमादनाचल' मेरू के, है वायव्य कोंण में खास।
स्वर्ण समान सप्तकूटों युत, जिनगृह से हो धर्म प्रकाश।।
मेरूगिरी के निकट जिनालय, सिद्ध कूट पर सिद्ध महान।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, पाने को हम पद निर्वाण।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरो: वायव्यविदिशि गन्धमादनगजदन्तसम्बन्धिसिद्धकूट जिनालयस्थसर्वजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'माल्यवान' ईशान दिशा में, है गजदंत श्रेष्ठ मनहार।
रुचिर नीलमणि से शोभित है, नव कूटों युत मंगलकार।।
मेरूगिरी के निकट जिनालय, सिद्ध कूट पर सिद्ध महान।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, पाने को हम पद निर्वाण।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरो: ईशानविदिशि माल्यवानगजदन्तसम्बन्धिसिद्धकूट सर्वजिनबिंबेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मेरू सुदर्शन के विदिशाओं में, गजदंत शोभते चार।
जिन चैत्यालय उनके ऊपर, शोभित होते अपरम्पार।।
मेरूगिरी के निकट जिनालय, सिद्ध कूट पर सिद्ध महान।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, पाने को हम पद निर्वाण।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरो: चतुर्विदिशायां चतुर्गजदन्तसम्बन्धिचतु: सिद्धकूट-जिनालयसर्वजिनबिंबेभ्य: पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

।।शांतये शांतिधारा।। पुष्पांजलिं क्षिपेत।।

जाप्य–ॐ ह्रीं अर्हं शाश्वत् जिनालयस्थसर्वजिनबिंबेभ्यो नम:।

जयमाला

दोहा– **चरण धूलि पाने प्रभू, आये हैं हम आज।**
जयमाला गाये यहाँ, मिलकर सकल समाज।।

(नयनमालिनी छंद)

जय जय जय जिनराज नमस्ते, तारण तरण जहाज नमस्ते।
मध्य लोक के मध्य नमस्ते, मेरू गिरी के मध्य नमस्ते।।

उपवन के जिनराज नमस्ते, मुक्ति वधु के ताज नमस्ते।
विदिशा में गजदंत नमस्ते, जिन मंदिर भगवन्त नमस्ते।।

घंटा तोरण युक्त नमस्ते, श्रेष्ठ ध्वजा संयुक्त नमस्ते।
स्वयं सिद्ध भगवान नमस्ते, धर्म अहिंसावान नमस्ते।।

वृक्ष फलें शुभकार नमस्ते, जिन मंदिर के द्वार नमस्ते।
तीर्थंकर सम रूप नमस्ते, अनुपम है स्वरूप नमस्ते।।

नेत्र हैं काले श्वेत नमस्ते, श्याम भौंह छवि देत नमस्ते।
वीतराग निर्ग्रन्थ नमस्ते, अविकारी गुणवन्त नमस्ते।।

अस्त्र शस्त्र से हीन नमस्ते, धन धान्यादि विहीन नमस्ते।
प्रभु पद्मासन वान नमस्ते, नाशा दृष्टि महान नमस्ते।।

समचतुष्क संस्थान नमस्ते, सुन्दर आभावान नमस्ते।
श्रेष्ठ संहनन प्राप्त नमस्ते, अविकारी हे आप्त! नमस्ते।।

सर्वांग सुन्दर आप नमस्ते, करें आपका जाप नमस्ते।
श्रेष्ठ आपका ध्यान नमस्ते, होता है श्रद्धान नमस्ते।।

प्राप्त होय सद्ज्ञान नमस्ते, आतम का हो भान नमस्ते।
सहस आपके नाम नमस्ते, करते तुम्हें प्रणाम नमस्ते।।

दर्शन अतिशयकार नमस्ते, वन्दन बारम्बार नमस्ते।
हृदय विराजो नाथ नमस्ते, चरण झुकाते माथ नमस्ते।।

जगतीपति जगदीश नमस्ते, दो हमको आशीष नमस्ते।
'विशद' लगाए आश नमस्ते, है पूरा विश्वास नमस्ते।।

दोहा– **आप हमारे देवता, आप हमारे नाथ।**
आप हमें अब दीजिए, मुक्ती पथ का साथ।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसम्बन्धिषोडशजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

।।शान्तयेशांतिधारा पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्।।

इन्द्रध्वज की पूजा करने, का अवसर शुभ आया है।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा करने, का सौभाग्य जगाया है।।
'विशद' सौख्य शांति पाते वह, जो प्रभु के गुण गाते हैं।
उच्चादर्श प्राप्त करते जो, शिखर पे ध्वजा चढ़ाते हैं।।

इत्याशीर्वाद:

सुदर्शन मेरू सम्बन्धि जम्बू शाल्मलि वृक्ष जिनालय पूजा –3

(स्थापना)

मेरू सुदर्शन के उत्तर में, उत्तर कुरू रहा शुभकार।
जम्बू तरु ईशान कोंण में, शोभित होता मंगलकार।।

दक्षिण दिश में देव कुरू शुभ, अतिशयकारी है स्थान।
रत्नमयी शाल्मलि वृक्ष में, श्रेष्ठ रहे जिनबिम्ब महान।।

दोहा– **जिनबिम्बों का हम यहाँ, करते हैं गुणगान।**
विशद हृदय में हे प्रभू, यहाँ पधारो आन।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरोः ईशाननैऋत्यकोणयोः जम्बूशाल्मलिवृक्षसम्बन्धि-जिनालयस्थजिनबिम्बसमूह! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। ॐ ह्रीं...अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। ॐ ह्रीं...अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शम्भू छन्द)

भावों की शुद्धि न हो पाई, कलुषित हैं भाव मेरे स्वामी।
हम कर्म कलिमा धोने को, यह नीर चढ़ाते जगनामी।।
जम्बूतरु शाल्मलि के तरु में, शोभित होते जिनबिम्ब महान।
अर्घ्य चढ़ाकर उनका करते, भावसहित हम भी गुणगान।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरू सम्बन्धिजम्बू शाल्मलिवृक्ष स्थितजिनालयस्थ सर्व जिनबिंबेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मन संतापित रहता है मेरा, ईर्ष्या के कारण हे स्वामी।
चन्दन सी शीतलता पाएँ, चन्दन से हे अन्तर्यामी।।
जम्बूतरु शाल्मलि के तरु में, शोभित होते जिनबिम्ब महान।
अर्घ्य चढ़ाकर उनका करते, भावसहित हम भी गुणगान।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसम्बन्धिजम्बूशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

रहती है चाह मुझे पद की, पर पद चिन्ताएँ देता है।
हम अक्षयपुर के वासी हैं, अक्षत चिन्ता हर लेता है।।
जम्बूतरु शाल्मलि के तरु में, शोभित होते जिनबिम्ब महान।
अर्घ्य चढ़ाकर उनका करते, भावसहित हम भी गुणगान।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसम्बन्धिजंबूशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्रिय सुख की अभिलाषा से, हम मोह रोग में फँसे रहे।
इस मोहबली के कारण से, जीवन भर कई घन घात सहे।।
जम्बूतरु शाल्मलि के तरु में, शोभित होते जिनबिम्ब महान।
अर्घ्य चढ़ाकर उनका करते, भावसहित हम भी गुणगान।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसम्बन्धिजंबूशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सदियों से भरने पर भगवन्, यह पेट कभी न भरता है।
नैवेद्य चढ़ाते हम पद में, भोजन न भूख को हरता है।।
जम्बूतरु शाल्मलि के तरु में, शोभित होते जिनबिम्ब महान।
अर्घ्य चढ़ाकर उनका करते, भावसहित हम भी गुणगान।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसम्बन्धिजम्बूशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इस मोह महातम के कारण, दुःखों के बादल घिर आए।
अब ज्ञानदीप जल जाए प्रभू, सत्पथ हमको भी मिल जाए।।
जम्बूतरु शाल्मलि के तरु में, शोभित होते जिनबिम्ब महान।
अर्घ्य चढ़ाकर उनका करते, भावसहित हम भी गुणगान।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसम्बन्धिजम्बूशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों की धूप सताती है, आशिष! देकर छाया कर दो।
चरणों में धूप चढ़ाते हम, हे नाथ मेरी झोली भर दो।।
जम्बूतरु शाल्मलि के तरु में, शोभित होते जिनबिम्ब महान।
अर्घ्य चढ़ाकर उनका करते, भावसहित हम भी गुणगान।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसम्बन्धिजंबूशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

मानव गति पुण्य से मिलती है, इसमें भी पाप कमाते हैं।
फल अक्षय नहीं मिला हमको, हम राज समझ न पाते हैं।।
जम्बूतरु शाल्मलि के तरु में, शोभित होते जिनबिम्ब महान।
अर्घ्य चढ़ाकर उनका करते, भावसहित हम भी गुणगान।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसम्बन्धिजंबूशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हम रत्नत्रय का अर्घ्य बना, हे नाथ चढ़ाने लाए हैं।
है पद अनर्घ्य मेरा स्वभाव, वह पद पाने को आए हैं॥
जम्बूतरु शाल्मलि के तरु में, शोभित होते जिनबिम्ब महान।
अर्घ्य चढ़ाकर उनका करते, भावसहित हम भी गुणगान॥9॥

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसम्बन्धिजंबूशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **पूजा करते हम तेरी, हे देवों के देव।**
शांतीधारा दे रहे, शांती करो सदैव॥शान्तये शांतिधारा।।

दोहा– **इस जग के ईश्वर तुम्हीं, तुम ब्रह्मा स्वरूप।**
पुष्पांजलि कर पूजते, पाने निज का रूप॥पुष्पांजलि क्षिपेत्।।

अर्घ्यावली

दोहा– **जम्बू शाल्मलि वृक्ष पर, हैं जिनगृह भगवान।**
अर्घ्य चढ़ा पूजा करें, जिनपद विशद महान॥

(मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्)

(गीता छन्द)

जम्बू तरू की उत्तरी, शाखा में जो जिन धाम हैं।
जिनबिम्ब उनमें जो विराजित, उनके चरण प्रणाम हैं॥
कर अर्घ्य लेकर जिन चरण की, कर रहे हम अर्चना।
पूजन करें अति भक्ति से, निज तत्त्व की हो साधना॥1॥

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसम्बन्धिजंबूवृक्षस्य उत्तरशाखायां जिनालयस्थ-सर्वजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शाल्मलि तरू की दक्षिणी, शाखा में जो जिन धाम हैं।
जिनबिम्ब अकृत्रिम विराजित, उनके चरण प्रणाम हैं॥
कर अर्घ्य लेकर जिन चरण, की कर रहे हम अर्चना।
पूजन करें अति भक्ति से, निज तत्त्व की हो साधना॥2॥

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसम्बन्धिजंबूवृक्षस्य दक्षिणशाखायां जिनालयस्थ-सर्वजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **शाखा जम्बू वृक्ष की, उत्तर दिशा महान।**
शाल्मलि दक्षिण शाख पर, पूज्य रहे भगवान॥

दोहा– **दो सौ सोलह जिन रहे, द्वय तरु पे अभिराम।**
अर्घ्य चढ़ाकर भाव से, उनको सतत् प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसम्बन्धिषोडशजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

।।शान्तयेशांतिधारा पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्।।

जाप्य–ॐ ह्रीं अर्हं शाश्वत् जिनालयस्थसर्वजिनबिंबेभ्यो नम:।

जयमाला

दोहा– **रत्नमयी जिनबिम्ब हैं, जम्बू तरु की डाल।**
शाल्मलि तरु पर जिन भवन, की गाते जयमाल॥

(शम्भू छंद)

पांच सौ योजन स्वर्णिम स्थल, जम्बूद्वीप का रहा महान।
परकोटा कञ्चनमय थल का, बतलाए हैं जिन भगवान॥
पीठ आठ योजन का ऊँचा, मध्य रजत मय रहा विशेष।
इस पर जम्बू वृक्ष अकृत्रिम, रत्नमयी का है उपदेश॥
आठ योजन ऊँचा तरु गाया, जड़ है वज्रमयी शुभकार।
मणिमय तना हरित मोटा है, एक कोष का अपरम्पार॥
चार महा शाखाएँ तरु की, शोभित होती चारों ओर।
छह योजन लम्बी अन्तर से, लहराएँ करें भाव विभोर॥
कंचन कतन मरकत अरु, मूंगा के पत्ते मनहार।
पंच वर्ण रत्नों के अंकुर, पुष्प और फल अपरम्पार॥
जामुन सदृश फल हैं तरु में, कोमल चिकने आभावान।
रत्नमयी हैं फिर भी अनुपम, हिलते डुलते रहें महान॥
सुरगृह त्रय शाखाओं पर हैं, जिनगृह उत्तर में शुभकार।
आदर और अनादर व्यन्तर, सम्यक्त्वी हैं अतिशय कार॥
बारह पद्म वेदियाँ तरु को, घेरे हैं चारों ही ओर।
परिकर वृक्ष पंक्तियाँ तरु की, अन्तराल में भी चउ ओर॥

एक लाख चालीस सहस्र अरु, एक सौ उन्निस हैं शुभकार।
जम्बू तरु परिवार वृक्ष पर, रहता देवों का परिवार॥
मेरू की ईशान दिशा अरु, नीलांचल के दाँयी ओर।
माल्यवन्त के पश्चिम दिश में, सीता के पूरव की ओर॥
तरु स्थल के चतुर्दिशा में, हैं वन खण्ड तीन शुभकार।
फल फूलों सुर महलों युत जो, जल वापी युत हैं मनहार॥
एक सौ आठ बिम्ब जिनवर के, चैत्यालय में रहे महान।
सुर नर किन्नर सभी देवगण, जिनका करते हैं गुणगान॥
इसी तरह के शाल्मलि तरु, में सारी रचना शुभकार।
अधिपति व्यन्तर शाल्मलि के, वेणु-वेणुधारी मनहार॥
जम्बू शाल्मलि तरु हैं जितने, उतने जिन मंदिर गाये।
देव रहें उन सबमें जिनगृह, श्रेष्ठ मनोहर बतलाए॥
दो चैत्यालय मुख्य अकृत्रिम, दो तरु के गाये शुभकार।
उनकी अरु सब जिनबिम्बों की, करें वन्दना बारम्बार॥
सुर नर किन्नर सभी देव गण, जिनकी महिमा गाते हैं।
उन जिनगृह जिनबिम्बों को हम, नत हो शीश झुकाते हैं॥

(घत्ता छन्द)

जय जय जिनदेवा, पद की सेवा, भक्त सभी हम चाह रहे।
जय जय शुभकारी, मंगलकारी, भक्ती की उर धार बहे॥

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसम्बन्धिजंबूशाल्मलिवृक्षसिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

।।शान्तयेशांतिधारा पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्।।

इन्द्रध्वज की पूजा करने, का अवसर शुभ आया है।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा करने, का सौभाग्य जगाया है॥
'विशद' सौख्य शांति पाते वह, जो प्रभु के गुण गाते हैं।
उच्चादर्श प्राप्त करते जो, शिखर पे ध्वजा चढ़ाते हैं॥

इत्याशीर्वादः

सुदर्शन मेरू सम्बन्धि षोडश वक्षार गिरी जिनालय पूजा–4

(स्थापना)

मेरू सुदर्शन के पूरब में, सोलह शुभ वक्षार कहे।
कूट चार प्रत्येक अचल के, ऊपर अनुपम शोभ रहे॥
जिन मंदिर वक्षारसु गिरी के, आज यहाँ हम पूज रहे।
धर्म अहिंसा का नित मेरे, उर से अनुपम स्रोत बहे।

दोहा– **श्रेष्ठ गिरी वक्षार में, जो जिनबिम्ब महान।**
हृदय कमल में आज हम, करते हैं आह्वान॥

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसम्बंधिपूर्वापरविदेहस्थषोडशवक्षारपर्वत सिद्धकूट जिनालयस्थसर्वजिनबिंबसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। ॐ ह्रीं...अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। ॐ ह्रीं...अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम्।

(त्रिभंगी छंद)

जल शीतल लाए, गर्म कराए, यहाँ चढ़ाने को आए।
शिव पद के धारी, हे अविकारी, जन्म जरादी नश जाए॥
तीर्थंकर स्वामी, शिव पथगामी, तव पूजा को हम आए।
हे जिन! अविकारी, मंगलकारी, थाल द्रव्य का भर लाए॥1॥

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसंबंधिषोडशवक्षारपर्वत स्थितसिद्धकूट जिनालयस्थ जिनबिंबेभ्यः जलं निर्व.स्वाहा।

अक्षय पदधारी, हे उपकारी, तव पूजा को हम आए।
भव ताप नशाएँ, शीश झुकाएँ, चंदन घिसकर हम लाए॥
तीर्थंकर स्वामी, शिव पथगामी, तव पूजा को हम आए।
हे जिन! अविकारी, मंगलकारी, थाल द्रव्य का भर लाए॥2॥

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसंबंधिषोडशवक्षारपर्वत स्थितसिद्धकूट जिनालयस्थ जिनबिंबेभ्यः चंदनं निर्व.स्वाहा।

अक्षय पद दाता, श्रेष्ठ विधाता, अक्षत पूजा को लाए।
अक्षय पद पाएँ, पाप नशाएँ, मुक्ती पद पाने आए॥

तीर्थंकर स्वामी, शिव पथगामी, तव पूजा को हम आए।
हे जिन! अविकारी, मंगलकारी, थाल द्रव्य का भर लाए।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसंबंधिषोडशवक्षारपर्वत स्थितसिद्धकूट जिनालयस्थ जिनबिंबेभ्यः अक्षतं निर्व.स्वाहा।

हैं काम सताए, जग भटकाए, फिरते हैं मारे मारे।
भव रोग नशाने, मुक्ती पाने, शरण आपकी हम धारे।।
तीर्थंकर स्वामी, शिव पथगामी, तव पूजा को हम आए।
हे जिन! अविकारी, मंगलकारी, थाल द्रव्य का भर लाए।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसंबंधिषोडशवक्षारपर्वत स्थितसिद्धकूट जिनालयस्थ जिनबिंबेभ्यः पुष्पं निर्व.स्वाहा।

मिष्ठान बनाते, निशदिन खाते, फिर भी तृष्णा न मिट पाए।
प्रभु क्षुधा नशाने, मुक्ती पाने, नैवेद्य चढ़ाने हम लाए।।
तीर्थंकर स्वामी, शिव पथगामी, तव पूजा को हम आए।
हे जिन! अविकारी, मंगलकारी, थाल द्रव्य का भर लाए।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसंबंधिषोडशवक्षारपर्वत स्थितसिद्धकूट जिनालयस्थ जिनबिंबेभ्यः नैवेद्यं निर्व.स्वाहा।

अज्ञान सताए, जग भटकाए, मोह महातम छाया है।
अब दोष जलाएँ, मोह भगाएँ, लक्ष्य हृदय में आया है।।
तीर्थंकर स्वामी, शिव पथगामी, तव पूजा को हम आए।
हे जिन! अविकारी, मंगलकारी, थाल द्रव्य का भर लाए।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसंबंधिषोडशवक्षारपर्वत स्थितसिद्धकूट जिनालयस्थ जिनबिंबेभ्यः दीपं निर्व.स्वाहा।

कर्मों के मारे, जग में सारे, बिना सहारे घूम रहे।
अब धूप जलाएँ, कर्म नशाएँ, चरण आपके चूम रहे।।
तीर्थंकर स्वामी, शिव पथगामी, तव पूजा को हम आए।
हे जिन! अविकारी, मंगलकारी, थाल द्रव्य का भर लाए।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसंबंधिषोडशवक्षारपर्वत स्थितसिद्धकूट जिनालयस्थ जिनबिंबेभ्यः धूपं निर्व.स्वाहा।

पूजा को आये, फल यह लाए, कृपा नाथ हम पर कीजे।
जग में भटकाए, कर्म सताए, अक्षय पद हमको दीजे।।
तीर्थंकर स्वामी, शिव पथगामी, तव पूजा को हम आए।
हे जिन! अविकारी, मंगलकारी, थाल द्रव्य का भर लाए।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसंबंधिषोडशवक्षारपर्वत स्थितसिद्धकूट जिनालयस्थ जिनबिंबेभ्यः फलं निर्व.स्वाहा।

जलफल वसु लाए, अर्घ्य बनाए, पद में यह अर्घ्य चढ़ाते हैं।
अब शिवपुर जाने, मुक्ती पाने, सादर शीश झुकाते हैं।।
तीर्थंकर स्वामी, शिव पथगामी, तव पूजा को हम आए।
हे जिन! अविकारी, मंगलकारी, थाल द्रव्य का भर लाए।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसंबंधिषोडशवक्षारपर्वत स्थितसिद्धकूट जिनालयस्थ जिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

दोहा– **दिव्य दिवाकर सूर्य तुम, करते ज्ञान प्रकाश।**
जल धारा देते यहाँ, पाने शिवपुर वास।।शान्तये शान्तिधारा।।

दोहा– **मोह महा शत्रू बड़ा, देता सबको कष्ट।**
पुष्पांजलि करते यहाँ, करो कर्म सब नष्ट।।पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्।।

प्रत्येक अर्घ्य

दोहा– **सोलह गिरी वक्षार के, चढ़ा रहे हम अर्घ्य।**
यही भावना है विशद, पाएँ स्वपद अनर्घ्य।

(मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्)

(शम्भू छंद)

सीता नदि के, उत्तर तट पर, भद्रशाल वेदी अभिराम।
'चित्र कूट' वक्षार स्वर्णमय, चार कूट मंडित सुखधाम।।
सरिता तट के सिद्ध कूट पर, जिन मंदिर है महिमावान।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, हम भी करते हैं गुणगान।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसम्बंधिसीतानद्युत्तरतटेचित्रकूटवक्षारपर्वत स्थितसिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

'पद्मकूट' वक्षार शैल पर, देव देवियाँ करें विहार।
पर्वत की आभा को लखकर, महिमा गाते अपरम्पार।।
सरिता तट के सिद्ध कूट पर, जिन मंदिर है महिमावान।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, हम भी करते हैं गुणगान।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसम्बंधिसीतानद्युत्तरतटेपद्मकूटवक्षारपर्वत स्थितसिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

'नलिन कूट' पर प्रभू विराजे, जिनकी शोभा अपरम्पार।
सुर नर विद्याधर दर्शनकर, महिमा गाते बारम्बार।।
सरिता तट के सिद्ध कूट पर, जिन मंदिर है महिमावान।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, हम भी करते हैं गुणगान।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसम्बंधिसीतानद्युत्तरतटेनलिनकूटवक्षारपर्वत स्थितसिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

'एक शैल' वक्षार की महिमा, विद्याधर भी गाते हैं।
चारण ऋद्धी धारी मुनिवर, आकर ध्यान लगाते हैं।।
सरिता तट के सिद्ध कूट पर, जिन मंदिर है महिमावान।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, हम भी करते हैं गुणगान।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसम्बंधिसीतानद्युत्तरतटेएकशैलवक्षारपर्वत स्थितसिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

सीता नदि के दक्षिण तट पर, देवारण्य वेदिका वान।
'शैल त्रिकूट' चार कूटों युत, जिनगृह युत वक्षार महान।।
सरिता तट के सिद्ध कूट पर, जिन मंदिर है महिमावान।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, हम भी करते हैं गुणगान।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसम्बंधिसीतानद्युत्तरतटेत्रिकूटवक्षारपर्वत स्थितसिद्धकूट जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

क्रमशः 'कूट वैश्रवण' आवे, जिस पर देव देवियाँ आन।
वन उद्यान वापिकाओं पर, मुनिवर करते आतम ध्यान।।
सरिता तट के सिद्ध कूट पर, जिन मंदिर है महिमावान।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, हम भी करते हैं गुणगान।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसम्बंधिसीतानद्युत्तरतटेवैश्रवणवक्षारपर्वत स्थितसिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

सीतानदी के दक्षिण तट पर, 'अंजनगिरी श्रेष्ठ' वक्षार।
विद्याधर सुरनाग गगनचर, ऋषियों का अतिशय सुखकार।।
सरिता तट के सिद्ध कूट पर, जिन मंदिर है महिमावान।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, हम भी करते हैं गुणगान।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसम्बंधिसीतानद्युत्तरतटेअंजनवक्षारपर्वत स्थितसिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'आत्माजन वक्षार' मनोहर, जिस पर ऋषिगण करें विहार।
परमानन्द का अनुभव करते, ध्यान लीन हो अपरम्पार।।
सरिता तट के सिद्ध कूट पर, जिन मंदिर है महिमावान।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, हम भी करते हैं गुणगान।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसम्बंधिसीतानद्युत्तरतटेआत्मांजनवक्षारपर्वत स्थितसिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

पश्चिम विदेह सीतोदा जानो, भद्रशालवेदी शुभ मानो।
'श्रद्धावान' दक्षिण में पाया, गिरीवक्षार स्वर्णमय गाया।।
सिद्धकूट सरिता तट भाई, शाश्वत् चैत्यालय सुखदायी।
जिनको हम भी पूज रचाते, विशद भाव से शीश झुकाते।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसंबंधिसीतोदानदी दक्षिणतटे श्रद्धावान्वक्षार पर्वत स्थित सिद्धकूट जिनालयस्थ जिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सीतोदा के दक्षिण जानो, 'विजटावान' गिरी पहिचानो।
चार कूट युत शुभ वक्षारा, सुर नर करते जहाँ विहारा।।
सिद्धकूट सरिता तट भाई, शाश्वत् चैत्यालय सुखदायी।
जिनको हम भी पूज रचाते, विशद भाव से शीश झुकाते।।10।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसंबंधिसीतोदानदीदक्षिणतटे विजटावान्वक्षार पर्वत स्थितसिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'आशीविष वक्षार' निराला, जन-जन का मन हरने वाला।
रत्नमयी वेदी शुभकारी, नमन करें जग के नर नारी।।

सिद्धकूट सरिता तट भाई, शाश्वत् चैत्यालय सुखदायी।
जिनको हम भी पूज रचाते, विशद भाव से शीश झुकाते॥11॥

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसंबंधिसीतोदानदीदक्षिणतटे आशीविषवक्षार पर्वत स्थितसिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है 'वक्षार सुखावह' भाई, जिसकी है जग में प्रभुताई।
सुर विद्याधर मिलकर आवें, जिन चरणों को पूज रचावें॥
सिद्धकूट सरिता तट भाई, शाश्वत् चैत्यालय सुखदायी।
जिनको हम भी पूज रचाते, विशद भाव से शीश झुकाते॥12॥

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसंबंधिसीतोदानदीदक्षिणतटे सुखावहवक्षारपर्वत स्थितसिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'चन्द्रमाल' चंदा सम गाया, भवि जीवों के मन को भाया।
जो प्राणी दर्शन को जाएँ, वे अपने सौभाग्य जगाएँ॥
सिद्धकूट सरिता तट भाई, शाश्वत् चैत्यालय सुखदायी।
जिनको हम भी पूज रचाते, विशद भाव से शीश झुकाते॥13॥

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसंबंधिसीतोदानदीदक्षिणतटे चन्द्रमालवक्षारपर्वत स्थितसिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सूर्यमाल' सूरज सम जानो, रत्नमयी आभा पहिचानो।
हम दर्शन के भाव बनाते, अर्घ्य चढ़ाकर पूज रचाते॥
सिद्धकूट सरिता तट भाई, शाश्वत् चैत्यालय सुखदायी।
जिनको हम भी पूज रचाते, विशद भाव से शीश झुकाते॥14॥

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसंबंधिसीतोदानदीदक्षिणतटे सूर्यमालवक्षारपर्वत स्थितसिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'नागमाल' पर जाने वाले, नाग कुमारादिक सुर आते।
हाथ जोड़कर के सिरनाते, पद में सादर शीश झुकाते॥
सिद्धकूट सरिता तट भाई, शाश्वत् चैत्यालय सुखदायी।
जिनको हम भी पूज रचाते, विशद भाव से शीश झुकाते॥15॥

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसंबंधिसीतोदानदीदक्षिणतटे नागमालवक्षारपर्वत स्थितसिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'देवमाल' में देव विचरते, जिन चरणों में वन्दन करते।
ऋद्धीधारी साधू आते, निज आतम का ध्यान लगाते॥
सिद्धकूट सरिता तट भाई, शाश्वत् चैत्यालय सुखदायी।
जिनको हम भी पूज रचाते, विशद भाव से शीश झुकाते॥16॥

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसंबंधिसीतोदानदीदक्षिणतटे देवामालवक्षारपर्वत स्थितसिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(अडिल्य छंद)

गिरीयाँ यह वक्षार, कहीं शुभकार हैं, सुरनर विद्याधर, जाते अनगार हैं।
जिनगृह में भक्ती, करते हैं अर्चना, विशद भाव से करते, पद में वन्दना॥
सोलह जिनगृह में, प्रतिमाएँ जानिए, सत्रह सौ अटठावन, संख्या मानिए।
जिनबिम्बों की पूजा, करने आए हैं, विशद भाव से सादर, शीश झुकाएँ हैं॥17॥

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसंबंधिपूर्वापरविदेहस्थषोडशवक्षारपर्वतस्थित सिद्धकूटजिनालयस्थसर्वजिनबिंबेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

।।शान्तयेशांतिधारा पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्।।

जाप्य–ॐ ह्रीं अर्हं शाश्वत् जिनालयस्थसर्वजिनबिंबेभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा– **पूजा करते भाव से, भक्त यहाँ पर आज।**
जयमाला गाए विशद, मिलकर सकल समाज॥

(चौबोला छंद)

मेरू सुदर्शन के पूरब में, सीता नदी बहे शुभकार।
पश्चिम में सीतोदा बहती, निर्मल जलयुत अपरम्पार॥
द्वय नदि के उत्तर दक्षिण में, चार-चार वक्षार कहे।
मध्य विभंगा द्वादश नदियाँ, निर्मल जल परिपूर्ण रहे॥
मध्य गिरी सरिताओं में शुभ, क्षेत्र विदेह कहाते हैं।
अन्तराल के क्षेत्र सभी, बत्तीस गिनाये जाते हैं॥
सब क्षेत्रों में आर्य खण्ड हैं, तीर्थंकर उनमें होते।
श्रेष्ठ शलाका पुरुष जन्म ले, भव्यों की जड़ता खोते॥

सोलह गिरी वक्षार कहीं हैं, कनक वर्ण शोभा पावें।
चार-चार हैं कूट सभी में, मणि कंचन मय कहलायें॥
सरिता तट में गिरी के ऊपर, सिद्ध कूट शोभा पावें।
स्वयं सिद्ध शाश्वत् जिन मंदिर, अपनी महिमा दिखलावें॥
जिन प्रतिमाएँ जिन भवनों में, शाश्वत् सिद्ध है मंगलकार।
रत्नमयी सुन्दर आकृतियुत, वीतराग छवि है अविकार॥
रत्नमयी सिंहासन पर शुभ, अकृत्रिम जिनबिम्ब कहे।
तीर्थंकर बैठे हों मानो, शुभ आभामय शोभ रहे॥
भामण्डल के आगे सूरज, भी फीका पड़ जाता है।
कल्पवृक्ष उत्तुंग रत्नमय, जिन महिमा दिखलाता है॥
मणि मुक्ताओं से सज्जित त्रय, छत्र फिरें महिमाशाली।
चँवर ढौरते यक्ष मनोहर, अनुपम श्वेत चमक शाली॥
मंगल द्रव्य रहें द्वारे वसु, मंगल धूप घड़े सोहें।
भवि कंचन की मालाएँ अरु, पुष्पमाल मन को मोहें॥
मानस्तंभो के दर्शन से, मानगलित हो जाता है।
रत्नमयी रचना है अद्भुत, सबके मन को भाता है॥
एक सौ आठ बिम्ब प्रति मंदिर, में जो शोभा पाते हैं।
पाप शाप संताप नशाकर, जो शिव मार्ग दिखाते हैं॥
दर्शन पूजन करने वाले, रत्नमयी निधि पाते हैं।
करे वन्दना जो परोक्ष ही, वे शिवपुर को जाते हैं॥
नाथ! आपकी महिमा सुनकर, हमने तुम्हें पुकारा है।
भव सिन्धू में डूबे को तव, हे प्रभु! एक सहारा है॥

दोहा– **द्वार खड़े हम हे प्रभू, निज फैलाए हाथ।**
नाथ सहारा दीजिए, 'विशद' झुकाते माथ॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरूसंबंधिपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थषोडशवक्षारपर्वतस्थितसिद्धकूट जिनालयस्थसर्व जिनबिंबेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

॥शान्तयेशांतिधारा पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्॥

इन्द्रध्वज की पूजा करने, का अवसर शुभ आया है।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा करने, का सौभाग्य जगाया है॥
'विशद' सौख्य शांति पाते वह, जो प्रभु के गुण गाते हैं।
उच्चादर्श प्राप्त करते जो, शिखर पे ध्वजा चढ़ाते हैं॥

इत्याशीर्वादः

सुदर्शनमेरू सम्बन्धि चौंतिस विजयार्ध जिनालय पूजा–5

(स्थापना)

दोहा– **चौंतिस हैं विजयार्ध शुभ, मंदिर बने विशाल।**
हम परोक्ष ही पूजते, करके नमन त्रिकाल॥

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरू सम्बंधिचतुस्त्रिंशत्विजयार्धपर्वत स्थितसिद्धकूट जिनालयस्थसर्वजिनबिंब समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। ॐ ह्रीं श्री...अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। ॐ ह्रीं श्री...अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

(शम्भू छंद)

निशदिन भोगों को भोगा है, इसमें ही हृदय लुभाया है।
अब जन्म जरा हो नाश मेरा, मन में ये भाव जगाया है॥
विजयार्ध रहे चौंतिस अनुपम, है सिद्ध कूट महिमा शाली।
उनके जिनबिम्बों की पूजा, है सुख शांती देने वाली॥1॥

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसम्बंधि चतुस्त्रिंशत्विजयार्धपर्वत स्थितसिद्धकूट जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

तन धन परिजन की चाह दाह, मानव मन को संतप्त करे।
चन्दन की शीतलता मन में, श्रद्धा आने से पूर्ण हरे॥
विजयार्ध रहे चौंतिस अनुपम, है सिद्ध कूट महिमा शाली।
उनके जिनबिम्बों की पूजा, है सुख शांति देने वाली॥2॥

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसम्बंधि चतुस्त्रिंशत्विजयार्धपर्वत स्थितसिद्धकूट जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

हम श्वाँस-श्वाँस में जन्म मरण, करके अगणित दुख पाते हैं।
शुभ अक्षय पद से हीन रहे, भव सिन्धु में गोते खाते हैं॥

विजयार्ध रहे चौंतिस अनुपम, है सिद्ध कूट महिमा शाली।
उनके जिनबिम्बों की पूजा, है सुख शांति देने वाली।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसम्बंधि चतुस्त्रिंशत्विजयार्धपर्वत स्थितसिद्धकूट जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

मन पुलकित होता पुष्पों से, हम काम वासना में अटके।
भँवरे की भाँती भ्रमण किया, भवसागर में दर-दर भटके।।
विजयार्ध रहे चौंतिस अनुपम, है सिद्ध कूट महिमा शाली।
उनके जिनबिम्बों की पूजा, है सुख शांति देने वाली।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसम्बंधि चतुस्त्रिंशत्विजयार्धपर्वत स्थितसिद्धकूट जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

है बड़ी लालसा खाने की, खाकर भी तृप्त न हो पाते।
हो क्षुधा रोग का नाश नाथ!, हम तव चरणों में सिरनाते।।
विजयार्ध रहे चौंतिस अनुपम, है सिद्ध कूट महिमा शाली।
उनके जिनबिम्बों की पूजा, है सुख शांति देने वाली।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसम्बंधि चतुस्त्रिंशत्विजयार्धपर्वत स्थितसिद्धकूट जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दिखता है जो भी आँखों से, उसको प्रकाश हमने माना।
है आत्म ज्ञान का जो प्रकाश, उसको हमने न पहिचाना।।
विजयार्ध रहे चौंतिस अनुपम, है सिद्ध कूट महिमा शाली।
उनके जिनबिम्बों की पूजा, है सुख शांति देने वाली।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसम्बंधि चतुस्त्रिंशत्विजयार्धपर्वत स्थितसिद्धकूट जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

आंधी चलने से कर्मों की, पुरुषार्थ हीन हो जाता है।
कर्मो का जाल नशाए जो, वह नर शिवपद को पाता है।।
विजयार्ध रहे चौंतिस अनुपम, है सिद्ध कूट महिमा शाली।
उनके जिनबिम्बों की पूजा, है सुख शांति देने वाली।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसम्बंधि चतुस्त्रिंशत्विजयार्धपर्वत स्थितसिद्धकूट जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फैला कर्मों का जाल यहाँ, उसमें सब फँसते जाते हैं।
सब ज्ञान ध्यान निष्फल होता, न मोक्ष महाफल पाते हैं।।
विजयार्ध रहे चौंतिस अनुपम, है सिद्ध कूट महिमा शाली।
उनके जिनबिम्बों की पूजा, है सुख शांति देने वाली।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसम्बंधि चतुस्त्रिंशत्विजयार्धपर्वत स्थितसिद्धकूट जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ अशुभ भाव की सरिता में, हम गोते खाते आए हैं।
अब रत्नत्रय की निधि पाने, यह अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।।
विजयार्ध रहे चौंतिस अनुपम, है सिद्ध कूट महिमा शाली।
उनके जिनबिम्बों की पूजा, है सुख शांति देने वाली।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसम्बंधि चतुस्त्रिंशत्विजयार्धपर्वत स्थितसिद्धकूट जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्यावली

दोहा– **चौंतिस हैं विजयार्ध शुभ, महिमा अपरम्पार।**
पुष्पांजलि करते यहाँ, पाने शिव का द्वार।।

(मण्डलस्योपरि पुष्पांजलि क्षिपेत्)

(चौपाई)

'कच्छा' देश में पर्वत जानो, भद्रशाल वन अनुपम मानो।
सिद्ध बिम्ब नव कूट में गाये, जिनबिम्बों पद शीश झुकाए।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसम्बंधिपूर्वविदेहस्थसीतानदीउत्तरतटे कच्छादेशस्थित विजयार्धपर्वत सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'सुकच्छा' है शुभकारी, स्वर्णाचल सम है मनहारी।
सिद्धबिम्ब नव कूट में गाये, जिनबिम्बों पद शीश झुकाए।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसम्बंधिसीतानदीउत्तरतटे सुकच्छादेशस्थितविजयार्ध पर्वत सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'महा कच्छा' कहलाया, महिमाशाली जो बतलाया।
सिद्धबिम्ब नव कूट में गाये, जिनबिम्बों पद शीश झुकाए।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसम्बंधिसीतानदीउत्तरतटे महाकच्छादेशस्थितविजयार्धपर्वत सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'कच्छकावति' में जाएँ, सिद्ध कूट के दर्शन पाएँ।
सिद्धबिम्ब नव कूट में गाये, जिनबिम्बों पद शीश झुकाए।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसम्बंधिसीतानदीउत्तरतटे कच्छकावतीदेशस्थित विजयार्धपर्वत सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश रहा 'आवर्ता' भाई, जिसकी फैली जग प्रभुताई।
सिद्धबिम्ब नव कूट में गाये, जिनबिम्बों पद शीश झुकाए।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसम्बंधिसीतानद्युत्तरतटे आवर्तादिशस्थित विजयार्धपर्वत सिद्धकूट जिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'लांगलावर्ता' जानो, सुन्दर मनहारी पहिचानो।
सिद्धबिम्ब नव कूट में गाये, जिनबिम्बों पद शीश झुकाए।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसम्बंधिसीतानद्युत्तरतटे लांगलावर्तादेशस्थित विजयार्धपर्वत सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रहा 'पुष्कला' महिमाशाली, जहाँ रहे हरदम खुशहाली।
सिद्धबिम्ब नव कूट में गाये, जिनबिम्बों पद शीश झुकाए।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसम्बंधिसीतानद्युत्तरतटे पुष्कलादेशस्थितविजयार्धपर्वत सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'पुष्पकलावति' है शाही, करें वन्दना शिवपद राही।
सिद्धबिम्ब नव कूट में गाये, जिनबिम्बों पद शीश झुकाए।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसम्बंधिसीतानद्युत्तरतटे पुष्कलावतीदेशस्थितविजयार्धपर्वत सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'वत्सादेश' में वत्सलधारी, प्राणी जावें विस्मयकारी।
सिद्धबिम्ब नव कूट में गाये, जिनबिम्बों पद शीश झुकाए।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसम्बंधिसीतानदीदक्षिणतटे वत्सादेशस्थितविजयार्धपर्वत सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'सुवत्सा' रहा निराला, सुख शांती को देने वाला।
सिद्धबिम्ब नव कूट में गाये, जिनबिम्बों पद शीश झुकाए।।10।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसम्बंधिसीतानदीदक्षिणतटे सुवत्सादेशस्थितविजयार्धपर्वत सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'महावत्सा' कहलाए, जिसकी महिमा कही न जाए।
सिद्धबिम्ब नव कूट में गाये, जिनबिम्बों पद शीश झुकाए।।11।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसम्बंधिसीतानदीदक्षिणतटे पर्वत सिद्धकूटजिनालयस्थ जिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'वत्सकावति' शुभकारी, सारे जग में मंगलकारी।
सिद्धबिम्ब नव कूट में गाये, जिनबिम्बों पद शीश झुकाए।।12।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसम्बंधिसीतानदीदक्षिणतटे वत्सकावतीदेशस्थित विजयार्धपर्वत सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'रम्यादेश' में प्राणी रमते, जिनवर के चरणों में नमते।
सिद्धबिम्ब नव कूट में गाये, जिनबिम्बों पद शीश झुकाए।।13।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसम्बंधिसीतानदीदक्षिणतटे रम्यादेशस्थितविजयार्धपर्वत सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'सुरम्या' अतिशयकारी, मानव रहते हैं नभचारी।
सिद्धबिम्ब नव कूट में गाये, जिनबिम्बों पद शीश झुकाए।।14।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसम्बंधिसीतानदीदक्षिणतटे सुरम्यादेशस्थितविजयार्धपर्वत सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'रमणीया' में रमने वाले, मानव होते बड़े निराले।
सिद्धबिम्ब नव कूट में गाये, जिनबिम्बों पद शीश झुकाए।।15।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसम्बंधिसीतानदीदक्षिणतटे रमणीयादेशस्थितविजयार्धपर्वत सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'मंगलावती' कहाया, मंगल करने वाला गाया।
सिद्धबिम्ब नव कूट में गाये, जिनबिम्बों पद शीश झुकाए।।16।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसम्बंधिसीतानदीदक्षिणतटे मंगलावतीदेशस्थितविजयार्ध पर्वत सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शम्भू छंद)

'पद्मा देश' के मध्य रहा है, सागर कमलों युक्त प्रधान।
कर में पद्म लिए हम आये, हे! प्रभुवर करने गुणगान।।

वीतराग जिनबिम्ब जिनालय, सारे जग के पूज्य कहे।
उभय लोक में कष्ट मिटाने, वाले जग में श्रेष्ठ रहे॥17॥

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसम्बंधिसीतोदानदीदक्षिणतटे पद्मादेशस्थितविजयार्ध पर्वत सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अपर विदेह में देश 'सुपद्मा', सुन्दर मंदिर शोभ रहा।
भक्तों के मन को मोहित जो, करने वाला श्रेष्ठ कहा॥
वीतराग जिनबिम्ब जिनालय, सारे जग के पूज्य कहे।
उभय लोक में कष्ट मिटाने, वाले जग में श्रेष्ठ रहे॥18॥

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसम्बंधिसीतोदानदीदक्षिणतटे सुपद्मादेशस्थितविजयार्धपर्वत सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'महापद्मा' में अनुपम, कमल खिले हैं अपरम्पार।
भक्त वन्दना करते खुश हो, भक्ती करते बारम्बार॥
वीतराग जिनबिम्ब जिनालय, सारे जग के पूज्य कहे।
उभय लोक में कष्ट मिटाने, वाले जग में श्रेष्ठ रहे॥19॥

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसम्बंधिसीतोदानदीदक्षिणतटे महापद्मादेशस्थितविजयार्धपर्वत सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'पद्मकावति' में भाई, चैत्यालय है मंगलकार।
भव्य जीव दर्शन करते हैं, खुश हो करके बारम्बार॥
वीतराग जिनबिम्ब जिनालय, सारे जग के पूज्य कहे।
उभय लोक में कष्ट मिटाने, वाले जग में श्रेष्ठ रहे॥20॥

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसम्बंधिसीतोदानदीदक्षिणतटे पद्मकावतीदेशस्थित विजयार्धपर्वत सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शंखादेश' में निःशंकित हो, करें वन्दना जीव अनेक।
सम्यक् दर्शन पाने वाले, प्राप्त करें जो श्रेष्ठ विवेक॥
वीतराग जिनबिम्ब जिनालय, सारे जग के पूज्य कहे।
उभय लोक में कष्ट मिटाने, वाले जग में श्रेष्ठ रहे॥21॥

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसम्बंधिसीतोदानदीदक्षिणतटे शंखादेशस्थितविजयार्धपर्वत सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'नलिन' देश में जाके मुनिवर, करें वन्दना बारम्बार।
जिन सिद्धों का ध्यान लगाते, हो एकाग्र विशद अविकार॥
वीतराग जिनबिम्ब जिनालय, सारे जग के पूज्य कहे।
उभय लोक में कष्ट मिटाने, वाले जग में श्रेष्ठ रहे॥22॥

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसम्बंधिसीतोदानदीदक्षिणतटे नलिनदेशस्थितविजयार्धपर्वत सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'कुमदा' कुमुद समान मनोहर, मन को करता भाव विभोर।
तीर्थंकर का दर्शन करके, नाचे जैसे वन में मोर॥
वीतराग जिनबिम्ब जिनालय, सारे जग के पूज्य कहे।
उभय लोक में कष्ट मिटाने, वाले जग में श्रेष्ठ रहे॥23॥

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसम्बंधिसीतोदानदीदक्षिणतटे कुमुदादेशस्थितविजयार्धपर्वत सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सरिता' सरिता तट सम सुन्दर, दिखता भाई आभावान।
ऋद्धीधारी मुनिवर जाके, जहाँ लगाते आतम ध्यान॥
वीतराग जिनबिम्ब जिनालय, सारे जग के पूज्य कहे।
उभय लोक में कष्ट मिटाने, वाले जग में श्रेष्ठ रहे॥24॥

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसम्बंधिसीतोदानदीदक्षिणतटे सरितादेशस्थितविजयार्धपर्वत सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'वप्रा देश' की महिमा न्यारी, जहाँ विराजे श्री भगवान।
दूर-दूर से भक्त वहाँ पर, आते हैं करने गुणगान॥
वीतराग जिनबिम्ब जिनालय, सारे जग के पूज्य कहे।
उभय लोक में कष्ट मिटाने, वाले जग में श्रेष्ठ रहे॥25॥

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसम्बंधिसीतोदानदीउत्तरतटे वप्रादेशस्थितविजयार्धपर्वत सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'सुवप्रा' विजयारध पर, जिन चैत्यालय सहित विशेष।
रत्नमयी अविकारी अनुपम, जहाँ विराजे श्री जिनेश॥
वीतराग जिनबिम्ब जिनालय, सारे जग के पूज्य कहे।
उभय लोक में कष्ट मिटाने, वाले जग में श्रेष्ठ रहे॥26॥

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसम्बंधिसीतोदानदीउत्तरतटे सुवप्रादेशस्थितविजयार्धपर्वत सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'महावप्रा' में मुनिवर, विद्याधर भी करें गमन।
विशद भाव से अर्चा करके, जिन चरणों में करें नमन।।
वीतराग जिनबिम्ब जिनालय, सारे जग के पूज्य कहे।
उभय लोक में कष्ट मिटाने, वाले जग में श्रेष्ठ रहे।।27।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसम्बंधिसीतोदानद्युत्तरतटे महावप्रादेशस्थितविजयार्धपर्वत सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'वप्रकावती' निराला, जिसकी महिमा का ना पार।
सुर नर विद्याधर वन्दन कर, गुण गाते हैं अपरम्पार।।
वीतराग जिनबिम्ब जिनालय, सारे जग के पूज्य कहे।
उभय लोक में कष्ट मिटाने, वाले जग में श्रेष्ठ रहे।।28।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसम्बंधिसीतोदानद्युत्तरतटे वप्रकावतीदेशस्थित विजयार्धपर्वत सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'गंधा देश' सुगन्धी अपनी, फैलाता है चारों ओर।
भव्य भ्रमर जिन दर्शन पाके, हो जाते हैं भाव विभोर।।
वीतराग जिनबिम्ब जिनालय, सारे जग के पूज्य कहे।
उभय लोक में कष्ट मिटाने, वाले जग में श्रेष्ठ रहे।।29।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसम्बंधिसीतोदानद्युत्तरतटे गंधादेशस्थितविजयार्धपर्वत सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'सुगंधा' की माटी में, बसते हैं साधर्मी लोग।
पूजा अर्चा भक्ती का जो, प्राप्त करें हरदम संयोग।।
वीतराग जिनबिम्ब जिनालय, सारे जग के पूज्य कहे।
उभय लोक में कष्ट मिटाने, वाले जग में श्रेष्ठ रहे।।30।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसम्बंधिसीतोदानद्युत्तरतटे सुगंधादेशस्थितविजयार्धपर्वत सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'गंधिला' के नर नारी, रहते हैं भक्ती में लीन।
जैनधर्म को धारण करके, हो जाते हैं दोष विहीन।।
वीतराग जिनबिम्ब जिनालय, सारे जग के पूज्य कहे।
उभय लोक में कष्ट मिटाने, वाले जग में श्रेष्ठ रहे।।31।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसम्बंधिसीतोदानद्युत्तरतटे गंधिलादेशस्थितविजयार्धपर्वत सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'गंध मालिनी' पर्वत ऊपर, शोभित होता है उद्यान।
जहाँ मुनीश्वर नित्य निरन्तर, करते आनन्दामृत पान।।
वीतराग जिनबिम्ब जिनालय, सारे जग के पूज्य कहे।
उभय लोक में कष्ट मिटाने, वाले जग में श्रेष्ठ रहे।।32।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसम्बंधिसीतोदानद्युत्तरतटे गंधमालिनीदेशस्थितविजयार्धपर्वत सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(ज्ञानोदय छंद)

'भरत क्षेत्र' के विजयारध की, शान निराली गाई।
आर्य खण्ड के मध्य अयोध्या, नगरी शुभ बतलाई।।
रजताचल के जिनगृह जिनवर, पूज रहे शुभकारी।
जिनके चरणों विशद भाव से, अतिशय ढोक हमारी।।33।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसम्बंधिदक्षिणदिशि भरतक्षेत्रस्थितविजयार्धपर्वत सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ऐरावत' के विजयारध की, अनुपम रही कहानी।
दर्शन करने सिद्ध कूट पर, जाते जग के प्राणी।।
रजताचल के जिनगृह जिनवर, पूज रहे शुभकारी।
जिनके चरणों विशद भाव से, अतिशय ढोक हमारी।।34।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसम्बंधिउत्तरदिशि ऐरावतक्षेत्रस्थितविजयार्धपर्वत सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूरब पश्चिम शुभ विदेह में, बत्तिस हैं सुखदायी।
भरतैरावत के दो मिलकर, चौंतिस जानो भाई।।
इन चौंतीसों विजयार्धों पर, जिनगृह हैं प्रतिमाएँ।
पूर्ण अर्घ्य दे पूजा करके, पद में शीश झुकाएँ।।35।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसम्बंधि चतुस्त्रिंशत्विजयार्धपर्वत स्थितसिद्धकूट जिनालयस्थ सर्वजिनबिंबेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

।।शान्तयेशांतिधारा पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्।।

जाप्य–ॐ ह्रीं अर्हं शाश्वत् जिनालयस्थसर्वजिनबिंबेभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा– **चौंतिस हैं विजयार्ध शुभ, जम्बूद्वीप में खास।**
जयमाला गाते यहाँ, उनमें जिन का वास॥

(शम्भू छंद)

बत्तिस देश विदेहों में शुभ, रजतमयी विजयार्ध कहे।
भरतैरावत में दो हैं सब, तीन कटनियों सहित रहे॥

शाश्वत् नगरी विद्याधर की, एक सौ दश हैं मंगलकार।
नवकूटों युत उन सबमें इक, सिद्धकूट जिन का शुभकार।

शाश्वत् हैं जिनबिम्ब निराले, रत्नमयी जिसमें मनहार।
सुरनर विद्याधर जिनके पद, वन्दन करते बारम्बार॥

हम परोक्ष ही वन्दन करके, भाव सहित करते गुणगान।
यही प्रार्थना चरण आपके, मोक्ष मार्ग में करें प्रयाण॥

वचन काय मन पर हे भगवन, पूर्ण रूप संयम पाएँ।
छोड़ असद संसार वास हम, शिवपथ राही बन जाएँ॥

ईर्ष्या विद्वेष बुराई का अब, पूर्ण रूप से नाश करें।
क्रोधादि कषायों का अपने, अन्तर से पूर्ण विनाश करें॥

हम इन्द्रिय विषयों के ऊपर, मन वच काय से जय पाएँ।
कर्मों के बन्धन आतम से, मेरे सारे अब क्षय जाएँ॥

सम्यक् श्रद्धान ज्ञान चारित, यह रत्नत्रय कहलाता है।
शिवपद का राही बन जाता, जो जीवन में अपनाता है॥

जो गुप्ति समिति धर्म श्रेष्ठ, द्वादश अनुप्रेक्षा को भाता।
परिषह समता से सहता जो, कर्मों का वह संवर पाता॥

तप करता है जो संवर युत, वह कर्म निर्जरा को पाए।
संयम तप करने से मानव, निज चेतन के गुण प्रगटाए॥

सामायिक संयम का धारी, समता में सदा विचरता है।
छेदोपस्थापना संयम धर, दोषों का प्रायश्चित्त करता है॥

परिहार विशुद्धी संयम पा, हिंसादी का परिहार करें।
जिनसूक्ष्म साम्पराय होते ही, स्थूल कषाएँ पूर्ण हरें॥

फिर यथाख्यात संयम पाकर, चेतन स्वरूप में वास करें।
मुनिकर्म घातिया के नाशी, निज केवलज्ञान प्रकाश करें॥

हम यही भावना भाते हैं, शिव पथ के राही बन जाएँ।
यह त्रिविध कर्म का नाश करें, फिर सिद्ध सदन को हम पाएँ॥

दोहा– **शाश्वत् हैं जिनबिम्ब शुभ, विजयार्धों पर खास।**
चरण वन्दना कर स्वयं, पाएँ शिवपुर वास॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरूसंबंधिचतुस्त्रिंशत्विजयार्धपर्वतसिद्धकूटजिनालयस्थ-सर्वजिनबिंबेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

।।शान्तयेशांतिधारा पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्।।

इन्द्रध्वज की पूजा करने, का अवसर शुभ आया है।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा करने, का सौभाग्य जगाया है॥
'विशद' सौख्य शांति पाते वह, जो प्रभु के गुण गाते हैं।
उच्चादर्श प्राप्त करते जो, शिखर पे ध्वजा चढ़ाते हैं॥

इत्याशीर्वादः

सुदर्शन मेरू सम्बन्धि षट्कुलाचलस्थ जिनालय पूजा–6

स्थापना (चौपाई)

छह रहे कुलाचल भाई, स्थित होते सुखदायी।
हेमार्जुन तपनीय जानो, वैडूर्यमणी सम मानो॥
सुर नर विद्याधर जावें, जिन चरणों शीश झुकावें।
जो पूजा कर गुण गावें, हर्षित होके सुख पावें॥

दोहा– **कुल पर्वत पर जिनभवन, उनमें जो भगवान।**
विशद हृदय में आज हम, करते हैं आह्वान॥

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसम्बन्धिषट्कुलाचलस्थितसिद्धकूटजिनालयस्थ सर्वजिनबिंबसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। ॐ ह्रीं श्री...

अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं श्री...अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम्।

कलुषित भावों ने हे प्रभुवर, हमको भव भ्रमण कराया है।
जल से निर्मलता आती है, यह आज समझ में आया है॥
छह रहे कुलाचल शुभकारी, उनकी हम महिमा गाते हैं।
उन पर जिनगृह जिनबिम्ब रहे, जिनको हम शीश झुकाते हैं॥1॥

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसम्बन्धिषट्कुलाचलस्थितसिद्धकूटजिनालयस्थ जिनबिंबेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

ईर्ष्या से जलकर हे भगवन! संतापित होते आए हैं।
चन्दन से शीतलता मिलती, संताप नशाने लाए हैं॥
छह रहे कुलाचल शुभकारी, उनकी हम महिमा गाते हैं।
उनपर जिनगृह जिनबिम्ब रहे, जिनको हम शीश झुकाते हैं॥2॥

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसम्बन्धिषट्कुलाचलस्थितसिद्धकूटजिनालयस्थ जिनबिंबेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

हम अक्षयपुर के वासी हैं, भव वन में आज भटकते हैं।
अक्षय पद न मिल पाया है, दर-दर पर माथ पटकते हैं॥
छह रहे कुलाचल शुभकारी, उनकी हम महिमा गाते हैं।
उनपर जिनगृह जिनबिम्ब रहे, जिनको हम शीश झुकाते हैं॥3॥

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसम्बन्धिषट्कुलाचलस्थितसिद्धकूटजिनालयस्थ जिनबिंबेभ्यः अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्रिय के सुख की अभिलाषा, विषयों में हमें फसाए है।
है प्रबल काम शत्रू जग में, सबको जो दास बनाए है॥
छह रहे कुलाचल शुभकारी, उनकी हम महिमा गाते हैं।
उनपर जिनगृह जिनबिम्ब रहे, जिनको हम शीश झुकाते हैं॥4॥

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसम्बन्धिषट्कुलाचलस्थितसिद्धकूटजिनालयस्थ जिनबिंबेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

यह क्षुधा सताती है हमको, संतुष्ट नहीं हम कर पाए।
न क्षुधा शांत हो पाई कई, नैवेद्य बनाकर के खाए॥

छह रहे कुलाचल शुभकारी, उनकी हम महिमा गाते हैं।
उनपर जिनगृह जिनबिम्ब रहे, जिनको हम शीश झुकाते हैं॥5॥

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसम्बन्धिषट्कुलाचलस्थितसिद्धकूटजिनालयस्थ जिनबिंबेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अन्तर की आँख न खुल पाई, दुःखों के बादल घिरे रहे।
अज्ञान तिमिर में फँसने से, मिथ्यातम के घन घात सहे॥
छह रहे कुलाचल शुभकारी, उनकी हम महिमा गाते हैं।
उनपर जिनगृह जिनबिम्ब रहे, जिनको हम शीश झुकाते हैं॥6॥

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसम्बन्धिषट्कुलाचलस्थितसिद्धकूटजिनालयस्थ जिनबिंबेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

संताप हृदय में छाया है, कर्मों की धूप सताती है।
प्रभु चरण छाँव में आने से, झोली क्षण में भर जाती है॥
छह रहे कुलाचल शुभकारी, उनकी हम महिमा गाते हैं।
उनपर जिनगृह जिनबिम्ब रहे, जिनको हम शीश झुकाते हैं॥7॥

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसम्बन्धिषट्कुलाचलस्थितसिद्धकूटजिनालयस्थ जिनबिंबेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ पुण्य के फल से मानवगति, पाकर न धर्म कमाया है।
ना विशद मोक्ष फल पाया है, जीवन यूँ व्यर्थ गंवाया है॥
छह रहे कुलाचल शुभकारी, उनकी हम महिमा गाते हैं।
उनपर जिनगृह जिनबिम्ब रहे, जिनको हम शीश झुकाते हैं॥8॥

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसम्बन्धिषट्कुलाचलस्थितसिद्धकूटजिनालयस्थ जिनबिंबेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नौका रत्नत्रय की अनुपम, इस भव सिंधू से पार करे।
जो आलम्बन लेता इसका, वह जीवन में शिवनारि वरे॥
छह रहे कुलाचल शुभकारी, उनकी हम महिमा गाते हैं।
उनपर जिनगृह जिनबिम्ब रहे, जिनको हम शीश झुकाते हैं॥9॥

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसम्बन्धिषट्कुलाचलस्थितसिद्धकूटजिनालयस्थ जिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **निर्मल लेकर नीर हम, देते शांतीधार।**
करते हम पद वन्दना, करो मेरा उद्धार।। शान्तये...

दोहा– **सुरभित लेकर पुष्प हम, आए आपके द्वार।**
पुष्पांजलि करते प्रभू, कर दो अब उद्धार।। पुष्पांजलिं...

अथ प्रत्येकार्घ्य

दोहा– **कर्त्तव्यों में मन रहे, मेरा हे भगवान।**
पुष्पांजलि कर पूजते, करते हम गुणगान।।
(मण्डलयोस्परि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

(जोगीरासा छन्द)

'हिमवन' पर्वत जो सुमेरू के, दक्षिण दिश में सोहे।
ग्यारह कूट युक्त जो स्वर्णिम, सबके मन को मोहे।।
रत्नमयी जिनबिम्ब युक्त शुभ, सिद्धकूट शुभकारी।
वास करे श्री देवी जिसमें, जो है मंगलकारी।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसंबन्धिहिमवत्पर्वत स्थितसिद्धकूटजिनालयस्थ जिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चाँदी सम 'महाहिमवन' पर्वत , नव कूटों युत गाया।
पार्श्व भाग में मणी खचित जो, विविध वर्ण बतलाया।।
रत्नमयी जिनबिम्ब युक्त शुभ, सिद्धकूट शुभकारी।
वास करे ह्री देवी जिसमें, जो है मंगलकारी।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसंबन्धिमहाहिमवत्पर्वत स्थितसिद्धकूटजिनालयस्थ जिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'निषध' कुलाचल तप्त स्वर्णमय, बतलाया मनहारी।
ह्रद वन और वेदिका संयुत, सोहे अतिशयकारी।।
रत्नमयी जिनबिम्ब युक्त शुभ, सिद्धकूट शुभकारी।
वास करे धृति देवी जिसमें, जो है मंगलकारी।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसंबन्धिनिषधपर्वत स्थितसिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'नीलगिरी' वैडूर्यमणी सम, नव कूटों युत जानो।
पंचरंग के पार्श्व भाग हैं, भविजन सुखकर मानो।।
रत्नमयी जिनबिम्ब युक्त शुभ, सिद्धकूट शुभकारी।
जिसमें वास कीर्ति देवी का, जो है मंगलकारी।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसंबन्धिनीलपर्वत स्थितसिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'रुक्मि' गिरी है रजत वर्णमय, अष्ट कूटमय भाई।
सुर विद्याधर भक्ती करने, आते हैं सुखदायी।।
रत्नमयी जिनबिम्ब युक्त शुभ, सिद्धकूट शुभकारी।
जिसमें वास बुद्धि देवी का, जो है मंगलकारी।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसंबन्धिरुक्मिपर्वत स्थितसिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शिखरी' स्वर्ण समान कुलाचल, ग्यारह कूटों वाला।
जिसके ऊपर महापुण्डरीक, सागर रहा निराला।।
रत्नमयी जिनबिम्ब युक्त शुभ, सिद्धकूट शुभकारी।
जिसमें वास लक्ष्मी देवी का, जो है मंगलकारी।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसंबन्धिशिखरिपर्वत स्थितसिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कुल पर्वत पर रहे सरोवर, भूमय कमल खिलाए।
जिनमें रहें देवियाँ नदियाँ, द्रहों से बहकर आए।।
अकृत्रिम यह रहे कुलाचल, जिनगृह जिनप्रतिमाएँ।
जिन की पूजा करें भाव से, सुर नर शांती पाएँ।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरो:दक्षिणोत्तरषट्कुलाचलस्थितसिद्धकूट जिनालयस्थ जिनबिंबेभ्य: पूर्णार्घ्यं...।

।।शान्तयेशांतिधारा पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्।।

जाप्य–ॐ ह्रीं अर्हं शाश्वतजिनालयस्थसर्वजिनबिंबेभ्यो नम:।

जयमाला

दोहा– पूजा करने आये हैं, हृदय जगा श्रद्धान।
जिन सिद्धों का हम यहाँ, करते हैं गुणगान॥

(आल्हा छंद)

जम्बूद्वीप सुदर्शन मेरू, के उत्तर दक्षिण शुभकार।
हिमवन आदी रहे कुलाचल, समतल उच्च आयताकार॥
स्वर्ण रजत अरु नीलमणीमय, रत्न खचित दिखते मनहार।
बने सरोवर पर्वत ऊपर, जिनसे बहती सरिता धार॥
मध्य सरोवर में मणिमय शुभ, कमल खिले हैं अपरम्पार।
कमलों पर श्री आदि देवियाँ, वास करें जो सह परिवार॥
एकलाख चालीस सहस अरु, एक सौ पन्द्रह कमल विशेष।
प्रथम सरोवर में जिनगृह युत, शोभित जिनमें रहे जिनेश॥
गंगादिक मानो बहकर के, करती हैं जिन का अभिषेक।
इस प्रकार सरवर कमलादिक, सहित कुलाचल हैं प्रत्येक॥
सिंहासन है कांतिमान शुभ, चौंसठ चँवर ढौरते देव।
भामण्डल शोभित होता है, देव दुन्दुभि बजे सदैव॥
सिर पर तीन छत्र हैं पावन, कल्पवृक्ष है शोभावान।
दिव्य ध्वनि खिरती है प्रभु की, पुष्पवृष्टि सुर करते आन॥
सुर नर विद्याधर मंदिर में, भक्ती करने आते हैं।
इन्द्र ध्वजा लेकर हाथों में, शिखर पे स्वयं चढ़ाते हैं॥
सप्तक्षेत्र का करें विभाजन, यही कुलाचल पर्वत खास।
भोग भूमि अरु कर्म भूमियों, में मानव का रहा निवास॥
वीतराग मुद्रा को लखकर, प्राणी होते भाव विभोर।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा करके, नाचें गावें चारों ओर॥
मंगलमय प्रभु के दर्शन से, जीवन मंगल हो जाए।
जिन सूरज को लखकर जैसे, मोह महातम खो जाए॥
भक्त भावना भाते भगवन्, चरण शरण में ले लेना।
'विशद' आपने शिव पद पाया, हमको भी शिव पद देना॥

दोहा– **शिव नगरी के ईश तुम, शिव पद के दातार।**
शिव पद पाने के लिए, वन्दन बारम्बार।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसम्बन्धिषट्कुलाचलस्थितसिद्धकूटजिनालयस्थ-सर्वजिनबिंबेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

।।शान्तयेशांतिधारा पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्।।

इन्द्रध्वज की पूजा करने, का अवसर शुभ आया है।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा करने, का सौभाग्य जगाया है॥
'विशद' सौख्य शांति पाते वह, जो प्रभु के गुण गाते हैं।
उच्चादर्श प्राप्त करते जो, शिखर पे ध्वजा चढ़ाते हैं॥

इत्याशीर्वादः

विजय मेरू स्थित सोलह जिनालय पूजा–7

(स्थापना)

पूर्व धातकी खण्ड द्वीप में, विजय मेरू शोभित अभिराम।
लाख चौरासी योजन ऊँचा, जिसमें सोलह हैं जिनधाम॥
चार वनों की चतुर्दिशाओं, में जिनगृह हैं मंगलकार।
आह्वानन् जिन प्रतिमाओं का, हृदय में करते बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरूसम्बन्धि पूर्वापरविदेहस्थित षोडशवक्षारपर्वत सिद्धकूटजिनालयस्थसर्वजिनबिंबसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। ॐ ह्रीं... अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं...अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(चौबोला छंद)

प्रासुक सुरभित नीर सुनिर्मल, स्वर्णपात्र में पूर्ण भरें।
नाश हेतु हम जन्म जरादिक, त्रिभुवन पति पद धार करें॥
विजय मेरू के सोलह जिनगृह, भक्ति भाव से पूज रहे।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, शांती का शुभ स्रोत बहे॥1॥

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरूसम्बन्धि पूर्वापरविदेहस्थषोडशवक्षारपर्वत स्थितसिद्धकूट जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिरी का पीत सुगन्धित, चन्दन तन का ताप हरे।
भव संताप नाश करने को, चर्च रहे पद भक्ति भरे।।
विजय मेरू के सोलह जिनगृह, भक्ति भाव से पूज रहे।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, शांती का शुभ स्रोत बहे।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरूसम्बन्धिपूर्वापरविदेहस्थषोडशवक्षारपर्वत स्थितसिद्धकूट जिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित अनुपम धवल सुअक्षत, के थाली भर पुंज करें।
पद अखण्ड अक्षय हम पाएँ, कर्म श्रृंखला शीघ्र हरें।।
विजय मेरू के सोलह जिनगृह, भक्ति भाव से पूज रहे।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, शांती का शुभ स्रोत बहे।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरूसम्बन्धिपूर्वापरविदेहस्थषोडशवक्षारपर्वत स्थितसिद्धकूट जिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

कमल केतकी कुन्द पुष्प ले, त्रिभुवन पति के चरण जजें।
काम रोग का कर विनाश हम, निज स्वभाव से शीघ्र सजें।।
विजय मेरू के सोलह जिनगृह, भक्ति भाव से पूज रहे।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, शांती का शुभ स्रोत बहे।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरूसम्बन्धिपूर्वापरविदेहस्थषोडशवक्षारपर्वत स्थितसिद्धकूट जिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत के व्यंजन शुद्ध बनाकर, पूजाकर शुभ थाल भरें।
क्षुधा वेदना नाश हेतु प्रभु, पद पंकज में भेंट करें।।
विजय मेरू के सोलह जिनगृह, भक्ति भाव से पूज रहे।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, शांती का शुभ स्रोत बहे।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरूसम्बन्धिपूर्वापरविदेहस्थषोडशवक्षारपर्वत स्थितसिद्धकूट जिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत कपूर मय बाती रखकर, रत्न दीप प्रद्योत करें।
मोह महातम दूर हटाकर, निज आतम उद्योत करें।।
विजय मेरू के सोलह जिनगृह, भक्ति भाव से पूज रहे।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, शांती का शुभ स्रोत बहे।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरूसम्बन्धिपूर्वापरविदेहस्थषोडशवक्षारपर्वत स्थितसिद्धकूट जिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूपायन में धूप दशांगी, खेकर दश दिश महकाएँ।
कर्म नाशकर तव पद पंकज, जिन गुण की सम्पत्ति पाएँ।
विजय मेरू के सोलह जिनगृह, भक्ति भाव से पूज रहे।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, शांती का शुभ स्रोत बहे।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरूसम्बन्धिपूर्वापरविदेहस्थषोडशवक्षारपर्वत स्थितसिद्धकूट जिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस-सरस ताजे फल के हम, आज यहाँ पर थाल भरें।
अनुपम मोक्ष महाफल पाने, तव चरणों में आन धरें।।
विजय मेरू के सोलह जिनगृह, भक्ति भाव से पूज रहे।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, शांती का शुभ स्रोत बहे।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरूसम्बन्धिपूर्वापरविदेहस्थषोडशवक्षारपर्वत स्थितसिद्धकूट जिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीर गंध अक्षत कुसुमादिक, चरू दीप शुभ धूप जलें।
फल से पूरित अर्घ्य चढ़ाएँ सम्यक ज्ञान प्रसून खिलें।।
विजय मेरू के सोलह जिनगृह, भक्ति भाव से पूज रहे।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, शांती का शुभ स्रोत बहे।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरूसम्बन्धि पूर्वापरविदेहस्थषोडशवक्षारपर्वत स्थितसिद्धकूट जिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **तीन लोक के नाथ तुम, त्रिभुवन के गुरु आप।**
त्रय धारा देते चरण, मिटे सकल संताप।। शान्तये शांतिधारा

दोहा– **महामंत्र हो तुम प्रभो! महामंत्र तव नाम।**
पुष्पांजलि करते यहाँ, करके चरण प्रणाम।। पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

अर्घ्यावली

दोहा– **विजय मेरू पर जानिए, सोलह श्री जिनधाम।**
पुष्पाञ्जलि कर पूजते, उनको विनत प्रणाम।।

मण्डलस्योपरि

(शम्भू छन्द)

पूर्व धातकी खण्ड द्वीप में, विजय सुमेरू है शुभकार।
भद्रशाल वन में चैत्यालय, पूरब में सोहे मनहार॥
रत्नजड़ित अति शोभा मण्डित, जिन मंदिर है मंगलकार।
श्रेष्ठ विराजित जिनबिम्बों को, वन्दन मेरा बारम्बार॥1॥

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीप विजयसुमेरूसम्बन्धित भद्रशालवन पूर्वदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्व धातकी खण्ड द्वीप में, विजय सुमेरू है शुभकार।
भद्रशाल वन में चैत्यालय, दक्षिण में सोहे मनहार॥
रत्नजड़ित अति शोभा मण्डित, जिन मंदिर है मंगलकार।
श्रेष्ठ विराजित जिनबिम्बों को, वन्दन मेरा बारम्बार॥2॥

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीप विजयसुमेरूसम्बन्धित भद्रशालवन दक्षिणदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्व धातकी खण्ड द्वीप में, विजय सुमेरू है शुभकार।
भद्रशाल वन में चैत्यालय, पश्चिम में सोहे मनहार॥
रत्नजड़ित अति शोभा मण्डित, जिन मंदिर है मंगलकार।
श्रेष्ठ विराजित जिनबिम्बों को, वन्दन मेरा बारम्बार॥3॥

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीप विजयसुमेरूसम्बन्धित भद्रशालवन पश्चिमदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्व धातकी खण्ड द्वीप में, विजय सुमेरू है शुभकार।
भद्रशाल वन में चैत्यालय, उत्तर में सोहे मनहार॥
रत्नजड़ित अति शोभा मण्डित, जिन मंदिर है मंगलकार।
श्रेष्ठ विराजित जिनबिम्बों को, वन्दन मेरा बारम्बार॥4॥

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीप विजयसुमेरूसम्बन्धित भद्रशालवन उत्तरदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(छन्द तोटक)

शुभ पूर्व धातकी खण्ड जान, है विजय मेरू जिसमें प्रधान।
शुभ नन्दन वन की अलग शान, पूरब में मन्दिर है महान्॥

रत्नों से मण्डित जो विशेष, शोभित होते जिसमें जिनेश।
हम पूजा करते बार-बार, चरणों में करते नमस्कार॥5॥

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीप विजयसुमेरूसम्बन्धित नंदनवन पूर्वदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ पूर्व धातकी खण्ड जान, है विजय मेरू जिसमें प्रधान।
शुभ नन्दन वन की अलग शान, दक्षिण में मन्दिर है महान्॥
रत्नों से मण्डित जो विशेष, शोभित होते जिसमें जिनेश।
हम पूजा करते बार-बार, चरणों में करते नमस्कार॥6॥

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीप विजयसुमेरूसम्बन्धित नंदनवन दक्षिणदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ पूर्व धातकी खण्ड जान, है विजय मेरू जिसमें प्रधान।
शुभ नन्दन वन की अलग शान, पश्चिम में मन्दिर है महान्॥
रत्नों से मण्डित जो विशेष, शोभित होते जिसमें जिनेश।
हम पूजा करते बार-बार, चरणों में करते नमस्कार॥7॥

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीप विजयसुमेरूसम्बन्धित नंदनवन पश्चिमदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ पूर्व धातकी खण्ड जान, है विजय मेरू जिसमें प्रधान।
शुभ नन्दन वन की अलग शान, उत्तर में मन्दिर है महान्॥
रत्नों से मण्डित जो विशेष, शोभित होते जिसमें जिनेश।
हम पूजा करते बार-बार, चरणों में करते नमस्कार॥8॥

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीप विजयसुमेरूसम्बन्धित नंदनवन उत्तरदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छन्द)

पूर्व धातकी खण्ड द्वीप में, विजय मेरू जानिए।
सौमनस वन दिशा पूरब, में जिनालय मानिए॥
अर्घ्य हम करते समर्पित, जिन प्रभु के चरण में।
जग की शरण को छोड़कर के, आ गये प्रभु शरण में॥9॥

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीप विजयसुमेरूसम्बन्धित सौमनसवन पूर्वदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्व धातकी खण्ड द्वीप में, विजय मेरू जानिए।
सौमनस वन दिशा दक्षिण, में जिनालय मानिए।।
अर्घ्य हम करते समर्पित, जिन प्रभु के चरण में।
जग की शरण को छोड़कर के, आ गये प्रभु शरण में।।10।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीप विजयसुमेरूसम्बन्धित सौमनसवन दक्षिणदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्व धातकी खण्ड द्वीप में, विजय मेरू जानिए।
सौमनस वन दिशा पश्चिम, में जिनालय मानिए।।
अर्घ्य हम करते समर्पित, जिन प्रभु के चरण में।
जग की शरण को छोड़कर के, आ गये प्रभु शरण में।।11।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीप विजयसुमेरूसम्बन्धित सौमनसवन पश्चिमदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्व धातकी खण्ड द्वीप में, विजय मेरू जानिए।
सौमनस वन दिशा उत्तर, में जिनालय मानिए।।
अर्घ्य हम करते समर्पित, जिन प्रभु के चरण में।
जग की शरण को छोड़कर के, आ गये प्रभु शरण में।।12।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीप विजयसुमेरूसम्बन्धित सौमनसवन उत्तरदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(मोतियादाम छन्द)

धातकी पूरब में मनहार, सुमेरू विजय रहा शुभकार।
श्रेष्ठ वन पाण्डुक रहा महान्, जिनालय पूरब में शुभ मान।।
विराजे जिसमें श्री जिनेश, दिगम्बर है जिनका शुभ भेष।
चढ़ाते उनके चरणों अर्घ्य, प्राप्त हो हमको सुपद अनर्घ्य।।13।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीप विजयसुमेरूसम्बन्धित पाण्डुकवन पूर्वदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धातकी पूरब में मनहार, सुमेरू विजय रहा शुभकार।
श्रेष्ठ वन पाण्डुक रहा महान्, जिनालय दक्षिण में शुभ मान।।

विराजे जिसमें श्री जिनेश, दिगम्बर है जिनका शुभ भेष।
चढ़ाते उनके चरणों अर्घ्य, प्राप्त हो हमको सुपद अनर्घ्य।।14।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीप विजयसुमेरूसम्बन्धित पाण्डुकवन दक्षिणदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धातकी पूरब में मनहार, सुमेरू विजय रहा शुभकार।
श्रेष्ठ वन पाण्डुक रहा महान्, जिनालय पश्चिम में शुभ मान।।
विराजे जिसमें श्री जिनेश, दिगम्बर है जिनका शुभ भेष।
चढ़ाते उनके चरणों अर्घ्य, प्राप्त हो हमको सुपद अनर्घ्य।।15।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीप विजयसुमेरूसम्बन्धित पाण्डुकवन पश्चिमदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धातकी पूरब में मनहार, सुमेरू विजय रहा शुभकार।
श्रेष्ठ वन पाण्डुक रहा महान्, जिनालय उत्तर में शुभ मान।।
विराजे जिसमें श्री जिनेश, दिगम्बर है जिनका शुभ भेष।
चढ़ाते उनके चरणों अर्घ्य, प्राप्त हो हमको सुपद अनर्घ्य।।16।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीप विजयसुमेरूसम्बन्धित पाण्डुकवन उत्तरदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **सोलह जिनगृह में सुजिन, सत्रह सौ अठवीस।**
झुका रहे जिनके चरण, में नत हो हम शीश।।

ॐ ह्रीं षोडश जिनालयस्थ सर्व जिनबिम्बेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

।।शान्तयेशांतिधारा पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्।।

जाप्य–ॐ ह्रीं अर्हं शाश्वत् जिनालयस्थसर्वजिनबिंबेभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा– **वाँञ्छा मेरी पूर्ण हो, तव पद में भगवान।**
गुण पाने को आज हम, करते हैं गुणगान।।

(चौबोला छन्द)

मध्य लोक के मध्य में भाई, जम्बूद्वीप शुभ बतलाया।
लवण समुद्र घेरता उसको, खारे जल का कहलाया।।

श्रेष्ठ धातकी खण्डद्वीप है, लवण समुद्र के चारों ओर।
इष्वाकार विभाजित करता, पूरब पश्चिम दोनों छोर।।
विजयमेरू शुभ पूर्व धातकी, खण्ड के बीच रहा शुभकार।
लाख चौरासी योजन ऊँचा, स्वर्णाभा सम है मनहार।।
पृथ्वी तल से शिखर भाग तक, हरे भरे वन चार महान्।
पुष्प फलों से शोभित होते, वृक्षों की अपनी पहिचान।।
भद्रशाल वन पृथ्वीतल पर, पाँच सौ योजन रहा महान।
फिर नन्दन वन साढ़े पचपन, सहस बताया योजन मान।।
ऊपर श्रेष्ठ सौमनस वन हैं, योजन अट्ठाइस सहस प्रमाण।
फिर पाण्डुक वन शोभित होता, पाण्डुकशिला का है स्थान।।
चतुर्दिशाओं में जिन मंदिर, शोभा पाते अपरम्पार।
घंटा तोरण धूप घटों से, युक्त रहे जो अतिशयकार।।
हैं जिनबिम्ब अकृत्रिम जिनमें, रत्नमयी स्वर्णाभावान।
सुर नर विद्याधर चरणों में, आकर करते हैं गुणगान।।
जिन देवाधीदेव अनादी, और अनन्त कहाते हैं।
स्वयं सिद्ध निर्मल अविकारी, जग से पूजे जाते हैं।।
सत् श्रद्धान करें तत्त्वों पर, सम्यक् ज्ञान जगाते हैं।
यह संसार असार जानकर, सम्यक् चारित पाते हैं।।
बनकर के निर्मोही साधक, आतम ध्यान लगाते हैं।
नर जीवन का सार यही है, नहीं आज तक जाना है।।
मोह तिमिर से मोहित होकर, निज को न पहिचाना है।
भव सागर में पतित जनों को, जिन ही एक सहारे हैं।।
आलम्बन देकर के प्रभु ने, भव्य जीव कई तारे हैं।
काल अनादी से भक्तों का, भगवन् आपसे नाता है।।
जो गुणगाता है भाव सहित, वह निश्चय से फल पाता है।
जो कर्म करें मानव जैसे, वैसा उसका फल मिलता है।।
भक्ती करने से भक्तों के, जीवन का उपवन खिलता है।
हम भक्त बने हे प्रभु! आज, तव पद में शीश झुकाते हैं।।
अल्पज्ञ रहे फिर भी भगवन्, हम गीत आपके गाते हैं।।

दोहा– **उत्तम नर भव प्राप्त कर, करने हम कल्याण।**
जिन भक्ती करके ''विशद'', पाएँ जीवन दान।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थविजयमेरूसंबंधिषोडशजिनालयस्थसर्वजिनबिंबेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

।।शान्तयेशांतिधारा पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्।।

इन्द्रध्वज की पूजा करने, का अवसर शुभ आया है।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा करने, का सौभाग्य जगाया है।।
'विशद' सौख्य शांति पाते वह, जो प्रभु के गुण गाते हैं।
उच्चादर्श प्राप्त करते जो, शिखर पे ध्वजा चढ़ाते हैं।।

इत्याशीर्वादः

विजय मेरू सम्बन्धि चार गजदंत जिनालय पूजा–8

(स्थापना)

विजयमेरू अनुपम कहलाया, जिसकी विदिशा में गजदंत।
बने जिनालय जिनके ऊपर, शाश्वत् रहे अनादि अनन्त।।
जिनगृह में जिनबिम्ब विराजे, रत्नमयी हैं मंगलकार।
विधिवत पूजा करते हम भी, आज यहाँ पर योग सम्हार।

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरूसंबन्धिचतुर्गजदंतपर्वत सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिम्ब समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। ॐ ह्रीं...अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। ॐ ह्रीं...अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

(नरेन्द्र छंद)

जन्म लिया हमने भव भव में, भव-भव नीर पिया है।
तृप्ति नहीं मिल पाई अतः अब, जल से धार दिया है।।
आज यहाँ पर पूज रहे हैं, प्रभु को मन वच तन से।
रत्नत्रय निधि मिले नाथ! अब, छूटें भव बन्धन से।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरूसंबन्धिचतुर्गजदंतपर्वत सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिभुवन के सब भोग किए हैं, उनसे शांति न पाई।
चन्दन चढ़ा रहे हम अब यह, शांती पाने भाई।।

आज यहाँ पर पूज रहे हैं, प्रभु को मन वच तन से।
रत्नत्रय निधि मिले नाथ! अब, छूटें भव बन्धन से।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरूसंबन्धिचतुर्गजदंतपर्वत सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह शत्रु ने आतम वैभव, खण्ड-खण्ड कर डाला।
अक्षत से पूजा करते सुख, अक्षय देने वाला।।
आज यहाँ पर पूज रहे हैं, प्रभु को मन वच तन से।
रत्नत्रय निधि मिले नाथ! अब, छूटें भव बन्धन से।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरूसंबन्धिचतुर्गजदंतपर्वत सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

काम रोग ने हमें सताया, किया आत्म को काला।
पुष्प चढ़ाते नाथ चरण में, मिटे कर्म का जाला।।
आज यहाँ पर पूज रहे हैं, प्रभु को मन वच तन से।
रत्नत्रय निधि मिले नाथ! अब, छूटें भव बन्धन से।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरूसंबन्धिचतुर्गजदंतपर्वत सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षुधा व्याधि भोजन करने से, न मेरी मिट पाई।
यह नैवेद्य चढ़ाते हमको, निज पद की सुधि आई।।
आज यहाँ पर पूज रहे हैं, प्रभु को मन वच तन से।
रत्नत्रय निधि मिले नाथ! अब, छूटें भव बन्धन से।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरूसंबन्धिचतुर्गजदंतपर्वत सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: नैवेद्य निर्वपामीति स्वाहा।

मोह तिमिर से अंध हुए हम, निज को जान न पाए।
आत्म ज्ञान उद्योत हेतु यह, घृत का दीप जलाए।।
आज यहाँ पर पूज रहे हैं, प्रभु को मन वच तन से।
रत्नत्रय निधि मिले नाथ! अब, छूटें भव बन्धन से।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरूसंबन्धिचतुर्गजदंतपर्वत सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट कर्म यह काल अनादी, हमको सता रहे हैं।
धूप जलाते तव चरणों में, तुमने कर्म हरे हैं।।

आज यहाँ पर पूज रहे हैं, प्रभु को मन वच तन से।
रत्नत्रय निधि मिले नाथ! अब, छूटें भव बन्धन से।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरूसंबन्धिचतुर्गजदंतपर्वत सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अविनश्वर फल की चाहत में, देव कई हम पूजे।
मोक्ष महाफल देने वाले, नहीं आप सम दूजे।।
आज यहाँ पर पूज रहे हैं, प्रभु को मन वच तन से।
रत्नत्रय निधि मिले नाथ! अब, छूटें भव बन्धन से।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरूसंबन्धिचतुर्गजदंतपर्वत सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जलफल आदिक अष्ट द्रव्य का, अर्घ्य बनाकर लाए।
सर्वोत्तम फल पाने हेतू, अर्घ्य चढ़ाने आए।।
आज यहाँ पर पूज रहे हैं, प्रभु को मन वच तन से।
रत्नत्रय निधि मिले नाथ! अब, छूटें भव बन्धन से।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरूसंबन्धिचतुर्गजदंतपर्वत सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **पंथ चलूँ मैं मोक्ष का, मिले ज्ञान की राह।**
शांतीधारा कर मिटे, अष्ट कर्म की दाह।।

शान्तये शांतिधारा

दोहा– **कमल चमेली मोंगरा, सुरभित हर सिंगार।**
पुष्पांजलि कर पूजते, पाने शिव आधार।।

।।पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

प्रत्येक अर्घ्य

दोहा– **विजय मेरू चारों विदिश, चार कहे गजदंत।**
पूजें जिन मंदिर सुजिन, पाने भव का अंत।।

(मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्)

(वीर छद)

विजय मेरू आग्नेय कोंण में, 'सोमनस्य' गजदंत महान।
रजतमयी शुभ सप्त कूट में, सिद्ध कूट भी रहा प्रधान।।

जिन मंदिर में जिन प्रतिमाएँ, शोभित होतीं सूर्य समान।
अर्घ्य चढ़ाकर करते हैं हम, भावसहित जिन का गुणगान॥1॥

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरूसम्बंधिसौमनसगजदंतसिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विजय मेरू नैऋत्य कोंण में, 'विद्युतप्रभ' गजदन्त विशेष।
स्वर्ण समान शोभता अनुपम, जिस पर सोहें श्री जिनेश॥
जिन मंदिर में जिन प्रतिमाएँ, शोभित होतीं सूर्य समान।
अर्घ्य चढ़ाकर करते हैं हम, भावसहित जिन का गुणगान॥2॥

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरूसम्बंधिविद्युतप्रभगजदंतस्थित सिद्धकूटजिनालयस्थ जिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विजय मेरू वायव्य कोंण में, रहा 'गंधमादन' शुभकार।
कंचन सम द्युति सप्तकूट में, सिद्ध कूट है मंगलकार॥
जिन मंदिर में जिन प्रतिमाएँ, शोभित होतीं सूर्य समान।
अर्घ्य चढ़ाकर करते है हम, भावसहित जिन का गुणगान॥3॥

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरूसम्बंधिगंधमादनगजदंतस्थित सिद्धकूटजिनालयस्थ जिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विजय मेरू ईशान कोंण में, 'माल्यवान' गजदंत विशेष।
नील मणी सम नव कूटों में, सिद्ध कूट में रहे जिनेश॥
जिन मंदिर में जिन प्रतिमाएँ, शोभित होतीं सूर्य समान।
अर्घ्य चढ़ाकर करते है हम, भावसहित जिन का गुणगान॥4॥

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरूसम्बंधिमाल्यवानगजदंतस्थित सिद्धकूटजिनालयस्थ जिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विजय मेरू की चारों विदिशा, में गजदंत बने हैं चार।
उनके जिनगृह जिनबिम्बों को, वन्दन मेरा बारम्बार॥
जिन मंदिर में जिन प्रतिमाएँ, शोभित होतीं सूर्य समान।
अर्घ्य चढ़ाकर करते है हम, भावसहित जिन का गुणगान॥5॥

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरूसम्बंधिविदिशायांचतुर्गजदंताचलस्थित सिद्धकूटजिनालयस्थ सर्वजिनबिंबेभ्य: पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्यपुष्पांजलि:।

जाप– ॐ ह्रीं अर्हं शाश्वत् जिनालयस्थसर्वजिनबिंबेभ्यो नम:।

जयमाला

दोहा– **गजदन्ताचल चार के, जिनगृह जिन भगवान।**
जयमाला गाते यहाँ, बनने सिद्ध समान॥

चौपाई

जय गजदन्ताचल है प्रधान, जय सिद्धकूट जिसमें महान।
गिरी हाथी के दाँतों समान, हैं पंचशतक योजन प्रमाण॥
जय जिनमंदिर शाश्वत् विशेष, जय रत्नमयी जिनमें जिनेश।
जय जय जिनका शुभ मंत्र नाम, पढ़ते जग प्राणी कर प्रणाम॥
जय जय अकृत्रिम हैं विशाल, जो पूज्य रहे जग में त्रिकाल।
नग सौमनस्य जानो महान, अरु विद्युत प्रभ है शोभमान॥
जो निषिधाचल तक रहा पास, पंच योजन गाया उच्च खास।
जय गंध मादनाचल प्रधान, शुभ माल्यवान गजदंत मान॥
फैला नीलाचल तक विशेष, है सिद्धकूट जिनगृह जिनेश।
जो ज्योतिमान मंगल स्वरूप, जो शोभापावे स्वर्ण रूप॥
नग माल्यवान के मध्य भाग, है गुफा करे सरिता विभाग।
नग विद्युतप्रभ के गुफा द्वार, सीतोदा नदि बहती अपार॥
गिरी के तल में ऊपर सुजान, चारों दिश वेदी है प्रधान।
उपवन सुंदर है जहाँ खास, पशु पक्षी करते जहाँ वास॥
बावड़ियों में हैं कमल श्रेष्ठ, जो रत्नमयी सोहें यथेष्ठ।
सुर विद्याधरियाँ जहाँ आन, क्रीड़ा करती हैं नृत्यगान॥
चारण ऋद्धीधर कर प्रवेश, निजआत्म ध्यान करते विशेष।
यद्यपि पुद्गल की है माया, जितना जो भी वर्णन गाया॥
पुद्गल वर्णादी युत सोहे, जीवों के मन को जो मोहे।
इससे न मेरा है नाता, ये मोहकर्म से सब भाता॥
यह मोहकर्म है दुखदायी, यह घुमा रहा जग में भाई।
जब से प्रभु का दर्शन पाया, श्रद्धान हृदय मेरे आया॥
निजपर का भेद हृदय जागा, निज गुण में मन मेरा लागा।
अब द्वार आपके हम आए, निज शक्ति प्रकट मम हो जाए॥

निज आतम में हम रम जाएँ, न और जगत में भटकाएँ।
दुख इष्ट व्योगादिक सारे, हों कर्म नाश सब मतवारे।।
हम आत्म सुधामृत को पाएँ, निज 'विशद' ज्ञान को प्रगटाएँ।
हे नाथ! भावना पूर्ण करो, मम क्लेश शीघ्र अब पूर्ण हरो।।

दोहा– **महिमा तव गुण की अगम, कोई न पावे पार।**
गुण गावें जो भाव से, उनका हो उद्धार।।

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरो: गजदन्ताचलस्थितसिद्धकूटजिनालयस्थसर्वजिनबिंबेभ्य: जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

।।शान्तयेशांतिधारा पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्।।

इन्द्रध्वज की पूजा करने, का अवसर शुभ आया है।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा करने, का सौभाग्य जगाया है।।
'विशद' सौख्य शांति पाते वह, जो प्रभु के गुण गाते हैं।
उच्चादर्श प्राप्त करते जो, शिखर पे ध्वजा चढ़ाते हैं।।

इत्याशीर्वाद:

विजयमेरू शाल्मलि वृक्ष जिनालय पूजा–9

स्थापना

विजय मेरू के उत्तर कुरु में, रहा धातकी वृक्ष प्रधान।
इसी मेरू के देव कुरू में, वृक्ष शाल्मलि रहा महान।।
एक-एक शाखा के ऊपर, जिन मंदिर हैं मंगलकार।
सुर विद्याधर पूजा करते, आह्वानन् कर अघतम हार।।

ॐ ह्रीं श्री विजयमेरूसंबन्धिधातकीशाल्मलिवृक्षसम्बन्धीद्वयजिनालयस्थसर्व जिनबिंबसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। ॐ ह्रीं...अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनं। ॐ ह्रीं...अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

(चामर छंद)

नीर क्षीर सिन्धु का सुभृंग में भराइये।
श्री जिनेन्द्र पाद में सुधार त्रय कराइये।।

वृक्ष के जिनेन्द्र को, सुरेन्द्र पूजते अहा।
श्री जिनेन्द्र वन्दना का, भाव मेरा रहा।।1।।

ॐ ह्रीं विजयमेरूसम्बन्धिधातकीशाल्मलिवृक्षस्थितसिद्धकूट जिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: जलं निर्व.स्वाहा।

चन्दनादि गार के जिन, पाद में सु लाइये।
भवाताप को विनाश, सिद्ध सौख्य पाइये।।
वृक्ष के जिनेन्द्र को, सुरेन्द्र पूजते अहा।
श्री जिनेन्द्र वन्दना का, भाव मेरा रहा।।2।।

ॐ ह्रीं विजयमेरूसम्बन्धिधातकीशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: चंदनं निर्व.स्वाहा।

फैन के समान श्वेत, शालि पुंज लाइये।
श्री जिनेन्द्र पाद में, चढ़ाय हर्ष पाइये।।
वृक्ष के जिनेन्द्र को, सुरेन्द्र पूजते अहा।
श्री जिनेन्द्र वन्दना का, भाव मेरा रहा।।3।।

ॐ ह्रीं विजयमेरूसम्बन्धिधातकीशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: अक्षतं निर्व.स्वाहा।

भांति-भांति के सुमन सुबाग से मंगाइये।
श्री जिनेन्द्र पाद में, चढ़ाय सौख्य पाइये।।
वृक्ष के जिनेन्द्र को, सुरेन्द्र पूजते अहा।
श्री जिनेन्द्र वन्दना का, भाव मेरा रहा।।4।।

ॐ ह्रीं विजयमेरूसम्बन्धिधातकीशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: पुष्पं निर्व.स्वाहा।

सरस चरू शुद्ध सद्य, हाथ से बनाइये।
जिनेन्द्र पाद में चढ़ाय, पूर्ण तृप्ति पाइये।।
वृक्ष के जिनेन्द्र को, सुरेन्द्र पूजते अहा।
श्री जिनेन्द्र वन्दना का, भाव मेरा रहा।।5।।

ॐ ह्रीं विजयमेरूसम्बन्धिधातकीशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: नैवेद्यं निर्व.स्वाहा।

स्वर्ण दीप लायके, कपूर को जलाइये।
श्री जिनेन्द्र के समक्ष, आरती को आइये॥
वृक्ष के जिनेन्द्र को, सुरेन्द्र पूजते अहा।
श्री जिनेन्द्र वन्दना का, भाव मेरा रहा॥6॥

ॐ ह्रीं विजयमेरूसम्बन्धिधातकीशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: दीपं निर्व.स्वाहा।

शुद्ध ले सुगंध धूप, अग्नि में जलाइये।
कर्म काठ को जलाय, अपूर्व सौख्य पाइये॥
वृक्ष के जिनेन्द्र को, सुरेन्द्र पूजते अहा।
श्री जिनेन्द्र वन्दना का, भाव मेरा रहा॥7॥

ॐ ह्रीं विजयमेरूसम्बन्धिधातकीशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: धूपं निर्व.स्वाहा।

श्री फलादि लायके, जिनार्चना को आइये।
श्री जिनेन्द्र को चढ़ाय, आत्म सौख्य पाइये॥
वृक्ष के जिनेन्द्र को, सुरेन्द्र पूजते अहा।
श्री जिनेन्द्र वन्दना का, भाव मेरा रहा॥8॥

ॐ ह्रीं विजयमेरूसम्बन्धिधातकीशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: फलं निर्व.स्वाहा।

नीर गंध शालि पुष्प, आदि सब मिलाइये।
अर्घ्य शुभ चढ़ाय के, अपूर्व सौख्य पाइये॥
वृक्ष के जिनेन्द्र को, सुरेन्द्र पूजते अहा।
श्री जिनेन्द्र वन्दना का, भाव मेरा रहा॥9॥

ॐ ह्रीं विजयमेरूसम्बन्धिधातकीशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा– **निर्मल जल की धार, देते है प्रभू पाद में।**
पाने भव से पार, पूजा करते आज हम॥
॥शान्तये शान्तिधारा॥

दोहा– **भांति-भांति के पुष्प ले, आये जिन दरबार।**
पुष्पांजलि अर्पण किए, मिले आत्म सुखसार॥
॥पुष्पांजलिं क्षिपेत्॥

अथ अर्घ्यावली

दोहा– **वृक्ष धातकी शाल्मलि, पृथ्वी कायिक जान।**
पूर्व धातकी खण्ड में, पूज्य रहे भगवान॥
(मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्॥)

प्रत्येक अर्घ्य

विजय मेरू ईशान कोंण में, वृक्ष 'आँवले' सम शुभकार।
उत्तर शाखा पर तरुवर की, जिनगृह सोहे मंगलकार॥
सुरनर नाग नरेन्द्र पूजते, जिन प्रतिमाएँ शुभकारी।
उन प्रतिमाओं के चरणों में, देते ढोक हैं नर नारी॥1॥

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरूसंबंधिधातकीवृक्षस्थितजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विजय मेरू नैऋत्य कोंण में, 'शाल्मलि' तरु है मनहार।
दक्षिण शाखा पर तरुवर की, जिन मंदिर है भव तमहार॥
सुरनर नाग नरेन्द्र पूजते, जिन प्रतिमाएँ शुभकारी।
उन प्रतिमाओं के चरणों में, देते ढोक हैं नर नारी॥2॥

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरूसंबंधिशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वृक्ष धातकी और शाल्मलि, पूर्व धातकी खण्ड मँझार।
इनकी शाखाओं पर जिनगृह, शुभ जिनबिम्ब रहे मनहार॥
सुरनर नाग नरेन्द्र पूजते, जिन प्रतिमाएँ शुभकारी।
उन प्रतिमाओं के चरणों में, देते ढोक हैं नर नारी॥3॥

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरूसम्बन्धिधातकीशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। शांतये शांतिधारा। दिव्यपुष्पांजलि: क्षिपेत।

जाप्य–ॐ ह्रीं अर्हं शाश्वत् जिनालयस्थसर्वजिनबिंबेभ्यो नम:।

जयमाला

दोहा– **विजय मेरू ईशान में, वृक्ष धातकी जान।**
दिश नैऋत्य में शाल्मलि, में सोहें भगवान॥
एक तरु परिवार में, दो लख अस्सी हजार।
दो सौ अड़तिस बिम्ब जिन, शाश्वत् मंगलकार॥

(हरिगीता छंद)

जय जय अनादि अनन्त सुन्दर, जिन भवन शाश्वत् रहे।
जय जय अकृत्रिम जिन प्रभू, त्रैलोक्य में अनुपम कहे॥
जय पूज्य सुरनर नाग खेचर, आदि से कहलाए हैं।
जय वीतरागी निरविकारी, पूज्यता जग पाए हैं॥
सुर गिरी विजय उत्तर दिशी, शुभ भोग भू उत्तर कुरु।
तरु धातकी में वन्दना को, इन्द्र आते सुर गुरु॥
उत्तुंग मनहर मणिमयी हैं, हरित वर्णी जानिए।
उनपे अकृत्रिम जिनसदन, शाश्वत् रतनमय मानिए॥
जिनगृह अकृत्रिम एक शाखा, पर तरू की गाए हैं।
हैं तीन शाखाओं पे सुरगृह, श्रेष्ठ जो बतलाए हैं॥
व्यंतर रहें जिनमें स्वयं, सम्यक्त्व के धारी रहे।
परिवार तरु अगणित बताए, देव भी उनमें कहे॥
हैं आँवले सम फल मणीमय, मरकत मणी के पत्र हैं।
कोंपल पद्म मणि के बने हैं, पुष्प बहु सर्वत्र हैं॥
सब देवगृह में भी परम, जिनधाम मंगलमय रहे।
जो वन्दना करते प्रभू की, जीव वह अनुपम कहे॥
वहु देव देवी अप्सराएँ, इन्द्रगण आते अहा।
जिन वन्दना कर पूजते, श्रद्धान का फल यह रहा॥
संगीत बजते विविध भाई, किंकणी घंटा यथा।
शुभ नृत्य करते ताल देकर, वीणा बजाते हैं तथा॥
अध्यात्म योगी, गणधरादिक, ध्यान करते हैं सभी।
मुनि वीतरागी तत्त्व ज्ञानी, मोक्ष पाते हैं तभी॥

कई देव विद्याधर युगल, जिन वन्दना करते वहाँ।
आकाश गामी ऋद्धिधारी, ऋषीगण आते जहाँ॥
हम भक्ति श्रद्धा भाव से, हे! नाथ पद में आए हैं।
जन्मादि रोग निवारने को, अर्ज अपनी लाए हैं॥
हे दीन बन्धू कृपा वत्सल, कृपा ऐसी कीजिए।
अब 'विशद'! अपने भक्त की, श्रेणी में हमको लीजिए॥

(घत्तानन्द छंद)

जय जय जिन देवा, हरिकृत सेवा, त्रिभुवन पति अन्तर्यामी।
कर्मों के छेवा, भव सर खेवा, मोक्ष महल के पथगामी॥

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरूसम्बन्धिशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

।।शान्तयेशांतिधारा पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्।।

इन्द्रध्वज की पूजा करने, का अवसर शुभ आया है।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा करने, का सौभाग्य जगाया है॥
'विशद' सौख्य शांति पाते वह, जो प्रभु के गुण गाते हैं।
उच्चादर्श प्राप्त करते जो, शिखर पे ध्वजा चढ़ाते हैं॥

इत्याशीर्वादः

विजय मेरू सम्बन्धी सोलह वक्षार पर्वतस्य जिनालय पूजा–10

स्थापना

विजय मेरू पूर्वापर मानो, पूर्व धातकी खण्ड में जानो।
सोलह शुभ वक्षार बताए, पूर्वापर विदेह कहलाए॥
जिनगृह उन पर हैं शुभकारी, जिन प्रतिमाएँ मंगलकारी।
जिनको हम उर में तिष्ठाएँ, पद में सादर शीश झुकाएँ॥

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरूसम्बन्धिपूर्वापरविदेहस्थितषोडशवक्षारपर्वतस्थितसिद्धकूट जिनालयस्थसर्वजिनबिंबसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। ॐ ह्रीं...अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं...अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(कुसुमलता छंद)

विषय भोग में फँसने से, जीवन यह वृथा गँवाया है।
न जन्म मरण के चक्कर से, छुटकारा, हमने पाया है॥
शुभ विजय मेरू के पूर्वापर, वक्षार अचल बतलाए हैं।
उन पर जिनगृह में जिनवर की, पूजा करने हम आए हैं॥1॥

ॐ ह्रीं श्रीविजमेरूसम्बन्धिपूर्वापरविदेहस्थषोडशवक्षारपर्वत स्थितसिद्धकूट जिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: जलं निर्व.स्वाहा।

अन्तर में निर्मलता पाने, यह चन्दन घिसकर लाए हैं।
मन शांत हुआ न चन्दन से, अतएव शरण में आए हैं॥
शुभ विजय मेरू के पूर्वापर, वक्षार अचल बतलाए हैं।
उन पर जिनगृह में जिनवर की, पूजा करने हम आए हैं॥2॥

ॐ ह्रीं श्रीविजमेरूसम्बन्धिपूर्वापरविदेहस्थषोडशवक्षारपर्वत स्थितसिद्धकूट जिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: चंदनं निर्व.स्वाहा।

निज चेतन की निधियाँ पाने, यह अक्षत धोकर लाए हैं।
अनुपम अक्षय हो प्राप्त हमें, अक्षय पद पाने आए हैं॥
शुभ विजय मेरू के पूर्वापर, वक्षार अचल बतलाए हैं।
उन पर जिनगृह में जिनवर की, पूजा करने हम आए हैं॥3॥

ॐ ह्रीं श्रीविजमेरूसम्बन्धिपूर्वापरविदेहस्थषोडशवक्षारपर्वत स्थितसिद्धकूट जिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: अक्षतं निर्व.स्वाहा।

यह चेतन है निष्काम प्रभू, हम काम नशाने आए हैं।
यह पुष्प सुगन्धित उपवन के, हम यहाँ चढ़ाने लाए हैं॥
शुभ विजय मेरू के पूर्वापर, वक्षार अचल बतलाए हैं।
उन पर जिनगृह में जिनवर की, पूजा करने हम आए हैं॥4॥

ॐ ह्रीं श्रीविजमेरूसम्बन्धिपूर्वापरविदेहस्थषोडशवक्षारपर्वत स्थितसिद्धकूट जिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: पुष्पं निर्व.स्वाहा।

तृष्णा दुख देती है हमको, छुटकारा पाने आए हैं।
अब क्षुधा मिटाने को प्रभुवर, नैवेद्य चढ़ाने लाए हैं॥

शुभ विजय मेरू के पूर्वापर, वक्षार अचल बतलाए हैं।
उन पर जिनगृह में जिनवर की, पूजा करने हम आए हैं॥5॥

ॐ ह्रीं श्रीविजमेरूसम्बन्धिपूर्वापरविदेहस्थषोडशवक्षारपर्वत स्थितसिद्धकूट जिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: नैवेद्यं निर्व.स्वाहा।

हो दूर अंधेरा दीपक से, हमने कई दीप जलाए हैं।
अन्तर का तिमिर नशाने को, हे नाथ! चरण में आए हैं॥
शुभ विजय मेरू के पूर्वापर, वक्षार अचल बतलाए हैं।
उन पर जिनगृह में जिनवर की, पूजा करने हम आए हैं॥6॥

ॐ ह्रीं श्रीविजमेरूसम्बन्धिपूर्वापरविदेहस्थषोडशवक्षारपर्वत स्थितसिद्धकूट जिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: दीपं निर्व.स्वाहा।

क्षय कर्मों का प्रभू नहीं हुआ, जग झंझट में भटकाए हैं।
अब कर्मों का क्षय करने को, यह धूप जलाने लाए हैं॥
शुभ विजय मेरू के पूर्वापर, वक्षार अचल बतलाए हैं।
उन पर जिनगृह में जिनवर की, पूजा करने हम आए हैं॥7॥

ॐ ह्रीं श्रीविजमेरूसम्बन्धिपूर्वापरविदेहस्थषोडशवक्षारपर्वत स्थितसिद्धकूट जिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: धूपं निर्व.स्वाहा।

बादाम सुपाड़ी पिस्तादिक, थाली में भरके लाए हैं।
हम मोक्ष महाफल पाने को, हे नाथ! चढ़ाने आए हैं॥
शुभ विजय मेरू के पूर्वापर, वक्षार अचल बतलाए हैं।
उन पर जिनगृह में जिनवर की, पूजा करने हम आए हैं॥8॥

ॐ ह्रीं श्रीविजमेरूसम्बन्धिपूर्वापरविदेहस्थषोडशवक्षारपर्वत स्थितसिद्धकूट जिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: फलं निर्व.स्वाहा।

जल चन्दन अक्षत पुष्प चरू, दीपक भी श्रेष्ठ जलाए हैं।
शुभ धूप और फल अर्घ्य बना, शाश्वत् पद पाने आए हैं॥
शुभ विजय मेरू के पूर्वापर, वक्षार अचल बतलाए हैं।
उन पर जिनगृह में जिनवर की, पूजा करने हम आए हैं॥9॥

ॐ ह्रीं श्रीविजमेरूसम्बन्धिपूर्वापरविदेहस्थषोडशवक्षारपर्वत स्थितसिद्धकूट जिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **देते शांती धार हम, दोषों का क्षय होय।**
जिन पूजा व्रत में विशद, दोष लगें न कोय॥

।।शान्तये शान्तिधारा।।

दोहा– **जिन पूजा के भाव से, कर्मों का क्षय होय।**
जन्म मरण की श्रृंखला, पुष्पांजलि कर खोय॥

।।पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

प्रत्येक अर्घ्य

दोहा– **पूर्व धातकी खण्ड में, पूर्व विदेह मँझार।**
सोलह गिरी वक्षार के, जिनगृह जिन सुखकार॥

(मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

(सवैया छंद)

पूर्व विदेह नदी सीता के, उत्तर तट वेदी है खास।
'चित्रकूट' वक्षार स्वर्णमय, भद्रशाल है जिसके पास॥
सरिता तट के सिद्धकूट पर, श्री जिन मंदिर रहे महान।
जिनबिम्बों को अर्घ्य चढ़ाकर, करते भाव सहित गुणगान॥1॥

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरूसम्बन्धिपूर्वविदेहस्थचित्रकूटवक्षारपर्वतस्थित सिद्धकूट जिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सीता नदि के उत्तर तट पर, 'पद्म कूट' वक्षार विशेष।
स्वर्ण समान चार कूटों युत, जिसमें जिनगृह रहे जिनेश॥
सरिता तट के सिद्धकूट पर, श्री जिन मंदिर रहे महान।
जिनबिम्बों को अर्घ्य चढ़ाकर, करते भाव सहित गुणगान॥2॥

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरूसम्बन्धिपूर्वविदेहस्थपद्मकूटवक्षारपर्वत स्थितसिद्धकूट जिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्व धातकी खण्ड क्षेत्र में, सीता नदि के उत्तर जान।
'नलिन' कूट वक्षार मनोहर, जिस पर चार कूट पहिचान॥
सरिता तट के सिद्धकूट पर, श्री जिन मंदिर रहे महान।
जिनबिम्बों को अर्घ्य चढ़ाकर, करते भाव सहित गुणगान॥3॥

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरूसम्बन्धिपूर्वविदेहस्थनलिनकूटवक्षारपर्वत स्थितसिद्धकूट जिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'एक-शैल' वक्षार गिरी पर, बावड़ियाँ उपवन मनहार।
देव देवियाँ क्रीड़ा करते, अनुपम कूट शोभते चार॥
सरिता तट के सिद्धकूट पर, श्री जिन मंदिर रहे महान।
जिनबिम्बों को अर्घ्य चढ़ाकर, करते भाव सहित गुणगान॥4॥

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरूसम्बन्धिपूर्वविदेहस्थएकशैलवक्षारपर्वत स्थितसिद्धकूट जिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्व विदेह नदी सीता के, दक्षिण तट पर है वक्षार।
अचल 'त्रिकूट' चारकूटों युत, जिस पर जिनगृह अपरम्पार।
सरिता तट के सिद्धकूट पर, श्री जिन मंदिर रहे महान।
जिनबिम्बों को अर्घ्य चढ़ाकर, करते भाव सहित गुणगान॥5॥

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरूसम्बन्धिपूर्वविदेहस्थत्रिकूटवक्षारपर्वत स्थितसिद्धकूट जिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आगे कूट 'वैश्रवण' आता, सुर वनिताएँ करें विहार।
दर्शन करके श्री जिनवर के, मन में होता हर्ष अपार॥
सरिता तट के सिद्धकूट पर, श्री जिन मंदिर रहे महान।
जिनबिम्बों का अर्घ्य चढ़ाकर, करते भाव सहित गुणगान॥6॥

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरूसम्बन्धिपूर्वविदेहस्थवैश्रवणनामवक्षारपर्वत स्थितसिद्धकूट जिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अंजन' है वक्षार तीसरा, सुर नर मुनि का होय विहार।
रही अलौकिक शोभागिरी की, जिस पर सिद्धकूट मनहार॥
सरिता तट के सिद्धकूट पर, श्री जिन मंदिर रहे महान।
जिनबिम्बों को अर्घ्य चढ़ाकर, करते भाव सहित गुणगान॥7॥

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरूसम्बन्धिपूर्वविदेहस्थअंजनवक्षारपर्वत स्थितसिद्धकूट जिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'आत्मांजन' वक्षार निराला, जहाँ करें मुनिवर निज ध्यान।
सुर विद्याधर युगल रूप में, आकर करते हैं गुणगाान॥
सरिता तट के सिद्धकूट पर, श्री जिन मंदिर रहे महान।
जिनबिम्बों को अर्घ्य चढ़ाकर, करते भाव सहित गुणगान॥8॥

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरूसम्बन्धिपूर्वविदेहस्थआत्मांजनवक्षारपर्वत स्थितसिद्धकूट जिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(जोगीरासा)

दीप धातकी के विदेह में, सीतोदा तट गाया।
भद्रशाल वक्षार पास में, 'श्रद्धावान' कहाया।।
जिस पर सिद्ध कूट में जिनगृह, जिन प्रतिमाएँ भाई।
अर्घ्य चढ़ाकर पूजा करते, पाने जिन प्रभुताई।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरूसम्बन्धिपश्चिमविदेहस्थश्रद्धावानवक्षारपर्वत स्थितसिद्धकूट जिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है वक्षार दूसरा अनुपम ''विजटावान'' कहाये।
सुर नर विद्याधर ऋषिगण भी, आके ध्यान लगाए।।
जिस पर सिद्ध कूट में जिनगृह, जिन प्रतिमाएँ भाई।
अर्घ्य चढ़ाकर पूजा करते, पाने जिन प्रभुताई।।10।।

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरूसम्बन्धिपश्चिमविदेहस्थविजटावानवक्षार पर्वत स्थितसिद्धकूट जिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

''आशीविष'' वक्षार के ऊपर, उपवन वेदी सोहे।
बाग बगीचा बावड़ियाँ शुभ, भविजन का मन मोहे।।
जिस पर सिद्ध कूट में जिनगृह, जिन प्रतिमाएँ भाई।
अर्घ्य चढ़ाकर पूजा करते, पाने जिन प्रभुताई।।11।।

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरूसम्बन्धिपश्चिमविदेहस्थआशीविषवक्षारपर्वत स्थित सिद्धकूटजिनालस्थजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अतिरमणीय ''सुखावह'' चौथा, शुभ वक्षार निराला।
सुरगृह कूट युक्त शुभकारी, मन को, हरने वाला।।
जिस पर सिद्ध कूट में जिनगृह, जिन प्रतिमाएँ भाई।
अर्घ्य चढ़ाकर पूजा करते, पाने जिन प्रभुताई।।12।।

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरूसम्बन्धिपश्चिमविदेहस्थसुखावहवक्षारपर्वत स्थितसिद्धकूट जिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अपर विदेह नदी सीतोदा, उत्तर तट वक्षारा।
देवारण्य निकट में अनुपम, 'चन्द्रमाल' है प्यारा।।

जिस पर सिद्ध कूट में जिनगृह, जिन प्रतिमाएँ भाई।
अर्घ्य चढ़ाकर पूजा करते, पाने जिन प्रभुताई।।13।।

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरूसम्बन्धिपश्चिमविदेहस्थचन्द्रमालवक्षारपर्वत स्थित सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सीतोदा के उत्तर तट पर, देवारण्य निराला।
'सूर्यमाल' वक्षार पास में, उपवन वेदी वाला।।
जिस पर सिद्ध कूट में जिनगृह, जिन प्रतिमाएँ भाई।
अर्घ्य चढ़ाकर पूजा करते, पाने जिन प्रभुताई।।14।।

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरूसम्बन्धिपश्चिमविदेहस्थसूर्यमालवक्षारपर्वत स्थितसिद्धकूट जिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप धातकी के विदेह में, सीतोदा तट भाई।
'नागमाल' वक्षार तीसरा, की महिमा शुभ गाई।।
जिस पर सिद्ध कूट में जिनगृह, जिन प्रतिमाएँ भाई।
अर्घ्य चढ़ाकर पूजा करते, पाने जिन प्रभुताई।।15।।

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरूसम्बन्धिपश्चिमविदेहस्थनागमालवक्षारपर्वत स्थितसिद्धकूट जिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'देवमाल' वक्षार अलौकिक, दर्शनीय शुभकारी।
ऋषिगण विचरण करें जहाँ पर, परमानन्द विहारी।।
जिस पर सिद्ध कूट में जिनगृह, जिन प्रतिमाएँ भाई।
अर्घ्य चढ़ाकर पूजा करते, पाने जिन प्रभुताई।।16।।

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरूसम्बन्धिपश्चिमविदेहस्थदेवमालवक्षारपर्वत स्थितसिद्धकूट जिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप धातकी के विदेह में, सोलह पर्वत गाए।
चार कूट युत स्वर्ण मयी सब, शुभ वक्षार कहाए।।
जिस पर सिद्ध कूट में जिनगृह, जिन प्रतिमाएँ भाई।
अर्घ्य चढ़ाकर पूजा करते, पाने जिन प्रभुताई।।17।।

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरूसम्बन्धिषोडशवक्षारपर्वत स्थितसिद्धकूटजिनालयस्थ जिनबिंबेभ्य: पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। पुष्पांजलिं:।

जाप–ॐ ह्रीं अर्हं शाश्वतजिनालयस्थसर्वजिनबिंबेभ्यो नम:।

जयमाला

दोहा– **भक्ति नहीं शक्ति नहीं, हम हैं युक्ति विहीन।**
जयमाला गाते विशद, हो भावों में लीन॥

(शेर चाल छन्द)

मेरू विजय के पास में वक्षार बताए।
जो स्वर्ण कांतीमान चार कूट युत गाए॥
जिन गेह सिद्ध कूट में शुभकार कहे हैं।
जिन गेह में जिनराज के जिनबिम्ब रहे हैं॥
जिनबिम्ब आठ एक सौ मंदिर में बताए।
जो दोय सहस हाथ के उतुंग कहाये॥
देवों के युगल चौंसठ द्वय पार्श्व में बने।
हाथों से चँवर ढौरते, सुन्दर दिखें घने॥
देवाधिदेव श्री जिनेन्द्र आप कहाए।
शाश्वत् अनन्त स्वयं सिद्ध आप बताए॥
हे नाथ! दर्श आपका महान बनाए।
सम्यक्त्व निधि प्राणियों को श्रेष्ठ दिलाए॥
वक्षार के जिन मंदिरों की वन्दना करें।
शाश्वत् जिनेन्द्र देव की हम अर्चना करें॥
विस्तार में फैले हुए वन श्रेष्ठ हैं प्यारे।
उद्यान में शुभ देव महल दीखते न्यारे॥
सर्वांग रूपवान हैं जिनदेव हमारे।
निर्ग्रन्थ वीतरागता जिनदेव जी धारे॥
भक्ती से करें जाप जो पूजा भी शुभ करें।
उर में बसाएँ आपको वह पाप सब हरें॥
भक्ति के रूप हैं अनेक लक्ष्य एक है।
हो जाए राग त्याग शुभ जागे विवेक है॥
जाना विभाव भाव कई हमने करें हैं।
हमने असंख्य भाव लोक मात्र धरें हैं॥
ना कोई भाव शेष रहा जो नहीं किया।
बश निज स्वभाव भाव पूर्ण हमने ना लिया॥
हे देव आज दर्श कर निहाल हो गये।

बस तीन रत्न से ही मालामाल हो गये॥
हम कर रहे हैं याचना वरदान दीजिए।
भव-भव में भक्ति पाएँ वरदान दीजिए॥
हे देव चरण आपके मेरा नमस्कार हो।
ये नाव 'विशद सिन्धु' से अब शीघ्र पार हो॥

दोहा– **शाश्वत् श्री जिन गेह के, स्वयं सिद्ध भगवान।**
''विशद'' भाव से पूजते, पाने पद निर्वाण॥

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरूसम्बन्धिषोडशवक्षारपर्वत स्थितसिद्धकूटजिनालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

॥शान्तयेशांतिधारा पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्॥

इन्द्रध्वज की पूजा करने, का अवसर शुभ आया है।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा करने, का सौभाग्य जगाया है॥
'विशद' सौख्य शांति पाते वह, जो प्रभु के गुण गाते हैं।
उच्चादर्श प्राप्त करते जो, शिखर पे ध्वजा चढ़ाते हैं॥

इत्याशीर्वादः

विजयमेरू सम्बन्धि चौंतीस विजयार्ध जिनालय पूजा–11

स्थापना

विजय मेरू के पूर्वापर में, क्षेत्र विदेहों के बत्तीस।
जिनके मध्य रजतगिरी अनुपम, जिन पर सोहें जिन अधीश॥
भरतैरावत के जिनगृह में, रजत गिरी है मंगलकार।
चौंतिस रजताचल के जिनवर, पूज रहे हम बारम्बार॥

दोहा– **जिन मंदिर जिनबिम्ब का, करते हम गुणगान।**
'विशद' हृदय में हम यहाँ, करते हैं आह्वान॥

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरूसम्बन्धिचतुस्त्रिंशत्विजयार्धपर्वत स्थितसिद्धकूट जिनालयस्थ सर्वजिनबिंब समूह! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। ॐ ह्रीं...अत्र तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। ॐ ह्रीं...अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधीकरणं।

(नरेन्द्र छन्द)

इतना नीर पिया है हमने, तीन लोक भर जाए।
तृप्त नहीं हो पाए अब तक, नीर चढ़ाने लाए।।
चौंतिस रजताचल में अनुपम, जिनगृह हैं मनहारी।
ऋद्धि सिद्धि सुख देने वाले, पूज रहे अघहारी।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरूसम्बन्धिचतुस्त्रिंशत्विजयार्धपर्वत स्थितसिद्धकूट जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः जलं निर्व.स्वाहा।

बार-बार बहु देह धारकर, त्रिभुवन में भटकाए।
चन्दन लेकर नाथ आज, संताप नशाने आए।।
चौंतिस रजताचल में अनुपम, जिनगृह हैं मनहारी।
ऋद्धि सिद्धि सुख देने वाले, पूज रहे अघहारी।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरूसम्बन्धिचतुस्त्रिंशत्विजयार्धपर्वत स्थितसिद्धकूट जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः चंदनं निर्व.स्वाहा।

मोह शत्रु ने हमें सताया, आत्म सौख्य न पाए।
अक्षय पद पाने हेतू हम, अक्षय अक्षत लाए।।
चौंतिस रजताचल में अनुपम, जिनगृह हैं मनहारी।
ऋद्धि सिद्धि सुख देने वाले, पूज रहे अघहारी।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरूसम्बन्धिचतुस्त्रिंशत्विजयार्धपर्वत स्थितसिद्धकूट जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अक्षतं निर्व.स्वाहा।

कामदेव के बस में होकर, प्राणी यह भटकाए।
कामजयी हो आप अतः हम, पुष्प चढ़ाने लाए।।
चौंतिस रजताचल में अनुपम, जिनगृह हैं मनहारी।
ऋद्धि सिद्धि सुख देने वाले, पूज रहे अघहारी।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरूसम्बन्धिचतुस्त्रिंशत्विजयार्धपर्वत स्थितसिद्धकूट जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः पुष्पं निर्व.स्वाहा।

काल अनादी क्षुधा व्याधि को, नहीं नशा हम पाए।
व्यंजन सरस बनाकर चरणों, आज चढ़ाने लाए।।

चौंतिस रजताचल में अनुपम, जिनगृह हैं मनहारी।
ऋद्धि सिद्धि सुख देने वाले, पूज रहे अघहारी।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरूसम्बन्धिचतुस्त्रिंशत्विजयार्धपर्वत स्थितसिद्धकूट जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः नैवेद्यं निर्व.स्वाहा।

जगमग दीप जलाने से तो, जग उजियारा होवे।
सम्यकज्ञान विशद जगती से, मोह महातम खोवे।।
चौंतिस रजताचल में अनुपम, जिनगृह हैं मनहारी।
ऋद्धि सिद्धि सुख देने वाले, पूज रहे अघहारी।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरूसम्बन्धिचतुस्त्रिंशत्विजयार्धपर्वत स्थितसिद्धकूट जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः दीपं निर्व.स्वाहा।

धूप जलाते रहे हमेशा, कर्म नहीं जल पाए।
आठों कर्म जलाने को हम, नाथ! शरण में आए।।
चौंतिस रजताचल में अनुपम, जिनगृह हैं मनहारी।
ऋद्धि सिद्धि सुख देने वाले, पूज रहे अघहारी।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरूसम्बन्धिचतुस्त्रिंशत्विजयार्धपर्वत स्थितसिद्धकूट जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः धूपं निर्व.स्वाहा।

भांति-भांति के फल खाकर के, हमने राग बढ़ाया।
चतुर्गती में भ्रमण किया है, मुक्ती फल ना पाया।।
चौंतिस रजताचल में अनुपम, जिनगृह हैं मनहारी।
ऋद्धि सिद्धि सुख देने वाले, पूज रहे अघहारी।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरूसम्बन्धिचतुस्त्रिंशत्विजयार्धपर्वत स्थितसिद्धकूट जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः फलं निर्व.स्वाहा।

वसु द्रव्यों का मिश्रण करके, हमने अर्घ्य बनाया।
व्यय उत्पाद ध्रौव्य सत् मेरा, निज स्वरूप न पाया।।
चौंतिस रजताचल में अनुपम, जिनगृह हैं मनहारी।
ऋद्धि सिद्धि सुख देने वाले, पूज रहे अघहारी।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरूसम्बन्धिचतुस्त्रिंशत्विजयार्धपर्वत स्थितसिद्धकूट जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **शांती धारा दे रहे, निर्मल जल के साथ।**
मुक्ती पाने के लिए, चरण झुकाते माथ।।

शान्तये शांतिधारा।।

दोहा– **पूजा करते भाव से, पुष्पांजलि ले हाथ।**
कर्मों से मुक्ती मिले, हे त्रिभुवन के नाथ।।

पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा– **चौंसठ हैं विजयार्ध शुभ, विजय मेरू के पास।**
पूजा करते हम यहाँ, जिन पर प्रभु का वास।।

(मण्डलयोपरि पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्)

(अडिल्य छंद)

विजय मेरू के पूर्व विदेह पहचानिए, सीता उत्तर कच्छा देश सुजानिए।
'कच्छा' में रूपाचल पे जिनगृह कहे, अष्ट द्रव्य से यहाँ पूजते हम रहे॥1॥

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरूसंबंधिपूर्वविदेहस्थकच्छादेशमध्यविजयार्धपर्वत स्थित सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

देश 'सुकच्छा' अपर धातकी जानिए, विजय मेरू के दिशा पूर्व में मानिए।
भव्य रजतगिरी के जिनगृह शुभकार, हैं जिन प्रतिमाएँ पूज रहे मनहार॥2॥

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरूसंबंधिपूर्वविदेहस्थसुकच्छादेशमध्यविजयार्धपर्वत स्थित सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अपर धातकी मध्य विजय मेरू कहा, जिसके पूरब देश 'महाकच्छा' रहा।
जिसके मध्य रजत गिरी पे जिनधाम है, जिसके जिनबिम्बों को विशद प्रणाम है॥3॥

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरूसंबंधिपूर्वविदेहस्थमहाकच्छादेशमध्यविजयार्धपर्वत स्थित सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'कच्छकावती' मध्य सुरगिरी कहा, रजतगिरी है पूर्व विदेहों में अहा।
जिसके मध्य रजत गिरी पे जिनधाम हैं, जिसके जिनबिम्बों को विशद प्रणाम है॥4॥

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरूसम्बन्धिपूर्वविदेहस्थकच्छकावतीदेशमध्यविजयार्धपर्वत स्थितसिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

अपर धातकी मध्य विजय मेरू कहा, 'आवर्ता' शुभ देश मध्य जिसके रहा।

जिसके मध्य रजत गिरी पे जिनधाम हैं, जिसके जिनबिम्बों को विशद प्रणाम है॥5॥

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरूसम्बन्धिपूर्वविदेहस्थावर्तादेशमध्यविजयार्धपर्वत स्थित सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'लांगलावर्ता' में सुर गिरी रहा, सिद्धायतन जिसके ऊपर अनुपम कहा।
सिद्ध कूट के सिद्धबिम्ब शुभ पूजते, प्राणी भव की बाधाओं से छूटते॥6॥

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरूसम्बन्धिपूर्वविदेहस्थलांगलावर्तादेशमध्यविजयार्धपर्वत स्थित सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश पुष्कला मध्य रजतगिरी सोहता, जिस पर सिद्धकूट जग जन मन मोहता।
सिद्ध कूट के सिद्ध बिम्ब शुभ पूजते, प्राणी भव की बाधाओं से छूटते॥7॥

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरूसम्बन्धिपूर्वविदेहस्थपुष्कलादेशमध्यविजयार्धपर्वत स्थित सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'पुष्कलावति' मध्य सुरगिरी कहा, जिस पर सिद्धकूट में शुभ जिनगृह रहा।
सिद्ध कूट के सिद्ध बिम्ब शुभ पूजते, प्राणी भव की बाधाओं से छूटते॥8॥

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरूसम्बन्धिपूर्वविदेहस्थपुष्कलावतीदेशमध्यविजयार्धपर्वत स्थित सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौबोला छंद)

'वत्सा' देश विदेह कहाए, उसके मध्य रूपाद्रि कहा।
सीता नदी के दक्षिण तट पे, अनुपम आभावान रहा।।
आर्यखण्ड की पुरी सुसीमा, जिसमें तीर्थंकर सोहें।
रजतगिरी के जिन मंदिर शुभ, भक्तों के मन को मोहें॥9॥

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरूसम्बन्धिपूर्वविदेहस्थवत्सादेशमध्यविजयार्धपर्वत स्थित सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'सुवत्सा' के मधि सुन्दर, पुरी कुण्डला श्रेष्ठ मही।
विशद शलाका पुरुष आदि शुभ, सुर असुरों से पूज्य कही।।
देश मध्य के रजतगिरी पर, जिन चैत्यालय श्रेष्ठ कहे।
उसमें सब प्रतिमाओं को हम, भक्ति भाव से पूज रहे॥10॥

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरूसम्बन्धिपूर्वविदेहस्थसुवत्सादेशमध्यविजयार्धपर्वत स्थित सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'महावत्सा' मधि सुन्दर, रूपाचल नव श्रेष्ठ कहे।
सिद्ध कूट में श्री जिन मंदिर, भव के रोग विनाश रहे॥
इस विदेह में अपराजित पुरि, आर्य खण्ड में शुभ गाई।
वहाँ पूजते सुर नर जाके, यहाँ पूजते हम भाई॥11॥

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरूसम्बन्धिपूर्वविदेहस्थमहावत्सादेशमध्यविजयार्धपर्वत स्थित सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

देश 'वत्सकावती' मध्य में, रजातचल मन को भावें।
सिद्ध कूट पर जिन चैत्यालय, की पूजाकर सुख पावें॥
इस विदेह में प्रभंकरा पुरि, आर्य खण्ड में शुभ गाई।
वहाँ पूजते सुर नर जाके, यहाँ पूजते हम भाई॥12॥

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरूसम्बन्धिपूर्वविदेहस्थवत्सकावतीदेशमध्यविजयार्धपर्वत स्थित सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'रम्यादेश' के मध्य श्रेष्ठतम, रजतगिरी है शोभावान।
सिद्धकूट में जिन चैत्यालय, जिनमें राजें जिन भगवान॥
अंकावति नगरी विदेह के, आर्य खण्ड में शुभ गाई।
वहाँ पूजते सुर नर जाके, यहाँ पूजते हम भाई॥13॥

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरूसम्बन्धिपूर्वविदेहस्थरम्यादेशमध्यविजयार्धपर्वत स्थित सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'सुरम्या' में उज्ज्वलतम, रूपाचल है मनहारी।
सिद्धकूट में जिनबिम्बों की, पूजा है पातक हारी॥
पद्मावती पुरी उत्तर में, आर्य खण्ड मधि शुभ गाई।
वहाँ पूजते सुर नर जाके, यहाँ पूजते हम भाई॥14॥

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरूसम्बन्धिपूर्वविदेहस्थसुरम्यादेशमध्यविजयार्धपर्वत स्थित सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश रहा 'रमणीया' सुन्दर, जिसमें रजत गिरी जानो।
सिद्ध कूट की जिन प्रतिमाएँ, अकृत्रिम शुभकर मानो॥
इस विदेह में शुभापुरी भी, आर्य खण्ड में शुभ गाई।
वहाँ पूजते सुर नर जाके, यहाँ पूजते हम भाई॥15॥

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरूसम्बन्धि पूर्वविदेहस्थरमणीयादेशमध्यविजयार्धपर्वत स्थित सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'मंगलावति' विदेह में, रजतगिरी जिस पर सोहे।
सिद्धकूट पर जिन चैत्यालय, भव्यों के मन को मोहे॥
रत्नसंचयपुरि विदेह में, आर्य खण्ड में शुभ गाई।
वहाँ पूजते सुर नर जाके, यहाँ पूजते हम भाई॥16॥

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरूसम्बन्धिपूर्वविदेहस्थमंगलावतीदेशमध्यविजयार्ध पर्वत स्थितसिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

(रोला छंद)

भद्रशाल वन पास सीतोदा के दाँयें,
'पदमा' देश विदेह में रजताचल पाये।
जिसमें जिनगृह बिम्ब हैं भव रुज दुखहारी,
पूज रहे हैं आज जग में मंगलकारी॥17॥

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरूसम्बन्धिपश्चिमविदेहस्थपद्मादेशमध्यविजयार्धपर्वत स्थितसिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'सुपदमा' माहि, रजताचल मनहारी,
सुरनर करें विहार मुनिवर ऋद्धीधारी।
जिसमें जिनगृह बिम्ब हैं भव रुज दुखहारी,
पूज रहे हैं आज जग में मंगलकारी॥18॥

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरूसम्बन्धिपश्चिमविदेहस्थसुपद्मादेशमध्यविजयार्धपर्वत स्थित सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

'महापद्मा' शुभ देश, जिसमें रजतगिरी है,
तरुवर श्रेष्ठ लताओं से जो पूर्ण घिरी है।
जिसमें जिनगृह बिम्ब हैं भव रुज दुखहारी,
पूज रहे हैं आज जग में मंगलकारी॥19॥

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरूसम्बन्धिपश्चिमविदेहस्थमहापद्मामध्यविजयार्धपर्वत स्थितसिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

देश 'सुपद्मावति' मध्य में रजताचल है,
नव कूटों से युक्त गिरीवर भी मंगल है।
जिसमें जिनगृह बिम्ब हैं भव रुज दुखहारी,
पूज रहे हैं आज जग में मंगलकारी।।20।।

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरूसम्बन्धिपश्चिमविदेहस्थसुपद्मावतीदेश मध्यविजयार्धपर्वत स्थितसिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शंखा देश' विदेह क्षेत्र में है शुभकारी,
रजतगिरी पर जिन मंदिर सोहे मनहारी।
जिसमें जिनगृह बिम्ब हैं भव रुज दुखहारी,
पूज रहे हैं आज जग में मंगलकारी।।21।।

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरूसम्बन्धिपश्चिमविदेहस्थशंखादेशमध्यविजयार्ध पर्वत स्थितसिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'नलिना' देश विदेह क्षेत्र में मन को मोहे,
नव कूटों से युक्त रजत गिरी अनुपम सोहे।
जिसमें जिनगृह बिम्ब हैं भव रुज दुखहारी,
पूज रहे हैं आज जग में मंगलकारी।।22।।

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरूसम्बन्धि पश्चिमविदेहस्थनालिनीदेशमध्यविजयार्धपर्वत स्थित सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'कुमुदा' देश अनूप जिसमें रजताचल है,
भविजन कुमुद विकाश हेतू रवि मंगल है।
जिसमें जिनगृह बिम्ब हैं भव रुज दुखहारी,
पूज रहे हैं आज जग में मंगलकारी।।23।।

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरूसम्बन्धिपश्चिमविदेहस्थकुमुदादेशमध्यविजयार्धपर्वत स्थित सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सरिता देश' विदेह छह खण्डों युत गाया,
विजयारधगिरी श्रेष्ठ स्वर्ण के जैसा पाया।
जिसमें जिनगृह बिम्ब हैं भव रुज दुखहारी,
पूज रहे हैं आज जग में मंगलकारी।।24।।

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरूसम्बन्धिपश्चिमविदेहस्थसरितादेशमध्यविजयार्धपर्वत स्थित सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शम्भू छंद)

सीतोदा के उत्तर दिश में, देवारण्य निकट गाया।
'वप्रा' देश रूप्य गिरी सोहे, जिसपे जिनगृह मन भाया।।
जिनगृह में जिनबिम्ब पूज्य हैं, जिनको मन से ध्याते हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीश झुकाते हैं।।25।।

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरूसम्बन्धिपश्चिमविदेहस्थवप्रादेशमध्यविजयार्धपर्वत स्थित सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'सुवप्रा' आर्य खण्ड में, ईति भीति दुर्भिक्ष नहीं।
बीचोंबीच रूप्यगिरी अनुपम, नहीं मिलेगा और कहीं।।
जिनगृह में जिनबिम्ब पूज्य हैं, जिनको मन से ध्याते हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीश झुकाते हैं।।26।।

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरूसम्बन्धिपश्चिमविदेहस्थसुवप्रादेशमध्यविजयार्धपर्वत स्थित सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'महावप्रा' सुख दाता, स्वर्ग मोक्ष का साधन है।
रजत गिरी है बीच देश के, सुर करते आराधन हैं।।
जिनगृह में जिनबिम्ब पूज्य हैं, जिनको मन से ध्याते हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीश झुकाते हैं।।27।।

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरूसम्बन्धिपश्चिमविदेहस्थमहावप्रादेशमध्यविजयार्धपर्वत स्थितसिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'देशवप्रकावती' सुहावन, सुर नर के मन भाता है।
रजताचल है मध्य देश के, जिन महिमा को गाता है।।
जिनगृह में जिनबिम्ब पूज्य हैं, जिनको मन से ध्याते हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीश झुकाते हैं।।28।।

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरूसम्बन्धिपश्चिमविदेहस्थवप्रिकावतीदेश मध्यविजयार्धपर्वत स्थितसिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'गंधादेश' में रजतगिरी की, महिमा सुरनर गाते हैं।
ऋद्धीधारी मुनिगण भी जहाँ, आतम ध्यान लगाते हैं।।

जिनगृह में जिनबिम्ब पूज्य हैं, जिनको मन से ध्याते हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीश झुकाते हैं।।29।।

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरूसम्बन्धिपश्चिमविदेहस्थगंधादेशमध्यविजयार्धपर्वत स्थित सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'सुगन्धा शिव सुख दाता, सुरनर जहाँ विचरते हैं।
रूप्यगिरी पर भक्ति भाव से, जिनकी अर्चा करते हैं।।
जिनगृह में जिनबिम्ब पूज्य हैं, जिनको मन से ध्याते हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीश झुकाते हैं।।30।।

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरूसम्बन्धिपश्चिमविदेहस्थसुगंधादेशमध्यविजयार्धपर्वत -स्थितसिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'गंधिला' में जो जन्में, पूर्व कोटि आयु पाते।
देश बीच में रुप्यगिरी पर, जाकर जिनमहिमा गाते।।
जिनगृह में जिनबिम्ब पूज्य हैं, जिनको मन से ध्याते हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीश झुकाते हैं।।31।।

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरूसम्बन्धिपश्चिमविदेहस्थगंधिलादेशमध्यविजयार्धपर्वत - स्थितसिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'गंधमालिनी' में होते जो, धनुष पांच सौ उच्च रहे।
रजतगिरी है मध्य देश के, यात्री जो जिन भक्त कहे।।
जिनगृह में जिनबिम्ब पूज्य हैं, जिनको मन से ध्याते हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीश झुकाते हैं।।32।।

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरूसम्बन्धिपश्चिमविदेहस्थगंधमालिनीदेशमध्यविजयार्ध-पर्वत स्थितसिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भरत क्षेत्र में गंगा-सिन्धू, हिमवन पर्वत से बहतीं।
रजतगिरी की गुफा किनारे, बाहृय क्षेत्र में जो रहतीं।।
आर्य खण्ड के मध्य 'अयोध्या', में तीर्थंकर होते हैं।
रजतगिरी पर जिनगृह जिनवर, मोहादिक को खोते हैं।।33।।

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरूसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थविजयार्धपर्वत स्थितसिद्धकूटजिनालय स्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शिखरिन् से रक्ता रक्तोदा, नदियाँ निकल रहीं भाई।
रूप्यगिरी की गुफा किनारे, से बहती हैं सुखदायी।।
आर्य खण्ड के मध्य 'अयोध्या', में तीर्थंकर होते हैं।
रजतगिरी पर जिनगृह जिनवर, मोहादिक को खोते हैं।।34।।

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरूसम्बन्धिऐरावतक्षेत्रस्थविजयार्धपर्वत स्थितसिद्धकूट जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूरव पश्चिम में विदेह जिन, बत्तिस शुभ बतलाए हैं।
दक्षिण उत्तर भरतैरावत, के रजताचल गाए हैं।।
चौंतिस गिरी के चौंतिस जिनगृह, में जिनबिम्ब रहे अविकार।
अर्घ्य चढ़ाकर वन्दन करते, जिनके चरणों बारम्बार।।35।।

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरूसंबन्धिचतुर्त्रिंशत्विजयार्धपर्वत स्थितसिद्धकूटजिनालय -स्थसर्वजिनबिंबेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

।।शान्तयेशांतिधारा पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्।।

जाप्य– ॐ ह्रीं अर्हं शाश्वतजिनालयस्थसर्वजिनबिंबेभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा– **शुभ विजयारध पर रहे, अकृत्रिम जिनधाम।**
उनमें जो जिनबिम्ब हैं, उनको विशद प्रणाम।।

(चौपाई)

विजय मेरू पूर्वापर जान, क्षेत्र सुबत्तिस रहे महान।
सभी में रचना शाश्वत् खास, कर्मभूमि का जहाँ निवास।।
छियानवे कोटी हैं पुर ग्राम, रत्नसुगृह इक क्षेत्र में जान।
सहस पचहत्तर नगर शुभकार, खेट बतलाए सात हजार।।
कर्वट रहे चौंतीस हज़ार, हैं मटंव शुभ चार हजार।
सहस अड़तालिस पत्तन जान, निन्यानवें सहस द्रोणमुख मान।।
चौंतिस सहस संवाहन सार, दुर्गाटवी अट्ठाइस हजार।
छप्पन अन्तर दीप प्रधान, कुक्षि निवास सात सौ मान।।
रत्नाकर छब्बीस हजार, रत्नमयी गाये शुभकार।
उपवन खण्ड हैं विविध प्रकार, वापी पुष्करणी मनहार।।

क्षत्रिय वैश्य शूद्रत्रय वर्ण, सतत जन्म कर पाते मर्ण।
ईति भीति दुर्भिक्ष विशेष, मरी आदि ना होते लेश॥
अनावृष्टि अतिवृष्टी नाहिं, सुखकर मेघ बरसते जांहि॥
ब्रह्मा विष्णू आदि कुदेव, शिव आदिक के मंदिर एव॥
मिथ्यादृष्टी धर्माभास, पाखण्डी का नहीं निवास।
मिथ्याभाषी हों कई जीव, भ्रमण करें संसार अतीव॥
मानव की आयू उत्कृष्ट, एक पूर्व कोटी की इष्ट।
अन्तर्मुहुर्त है आयु जघन्य, मध्यम भेद कहे कई अन्य॥
धनुष पाँच सौ उच्च शरीर, मानव पाकर होते धीर।
संयम पाते हैं कई लोग, शिवपद का पाते संयोग॥
कच्छा आदिक, हों कोई देश, यही व्यवस्था रही विशेष।
रजताचल हर क्षेत्र में जान, नदियाँ दो-दो बहें प्रधान॥
सब में छह-छह खण्ड विशेष, पाँच खण्ड में रहें म्लेच्छ।
आर्य खण्ड शुभ रहा महान, पुण्य पुरुष जन्में यहाँ आन॥
विद्याधर के नगर प्रधान, रजताचल पर रहे महान।
पचपन-पचपन दोनों ओर, करते मन को भाव विभोर॥
खेचर युगल सभी मनहार, दशों दिशा में करें विहार।
रजतमयी रूपाचल जान, त्रय कटनी नव कूटोंवान॥
सिद्ध कूट सरिता के पास, जिनबिम्बों का जिसमें वास।
विजय मेरू के दक्षिण जान, भरत क्षेत्र शुभ रहा महान॥
जिसमें रजतगिरी शुभकार, सिद्धकूट जिस पर मनहार।
छह खण्डों में बटा विशेष, आर्यखण्ड में भारत देश॥
परिवर्तन होता छह काल, महा पुरुष हों चौथे काल।
विजय मेरू के उत्तर जान, ऐरावत है क्षेत्र महान॥
इसमें भी छह खण्ड विशेष, आर्य खण्ड में भारतदेश।
परिवर्तन होवे छह काल, तीर्थंकर हो चौथे काल॥
रजत गिरी के मध्य विशाल, जिसमें जिनगृह रहे त्रिकाल।
प्रभु का रहे हृदय में वास, "विशद" पूर्ण हो मेरी आस॥

(घत्ता छंद)

जय जय जिनस्वामी, अन्तर्यामी, शिवपथगामी अभिरामी।
जय आनन्दकारी, शिवभरतारी, ज्ञान पुजारी, जगनामी॥

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरूसंबन्धिचतुर्त्रिंशत्रजताचलस्थितसिद्धकूटजिनालय-स्थसर्वजिनबिंबेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

।।शान्तयेशांतिधारा पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्।।

इन्द्रध्वज की पूजा करने, का अवसर शुभ आया है।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा करने, का सौभाग्य जगाया है॥
'विशद' सौख्य शांति पाते वह, जो प्रभु के गुण गाते हैं।
उच्चादर्श प्राप्त करते जो, शिखर पे ध्वजा चढ़ाते हैं॥

इत्याशीर्वादः

विजयमेरू सम्बन्धी षट्कुलाचल जिनालय पूजा–12

स्थापना

विजय मेरू के उत्तर दक्षिण, छह कुल पर्वत रहे महान।
पूर्व दिशा में जिनके ऊपर, जिन मंदिर में हैं भगवान॥
भावों की निर्मलता पाने, करते आज यहाँ गुणगान।
विशद हृदय के सिंहासन पर, करते भावसहित आह्वान॥

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरूसंबन्धिदक्षिणोत्तरषट्कुलाचलस्थितसिद्धकूटजिनालय-स्थसर्वजिनबिम्बसमूह! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। ॐ ह्रीं...अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं...अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम्।

हम निर्मल जल लेकर आए, निज अन्तर्मन निर्मल करने।
हे नाथ! चढ़ाते यहाँ आज, शुचि सरल भावना से भरने॥
मेरे इस आकुल अन्तर को, शीतलता नाथ प्रदान करो।
हे संकटमोचन तीर्थंकर, अपनी अनुकम्पा दान करो॥1॥

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरूसंबन्धिषट्कुलाचलस्थितसिद्धकूटजिनालयस्थ जिनबिंबेभ्यः जलं निर्व.स्वाहा।

संताप सताता है भव का, प्रभू पास आपके आए हैं।
तव पद पंकज में अर्चन को, मलयागिरी चंदन लाए हैं।।
मेरे इस आकुल अन्तर को, शीतलता नाथ प्रदान करो।
हे संकटमोचन तीर्थंकर, अपनी अनुकम्पा दान करो।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरूसंबन्धिषट्कुलाचलस्थितसिद्धकूटजिनालयस्थ जिनबिंबेभ्य: चंदनं निर्व.स्वाहा।

जग का वैभव क्षण भंगुर है, तुमने इसको ठुकराया है।
अक्षय सद् संयम के द्वारा, अनुपम अक्षय पद पाया है।।
मेरे इस आकुल अन्तर को, शीतलता नाथ प्रदान करो।
हे संकटमोचन तीर्थंकर, अपनी अनुकम्पा दान करो।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरूसंबन्धिषट्कुलाचलस्थितसिद्धकूटजिनालयस्थ जिनबिंबेभ्य: अक्षतं निर्व.स्वाहा।

यद्यपि कमलों की शोभा से, मानस मधुकर सुख पाते हैं।
निज गुण पाने हे नाथ! यहाँ, हम अनुपम पुष्प चढ़ाते हैं।।
मेरे इस आकुल अन्तर को, शीतलता नाथ प्रदान करो।
हे संकटमोचन तीर्थंकर, अपनी अनुकम्पा दान करो।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरूसंबन्धिषट्कुलाचलस्थितसिद्धकूटजिनालयस्थ जिनबिंबेभ्य: पुष्पं निर्व.स्वाहा।

व्यंजन कई सरस प्रभू हमने, भव-भव में रहकर खाए हैं।
चेतन की क्षुधा मिटाने को, नैवेद्य चढ़ाने लाए हैं।।
मेरे इस आकुल अन्तर को, शीतलता नाथ प्रदान करो।
हे संकटमोचन तीर्थंकर, अपनी अनुकम्पा दान करो।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरूसंबन्धिषट्कुलाचलस्थितसिद्धकूटजिनालयस्थ जिनबिंबेभ्य: नैवेद्यं निर्व.स्वाहा।

दीपक की झिलमिल लड़ियों से, मिट जाए जग का अंधियारा।
अब मोह तिमिर के नाश हेतु, यह दीपक हमने उजियारा।।
मेरे इस आकुल अन्तर को, शीतलता नाथ प्रदान करो।
हे संकटमोचन तीर्थंकर, अपनी अनुकम्पा दान करो।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरूसंबन्धिषट्कुलाचलस्थितसिद्धकूटजिनालयस्थ जिनबिंबेभ्य: दीपं निर्व.स्वाहा।

अग्नी में धूप जलाने से, सारा नभ मण्डल महकाए।
कर्मों की धूप जलाने को, हे नाथ! शरण में हम आए।।
मेरे इस आकुल अन्तर को, शीतलता नाथ प्रदान करो।
हे संकटमोचन तीर्थंकर, अपनी अनुकम्पा दान करो।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरूसंबन्धिषट्कुलाचलस्थितसिद्धकूटजिनालयस्थ जिनबिंबेभ्य: धूपं निर्व.स्वाहा।

अनुकूल ऋतु आ जाने से, उपवन फल से भर जाते हैं।
चिर क्षुधा वेदना नहीं मेरी, हे नाथ! मिटा वह पाते हैं।।
मेरे इस आकुल अन्तर को, शीतलता नाथ प्रदान करो।
हे संकटमोचन तीर्थंकर, अपनी अनुकम्पा दान करो।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरूसंबन्धिषट्कुलाचलस्थितसिद्धकूटजिनालयस्थ जिनबिंबेभ्य: फलं निर्व.स्वाहा।

हम कर्मावरण हटाने को, हे नाथ! शरण में आए हैं।
शिवपद के राही बनने को, यह अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।।
मेरे इस आकुल अन्तर को, शीतलता नाथ प्रदान करो।
हे संकटमोचन तीर्थंकर, अपनी अनुकम्पा दान करो।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरूसंबन्धिषट्कुलाचलस्थितसिद्धकूटजिनालयस्थ जिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **ज्ञान ज्योति से नाश हो, तम का पूर्ण वितान।**
शांतीधारा दे रहे, पाने केवल ज्ञान।
शान्तये शांतिधारा

दोहा– **युग युग के भव भ्रमण से, पा जाएँ अब त्राण।**
पुष्पांजलि करते यहाँ, पाने पद निर्वाण।।
पुष्पांजलि क्षिपेत्।।

प्रत्येक अर्घ्य

दोहा– **पूर्वधातकी द्वीप में, कुल पर्वत छह जान।**
पुष्पांजलि करके यहाँ, करते हैं गुणगान।।
मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

विजय मेरू के दक्षिण दिश में, 'हिमवन' पर्वत स्वर्ण समान।
ग्यारह कूट सहित पर्वत पर, पद्म सरोवर रहा प्रधान॥
कमल मध्य श्री देवी रहती, आत्मरक्ष परिषद के साथ।
जिनचैत्यालय जिनबिम्बों को, झुका रहे हम अपना माथ॥1॥

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरूसम्बन्धिहिमवत्कुलाचलसिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विजय मेरू के दक्षिण दिश में, 'महाहिमवन' है रजत समान।
महा पदम द्रह कमल मध्य में, ह्री देवी का है स्थान॥
आठ कूट हैं पर्वत ऊपर, एक में चैत्यालय शुभकार।
अर्घ्य चढ़ाकर पूज रहे हम, जिनबिम्बों को बारम्बार॥2॥

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरूसम्बन्धिमहाहिमवत्कुलाचलसिद्धकूट जिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विजय मेरू के दक्षिण दिश में, तप्त स्वर्ण सम निषधाचल।
द्रह तिगिञ्छ में धृति देवी का, शोभित होता श्रेष्ठ महल॥
कूट रहे नौ गिरी के ऊपर, एक में चैत्यालय शुभकार।
अर्घ्य चढ़ाकर पूज रहे हम, जिनबिम्बों को बारम्बार॥3॥

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरूसम्बन्धिनिषधकुलाचलसिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विजय मेरू के उत्तर दिश में, 'नीलाचल' है नील समान।
बीच केशरी द्रह कमलों पर, कीर्ति देवि का है स्थान॥
नव हैं कूट गिरी के ऊपर, एक में चैत्यालय शुभकार।
अर्घ्य चढ़ाकर पूज रहे हम, जिनबिम्बों को बारम्बार॥4॥

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरूसम्बन्धिनीलकुलाचलसिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विजय मेरू के उत्तर दिश मे, 'रुक्मी' पर्वत रजत समान।
पुण्डरीक द्रह मध्य कमल में, बुद्धि देवि का है स्थान॥
आठ कूट हैं पर्वत ऊपर, एक में चैत्यालय शुभकार।
अर्घ्य चढ़ाकर पूज रहे हम, जिनबिम्बों को बारम्बार॥5॥

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरूसम्बन्धिरुक्मिकुलाचलसिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विजय मेरू के उत्तर दिश में, 'शिखरी' पर्वत स्वर्ण समान।
महापुण्डरीक के मध्य सुहृद में, लक्ष्मी देवी का स्थान॥
ग्यारह कूट हैं पर्वत ऊपर, एक में चैत्यालय शुभकार।
अर्घ्य चढ़ाकर पूज रहे हम, जिनबिम्बों को बारम्बार॥6॥

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरूसम्बन्धिशिखरिपर्वत सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विजय मेरू के उत्तर दक्षिण, छह कुल पर्वत रहे महान।
जिनके ऊपर हृद से नदियाँ, चौदह बहतीं जहाँ प्रधान॥
सिद्धकूट के मध्य जिनालय, शोभित होते अपरम्पार।
उनमें जिनबिम्बों का वन्दन, करते हैं हम बारम्बार॥7॥

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरूसम्बन्धिषट्कुलाचलसिद्धकूटजिनालयस्थसर्वजिनबिंबेभ्य: पूर्णार्घ्यं निर्व.स्वाहा।

।।शान्तयेशांतिधारा पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्।।

जाप्य–ॐ ह्रीं अर्हं शाश्वत् जिनालयस्थसर्वजिनबिंबेभ्यो नमः।

जयमाला

(शम्भू छन्द)

विजय मेरु के छह कुल पर्वत , जिनपे सरवर रहे महान।
सरवर के कमलों में जिनगृह, जिनमें शोभित हैं भगवान॥
सुर विद्याधर पूजा करने, जहाँ पे जाते सह परिवार।
यहाँ बैठकर पूज रहे हम, श्री जिनेन्द्र पद बारम्बार॥

तर्ज (जय-जय जिनेन्द्र देव...)

जो शाश्वत् जिनालयों की वन्दना करें।
वे रोग शोक संकटों को पूर्ण परिहरें॥
हे नाथ मेरी प्रार्थना पे ध्यान दीजिए।
संसार सिन्धु से मुझे प्रभु पार कीजिए॥
ये द्रव्य कर्म आत्मा में एक हो रहे।
ये भाव कर्म मेरा विवेक खो रहे॥ हे नाथ...

नो कर्म आत्मा के कई रूप बनाए।
नरकादि चार गतियों में नाच नचाए॥ हे नाथ...
ये कर्म आत्मा से कोई बद्ध नहीं हैं।
सम्बन्ध आत्मा से ना लेश कहीं हैं॥ हे नाथ...
हम नित्य हैं अखण्ड हैं चैतन्य स्वरूपी।
हम दर्श ज्ञान चारित शुद्धात्म अरुपी॥ हे नाथ...
हम शुद्ध बुद्ध ज्ञाता परमात्म धाम हैं।
कैवल्यज्ञान ज्योती त्रिभुवन ललाम हैं॥ हे नाथ...
निश्चय से हम तो पूर्णतः शुद्ध कहाए।
ये भावना ही मन में शिव राह दिखाए॥ हे नाथ...
व्यवहार नय से यद्यपि अशुद्ध हो रहे।
अतएव हमने भव-भव कर्मों के दुख सहे॥ हे नाथ...
नाना विभाव भाव राग द्वेष करे हैं।
हमने असंख्य लोक मात्र भाव धरे हैं॥ हे नाथ...
हे देव दर्श करके हम निहाल हो गये।
हम तीन रत्न पाके मालामाल हो गये॥ हे नाथ...
हम जानते प्रभू आप भव सिन्धु खिव्वैया।
जिन देव आप जग में भव पार करैय्या॥ हे नाथ...
हम आस लेके यही नाथ द्वार पे आये।
अब जन्म व्याधी शीघ्र हरो, शीश झुकाए॥ हे नाथ...
हे दीन बन्धु अपनी हमें शरण लीजिए।
भव सिन्धु से निकाल मुक्ती वास दीजिये॥ हे नाथ...
हम भक्त चरण में प्रभू ये प्रार्थना करें।
निज आत्म सिद्धि पाने हम अर्चना करें॥ हे नाथ...
जिनराज चरण आपके मम नमस्कार हो।
ये नाव मेरी भक्ति से भव सिन्धु पार हो॥ हे नाथ...

(छन्द-घतानन्द)

जय जय शिवदाता, ज्ञान प्रदाता, त्रिभुवन पति हे अनगारी।
दे दो सुख साता, हरो असाता, तीर्थंकर मंगलकारी॥

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरूसम्बन्धिषट्कुलाचलसंस्थितसिद्धकूटजिनालयस्थ-जिनबिंबेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

।।शान्तयेशांतिधारा पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्।।

इन्द्रध्वज की पूजा करने, का अवसर शुभ आया है।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा करने, का सौभाग्य जगाया है॥
'विशद' सौख्य शांति पाते वह, जो प्रभु के गुण गाते हैं।
उच्चादर्श प्राप्त करते जो, शिखर पे ध्वजा चढ़ाते हैं॥

इत्याशीर्वादः

अचल मेरू जिनालय पूजा–13

स्थापना (गीता छंद)

अपर दिश में धातकी शुभ, दीप के पहचानिए।
मेरू अचल है तुंग योजन, लख चौरासी मानिए॥
बने सोलह चतुर्दिक में, श्रेष्ठ जिन के धाम हैं।
जिनबिम्ब के चरणों में मेरा, बार बार प्रणाम हैं॥

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरूसम्बन्धिषोडशजिनालयस्थजिनबिंबसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। ॐ ह्रीं...अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। ॐ ह्रीं...अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधीकरणं।

अष्टक (शम्भू छंद)

भव भोगों में फँसकर स्वामी, जीवन यह व्यर्थ गँवाया है।
ना जन्म मरण से छुटकारा, हमको अब तक मिल पाया है॥
हे नाथ! भक्त के ऊपर अब, शुभ मेघ दया के बरसाओ।
हमको भी दर्शन दो स्वामी, न और हमें अब तरसाओ॥1॥

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरूसम्बन्धिषोडशजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः जलं निर्व. स्वाहा।

हम अन्तर मन शीतल करने, चन्दन घिसकर के लाए हैं।
क्रोधादि कषाएँ पूर्ण नाश, निज शांती पाने आए हैं॥
हे नाथ! भक्त के ऊपर अब, शुभ मेघ दया के बरसाओ।
हमको भी दर्शन दो स्वामी, न और हमें अब तरसाओ॥2॥

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरूसम्बन्धिषोडशजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः चंदनं निर्व. स्वाहा।

चेतन की निर्मलता पाने, हम चरण शरण में आए हैं।
शाश्वत् अक्षत पद पाने को, यह अक्षय अक्षत लाए हैं॥

हे नाथ! भक्त के ऊपर अब, शुभ मेघ दया के बरसाओ।
हमको भी दर्शन दो स्वामी, न और हमें अब तरसाओ।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरूसम्बन्धिषोडशजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: अक्षतं निर्व. स्वाहा।

प्रभु काम वासना से वासित, होकर सारा जग भटकाए।
अब काम अग्नि का रोग नशे, हम पुष्प चढ़ाने को लाए।।
हे नाथ! भक्त के ऊपर अब, शुभ मेघ दया के बरसाओ।
हमको भी दर्शन दो स्वामी, न और हमें अब तरसाओ।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरूसम्बन्धिषोडशजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: पुष्पं निर्व. स्वाहा।

तृष्णा दुख देती है हमको, छुटकारा पाने को आए।
अब क्षुधा मिटाने को प्रभुवर, नैवेद्य चढ़ाने यह लाए।।
हे नाथ! भक्त के ऊपर अब, शुभ मेघ दया के बरसाओ।
हमको भी दर्शन दो स्वामी, न और हमें अब तरसाओ।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरूसम्बन्धिषोडशजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

दीपक की ज्योति जले अनुपम, अँधियारा दूर भाग जाए।
यह दीप जलाकर हे स्वामी!, हम मोह नशाने को आए।।
हे नाथ! भक्त के ऊपर अब, शुभ मेघ दया के बरसाओ।
हमको भी दर्शन दो स्वामी, न और हमें अब तरसाओ।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरूसम्बन्धिषोडशजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: दीपं निर्व. स्वाहा।

हम धूप जलाते अग्नी में, क्षय कर्मों का प्रभू हो जाए।
शिव पद के राही बन जाएँ, मम मन मयूर शुभ हर्षाये।।
हे नाथ! भक्त के ऊपर अब, शुभ मेघ दया के बरसाओ।
हमको भी दर्शन दो स्वामी, न और हमें अब तरसाओ।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरूसम्बन्धिषोडशजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: धूपं निर्व. स्वाहा।

फल चढ़ा रहे यह शुभकारी, भव सिन्धु से अब मुक्ती पाएँ।
हे करुणा सागर दया करो, हम मोक्षमार्ग शुभ पा जाएँ।।
हे नाथ! भक्त के ऊपर अब, शुभ मेघ दया के बरसाओ।
हमको भी दर्शन दो स्वामी, न और हमें अब तरसाओ।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरूसम्बन्धिषोडशजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: फलं निर्व. स्वाहा।

जल चन्दन अक्षत पुष्प चरू, दीपक शुभ धूप जलाए हैं।
फल रखकर अनुपम अर्घ्य बना, हम यहाँ चढ़ाने लाए हैं।।
हे नाथ! भक्त के ऊपर अब, शुभ मेघ दया के बरसाओ।
हमको भी दर्शन दो स्वामी, न और हमें अब तरसाओ।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरूसम्बन्धिषोडशजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा– **निज आतम के ध्यान से, मिले आत्म आनन्द।**
शांती धारा दे रहे, पाने सहजानन्द।।

।।शान्तये शांतिधारा।।

दोहा– **आत्म ज्योति प्रगटित किए, अखिल विश्व के नाथ।**
पुष्पांजलि करते विशद, चरण झुकाते माथ।।

।।पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

अर्घ्यावली

दोहा– **अचल मेरू में चतुर्दिक, हैं जिनगृह जिनराज।**
पुष्पाञ्जलिं कर पूजते, श्री जिनेन्द्र पद आज।।

(मण्डलस्योपरिपुष्पांजलि क्षिपेत्)

(छन्द-हरिगीता)

शुभ द्वीप पश्चिम धातकी में, श्रेष्ठ मेरू अचल हैं।
वन 'भद्रशाल' दिशा पूरब, में जिनालय अटल हैं।।
हम अर्घ्य यह करते समर्पित, भाव से जिन चरण में।
अब कृपा करके भक्त को भी, लीजिए प्रभु शरण में।।1।।

ॐ ह्रीं श्री पश्चिमधातकीखण्डद्वीप अचलमेरूसंबंधित भद्रशालवन पूर्वदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ द्वीप पश्चिम धातकी में, श्रेष्ठ मेरू अचल है।
वन भद्रशाल दिशा दक्षिण, में जिनालय अटल है।।
हम अर्घ्य यह करते समर्पित, भाव से जिन चरण में।
अब कृपा करके भक्त को भी, लीजिए प्रभु शरण में।।2।।

ॐ ह्रीं श्री पश्चिमधातकीखण्डद्वीप अचलमेरूसंबंधित भद्रशालवन दक्षिणदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ द्वीप पश्चिम धातकी में, श्रेष्ठ मेरू अचल है।
वन भद्रशाल दिशा पश्चिम, में जिनालय अटल है।।
हम अर्घ्य यह करते समर्पित, भाव से जिन चरण में।
अब कृपा करके भक्त को भी, लीजिए प्रभु शरण में।।13।

ॐ ह्रीं श्री पश्चिमधातकीखण्डद्वीप अचलमेरूसंबंधित भद्रशालवन पश्चिमदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ द्वीप पश्चिम धातकी में, श्रेष्ठ मेरू अचल है।
वन भद्रशाल दिशा उत्तर, में जिनालय अटल है।।
हम अर्घ्य यह करते समर्पित, भाव से जिन चरण में।
अब कृपा करके भक्त को भी, लीजिए प्रभु शरण में।।4।।

ॐ ह्रीं श्री पश्चिमधातकीखण्डद्वीप अचलमेरूसंबंधित भद्रशालवन उत्तरदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(छन्द चामर)

धातकी में पश्चिम के, मेरू अचल जानिए।
नन्दन वन पूरब में, चैत्यालय मानिए।।
अष्ट द्रव्य का सुअर्घ्य, आज यहाँ लाए हैं।
दर्श करके जिनवर के, मन में हर्षाए हैं।।5।।

ॐ ह्रीं श्री पश्चिमधातकीखण्डद्वीप अचलमेरूसंबंधित नन्दनवन पूर्वदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धातकी में पश्चिम के, मेरू अचल जानिए।
नन्दन वन दक्षिण में, चैत्यालय मानिए।।
अष्ट द्रव्य का सुअर्घ्य, आज यहाँ लाए हैं।
दर्श करके जिनवर के, मन में हर्षाए हैं।।6।।

ॐ ह्रीं श्री पश्चिमधातकीखण्डद्वीप अचलमेरूसंबंधित नन्दनवन दक्षिणदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धातकी में पश्चिम के, मेरू अचल जानिए।
नन्दन वन पश्चिम में, चैत्यालय मानिए।।

अष्ट द्रव्य का सुअर्घ्य, आज यहाँ लाए हैं।
दर्श करके जिनवर के, मन में हर्षाए हैं।।7।।

ॐ ह्रीं श्री पश्चिमधातकीखण्डद्वीप अचलमेरूसंबंधित नन्दनवन पश्चिमदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धातकी में पश्चिम के, मेरू अचल जानिए।
नन्दन वन उत्तर में, चैत्यालय मानिए।।
अष्ट द्रव्य का सुअर्घ्य, आज यहाँ लाए हैं।
दर्श करके जिनवर के, मन में हर्षाए हैं।।8।।

ॐ ह्रीं श्री पश्चिमधातकीखण्डद्वीप अचलमेरूसंबंधित नन्दनवन उत्तरदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तर्ज–आओ बच्चो...

द्वीप धातकी पश्चिम में शुभ, अचल मेरू है अपरम्पार।
श्रेष्ठ सौमनस वन पूरब में, मंदिर सोहे मंगलकार।। वन्दे जिनवरम्-2
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, लाए हम श्रद्धान से।
मुक्ती प्राप्त हमें हो भगवन्, विशद आपके ध्यान से।।9।।

ॐ ह्रीं श्री पश्चिमधातकीखण्डद्वीप अचलमेरूसंबंधित सौमनसवन पूर्वदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वीप धातकी पश्चिम में शुभ, अचल मेरू है अपरम्पार।
श्रेष्ठ सौमनस वन दक्षिण में, मंदिर सोहे मंगलकार।।वन्दे जिनवरम्-2
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, लाए हम श्रद्धान से।
मुक्ती प्राप्त हमें हो भगवन्, विशद आपके ध्यान से।।10।।

ॐ ह्रीं श्री पश्चिमधातकीखण्डद्वीप अचलमेरूसंबंधित सौमनसवन दक्षिणदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वीप धातकी पश्चिम में शुभ, अचल मेरू है अपरम्पार।
श्रेष्ठ सौमनस वन पश्चिम में, मंदिर सोहे मंगलकार।।वन्दे जिनवरम्-2
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, लाए हम श्रद्धान से।
मुक्ती प्राप्त हमें हो भगवन्, विशद आपके ध्यान से।।11।।

ॐ ह्रीं श्री पश्चिमधातकीखण्डद्वीप अचलमेरूसंबंधित सौमनसवन पश्चिमदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वीप धातकी पश्चिम में शुभ, अचल मेरू है अपरम्पार।
श्रेष्ठ सौमनस वन उत्तर में, मंदिर सोहे मंगलकार।।वन्दे जिनवरम्-2
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, लाए हम श्रद्धान से।
मुक्ती प्राप्त हमें हो भगवन्, विशद आपके ध्यान से।।12।।

ॐ ह्रीं श्री पश्चिमधातकीखण्डद्वीप अचलमेरूसंबंधित सौमनसवन उत्तरदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शम्भू छन्द)

पश्चिम द्वीप धातकी में शुभ, अचल मेरू है उच्च महान्।
अनुपम पाण्डुक वन पूरब में, मंदिर अतिशय आभावान।।
जिन मंदिर जिन बिम्बों की है, महिमा जग में अपरम्पार।
अर्घ्य चढ़ाकर वन्दन करते, विशद भाव से बारम्बार।।13।।

ॐ ह्रीं श्री पश्चिमधातकीखण्डद्वीप अचलमेरूसंबंधित पाण्डुकवन पूर्वदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पश्चिम द्वीप धातकी में शुभ, अचल मेरू है उच्च महान्।
अनुपम पाण्डुक वन दक्षिण में, मंदिर अतिशय आभावान।।
जिन मंदिर जिन बिम्बों की है, महिमा जग में अपरम्पार।
अर्घ्य चढ़ाकर वन्दन करते, विशद भाव से बारम्बार।।14।।

ॐ ह्रीं श्री पश्चिमधातकीखण्डद्वीप अचलमेरूसंबंधित पाण्डुकवन दक्षिणदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पश्चिम द्वीप धातकी में शुभ, अचल मेरू है उच्च महान्।
अनुपम पाण्डुक वन पश्चिम में, मंदिर अतिशय आभावान।।
जिन मंदिर जिन बिम्बों की है, महिमा जग में अपरम्पार।
अर्घ्य चढ़ाकर वन्दन करते, विशद भाव से बारम्बार।।15।।

ॐ ह्रीं श्री पश्चिमधातकीखण्डद्वीप अचलमेरूसंबंधित पाण्डुकवन पश्चिमदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पश्चिम द्वीप धातकी में शुभ, अचल मेरू है उच्च महान्।
अनुपम पाण्डुक वन उत्तर में, मंदिर अतिशय आभावान।।
जिन मंदिर जिन बिम्बों की है, महिमा जग में अपरम्पार।
अर्घ्य चढ़ाकर वन्दन करते, विशद भाव से बारम्बार।।16।।

ॐ ह्रीं श्री पश्चिमधातकीखण्डद्वीप अचलमेरूसंबंधित पाण्डुकवन उत्तरदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **अचल मेरू में जानिए, सोलह श्री जिनधाम।**
उनमें जो जिनबिम्ब हैं, तिन पद विशद प्रणाम।।

ॐ ह्रीं श्री अचलमेरूसंबंधिपांडुकवनसर्वजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

।।शान्तयेशांतिधारा पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्।।

जाप्य–ॐ ह्रीं अर्हं शाश्वत् जिनालयस्थसर्वजिनबिंबेभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा– **अचल मेरू पर रत्नमय, हैं जिनबिम्ब त्रिकाल।**
अर्चा करके भाव से, गाते हैं जयमाल।।

(शम्भू छंद)

है उत्तुंग अचल मेरू शुभ, सहस चौरासी योजन मान।
पांच सौ योजन भद्रशाल से, ऊपर नन्दनवन शुभ जान।।
योजन साढ़े पचपन सहस पे, रहा सौमनस वन शुभकार।
सहस अट्ठाइस योजन ऊपर, पाण्डुकवन है मंगलकार।।
त्रिभुवनपति जिनवर के जिसमें, सोलह भवन बने मनहार।
प्रतिजिनगृह में जिन प्रतिमाएँ, एक सौ आठ हैं अतिशयकार।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव हैं, काल अनादिक और अनन्त।
सुर नरेन्द्र विद्याधर आदिक, चरण वन्दना करते संत।।
सम्यक् दर्शन की निधि पाते, दर्शन करने वाले जीव।
चरण वन्दना करने वाले, प्राप्त करें नित पुण्य अतीव।।
रूप गंध रस फरस आदि से, होता है यह जीव विहीन।
मोहित होकर के विषयों में, काल अनादी रहता लीन।।
दूध में घृतसम काल अनादी, जीव कर्म का है सम्बन्ध।
कर्मों से कर्मों का होता, रहता है फिर-फिर से बंध।।
यह सम्बन्ध बंध का कारण, काल अनादी गाया है।
भेद ज्ञान यह नही आज तक, हमने कभी जगाया है।।
जड़ चेतन का भेद जानकर, रत्नत्रय जो पाते हैं।
मोक्ष महल के राही बनकर, आगे बढ़ते जाते हैं।।

संचित पाप राशि भव-भव की, क्षण में भष्म हुआ करती।
जिनचरणों की भक्ती क्षण में, भव्यों के सब दुख हरती।।
हे नाथ! आप त्रैलोक्य वंद्य, त्रिभुवन के स्वामी कहलाते।
तुम ज्योतिरूप मंगल स्वरूप, जिन अर्हन्तों का पद पाते।।
भविजन मनकुमुद विकाश चंद, हे नाथ! आप हो अविकारी।
मुनिगण हृदयाम्बुज सूर्यप्रभा, शिवरमणी के हो अधिकारी।।
तुम दर्शज्ञानसुख वीर्यवान, तुम अतुल अमल अनुपम गाये।
तुम हो अनन्त गुण पुंज ईश, गणधर भी तव पद सिरनाये।।
तुम गुण रत्नाकर देव रहे, हो करुणा के सागर स्वामी।
तुम जन्म मृत्यु अरि के जेता, हो दोष विजयी अन्तर्यामी।।

(छंद घत्तानन्द)

जय जय सुखकारी, करूणाधारी, जिनअविकारी गुणधारी।
जय मंगलकारी, जग हितकारी, धर्म के धारी, शिवकारी।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरूसंबंधिशोडशजिनालयस्थसर्वजिनबिंबेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

।।शान्तयेशांतिधारा पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्।।

इन्द्रध्वज की पूजा करने, का अवसर शुभ आया है।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा करने, का सौभाग्य जगाया है।।
'विशद' सौख्य शांति पाते वह, जो प्रभु के गुण गाते हैं।
उच्चादर्श प्राप्त करते जो, शिखर पे ध्वजा चढ़ाते हैं।।

इत्याशीर्वादः

अचल मेरू सम्बन्धी गजदंत जिनालय पूजा–14

स्थापना

जो चला नहीं है अचल मेरू, विदिशा में शुभ गजदंत रहे।
शाश्वत् अकृत्रिम हैं अनुपम, चैत्यालय जिन पर श्रेष्ठ कहे।।
जिनबिम्ब एक सौ आठ श्रेष्ठ, प्रति चैत्यालय में बतलाए।
हम विशद हृदय में आह्वानन्, करने को आज यहाँ आए।।

दोहा– **अचल मेरू के गेह में, शाश्वत् रहे जिनेश।**
उनके पद की वन्दना, करते यहाँ विशेष।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसंबंधिचतुर्गजदंताचलस्थितसिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंब समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं...। ॐ ह्रीं...अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं...अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम्।

(मोतियादाम छंद)

कराया प्रासुक हमने नीर, प्राप्त करने को भव का तीर।
चढ़ाते चरणों में भगवान, मेरा भी हो जाए कल्याण।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरूसंबंधिचतुर्गजदन्ताचलस्थितसिद्धकूटजिनालय स्थजिनबिंबेभ्यः जलं निर्व.स्वाहा।

घिसाया चन्दन यहाँ विशेष, नाश हो भव संताप अशेष।
चढ़ाते चरणों में भगवान, मेरा भी हो जाए कल्याण।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरूसंबंधिचतुर्गजदन्ताचलस्थितसिद्धकूटजिनालय स्थजिनबिंबेभ्यः चंदनं निर्व.स्वाहा।

भराए अक्षत के शुभ थाल, मिले अक्षय पद हमें विशाल।
चढ़ाते चरणों में भगवान, मेरा भी हो जाए कल्याण।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरूसंबंधिचतुर्गजदन्ताचलस्थितसिद्धकूटजिनालय स्थजिनबिंबेभ्यः अक्षतं निर्व.स्वाहा।

पुष्प यह लाए सुगन्धित खास, काम का होवे पूर्ण विनाश।
चढ़ाते चरणों में भगवान, मेरा भी हो जाए कल्याण।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरूसंबंधिचतुर्गजदन्ताचलस्थितसिद्धकूटजिनालय स्थजिनबिंबेभ्यः पुष्पं निर्व.स्वाहा।

व्यंजन बना लाए रसदार, क्षुधा व्याधी का हो संहार।
चढ़ाते चरणों में भगवान, मेरा भी हो जाए कल्याण।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरूसंबंधिचतुर्गजदन्ताचलस्थितसिद्धकूटजिनालय स्थजिनबिंबेभ्यः नैवेद्यं निर्व.स्वाहा।

जलाया हमने यहाँ कपूर, मोहतम होवे सारा दूर।
चढ़ाते चरणों में भगवान, मेरा भी हो जाए कल्याण।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरूसंबंधिचतुर्गजदन्ताचलस्थितसिद्धकूटजिनालय स्थजिनबिंबेभ्य: दीपं निर्व.स्वाहा।

बनाकर लाए ताजी धूप, कर्म नश पाएं सुखद अनूप।
चढ़ाते चरणों में भगवान, मेरा भी हो जाए कल्याण।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरूसंबंधिचतुर्गजदन्ताचलस्थितसिद्धकूटजिनालय स्थजिनबिंबेभ्य: धूपं निर्व.स्वाहा।

श्रेष्ठ फल लाये यह रसदार, मिले अब मोक्षमहल का द्वार।
चढ़ाते चरणों में भगवान, मेरा भी हो जाए कल्याण।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरूसंबंधिचतुर्गजदन्ताचलस्थितसिद्धकूटजिनालय स्थजिनबिंबेभ्य: फलं निर्व.स्वाहा।

बनाया अष्ट द्रव्य का अर्घ्य, प्राप्त हो हमको सुपद अनर्घ्य।
चढ़ाते चरणों में भगवान, मेरा भी हो जाए कल्याण।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरूसंबंधिचतुर्गजदन्ताचलस्थितसिद्धकूटजिनालय स्थजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

दोहा– **शांतीकर शांति मिले, है ऐसा उल्लेख।**
शांतीमय अपने विशद, भाव बनाकर देख।।

शान्तये शांतिधारा

दोहा– **पूजा करते भाव से, पुष्पांजलि के साथ।**
अल्प समय में भक्त वह, होय श्री का नाथ।।

।।पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

(प्रत्येक अर्घ्य)

दोहा– **अचल मेरू के चार हैं, विदिशा में गजदंत।**
पूज रहे हम भाव से, पाने भव का अंत।।

(मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्)

(मत्तसवैया छंद)

आग्नेय में अचल मेरू के, 'सोमनस्य' गजदन्त रहा।
रौप्यमयी जो सप्तकूट में, सिद्ध कूट शुभकार कहा।।

जिन मंदिर में जिन प्रतिमाएँ, रवि सम श्रेष्ठ प्रकाश करें।
मोह महातम जिन भक्तों का, क्षण में ही जो पूर्ण हरें।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरूसंबंधिआग्नेयदिक्सौमनस्यगजदन्तसिद्धकूटजिनालयस्थ जिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अचल मेरू नैऋत्य कोंण में, 'विद्युतप्रभ' गजदन्त अहा।
तप्त स्वर्ण छवि नव कूटों में, सिद्ध कूट मन मोह रहा।।
जिन मंदिर में जिन प्रतिमाएँ, रवि सम श्रेष्ठ प्रकाश करें।
मोह महातम जिन भक्तों का, क्षण में ही जो पूर्ण हरें।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरूसंबंधिनैऋत्यदिग्विद्युत्प्रभगजदन्तसिद्धकूटजिनालयस्थ -जिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

अचल मेरू वायव्य दिशा में, है गजदंत 'गंधमादन'।
तप्तस्वर्णमय सप्त कूट में, सिद्धकूट है मन भावन।।
जिन मंदिर में जिन प्रतिमाएँ, रवि सम श्रेष्ठ प्रकाश करें।
मोह महातम जिन भक्तों का, क्षण में ही जो पूर्ण हरें।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरूसंबंधिवायव्यदिग्गंधमादनगजदन्तसिद्धकूटजिनालयस्थ -जिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अचल मेरू ईशान कोंण में, 'माल्यवान' गजदन्त विशेष।
नील वर्ण का नव कूटों युत, सिद्धकूट में रहे जिनेश।।
जिन मंदिर में जिन प्रतिमाएँ, रवि सम श्रेष्ठ प्रकाश करें।
मोह महातम जिन भक्तों का, क्षण में ही जो पूर्ण हरें।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरूसंबंधिईशानदिग्माल्यवानगजदन्तसिद्धकूटजिनालयस्थ- जिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विदिशाओं में अचल मेरू के, गजदन्तों पर हैं जिनधाम।
इन्द्र चक्रवर्ती मुनीन्द्र सब, करते बारम्बार प्रणाम।।
जिन मंदिर में जिन प्रतिमाएँ, रवि सम श्रेष्ठ प्रकाश करें।
मोह महातम जिन भक्तों का, क्षण में ही जो पूर्ण हरें।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसंबंधिचतुर्गजदन्तसिद्धकूटजिनालयस्थसर्वजिनबिंबेभ्य: पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

।।शान्तयेशांतिधारा पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्।।

जाप– ॐ ह्रीं अर्हं शाश्वतजिनालयस्थसर्वजिनबिंबेभ्यो नम:।

जयमाला

दोहा– **आप हमारे देवता, आप हमारे नाथ।**
जयमाला गाते यहाँ, थामों मेरा हाथ॥

(पद्धरी छंद)

त्रैलोक्य वंद्य हे नाथ आप, तव नाम जाप से कटें पाप।
हे ज्ञान भानु मंगल स्वरूप, हे निर्विकार परमात्म रूप॥
भविजन मन कुमुद विकाशवान, हो चन्द्र आप जग में महान।
तुम तारों में प्रभू रवि समान, शुभ गुणानन्त के हो निधान॥
हे गुणानन्त धारी ऋशीष, तव चरण झुकाते संत शीश।
सब रोग शोक बाधा विहीन, कर्मारी पर प्रभु विजय कीन॥
प्रभू क्षुधा तृषादी दोष नाश, निज के गुण का कीन्हा प्रकाश।
हो मूर्ति रहित भी मूर्तिमान, तुम देह रहित हो कांतिमान॥
हे गुणधर श्री देवाधिदेव, हे करुणा सागर देव-देव।
हे शुद्ध बुद्ध ज्ञायक निधान, भव सिन्धू तारक हो महान॥
तुम बिम्ब अचेतन रत्नवान, फिर भी वाञ्छित फल के निधान।
उपदेश नहीं देते कदापि, शिव पथ दिखलाते हैं तथापि॥
है प्रभु की मुद्रा वीतराग, भव से प्राणी पाते विराग।
प्रभु आदि अनन्त से हैं विहीन, प्रगटित होते हैं चिह्न तीन॥
सर्वज्ञ वीतरागी जिनेश, होते हितकारी जिन विशेष।
हम वन्दन करते बार बार, जिनबिम्बों को मम नमस्कार॥
हे नाथ! दूर हो मम क्लेश, निजपद दो हमकों हे जिनेश।
हे प्रभू आपके खड़े द्वार, अब भव सिन्धू से करो पार॥

(घत्ता छंद)

जय जय गजदन्ता, गुणगणवन्ता, जिनअरहन्ता शोभ रहे।
जय मंगलकारी, कर्म निवारी, जिन अविकारी, देव कहे॥

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसंबंधिचतुर्गजदन्तपर्वतस्थितसिद्धकूटजिनालयस्थसर्व-जिनबिंबेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

।।शान्तयेशांतिधारा पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्।।

इन्द्रध्वज की पूजा करने, का अवसर शुभ आया है।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा करने, का सौभाग्य जगाया है॥
'विशद' सौख्य शांति पाते वह, जो प्रभु के गुण गाते हैं।
उच्चादर्श प्राप्त करते जो, शिखर पे ध्वजा चढ़ाते हैं॥

इत्याशीर्वादः

अचल मेरू संबंधी धातकी शाल्मलि वृक्ष जिनालय पूजा–15

स्थापना

द्वीप धातकी अपर दिशा के, बीच में सुरगिरी अचल रहा।
विदिशा के ईशान कोंण में, वृक्ष धातकी अतुल कहा॥
सुरगिरी के नैऋत्य में शाश्वत, रहा शाल्मलि वृक्ष महान।
द्वय वृक्षों की शाखाओं के, जिनगृह जिन का है आह्वान॥

दोहा– **तरु शाखा पर जिन भवन, जिनमें हैं भगवान।**
विशद भाव से अर्चना, कर करते गुणगान॥

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसम्बंधिधातकीशाल्मलिद्वयवृक्षस्थितजिनालयस्थजिनबिंब समूह! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। ॐ ह्रीं...अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं...अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

अष्टक

जल पीकर काल अनादी से, हम तृषा शांत न कर पाए।
जो लगा हुआ है मिथ्यामल, हम आज यहाँ धोने आए॥
शुभ वृक्ष धातकी शाल्मलि, पृथ्वी कायिक जो बतलाए।
उन पर जिनगृह जिनबिम्बों की, हम पूजा करने को आए॥1॥

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसंबंधिधातकीशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

घिस डाले चन्दन के वन कई, पर शीतलता न पाई है।
सम्यक् श्रद्धा की विशद कली, न हमने हृदय खिलाई है॥

शुभ वृक्ष धातकी शाल्मलि, पृथ्वी कायिक जो बतलाए।
उन पर जिनगृह जिनबिम्बों की, हम पूजा करने को आए।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसंबंधिधातकीशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

धोकर कई थाल तन्दुलों के, हम चढ़ा चढ़ाकर हारे हैं।
अक्षय पद पाने हेतु नाथ, अब आए चरण सहारे हैं।।
शुभ वृक्ष धातकी शाल्मलि, पृथ्वी कायिक जो बतलाए।
उन पर जिनगृह जिनबिम्बों की, हम पूजा करने को आए।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसंबंधिधातकीशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

खाई तृष्णा की है असीम, हम उसे नहीं भर पाए हैं।
अटके हैं काम वासना में, छुटकारा पाने आये हैं।।
शुभ वृक्ष धातकी शाल्मलि, पृथ्वी कायिक जो बतलाए।
उन पर जिनगृह जिनबिम्बों की, हम पूजा करने को आए।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसंबंधिधातकीशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

जीवों को क्षुधा वेदना ने, सदियों से सदा सताया है।
मनमाने व्यंजन खाकर भी, यह तृप्त नहीं हो पाया है।।
शुभ वृक्ष धातकी शाल्मलि, पृथ्वी कायिक जो बतलाए।
उन पर जिनगृह जिनबिम्बों की, हम पूजा करने को आए।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसंबंधिधातकीशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है घोर तिमिर मिथ्यातम का, उसमें प्राणी भटकाए हैं।
अब मोहतिमिर हो नाश पूर्ण, यह दीप जलाकर लाए हैं।।
शुभ वृक्ष धातकी शाल्मलि, पृथ्वी कायिक जो बतलाए।
उन पर जिनगृह जिनबिम्बों की, हम पूजा करने को आए।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसंबंधिधातकीशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

हमने कर्मों से रिश्ताकर, पग-पग पर दुख ही दुख पाये।
अब पिण्ड छुड़ाने कर्मों से, यह धूप जलाने को लाए।।
शुभ वृक्ष धातकी शाल्मलि, पृथ्वी कायिक जो बतलाए।
उन पर जिनगृह जिनबिम्बों की, हम पूजा करने को आए।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसंबंधिधातकीशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल पापों का है चतुर्गती, जिसमें सब जीव भ्रमण करते।
अब मोक्ष महाफल पाने को, यह ताजे फल चरणों धरते।।
शुभ वृक्ष धातकी शाल्मलि, पृथ्वी कायिक जो बतलाए।
उन पर जिनगृह जिनबिम्बों की, हम पूजा करने को आए।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसंबंधिधातकीशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हम मोह से मोहित हुए विशद, सम्यक् पथ को ना पाये हैं।
अब मोक्ष मार्ग अपनाने को, यह अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।।
शुभ वृक्ष धातकी शाल्मलि, पृथ्वी कायिक जो बतलाए।
उन पर जिनगृह जिनबिम्बों की, हम पूजा करने को आए।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसंबंधिधातकीशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **श्रेष्ठ सुगन्धित नीर से, देते हैं जलधार।**
जीवन सुखमय शांत हो, मिले मोक्ष का द्वार।

।।शान्तये शान्तिधारा।।

पुष्पाञ्जलि करते यहाँ, पुष्प लिए शुभ हाथ।
जिन गुण पाने के लिए, झुका चरण में माथ।।

।।पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

प्रत्येक अर्घ्य

दोहा– **अचल मेरू ईशान में, वृक्ष धातकी जान।**
शाल्मलि नैऋत्य में, जिस पर हैं भगवान।।

(मण्डस्योपरि पुष्पाजलिं क्षिपेत्)

(चौबोला छंद)

विजय मेरू ईशान कोंण में, वृक्ष धातकी बतलाया।
तरु की उत्तर शाखा ऊपर, जिनगृह रत्नमयी गाया।।
सुर नर यतिपति द्वारा वन्दित, जिसमें शाश्वत् रहे जिनेश।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, पूज रहे हम यहाँ विशेष।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरोईशानकोणे धातकीवृक्षजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अचल मेरू नैऋत्य कोंण में, वृक्ष शाल्मलि शुभकारी।
जिसकी दक्षिण शाखा पर शुभ, जिन मंदिर है मनहारी।।
सुर नर यतिपति द्वारा वन्दित, जिसमें शाश्वत् रहे जिनेश।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, पूज रहे हम यहाँ विशेष।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरोर्नैऋत्यकोणे शाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अचल मेरू ईशान अपर द्वय, कोंणों में तरुवर गाए।
जिनकी शाखाओं के ऊपर, जिनगृह शाश्वत् बतलाए।।
सुर नर यतिपति द्वारा वन्दित, जिसमें शाश्वत् रहे जिनेश।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, पूज रहे हम यहाँ विशेष।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूसम्बन्धिधातकीशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयस्थ सर्वजिनबिंबेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

।।शान्तयेशांतिधारा पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्।।

जाप–ॐ ह्रीं अर्हं शाश्वतजिनालयस्थसर्वजिनबिंबेभ्यो नमः।

जयमाला

सोरठा– **तरुवर में जिनगेह, स्वयं सिद्ध भगवान हैं।**
करके विशद सनेह, जयमाला गाते यहाँ।।

(भुजंग प्रयात)

प्रभू दु:ख हर्त्ता जगत के कहाए, शरण आश लेकर के हम नाथ आये।
अहो भाग्य जागा करी आज पूजा, नहीं भक्ति सम काम है और दूजा।
प्रभू तेरी महिमा है जग से निराली, प्रभो धर्म उपवन के हो आप माली।

कभी पूर्व में आप इस जग में रहते, हमारी तरह कर्म की मार सहते।।
उदय पुण्य आया सभी सौख्य पाये, कभी पापोदय में दुखों से सताए।
हुई मन में आकुलता करम की दुहाई, इन्हीं सुख दुखों की कहानी बनाई।।
भ्रमण चार गति में सदा करते आये, नहीं मुक्ती की राह पर चलने पाये।
प्रभू क्रोध अभिमान माया को छोड़ा, मिटा लोभ मेरा भी जब मन को मोड़ा।
बुरा पाप होता जगत को बताया, प्रभु भाव मन में धरम का जब आया।
करे पाप हिंसादी नरकों में जानें, कठिन वेदना मार जाकर के खाने।।
किए कर्म बन्धन जगत में भ्रमाए, प्रभू जग से डरकर के संयम को पाए।
कषायों को तज के सुतप मन को भाया, करम नाश करके विशद मोक्ष पाया।।
हमारा भला हो कहो नाथ कैसे, करें क्या प्रभू हम बनें आप जैसे।
इस जीवन का आधार तुमको बनाया, शुभ भावों से पूजा रचाने को आया।।
है अज्ञान का तम ना सूझे किनारा, हे करुणा के सागर दो हमको सहारा।
है विश्वास चरणों जगह आप देंगे, शरण में प्रभू भक्त को आप लेंगें।।
सती सीता ने आपको मन से ध्याया, तभी कमल अग्नी का तुमने बनाया।
प्रभू चोर अंजन ने तुमको ही ध्याया, किया था निरंजन वो शिवपद को पाया।।
सुदर्शन को सूली पे जाके बिठाए, जपा नाम ज्यों ही सिंहासन बनाए।
जनम की मरण की व्यथा क्या सुनाएँ, हम भटके हैं गतियों में तुम्हें क्या बताएँ।।
फँसी नाव सागर में आके निकालो, प्रभू डूबते को अब आके सम्हालो।
प्रभू दर्शकर दर्श सम्यक्त्व पाएँ, हृदय में सुमन धर्म के हम खिलाएँ।
हो स्वीकार श्रद्धा सुमन ये हमारे, करो पार भव से हम हैं तव सहारे।
खड़े भक्त द्वारे पर आशा लगाए, निराशा ना मन में मेरी होने पाए।।

दोहा– **'विशद' ज्ञान पाने प्रभू, आए आपके पास।**
विशद मुक्ति हम पाएँगे, है पूरा विश्वास।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरूसम्बन्धिधातकीशाल्मलिवृक्षस्थितसिद्धकूटजिनालयस्थ-जिनबिंबेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

।।शान्तयेशांतिधारा पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्।।

इन्द्रध्वज की पूजा करने, का अवसर शुभ आया है।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा करने, का सौभाग्य जगाया है।।

'विशद' सौख्य शांति पाते वह, जो प्रभु के गुण गाते हैं।
उच्चादर्श प्राप्त करते जो, शिखर पे ध्वजा चढ़ाते हैं।।

इत्याशीर्वादः

अचल मेरू संबंधी षोडश वक्षार गिरी जिनालय पूजा–16

स्थापना (गीता छन्द)

द्वीप पश्चिम धातकी में, अचल मेरू जानिए।
वक्षार गिरी सोलह कनकमय, अपर पूरब मानिए।।
बने जिनगृह गिरी ऊपर, रत्नमय शुभकार हैं।
जिन प्रभु के दर्श उनमें, हो रहे मनहार हैं।।

दोहा– **जिनगृह जिन का निज हृदय, करते हैं आह्वान।**
विशद भाव से हम यहाँ, करते हैं गुणगान।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरूसम्बंधिपूर्वापरविदेहस्थषोडशवक्षारपर्वत सिद्धकूटजिनालय स्थसर्वजिनबिंबसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। ॐ ह्रीं... अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। ॐ ह्रीं...अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(चाल छंद)

भव-भव में दुःख सहे हैं, न जाते नाथ! कहे हैं।
जन्मादि नशाने आए, यह नीर चढ़ाने लाए।।
सोलह वक्षार कहाए, उन पर जिनगृह बतलाये।
है जिनवर की प्रभुताई, हम पूजा करते भाई।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरूसंबंधिषोडशवक्षारपर्वत स्थितसिद्धकूटजिनालयस्थ जिनबिंबेभ्यः जलं निर्व.स्वाहा।

संतप्त लोक ये सारा, ना पाए कहीं सहारा।
यह चन्दन घिसकर लाए, हे नाथ! चढ़ाने आए।।
सोलह वक्षार कहाए, उन पर जिनगृह बतलाये।
है जिनवर की प्रभुताई, हम पूजा करते भाई।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरूसंबंधिषोडशवक्षारपर्वत स्थितसिद्धकूटजिनालयस्थ जिनबिंबेभ्यः चंदनं निर्व.स्वाहा।

यह जग अनित्य है सारा, न मिलता कहीं सहारा।
हम अक्षय पदवी पाएँ, न और जगत भटकाएँ।।
सोलह वक्षार कहाए, उन पर जिनगृह बतलाये।
है जिनवर की प्रभुताई, हम पूजा करते भाई।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरूसंबंधिषोडशवक्षारपर्वत स्थितसिद्धकूटजिनालयस्थ जिनबिंबेभ्यः अक्षतं निर्व.स्वाहा।

इस कामदेव की माया, कोई भी जान न पाया।
विषयों में सदा लुभाए, प्राणी को जगत भ्रमाए।।
सोलह वक्षार कहाए, उन पर जिनगृह बतलाये।
है जिनवर की प्रभुताई, हम पूजा करते भाई।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरूसंबंधिषोडशवक्षारपर्वत स्थितसिद्धकूटजिनालयस्थ जिनबिंबेभ्यः पुष्पं निर्व.स्वाहा।

है क्षुधा रोग दुखदायी, यह जग है दुखिया भाई।
हम क्षुधा से मुक्ती पाएँ, अनुपम नैवेद्य चढ़ाएँ।।
सोलह वक्षार कहाए, उन पर जिनगृह बतलाये।
है जिनवर की प्रभुताई, हम पूजा करते भाई।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरूसंबंधिषोडशवक्षारपर्वत स्थितसिद्धकूटजिनालयस्थ जिनबिंबेभ्यः नैवेद्यं निर्व.स्वाहा।

प्राणी को मोह सताए, मोहित हो जग भटकाए।
अब मोह नशाने आये, यह दीप जलाकर लाए।।
सोलह वक्षार कहाए, उन पर जिनगृह बतलाये।
है जिनवर की प्रभुताई, हम पूजा करते भाई।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरूसंबंधिषोडशवक्षारपर्वत स्थितसिद्धकूटजिनालयस्थ जिनबिंबेभ्यः दीपं निर्व.स्वाहा।

कर्मों ने डेरा डाला, आतम को किया है काला।
यह धूप जलाते भाई, कर्मों की होय सफाई।।
सोलह वक्षार कहाए, उन पर जिनगृह बतलाये।
है जिनवर की प्रभुताई, हम पूजा करते भाई।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरूसंबंधिषोडशवक्षारपर्वत स्थितसिद्धकूटजिनालयस्थ जिनबिंबेभ्यः धूपं निर्व.स्वाहा।

जिस काम में हाथ लगाया, उसका फल हमने पाया।
अब शिवपद पाने आए, फल यहाँ चढ़ाने लाए।।
सोलह वक्षार कहाए, उन पर जिनगृह बतलाये।
है जिनवर की प्रभुताई, हम पूजा करते भाई।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरूसंबंधिषोडशवक्षारपर्वत स्थितसिद्धकूटजिनालयस्थ जिनबिंबेभ्यः फलं निर्व.स्वाहा।

इस जग में भटके भाई, न शांति कहीं मिल पाई।
यह अर्घ्य बनाकर लाए, प्रभु यहाँ चढ़ाने आए।।
सोलह वक्षार कहाए, उन पर जिनगृह बतलाये।
है जिनवर की प्रभुताई, हम पूजा करते भाई।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरूसंबंधिषोडशवक्षारपर्वत स्थितसिद्धकूटजिनालयस्थ जिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **दुस्तर पारावार है, क्षार नीर संसार।**
शांतीधारा दे रहे, पाने भवदधि पार।।

।।शान्तये शान्तिधारा।।

इस असार संसार में, तारण तरण जहाज।
हमको शिवपद दीजिए, दीन बन्धु महाराज।।

।।पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

(प्रत्येक अर्घ्य)

दोहा– **अचल मेरू के पूर्व अरु, पश्चिम दोनों ओर।**
सोलह गिरी वक्षार हैं, करते भाव विभोर।।

(मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

(नरेन्द्र छन्द)

अचल मेरू उत्तर सीता के, गिरी वक्षार बताया।
भद्रशाल वन पास वेदि के, 'चित्रकूट' शुभ गाया।।

शाश्वत् गिरी वक्षार अचल पे, जिन मंदिर शुभकारी।
जिन प्रतिमाएँ सुर नर वन्दित, पूज रहे मनहारी।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरूसम्बंधिसीतानद्युत्तरतटेचित्रकूटवक्षारपर्वत स्थित सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पदम कूट' वक्षार मनोहर, सुर भवनों से सोहे।
इन्द्र चक्रवर्ती धरणी पति, के भी मन को मोहे।।
शाश्वत् गिरी वक्षार अचल पे, जिन मंदिर शुभकारी।
जिन प्रतिमाएँ सुर नर वन्दित, पूज रहे मनहारी।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरूसम्बंधिसीतानद्युत्तरतटे पद्मकूटवक्षारपर्वत स्थितसिद्ध कूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'नलिन कूट' वक्षार अचल शुभ, शाश्वत् सिद्ध बताया।
सुर ललनाएँ क्रीड़ा करती, अद्भुत जिसकी माया।।
शाश्वत् गिरी वक्षार अचल पे, जिन मंदिर शुभकारी।
जिन प्रतिमाएँ सुर नर वन्दित, पूज रहे मनहारी।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरूसम्बंधिसीतानद्युत्तरतटे नलिनकूटवक्षारपर्वत स्थितसिद्ध –कूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'एकशैल' वक्षार श्रेष्ठतम, वन उपवन मनहारी।
महिमा गाते सुर नर किन्नर, जिनका मंगलकारी।।
शाश्वत् गिरी वक्षार अचल पे, जिन मंदिर शुभकारी।
जिन प्रतिमाएँ सुर नर वन्दित, पूज रहे मनहारी।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरूसम्बंधिसीतानद्युत्तरतटे एकशैलवक्षारपर्वत स्थितसिद्ध– कूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सीता नदी के उत्तर में शुभ, देवारण्य बताया।
गिरी वक्षार 'त्रिकूट' श्रेष्ठतम, स्वर्ण वर्ण का पाया।।
शाश्वत् गिरी वक्षार अचल पे, जिन मंदिर शुभकारी।
जिन प्रतिमाएँ सुर नर वन्दित, पूज रहे मनहारी।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरूसम्बंधिसीतानदीदक्षिणतटे त्रिकूटवक्षारपर्वत स्थितसिद्ध कूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है वक्षार 'वैश्रवण' भाई, अनुपम निधि को पावें।
देव देवियाँ भक्ति भाव से, प्रभु का यश बतलावें।।
शाश्वत् गिरी वक्षार अचल पे, जिन मंदिर शुभकारी।
जिन प्रतिमाएँ सुर नर वन्दित, पूज रहे मनहारी।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरूसम्बंधिसीतानदीदक्षिणतटे वैश्रवणवक्षारपर्वत स्थितसिद्ध -कूटजिनालयस्थजिबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अंजन' है वक्षार निराला, भव्य जीव कई आवें।
सुर ललनाएँ कीड़ा करके, नाचें हर्ष मनावें।।
शाश्वत् गिरी वक्षार अचल पे, जिन मंदिर शुभकारी।
जिन प्रतिमाएँ सुर नर वन्दित, पूज रहे मनहारी।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरूसम्बंधिसीतानदीदक्षिणतटे अंजनवक्षारपर्वत स्थित -सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'आत्मांजन' वक्षार की महिमा, गाते सब नर नारी।
विद्याबल से श्रावक आके, करते पूजा भारी।।
शाश्वत् गिरी वक्षार अचल पे, जिन मंदिर शुभकारी।
जिन प्रतिमाएँ सुर नर वन्दित, पूज रहे मनहारी।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरूसम्बंधिसीतानदीदक्षिणतटे आत्मांजनवक्षारपर्वत स्थित सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अपर विदेह नदी सीतोदा, दक्षिण दिश में गाया।
है वक्षार भद्रशाल तट, 'श्रद्धावान' बताया।।
अचल मेरू पर जिन प्रतिमाएँ, जिन मंदिर शुभकारी।
पूजा करते विशद प्रतिमाएँ, जिन मंदिर शुभकारी।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरूसम्बंधिसीतोदानदीदक्षिणतटे श्रद्धावान्वक्षारपर्वत स्थित -सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विजटावान' अचल है मनहर, जिन महिमा दिखलाए।
इन्द्र नमन करते हैं नत हो, श्रद्धा भक्ति जगाए।।
अचल मेरू पर जिन प्रतिमाएँ, जिन मंदिर शुभकारी।
पूजा करते विशद प्रतिमाएँ, जिन मंदिर शुभकारी।।10।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरूसम्बंधिसीतोदानदीदक्षिणतटे विजटावान्वक्षारपर्वत -स्थितसिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अकृत्रिम वक्षार 'आशीविष', शुभ अनुपम निधिकारी।
जिन महिमा दिखलाने वाला, जो है मंगलकारी।।
अचल मेरू पर जिन प्रतिमाएँ, जिन मंदिर शुभकारी।
पूजा करते विशद प्रतिमाएँ, जिन मंदिर शुभकारी।।11।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरूसम्बंधिसीतोदानदीदक्षिणतटे आशीविषवक्षारपर्वत - स्थितसिद्धकूट जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुख दायक है अचल 'सुखावह', उपवन वेदी वाला।
श्रद्धा का शुभ निलय कहा है, जग में श्रेष्ठ निराला।।
अचल मेरू पर जिन प्रतिमाएँ, जिन मंदिर शुभकारी।
पूजा करते विशद प्रतिमाएँ, जिन मंदिर शुभकारी।।12।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरूसम्बंधिसीतोदानदीदक्षिणतटे सुखावहवक्षारपर्वत स्थित- सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौपाई

अपर विदेह धातकी द्वीप, सीतोदा तट रहा समीप।
देवारण्य निकट वक्षार, 'चन्द्रमाल' शुभ अपरम्पार।।
जिस पर सिद्धकूट शुभकार, जिनगृह जिनप्रतिमा मनहार।
पूजा करने आए आज, करे वन्दना सकल समाज।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरूसम्बंधिसीतोदानदीउत्तरतटे चन्द्रमालवक्षारपर्वत स्थित- सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सूर्यमाल' वक्षार विशेष, जिस पर जिनगृह रहे जिनेश।
देव खचर मुनि करें विहार, करें वन्दना अपरम्पार।।
जिस पर सिद्धकूट शुभकार, जिनगृह जिनप्रतिमा मनहार।
पूजा करने आए आज, करे वन्दना सकल समाज।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरूसम्बंधिसीतोदानद्युत्तरतटे सूर्यमालवक्षारपर्वत स्थित सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'नागमाल' तृतीय वक्षार, जिस पर जिनगृह मंगलकार।
सिद्ध कूट में शुभ जिनबिम्ब, पूज रहे सिद्धों के बिम्ब।।

जिस पर सिद्धकूट शुभकार, जिनगृह जिनप्रतिमा मनहार।
पूजा करने आए आज, करे वन्दना सकल समाज।।15।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरूसम्बंधिसीतोदानद्युत्तरतटे नागमालवक्षारपर्वत स्थित-सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'देवमाल' वक्षार कहाय, जिनगृह जिस पर शोभा पाय।
भव विजयी जिनबिम्ब महान, जिनका हम करते गुणगान।।
जिस पर सिद्धकूट शुभकार, जिनगृह जिनप्रतिमा मनहार।
पूजा करने आए आज, करे वन्दना सकल समाज।।16।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरूसम्बंधिसीतोदानद्युत्तरतटे देवमालवक्षारपर्वत स्थितसिद्ध-कूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वीप धातकी में शुभकार, सोलह पर्वत हैं वक्षार।
कूट स्वर्णमय जिनमें चार, तीन कूट में देव अपार।।
सरिता के तट कूट विशेष, जिसमें सोहें श्री जिनेश।
पूजा करते हम भी आज, करे वन्दना सकल समाज।।17।।

ॐ ह्रीं श्री अचलमेरूसंबंधिषोडशवक्षारपर्वतस्थितसिद्धकूटजिनालयस्थजिन बिंबेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

।।शान्तयेशांतिधारा पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्।।

जाप्य–ॐ ह्रीं अर्हं शाश्वत् जिनालयस्थसर्वजिनबिंबेभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा– **अचल मेरू के जानिए, सोलह गिरी वक्षार।**
जयमाला गाते यहाँ, पाने शिव का द्वार।।

(शम्भू छंद)

अचल मेरू के पूरब पश्चिम, सोलह शुभ वक्षार कहे।
रत्नमयी अकृत्रिम जिन पर, जिन चैत्यालय श्रेष्ठ रहे।।
गिरी वक्षार के मध्य एक इक, नदी विभंगा रहती है।
कुलगिरी तल के कुण्ड से निकली, सीतादी में बहती है।।

सीता सीतोदा स्पर्शित, नीलगिरी को करती आन।
उत्तर में वक्षार गिरी अरु, निषधादिक को छुए महान।।
सभी स्वर्ण कांतीमय पर्वत, चार कूट युत रहे प्रधान।
दिग्कन्याएँ गिरी निकट के, कूट के गृह में रहें महान।।
सरिता निकट के कूट पे जिनगृह, अकृत्रिम सोहें मनहार।
मध्य के दो कूटों में व्यन्तर, देवों के गृह हैं शुभकार।।
वन वेदी तोरण से सज्जित, पुष्करिणी जल से संयुक्त।
कूट के चारों ओर बगीची, शाश्वत् है शोभा से युक्त।।
भव से जो भयभीत भव्य हैं, वन्दन करें जिनालय आन।
भवदधि पार हेतु करते हैं, श्री जिनेन्द्र का जो गुणगान।।
राग द्वेष मोहादी मर्दन, करने की है जिनको आश।
श्री जिनेन्द्र के पद पंकज में, करें अर्चना वे सब खास।।
चरण-शरण में जो आ जाते, उनसे डरते हैं यमराज।
जिन वचनों में श्रद्धा धारी, से कर्मों का डरे समाज।।
करें आपका नाम जाप जो, निज के गुण में रमण करें।
वचन सुधारस पाने वाले, अपने सारे कर्म हरें।।
रोग शोक भय विघ्न आदि सब, मानस व्याधी का हो नाश।
तव भक्ती करने वाले को, नहीं उपाधी की हो आश।।
व्यन्तर भूत पिशाच भयंकर, चोर और ग्रह आदी क्रूर।
बाधा ना किंचित् कर पाते, शरणागत से भागें दूर।।
श्रेष्ठ ग्रन्थ त्रैलोक प्रज्ञप्ति, सब ग्रन्थों में गाया है।
सुयश आपका सारे जग में, संतों ने बतलाया है।।
कीर्ति आपकी सुनकर स्वामी, भक्त शरण में आये हैं।
हाथ जोड़कर खड़े सामने, मन में आश लगाए हैं।।

दोहा– रक्षक हे जिन आप हो, आप हमारे नाथ।
जो चाहो वह कीजिए, "विशद" झुकाते माथ।।

ॐ ह्रीं श्री अचलमेरूसंबंधिषोडशवक्षारपर्वतस्थितसिद्धकूटजिनालय-स्थसर्वजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

।।शान्तयेशांतिधारा पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्।।

इन्द्रध्वज की पूजा करने, का अवसर शुभ आया है।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा करने, का सौभाग्य जगाया है।।
'विशद' सौख्य शांति पाते वह, जो प्रभु के गुण गाते हैं।
उच्चादर्श प्राप्त करते जो, शिखर पे ध्वजा चढ़ाते हैं।।

इत्याशीर्वादः

अचलमेरू संबंधी चौंतीस विजयार्ध जिनालय पूजा–17

स्थापना

अचल मेरू के पूरब पश्चिम, क्षेत्र विदेह है मंगलकार।
रजताचल हैं बीच में जिसके, रत्नमयी बत्तिस शुभकार।।
उत्तर दक्षिण में इसके शुभ, भरतैरावत बतलाए।
इन दोनों के बीच रजत गिरी, अनुपम शुभ शोभा पाए।।

दोहा– **चौंतीसों विजयार्ध पर, चौंतिस हैं जिनधाम।**
आह्वानन् करते यहाँ, करके विशद प्रणाम।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरूसम्बंधिचतुस्त्रिंशत्विजयार्धपर्वत स्थितसिद्धकूटजिनालय –स्थसर्वजिनबिंब समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। ॐ ह्रीं. ..अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। ॐ ह्रीं...अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(गीता छंद)

नर तन मिला सौभाग्य से, पर पाप कर अकुलाए हैं।
भव रोग नाशी नाथ चरणों नीर निर्मल लाए हैं।।
शुभ अचल मेरू के रजतगिरी, श्रेष्ठ चौंतिस गाए हैं।
अब पूजने जिनबिम्ब को हम, आज दर पे आए हैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरूसम्बंधिचतुस्त्रिंशत्विजयार्धपर्वत स्थितसिद्धकूटजिनालय –स्थजिनबिंबेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ शांतमय शीतल सहज, हो श्रेष्ठ मम शुद्धात्मा।
भव ताप का हो नाश अब, पावन मिले परमात्मा।।

शुभ अचल मेरू के रजतगिरी, श्रेष्ठ चौंतिस गाए हैं।
अब पूजने जिनबिम्ब को हम, आज दर पे आए हैं।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरूसम्बंधिचतुस्त्रिंशत्विजयार्धपर्वत स्थितसिद्धकूटजिनालय –स्थजिनबिंबेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षयपुरी के श्रेष्ठ अक्षत, पूजने को लाए हैं।
उज्ज्वल अखण्डित अमर पद हम, प्राप्त करने आए हैं।।
शुभ अचल मेरू के रजतगिरी, श्रेष्ठ चौंतिस गाए हैं।
अब पूजने जिनबिम्ब को हम, आज दर पे आए हैं।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरूसम्बंधिचतुस्त्रिंशत्विजयार्धपर्वत स्थितसिद्धकूटजिनालय –स्थजिनबिंबेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

हम भोग सुख के लालची, बस इन्द्रियों के दास हैं।
खोजते हैं हम विषय सुख, अरु विषय की आस है।।
शुभ अचल मेरू के रजतगिरी, श्रेष्ठ चौंतिस गाए हैं।
अब पूजने जिनबिम्ब को हम, आज दर पे आए हैं।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरूसम्बंधिचतुस्त्रिंशत्विजयार्धपर्वत स्थितसिद्धकूटजिनालय –स्थजिनबिंबेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

खाते रहे व्यंजन अनेकों, पेट अब तक न भरा।
पर क्षुधा का यह रोग मेरा, हर समय रहता हरा।।
शुभ अचल मेरू के रजतगिरी, श्रेष्ठ चौंतिस गाए हैं।
अब पूजने जिनबिम्ब को हम, आज दर पे आए हैं।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरूसम्बंधिचतुस्त्रिंशत्विजयार्धपर्वत स्थितसिद्धकूटजिनालय –स्थजिनबिंबेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब जलाए दीप लेकिन, ज्ञान दीपक न जला।
मोह ने महिमा दिखाई, मोह का जादू चला।।
शुभ अचल मेरू के रजतगिरी, श्रेष्ठ चौंतिस गाए हैं।
अब पूजने जिनबिम्ब को हम, आज दर पे आए हैं।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरूसम्बंधिचतुस्त्रिंशत्विजयार्धपर्वत स्थितसिद्धकूटजिनालय –स्थजिनबिंबेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

हम दास कर्मों के बने, उनसे सदा सुख पाए हैं।
अब अष्ट कर्म विनाश करने, धूप खेने लाए हैं।।

शुभ अचल मेरू के रजतगिरी, श्रेष्ठ चौंतिस गाए हैं।
अब पूजने जिनबिम्ब को हम, आज दर पे आए हैं।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरूसम्बंधिचतुस्त्रिंशत्विजयार्धपर्वत स्थितसिद्धकूटजिनालय -स्थजिनबिंबेभ्य: धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सद् धर्म का तरु है मनोहर, ज्ञान फल जिसमें लगे।
निज आत्मा के ध्यान से ही, ज्ञान की शक्ती जगे।।
शुभ अचल मेरू के रजतगिरी, श्रेष्ठ चौंतिस गाए हैं।
अब पूजने जिनबिम्ब को हम, आज दर पे आए हैं।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरूसम्बंधिचतुस्त्रिंशत्विजयार्धपर्वत स्थितसिद्धकूटजिनालय -स्थजिनबिंबेभ्य: फलं निर्वपामीति स्वाहा।

यह अष्ट द्रव्यों का मिलाकर, शुभ बनाया अर्घ्य है।
अब प्राप्त करना है हमें, शाश्वत सुपद जो अनर्घ्य है।।
शुभ अचल मेरू के रजतगिरी, श्रेष्ठ चौंतिस गाए हैं।
अब पूजने जिनबिम्ब को हम, आज दर पे आए हैं।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरूसम्बंधिचतुस्त्रिंशत्विजयार्धपर्वत स्थितसिद्धकूटजिनालय -स्थजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **शांतीधारा के लिए, लाए निर्मल नीर।**
शांती हो इस लोक में, मिट जाए भव पीर।।

शान्तये शांतिधारा

दोहा– **हर्षित होकर लाए हैं, पुष्पित हम यह फूल।**
चढ़ा रहे जिनपद यहाँ, कर्म होंय निर्मूल।।

पुष्पांजलिं क्षिपेत्

(प्रत्येक अर्घ्य)

दोहा– **अचल मेरू पूरब अपर, भरतैरावत जान।**
रूपाचल चौंतीस पर, जिनगृह पूज्य महान।।

(मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

(चौपाई)

'कच्छा' देश विदेह कहाता, मध्य में रूप्यगिरी शुभ आता।
रक्ता रक्तोदा सरिताएँ, कच्छा के छह खण्ड बनाएँ।।
आर्य खण्ड में क्षेमा आए, नगरी में तीर्थंकर पाए।
रूपाचल पर जिनगृह गाये, जिनबिम्बों को अर्घ्य चढ़ाएँ।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरूसंबंधिपूर्वविदेहस्थसीतानदीउत्तरतटे कच्छादेशस्थित-विजयार्धपर्वत सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'सुकच्छा' में हे भाई, क्षेमपुरी नगरी सुखदायी।
रजताचल पर जिनगृह सोहें, सुरनर मुनि सबका मन मोहें।।
जिस पर शुभ नव कूट बताए, सिद्ध कूट में जिनगृह गाए।
ऋषिगण वन्दन करने जाते, जिनपद हम भी शीश झुकाते।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरूसंबंधिसीतानदीउत्तरतटे सुकच्छादेशस्थितविजयार्धपर्वत सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'महाकच्छा' कहलाए, अरिष्टापुरी नगरी मन भाए।
रजताचल पर कूट निराले, जिन महिमा दिखलाने वाले।।
जिस पर शुभ नव कूट बताए, सिद्ध कूट में जिनगृह गाए।
ऋषिगण वन्दन करने जाते, जिनपद हम भी शीश झुकाते।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरूसंबंधिसीतानद्युत्तरतटे महाकच्छादेशस्थितविजयार्धपर्वत सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'कच्छकावती' कहाए, विजयारध गिरी मध्य में आए।
अरिष्टापुरी नगरी शुभकारी, आर्य खण्ड में मंगलकारी।।
जिस पर शुभ नव कूट बताए, सिद्ध कूट में जिनगृह गाए।
ऋषिगण वन्दन करने जाते, जिनपद हम भी शीश झुकाते।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरूसंबंधिसीतानद्युत्तरतटे कच्छकावतीदेशस्थितविजयार्धपर्वत सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश रम्य 'आवर्ता' जानो, रजतगिरी जिसमें पहिचानो।
आर्य खण्ड अतिशय मन भाए, खड्गा नगरी जिसमें आए।।

जिस पर शुभ नव कूट बताए, सिद्ध कूट में जिनगृह गाए।
ऋषिगण वन्दन करने जाते, जिनपद हम भी शीश झुकाते॥5॥

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरूसंबंधिसीतानद्युत्तरतटे आवर्तादेशस्थितविजयार्धपर्वत-सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'लांगलावर्ता' गाया, रजताचल जिसमें बतलाया।
आर्य खण्ड मंजूषा भाई, नगरी जहाँ रही सुखदायी॥
जिस पर शुभ नव कूट बताए, सिद्ध कूट में जिनगृह गाए।
ऋषिगण वन्दन करने जाते, जिनपद हम भी शीश झुकाते॥6॥

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरूसंबंधिसीतानद्युत्तरतटे लांगलावर्तादेशस्थितविजयार्धपर्वत सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'पुष्कला' में मनहारी, औषधि नगरी अतिशयकारी।
रजतगिरी जिसमें मन भाए, सुर नर जिसकी महिमा गाए॥
जिस पर शुभ नव कूट बताए, सिद्ध कूट में जिनगृह गाए।
ऋषिगण वन्दन करने जाते, जिनपद हम भी शीश झुकाते॥7॥

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरूसंबंधिसीतानद्युत्तरतटे पुष्कलादेशस्थितविजयार्धपर्वत सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'पुष्कलावती' कहाए, नगर पुण्डरीकणी शुभ गाए।
रजतगिरी मन हरने वाली, सबका मंगल करने वाली॥
जिस पर शुभ नव कूट बताए, सिद्ध कूट में जिनगृह गाए।
ऋषिगण वन्दन करने जाते, जिनपद हम भी शीश झुकाते॥8॥

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरूसंबंधिसीतानद्युत्तरतटे पुष्कलावतीदेशस्थितविजयार्धपर्वत सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'वत्सा' देश विदेह कहाए, पुरी 'सुसीमा' जिसमें आए।
विजयारध जिसमें शुभकारी, आर्य खण्ड में मंगलकारी॥
जिस पर शुभ नव कूट बताए, सिद्ध कूट में जिनगृह गाए।
ऋषिगण वन्दन करने जाते, जिनपद हम भी शीश झुकाते॥9॥

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरूसंबंधिसीतानदीदक्षिणतटे वत्सादेशस्थित विजयार्धपर्वत सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'सुवत्सा' में शुभ गाए, नगर कुण्डला जिसमें आए।
रजतगिरी शुभ करने वाली, जिसकी महिमा रही निराली॥

जिस पर शुभ नव कूट बताए, सिद्ध कूट में जिनगृह गाए।
ऋषिगण वन्दन करने जाते, जिनपद हम भी शीश झुकाते॥10॥

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरूसंबंधिसीतानदीदक्षिणतटे सुवत्सादेशस्थित विजयार्धपर्वत सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'महावत्सा' मन भाए, अपराजित पुर जिसमें आए।
रजताचल है जिसमें भाई, जिसकी महिमा है सुखदायी॥
जिस पर शुभ नव कूट बताए, सिद्ध कूट में जिनगृह गाए।
ऋषिगण वन्दन करने जाते, जिनपद हम भी शीश झुकाते॥11॥

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरूसंबंधिसीतानदीदक्षिणतटे महावत्सादेशस्थित विजयार्धपर्वत सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'वत्सकावति' कहलाया, प्रभंकरा पुर जिसमें गाया।
मध्य रजतगिरी जिसमें सोहे, भव्यों के मन को अति मोहे॥
जिस पर शुभ नव कूट बताए, सिद्ध कूट में जिनगृह गाए।
ऋषिगण वन्दन करने जाते, जिनपद हम भी शीश झुकाते॥12॥

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरूसंबंधिसीतानदीदक्षिणतटे वत्सकावतीदेशस्थित विजयार्धपर्वत सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'रम्यादेश' विदेह में भाई, अंकावति नगरी सुखदायी।
रजताचल है महिमाकारी, आर्य खण्ड में अतिशयकारी॥
जिस पर शुभ नव कूट बताए, सिद्ध कूट में जिनगृह गाए।
ऋषिगण वन्दन करने जाते, जिनपद हम भी शीश झुकाते॥13॥

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरूसंबंधिसीतानदीदक्षिणतटे रम्यादेशस्थित विजयार्धपर्वत सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'सुरम्या' में शुभ जानो, पद्मावती पुरी पहिचानो।
जिसमें रूपाचल मनहारी, भव्य जहाँ जावें नर नारी॥
जिस पर शुभ नव कूट बताए, सिद्ध कूट में जिनगृह गाए।
ऋषिगण वन्दन करने जाते, जिनपद हम भी शीश झुकाते॥14॥

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरूसंबंधिसीतानदीदक्षिणतटे सुरम्यादेशस्थित विजयार्धपर्वत सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'रमणीया' शुभ देश है भाई, शुभापुरी नगरी सुखदायी।
रजतगिरी की महिमा न्यारी, सुर नर गाते मंगलकारी॥

जिस पर शुभ नव कूट बताए, सिद्ध कूट में जिनगृह गाए।
ऋषिगण वन्दन करने जाते, जिनपद हम भी शीश झुकाते॥15॥

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरूसंबंधिसीतानदीदक्षिणतटे रमणीयादेशस्थित विजयार्धपर्वत सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'मंगलावती' देश शुभ गाया, रत्न संचयपुर बतलाया।
रजतगिरी सोहे सुखदायी, आर्य खण्ड में तीरथ भाई॥
जिस पर शुभ नव कूट बताए, सिद्ध कूट में जिनगृह गाए।
ऋषिगण वन्दन करने जाते, जिनपद हम भी शीश झुकाते॥16॥

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरूसंबंधिसीतानदीदक्षिणतटे मंगलावतीदेशस्थित विजयार्धपर्वत सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शम्भू छन्द)

अचल मेरू की पश्चिम दिश में, सीतोदा के दाँयें जाय।
भद्रशाल वन की वेदी तट, 'पद्मा' देश श्रेष्ठ कहलाय॥
जिसमें रूपाचल है अनुपम, अश्वपुरी नगरी शुभकार।
सिद्ध कूट के जिनगृह में जिन, पूज रहे हम बारम्बार॥17॥

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरूसंबंधिसीतोदानदीदक्षिणतटे पद्मादेशस्थित विजयार्धपर्वत सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अचल मेरू सीतोदा नदि के, दाँयें देश 'सुपदमा' जान।
छह खण्डों में बँटा हुआ जो, आर्य खण्ड में रहा महान॥
जिसमें रूपाचल है अनुपम, अश्वपुरी नगरी शुभकार।
सिद्ध कूट के जिनगृह में जिन, पूज रहे हम बारम्बार॥18॥

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरूसंबंधिसीतोदानदीदक्षिणतटे सुपद्मादेशस्थित विजयार्धपर्वत सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अपर धातकी सीतोदा के, दक्षिण दिश में महिमावान।
देश 'महापदमा' कहलाए, कर्म भूमि का शुभ स्थान॥
जिसमें रूपाचल है अनुपम, अश्वपुरी नगरी शुभकार।
सिद्ध कूट के जिनगृह में जिन, पूज रहे हम बारम्बार॥19॥

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरूसंबंधिसीतोदानदीदक्षिणतटे महापद्मादेशस्थित विजयार्धपर्वत सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अचल मेरू के पश्चिम में शुभ, सीतोदा के दक्षिण ओर।
देश 'पदमकावती' बताया, मन को करता भाव विभोर॥
जिसमें रूपाचल है अनुपम, अश्वपुरी नगरी शुभकार।
सिद्ध कूट के जिनगृह में जिन, पूज रहे हम बारम्बार॥20॥

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरूसंबंधिसीतोदानदीदक्षिणतटे पद्मकावतीदेशस्थित विजयार्धपर्वत सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अपर धातकी खण्ड द्वीप में, 'शंखादेश' विदेह कहा।
आर्यखण्ड में अरजा नगरी, रूपाचल जिस मध्य रहा॥
नव कूटों के मध्य नदी के, पास कूट में जिन स्वामी।
तीन लोक में पूज्य कहाए, श्री जिनवर अन्तर्यामी॥21॥

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरूसंबंधिसीतोदानदीदक्षिणतटे शंखादेशस्थित विजयार्धपर्वत सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पश्चिम दिश में अचल मेरू के, 'नलिनदेश' है मंगलकार।
विरजानगरी आर्य खण्ड में, रूपाचल जिसमें मनहार॥
नव कूटों के मध्य नदी के, पास कूट में जिन स्वामी।
तीन लोक में पूज्य कहाए, श्री जिनवर अन्तर्यामी॥22॥

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरूसंबंधिसीतोदानदीदक्षिणतटे नलिनदेशस्थित विजयार्धपर्वत सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अचल मेरू के पश्चिम में शुभ, 'कुमुद' देश है शुभकारी।
रूप्यगिरी है मध्य में जिसके, अशोकपुरी नगरी प्यारी॥
नव कूटों के मध्य नदी के, पास कूट में जिन स्वामी।
तीन लोक में पूज्य कहाए, श्री जिनवर अन्तर्यामी॥23॥

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरूसंबंधिसीतोदानदीदक्षिणतटे कुमुददेशस्थित विजयार्धपर्वत सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पश्चिम दिश में अचल मेरू के, दाँयें 'सरिता' देश रहा।
वीतशोक नगरी है अनुपम, रजतगिरी मनहार कहा॥
नव कूटों के मध्य नदी के, पास कूट में जिन स्वामी।
तीन लोक में पूज्य कहाए, श्री जिनवर अन्तर्यामी॥24॥

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरूसंबंधिसीतोदानदीदक्षिणतटे सरितादेशस्थित विजयार्धपर्वत सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'वप्रा' देश विदेह अपर में, रजत गिरी मन को भाए।
नव कूटों में सिद्ध कूट पर, जिनगृह शाश्वत् कहलाए।।
आर्य खण्ड में विजयापुरि शुभ, भव्यों के मन भाती है।
जिनगृह में जिनके चरणों में, जनता दौड़ी जाती है।।25।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरूसंबंधिसीतोदानदीउत्तरतटे वप्रादेशस्थित विजयार्धपर्वत सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अपर विदेह में देश 'सुवप्रा', जिसमें रजतगिरी सोहे।
जिस पर बने जिनालय पावन, भव्यों के मन को मोहे।।
आर्य खण्ड में विजयापुरि शुभ, भव्यों के मन भाती है।
जिनगृह में जिनके चरणों में, जनता दौड़ी जाती है।।26।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरूसंबंधिसीतोदानदीउत्तरतटे सुवप्रादेशस्थित विजयार्धपर्वत सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'महावप्रा' विदेह में, अपर धातकी में गाया।
गिरी विजयार्ध श्रेष्ठतम जिसमें, हरा भरा शुभ बतलाया।।
आर्य खण्ड में विजयापुरि शुभ, भव्यों के मन भाती है।
जिनगृह में जिनके चरणों में, जनता दौड़ी जाती है।।27।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरूसंबंधिसीतोदानद्युत्तरतटे महावप्रादेशस्थित विजयार्धपर्वत सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'वप्रकावति' विदेह में, रूप्यगिरी शोभा पाए।
ऋषी मुनी विचरण करते हैं, शाश्वत् महिमा दिखलाए।।
आर्य खण्ड में विजयापुरि शुभ, भव्यों के मन भाती है।
जिनगृह में जिनके चरणों में, जनता दौड़ी जाती है।।28।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरूसंबंधिसीतोदानद्युत्तरतटे वप्रकावतीदेशस्थित विजयार्धपर्वत सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वीप धातकी खण्ड अपर में, 'गंधादेश' रहा अभिराम।
गिरीविजयार्ध मध्य में जिसके, जिसपर हैं श्री जिनके धाम।।
आर्य खण्ड में विजयापुरि शुभ, भव्यों के मन भाती है।
जिनगृह में जिनके चरणों में, जनता दौड़ी जाती है।।29।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरूसंबंधिसीतोदानदीउत्तरतटे गंधादेशस्थित विजयार्धपर्वत सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अपर विदेह में देश 'सुगंधा', सबके मन को भाता है।
विजयारध है मध्य में जिसके, रूपाचल कहलाता है।।
आर्य खण्ड में विजयापुरि शुभ, भव्यों के मन भाती है।
जिनगृह में जिनके चरणों में, जनता दौड़ी जाती है।।30।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरूसंबंधिसीतोदानद्युत्तरतटे सुगंधादेशस्थित विजयार्धपर्वत सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अचल मेरू के उत्तर दिश में, 'गंधीला' शुभ देश कहा।
रूपाचल है मध्य में जिसके, तीन कटिनयों युक्त रहा।।
आर्य खण्ड में विजयापुरि शुभ, भव्यों के मन भाती है।
जिनगृह में जिनके चरणों में, जनता दौड़ी जाती है।।31।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरूसंबंधिसीतोदानद्युत्तरतटे गंधिलादेशस्थित विजयार्धपर्वत सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तर दिश में अचल मेरू के, 'गंधमालिनी' देश कहा।
तीर्थंकर गणधर आदिक से, मुनियों से परिपूर्ण रहा।।
आर्य खण्ड में विजयापुरि शुभ, भव्यों के मन भाती है।
जिनगृह में जिनके चरणों में, जनता दौड़ी जाती है।।32।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरूसंबंधिसीतोदानद्युत्तरतटे गंधमालिनीदेशस्थित विजयार्धपर्वत सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अपर धातकी दक्षिण दिश में, भरत क्षेत्र पावन गाया।
गंगा सिन्धु नदी विजयारध, से छहखण्डों में पाया।।
रजतगिरी पर कूट रहे नव, सिद्ध कूट में जिनका धाम।
जिनबिम्बों को अर्घ्य चढ़ाकर, करते बारम्बार प्रणाम।।33।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरूसंबंधिदक्षिणदिशि भरतक्षेत्रस्थित विजयार्धपर्वत सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अपर धातकी उत्तर दिश में, ऐरावत है क्षेत्र प्रधान।
रजतगिरी रक्ता रक्तोदा, से होते छह खण्ड महान।।
रजतगिरी पर कूट रहे नव, सिद्ध कूट में जिनका धाम।
जिनबिम्बों को अर्घ्य चढ़ाकर, करते बारम्बार प्रणाम।।34।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरूसंबंधिउत्तरदिशि ऐरावतक्षेत्रशस्थित विजयार्धपर्वत सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूरब पश्चिम में विदेह शुभ, जिनके बत्तिस देश रहे।
दक्षिण उत्तर भरतैरावत, के रजताचल श्रेष्ठ कहे।।
इन चौंतिस के चौंतिस जिनगृह, रत्नमयी जिनबिम्ब सभी।
अर्घ्य चढ़ाकर हम परोक्ष से, पूज रहे हैं आज अभी।।35।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरूसंबंधिचतुस्त्रिंशत् विजयार्धपर्वत स्थित सिद्धकूट जिनालयस्थ जिनबिंबेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

।।शान्तयेशांतिधारा पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्।।

जाप–ॐ ह्रीं अर्हं शाश्वतजिनालयस्थसर्वजिनबिंबेभ्यः नमः।

जयमाला

दोहा– **चौंतिस गिरी विजयार्ध के, श्री जिनेन्द्र जिनधाम।**
जयमाला कर पूजते, करके 'विशद' प्रणाम।।

(सखी छंद)

पूर्वापर दिश में जानो, बत्तिस विजयारध मानो।
भरतैरावत शुभकारी, शुभ क्षेत्र रहे मनहारी।।
रजताचल द्वय में गाये, सब चौंतिस गिरी बतलाए।
जिनगृह इन सब पे सोहें, भवि जीवों का मन मोहें।।
शुभ आठ एक सौ जानो, जिनबिम्ब सभी में मानो।
सुरनर विद्याधर जावें, जिनपद जो पूज रचावें।।
जय अचल मेरू के भाई, पूरब विदेह सुखदायी।
जिन सूरीप्रभ बतलाए, नदि के उत्तर में गाए।।
सीता के दक्षिण जानो, जिन विशाल कीर्ति पहिचानो।
नदि के दक्षिण में गाये, जिन राज वज्रधर पाये।।
सीतोदा नदी बहाए, जिसके उत्तर में गाये।
जिन चन्द्रानन मनहारी, हैं जग में मंगलकारी।।
ये चार जिनेश्वर भाई, शाश्वत् रहते सुखदायी।
बत्तिस विदेह जो गाये, सब में छह खण्ड बताए।।
जिन आर्य खण्ड में होते, जन्मादिक सन्तति खोते।
भविजन को निज सुखकारी, भव-भव के संकट हारी।।
हम शरण आपकी आए, भव के दुख से अकुलाए।

हे नाथ! अर्ज है मेरी, सुनिए ना कीजे देरी।।
चारों गति में दुख पाए, नर गति में भी उपजाए।
फिर भी श्रद्धा ना जागी, विषयों में बुद्धी लागी।।
परिजन से मोह बढ़ाया, उनमें ही हर्ष मनाया।
अब दर्श आपका पाया, सौभाग्य उदय मम आया।।
जिनदेव कृपा तव पाई, समकित निधि कर में आई।
जब तक मुक्ती ना पाएँ, तुमको निज हृदय सजाएँ।।
हम सुनकर के यह आये, तुमने भवि शिव पहुँचाए।
हम आये तुमरे द्वारे, बन जाओ हितू हमारे।।
अब विनती सुनों हमारी, अब आई मेरी बारी।
हम समता हृदय जगाएँ, अरु मरण समाधी पाएँ।।
फिर शिवपुर धाम बनाएँ, शाश्वत् सुख जिन प्रगटाएँ।
हे नाथ! करो ना देरी, अब आई बारी मेरी।।

(घत्ता छन्द)

जय जय श्री जिनवर, कर्म भरम हर, शिवसुख सम्पत्ति के धारी।
जय मंगलकारी, कर्म विदारी, सिद्ध शिला के अधिकारी।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरूसंबंधिचतुस्त्रिंशत् विजयार्धपर्वत स्थित सिद्धकूट जिनालयस्थ जिनबिंबेभ्यः जयमाला अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

।।शांतये शांतिधारा।। पुष्पांजलिः।।

इन्द्रध्वज की पूजा करने, का अवसर शुभ आया है।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा करने, का सौभाग्य जगाया है।।
'विशद' सौख्य शांति पाते वह, जो प्रभु के गुण गाते हैं।
उच्चादर्श प्राप्त करते जो, शिखर पे ध्वजा चढ़ाते हैं।।

इत्याशीर्वादः

अचलमेरू संबंधी षट्कुलाचल जिनालय पूजा–18

स्थापना

अचल मेरू के उत्तर दक्षिण, कुलगिरी छह बतलाए हैं।
उनके ऊपर रत्नमयी शुभ, जिन चैत्यालय गाये हैं।।

गणधर ऋषि विद्याधर मुनिवर, जाकर ध्यान लगाते हैं।
आह्वानन् करते हम प्रभु का, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरूसंबंधिषट्कुलाचलस्थितसिद्धकूटजिनालय स्थसर्वजिनबिंबसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। ॐ ह्रीं श्री...अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं श्री...अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(जोगीरासा छंद)

जन्म जरादिक के दुखभारी, काल अनादि सहे हैं।
सारे जग के संकट कोई, बाकी नहीं रहे हैं।।
सर्व दुखों के नाश हेतु यह, निर्मल जल भर लाए।
जिनबिम्बों की पूजा करने, भाव सहित हम आए।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरूसंबंधिषट्कुलाचलस्थितसिद्धकूट जिनालयस्थ जिनबिंबेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भवाताप में तपते प्राणी, शांति कभी न पाए।
सुर नारक नर पशू गती के, भारी दुःख उठाए।।
शुद्ध सुगन्धित शीतल चंदन, घिसकर के यह लाए।
जिनबिम्बों की पूजा करने, भाव सहित हम आए।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरूसंबंधिषट्कुलाचलस्थितसिद्धकूट जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

इस जग में जो भी पदार्थ हैं, सबका क्षय बतलाया।
अध्रुव वस्तू अपनी मानी, इसीलिए दुख पाया।।
अक्षय बुद्धी कर पद अक्षय, पाने अक्षत लाए।
जिनबिम्बों की पूजा करने, भाव सहित हम आए।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरूसंबंधिषट्कुलाचलस्थितसिद्धकूट जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

बह्मा विष्णु महेश आदि नर, काम बाण से हारे।
भटक रहे हैं चतुर्गती में, काम के मारे सारे।।
काम शत्रु पर विजय हेतु यह, पुष्प मनोहर लाए।

जिनबिम्बों की पूजा करने, भाव सहित हम आए।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरूसंबंधिषट्कुलाचलस्थितसिद्धकूट जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षुधा रोग है जग जीवों को, भव-भव में दुख दाता।
सदा सताए रहते प्राणी, पाते न सुख साता।।
क्षुधा रोग वारण करने को, यह नैवेद्य बनाए।
जिनबिम्बों की पूजा करने, भाव सहित हम आए।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरूसंबंधिषट्कुलाचलस्थितसिद्धकूट जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मिथ्या मोह महातम भारी, सारे जग में छाया।
आत्म ज्ञान रवि सद् दर्शन का, प्राप्त नहीं कर पाया।।
मोह महातम पूर्ण नशावें, दीप जलाकर लाए।
जिनबिम्बों की पूजा करने, भाव सहित हम आए।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरूसंबंधिषट्कुलाचलस्थितसिद्धकूट जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मोदय वश जग के प्राणी, दुःख निरन्तर पाते।
प्रबल कषाय आदि सर्पादिक, जग में सतत सताते।।
ज्ञान प्रकाश नाश कर्मों का, धूप जलाने लाए।
जिनबिम्बों की पूजा करने, भाव सहित हम आए।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरूसंबंधिषट्कुलाचलस्थितसिद्धकूट जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

जिस फल को पाने इन्द्रादिक, ऋषि मुनि सुर ललचाते।
वह अरहंत शरण बिन जग में, अन्त कहीं न पाते।।
ऐसा श्रेष्ठ महाफल पाने, शुभम् सरस फल लाए।
जिनबिम्बों की पूजा करने, भाव सहित हम आए।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरूसंबंधिषट्कुलाचलस्थितसिद्धकूट जिनालयस्थ जिनबिंबेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल फल आदिक द्रव्य मिलाकर, उत्तम अर्घ्य बनाये।

हर्ष भाव मन में उपजाकर, पूजा करने आये।।
निज शाश्वत् चेतन गुण पाएँ, अर्घ्य चढ़ाने लाए।
जिनबिम्बों की पूजा करने, भाव सहित हम आए।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरूसंबंधिषट्कुलाचलस्थितसिद्धकूट जिनालयस्थ जिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **शांतीधारा दे रहे, तुम चरणों में नाथ।**
शिवपद दो हमको विशद, चरण झुकाते माथ।।

।।शान्तये शान्तिधारा।।

दोहा– **पुष्पांजलि करते यहाँ, हे त्रिभुवन पति ईश।**
भक्त बना लो हे प्रभू, चरण झुकाते शीश।।

।।पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

प्रत्येक अर्घ्य

दोहा– **अपर धातकी दीप में, छह कुल पर्वत खास।**
जिनगृह में जिनबिम्ब का, जिन पर रहा निवास।।

(मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

(मदअवलिप्त कपोल छंद)

द्वीप धातकी अचल मेरू के, दक्षिण में 'हिमवन' नग जान।
सिद्ध कूट ग्यारह कूटों में, जिनगृह वाला आभावान।।
पदम सरोवर में 'श्री देवी', का शुभ महल में रहा निवास।
जिन मंदिर जिन प्रतिमा पूजे, होती मन की पूरी आस।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरूसंबंधिहिमवत्पर्वत स्थितसिद्धकूटजिनालयस्थ जिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाहिमवन' कुलनग है शाश्वत, रजतमयी शुभ आभावान।
महापद्म द्रह के कमलों पर, 'ह्री' देवी शुभ रहे महान।।

रत्नमयी शुभ सिद्ध कूट में, शाश्वत् है जिनवर का वास।
जिन मंदिर जिन प्रतिमा पूजे, होती मन की पूरी आस।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरूसंबंधिमहाहिमवत्पर्वत स्थितसिद्धकूट जिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कनक छवी युत 'निषधगिरी' है, नव कूटों से युक्त महान।
मध्य तिगिञ्छ सरोवर में 'धृति, देवी' करे प्रभू गुणगान।।
रत्नमयी शुभ सिद्ध कूट में, शाश्वत् है जिनवर का वास।
जिन मंदिर जिन प्रतिमा पूजे, होती मन की पूरी आस।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरूसंबंधिनिषधपर्वत स्थितसिद्धकूटजिनालयस्थ जिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'नीलाचल' वैडूर्यमणी सम, रत्नमयी सुन्दर अभिराम।
श्रेष्ठ केशरी द्रह में 'कीर्ती, देवी' का है अनुपम धाम।।
रत्नमयी शुभ सिद्ध कूट में, शाश्वत् है जिनवर का वास।
जिन मंदिर जिन प्रतिमा पूजे, होती मन की पूरी आस।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरूसंबंधिनीलपर्वत स्थितसिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'रूक्मी पर्वत' रजत छवी युत, नव कूटों से युक्त महान।
पुण्डरीक द्रह मध्य कमल में, 'बुद्धी' देवी का स्थान।।
रत्नमयी शुभ सिद्ध कूट में, शाश्वत् है जिनवर का वास।
जिन मंदिर जिन प्रतिमा पूजे, होती मन की पूरी आस।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरूसंबंधिरुक्मिपर्वत स्थितसिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शिखरी नग' स्वर्णाभा वाला, ग्यारह कूटों युक्त महान।
मध्य कमल में, 'लक्ष्मी' देवी, महापुण्डरीक का स्थान।।
रत्नमयी शुभ सिद्ध कूट में, शाश्वत् है जिनवर का वास।
जिन मंदिर जिन प्रतिमा पूजे, होती मन की पूरी आस।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरूसंबंधिशिखरिपर्वत स्थितसिद्धकूटजिनालयस्थ जिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छह कुलपर्वत पर छह सरवर, में शुभ कमल खिले अभिराम।
उनपर श्री आदिक देवी के, बने हुए हैं पावन धाम॥
रत्नमयी शुभ सिद्ध कूट में, शाश्वत् है जिनवर का वास।
जिन मंदिर जिन प्रतिमा पूजे, होती मन की पूरी आस॥7॥

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरो: दक्षिणोत्तरषट्कुलाचलस्थित सिद्धकूटजिनालयस्थ जिनबिंबेभ्य: पूर्णार्घ्यं निर्व.स्वाहा।

॥शान्तयेशांतिधारा पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्॥

जाप्य–ॐ ह्रीं अर्हं शाश्वत् जिनालयस्थसर्वजिनबिंबेभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा– **छहों कुलाचल पर रहे, जिनगृह पूज्य त्रिकाल।**
जिनगुण जिन से प्राप्त हों, गाते हम जयमाल॥

(चाल-हे दीन बन्धु)

शुभ दीप अपर धातकी विदेह जानिए,
मेरू अचल के दक्षिण उत्तर में मानिए।
हिमवन महाहिमवन निषध नील कहे हैं,
रूक्मीगिरी औ शिखरिन् ये नाम रहे हैं॥
कुलगृह रहे ये शाश्वत् जिनधाम भी कहे,
जिनगृह सभी ये अनुपम जिनबिम्ब भी रहे।
जिनबिम्ब की जो वन्दना निज भाव से करें,
वे रोग शोक संस्कार पूर्ण परिहरें॥
हे नाथ कृपादृष्टि करके शरण लीजिए,
संसार महा-सिन्धु से भव पार कीजिए।
ये कर्म आत्मा के साथ एक हो रहे,
जिससे जगत् के प्राणी स्वभाव खो रहे॥
नो कर्म आत्मा के कई रूप बनाए,
नारक तिर्यंच आदी में कई देह धराए।
ज्ञानावरणादि कर्म ये संसार भ्रमाते,
चारों गती के चक्र में हर बार घुमाते॥

शुभपुण्य के उदय से कभी देव पद पाए,
भोगों में लीन होकर जीवन ये बिताए।
आठों करम के मध्य में जो मोहनी कहा,
उससे अनन्त काल तक सम्यक्त्व ना रहा॥
जो मोहनीय को जीत निर्मोह हो जाए,
वह मृत्यु को भी जीतकर के सिद्ध पद पाए।
जिनदेव आप लोक में भी कर्म जयी हैं,
घाती चतुष्टयों के भी कर्म छयी हैं॥
हे देव आप मोह का भी नाश किए हैं,
अनन्त दर्श ज्ञान वीर्य सौख्य लिए हैं।
हे नाथ! आज आपके हम द्वार आए हैं,
कीजे कृपा प्रभू हम अरदास लाए हैं॥
करुणा निधान हम पर उपकार कीजिए,
करके विनाश मोह शत्रु मुक्ति दीजिए।
जयवन्त कुलगिरी के जिनधाम हैं सारे,
जैनेन्द्र के जिनबिम्ब 'विशद' पूज्य हैं प्यारे॥
श्री सिद्धकूट में अनादि जैनधाम हैं,
आनन्दकन्द श्री जिनेन्द्र को प्रणाम हैं॥

(घत्तानन्द छंद)

जय जय जिनस्वामी, अन्तर्यामी, कुलगिरी के जिनधाम अहा।
शिवपथ अनुगामी, तुम्हें नमामी, जिनबिम्बों को प्रणाम रहा॥

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरूसंबंधिषट्कुलाचलसिद्धकूटजिनालयस्थसर्वजिनबिंबेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्रध्वज की पूजा करने, का अवसर शुभ आया है।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा करने, का सौभाग्य जगाया है॥
'विशद' सौख्य शांति पाते वह, जो प्रभु के गुण गाते हैं।
उच्चादर्श प्राप्त करते जो, शिखर पे ध्वजा चढ़ाते हैं॥

इत्याशीर्वाद:

अचलमेरू संबंधी दक्षिणोत्तर द्वय इष्वाकार जिनालय पूजा–19

स्थापना

दीप धातकी उत्तर दक्षिण, में शुभ इष्वाकार कहे।
पूरब पश्चिम दो भागों में, दीप धातकी बाँट रहे।।
पर्वत के भी मध्य में जिनगृह, जिनबिम्बों युत रहे महान।
विशद हृदय में श्री जिनका हम, करते भाव सहित आह्वान।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरूसंबंधिदक्षिणोत्तरद्वयइष्वाकारपर्वत स्थितसिद्धकूट-जिनालयस्थजिनबिंबसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। ॐ ह्रीं श्री...अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। ॐ ह्रीं श्री...अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

(जोगीरासा छंद)

क्षीर नीर सम उज्ज्वल जल यह, हम पूजा को लाए।
जन्म जरादी दुःख नाश हो, चरणाम्बुज में आए।।
इष्वाकार अचल के दो हैं, जिन पर जिनगृह भाई।
परमानन्द मिले पूजाकर, है जिन की प्रभुताई।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरूसंबंधिइष्वाकारपर्वत स्थितसिद्धकूटजिनालयस्थजिन-बिंबेभ्यः जलं निर्व.स्वाहा।

शीतल चंदन में कुंकुम अरु, शुभ कर्पूर मिलाए।
भवाताप आताप नाश हो, हम पूजा को आए।।
इष्वाकार अचल के दो हैं, जिन पर जिनगृह भाई।
परमानन्द मिले पूजाकर, है जिन की प्रभुताई।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरूसंबंधिइष्वाकारपर्वत स्थितसिद्धकूटजिनालयस्थजिन-बिंबेभ्यः चंदनं निर्व.स्वाहा।

मोती सम उज्ज्वल यह अक्षत, जल से श्रेष्ठ धुवाए।
अक्षय निधिपति परमेश्वर पद, पूजा करने लाए।।

इष्वाकार अचल के दो हैं, जिन पर जिनगृह भाई।
परमानन्द मिले पूजाकर, है जिन की प्रभुताई।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरूसंबंधिइष्वाकारपर्वत स्थितसिद्धकूटजिनालयस्थजिन-बिंबेभ्यः अक्षतं निर्व.स्वाहा।

भांति-भांति के पुष्प मनोहर, शुभ सुगंध बिखराए।
काम दण्ड के नाश हेतु यह, आज चढ़ाने लाए।।
इष्वाकार अचल के दो हैं, जिन पर जिनगृह भाई।
परमानन्द मिले पूजाकर, है जिन की प्रभुताई।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरूसंबंधिइष्वाकारपर्वत स्थितसिद्धकूटजिनालयस्थजिन-बिंबेभ्यः पुष्पं निर्व.स्वाहा।

ताजे शुद्ध छहों रस पूरित, शुभ नैवेद्य बनाए।
क्षुधा दोष दुख नाश हेतु यह, हम अर्चा को लाए।।
इष्वाकार अचल के दो हैं, जिन पर जिनगृह भाई।
परमानन्द मिले पूजाकर, है जिन की प्रभुताई।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरूसंबंधिइष्वाकारपर्वत स्थितसिद्धकूटजिनालयस्थजिन-बिंबेभ्यः नैवेद्यं निर्व.स्वाहा।

मणिमय स्वर्ण दीप ये अनुपम, यहाँ जलाकर लाए।
मोह महातम नाश करें हम, जिन चरणों में आए।।
इष्वाकार अचल के दो हैं, जिन पर जिनगृह भाई।
परमानन्द मिले पूजाकर, है जिन की प्रभुताई।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरूसंबंधिइष्वाकारपर्वत स्थितसिद्धकूट जिनालयस्थजिन-बिंबेभ्यः दीपं निर्व.स्वाहा।

कर्मोदय वश जग के प्राणी, दुःख अनेकों पाए।
स्वाभाविक सुख पाने भगवन्, धूप जलाने लाए।।
इष्वाकार अचल के दो हैं, जिन पर जिनगृह भाई।
परमानन्द मिले पूजाकर, है जिन की प्रभुताई।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरूसंबंधिइष्वाकारपर्वत स्थितसिद्धकूट जिनालयस्थजिन-बिंबेभ्यः धूपं निर्व.स्वाहा।

अष्टकर्म के फल से प्राणी, जग में सुख दुख पाएँ।
मोक्ष महाफल पाने को हम, श्री फल यहाँ चढ़ाएँ।।
इष्वाकार अचल के दो हैं, जिन पर जिनगृह भाई।
परमानन्द मिले पूजाकर, है जिन की प्रभुताई।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरूसंबंधिइष्वाकारपर्वत स्थितसिद्धकूट जिनालयस्थजिन-बिंबेभ्य: फलं निर्व.स्वाहा।

अष्टद्रव्य का अर्घ्य बनाकर, यहाँ चढ़ाने लाए।
पद अनर्घ्य पाने को हम प्रभु, द्वार आपके आए।।
इष्वाकार अचल के दो हैं, जिन पर जिनगृह भाई।
परमानन्द मिले पूजाकर, है जिन की प्रभुताई।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरूसंबंधिइष्वाकारपर्वत स्थितसिद्धकूट जिनालयस्थजिन-बिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **प्रासुक निर्मल नीर से, देते शांतीधार।**
रत्नत्रय के तेज से, कर्म होंय सब क्षार।।

।।शान्तये शान्तिधारा।।

पुष्पांजलि करते विशद, भक्ति भाव के साथ।
मुक्ती में साधक बनो, हे त्रिभुवन पति नाथ।।

।।पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

प्रत्येक अर्घ्य

दोहा– **उत्तर दक्षिण दिशा में, इष्वाकार गिरीश।**
पुष्पांजलि जिनपद चरण, करें झुकाकर शीश।।

(मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्)

(शम्भू छन्द)

गिरी इष्वाकार धातकी में, लवणोद से कालोदधि जाए।
लम्बा है चार लाख योजन, विस्तार सहस योजन पाए।।
ऊँचाई चार शतक योजन, स्वर्णाभ श्री जिन गेह कहे।
हम अष्टद्रव्य का अर्घ्य बना, जिनके चरणाम्बुज पूज रहे।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरूसंबंधिदक्षिणदिग्इष्वाकारपपर्वत स्थितसिद्धकूट-जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ खण्ड धातकी उत्तर में, लवणोद से कालोदधि जावे।
दक्षिण के इष्वाकार समा, यह भी विस्तार श्रेष्ठ पावे।।
उस पर जिनमंदिर शोभित हैं, भविजन दर्शन करने जाते।
वह भाव वन्दना करते हैं, शुभ अर्घ्य चढ़ा कर सिरनाते।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरूसंबंधिउत्तरदिग्इष्वाकारपपर्वत स्थितसिद्धकूट-जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वीप धातकी अचल मेरू के, उत्तर दक्षिण दिशा महान।
इष्वाकार गिरी है स्वर्णिम, वन उपवन युत आभावान।।
उस पर जिनमंदिर शोभित हैं, भवि दर्शन करने जाते।
जो भाव वन्दना करते हैं, शुभ अर्घ्य चढ़ाकर सिरनाते।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरूसंबंधिदक्षिणोत्तरदिग्स्थितइष्वाकारपर्वत स्थितसिद्धकूट-जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

।।शान्तयेशांतिधारा पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्।।

जाप्य– ॐ ह्रीं अर्हं शाश्वत् जिनालयस्थसर्वजिनबिंबेभ्यो नम:।

जयमाला

दोहा– **द्वीप धातकी मध्य हैं, द्वय गिरी इष्वाकार।**
उन पर जिनगृह बिम्ब पद, वन्दन बारम्बार।।

(शेर चाल)

इष्वाकृति पे सिद्धकूट चार जानिए।
जिनधाम एक में हैं शुभकार मानिए।।
त्रयकूट में सुव्यंतर के देव कहे हैं।
जिनबिम्ब की शुभक्ती में लीन रहे हैं।।
पर्वत के दोनों भाग में वन वेदियाँ सोहें।
स्वर्णिम छटा वहाँ पे, भव्यों का मन मोहे।।
विस्तार धनुष पांच सौ योजन का बताया।
ऊँचाई रही कोष दो वन खण्ड शुभ गाया।।
वन खण्ड औ जिनधाम से पर्वत सुहावता।
स्वर्गों के देव देवियों के मन को भावता।।

जो तोरणों पुष्करणी वापी से रम्य है।
जिसकी छटा को कहना जिनवर के गम्य है।।
है सिद्धकूट शाश्वत् जिनधाम कहे हैं।
कंचन के रत्न मणियों से शोभ रहे हैं।
सुन्दर ध्वजा की पंक्तियाँ उड़ती दिखें अहा।
बाजों की ध्वनि का भी बहु शोर हो रहा।।
जिनगृह को घेर के बने परकोट तीन हैं।
उनमें भी दश प्रकार की ध्वजाएँ लीन हैं।।
रत्नों के मानस्तंभ जो मान गलाएँ।
जो ज्ञान नेत्र खोल के जिन दर्श कराएँ।।
जाकर वहाँ पे देव कई उत्सव भी मनाते।
वे शुद्ध मन से भक्ती के गीत शुभ गाते।।
अब भाव भक्ति नाथ! मम स्वीकार कीजिए।
पलकें बिछाए बैठे हम, उद्धार कीजिए।।
हम मोक्ष मार्ग पर बढ़ें ये भाव बनाए।
अतएव प्रभू आपके, हम द्वार पे आए।।
हम राह से भटके हैं प्रभू ध्यान दीजिए।
प्रभू भक्त जानकर के कल्याण कीजिए।।
प्रभु आपके प्रसाद से भव सिन्धु से तरें।
हम मोह अरी जीत के निज सम्पदा वरें।।
तुम हो जिनेन्द्र जीव के संसार तिरैया।
हे नाथ! आप भव्य के भव पार करैया।।
हम वन्दना परोक्ष प्रभु करने आए हैं।
चरणों में 'विशद' आपके हम सिर झुकाए हैं।।

दोहा– **भक्ति के शुभ भाव से, करते हैं गुणगान।**
शिवपद की इच्छा मेरी, पूर्ण करो भगवान।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरूसंबंधिदक्षिणोत्तरदिक्स्थितइष्वाकारपर्वत स्थितसिद्धकूट-जिनालयस्थसर्वजिनबिंबेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

।।शान्तयेशांतिधारा पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्।।

इन्द्रध्वज की पूजा करने, का अवसर शुभ आया है।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा करने, का सौभाग्य जगाया है।।
'विशद' सौख्य शांति पाते वह, जो प्रभु के गुण गाते हैं।
उच्चादर्श प्राप्त करते जो, शिखर पे ध्वजा चढ़ाते हैं।।

इत्याशीर्वादः

मन्दर मेरू जिनालय पूजा–20

स्थापना

पुष्पकर द्वीप में गिरी मानुषोत्तर, मध्य रहा है वलयाकार।
अतः अर्ध पुष्करवर में शुभ, रचना कही है मंगलकार।।
पूर्व दिशा के क्षेत्र मध्य गिरी, मन्दर मेरू है जिसका नाम।
सोलह जिनगृह जिस पर शोभित, जिनबिम्बों पद विशद प्रणाम।।

ॐ ह्रीं श्रीमन्दरमेरूसम्बन्धिषोडशजिनालयस्थजिनबिंब समूह! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। ॐ ह्रीं...अत्र तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। ॐ ह्रीं...अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(चौबोला छन्द)

स्वादिष्ट पेय जग के सारे, मम प्यास बुझा ना पाए हैं।
अतएव नाथ तव चरणों में, यह नीर चढ़ाने लाए हैं।।
जो काल अनादी हैं शाश्वत् जिनधाम रत्नमय गाये है।
हम अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बना जिन पूजा करने आए हैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीमन्दरमेरूसंबंधिषोडशजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः जलं निर्व. स्वाहा।

चंदन केशर की गंध बना, प्रभु आज चढ़ाने लाए हैं।
जो लगा अनादी आतम में, भव ताप नशाने आए हैं।।
जो काल अनादी हैं शाश्वत्, जिनधाम रत्नमय गाये है।
हम अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बना, जिन पूजा करने आए हैं।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीमन्दरमेरूसंबंधिषोडशजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः चंदनं निर्व. स्वाहा।

पद पाने की आशाएँ ले, हम गति में भरमाए हैं।
अब अक्षय पद पाने स्वामी, यह अक्षत लेकर आए हैं।।

जो काल अनादी हैं शाश्वत्, जिनधाम रत्नमय गाये हैं।
हम अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बना, जिन पूजा करने आए हैं॥3॥

ॐ ह्रीं श्रीमन्दरमेरूसंबंधिषोडशजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अक्षतं निर्व. स्वाहा।

निज आत्म शांति पाने हेतू, हम विषयों में भटकाए हैं।
अब काम वाण हो नाश प्रभू, यह पुष्प चढ़ाने लाए हैं॥
जो काल अनादी हैं शाश्वत्, जिनधाम रत्नमय गाये है।
हम अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बना, जिन पूजा करने आए हैं॥4॥

ॐ ह्रीं श्रीमन्दरमेरूसंबंधिषोडशजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः पुष्पं निर्व. स्वाहा।

रसना की लोलुपता वश हो, कितने ही पाप कमाए हैं।
नैवेद्य चढ़ाकर हम अनुपम, अब क्षुधा नशाने आए हैं॥
जो काल अनादी है शाश्वत्, जिनधाम रत्नमय गाये है।
हम अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बना, जिन पूजा करने आए हैं॥5॥

ॐ ह्रीं श्रीमन्दरमेरूसंबंधिषोडशजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

दीपक में ज्योति जलते ही, सब घोर अंधेरा नश जाए।
अतएव जलाकर दीप विशद, हम मोह नशाने को आए॥
जो काल अनादी है शाश्वत्, जिनधाम रत्नमय गाये है।
हम अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बना, जिन पूजा करने आए हैं॥6॥

ॐ ह्रीं श्रीमन्दरमेरूसंबंधिषोडशजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः दीपं निर्व. स्वाहा।

जिन शुक्ल ध्यान की अग्नी में, कर्मों की धूम उड़ाए हैं।
अब धूप जलाकर जिनपद में, हम कर्म नशाने आए हैं॥
जो काल अनादी हैं शाश्वत्, जिनधाम रत्नमय गाये है।
हम अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बना, जिन पूजा करने आए हैं॥7॥

ॐ ह्रीं श्रीमन्दरमेरूसंबंधिषोडशजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः धूपं निर्व. स्वाहा।

जिस मोक्ष महाफल पाने को, जग का यह प्राणी तरसाए।
यह सरस श्रेष्ठ फल अर्पित कर, वह फल पाने को हम आए॥
जो काल अनादी हैं शाश्वत्, जिनधाम रत्नमय गाये हैं।
हम अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बना, जिन पूजा करने आए हैं॥8॥

ॐ ह्रीं श्रीमन्दरमेरूसंबंधिषोडशजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः फलं निर्व. स्वाहा।

जल गंध सुअक्षत पुष्प चरू, वर दीप धूप फल हम लाए।
पाने अनर्घ पद हे स्वामी, हम आशा लेकर के आए॥
जो काल अनादी है शाश्वत्, जिनधाम रत्नमय गाये है।
हम अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बना, जिन पूजा करने आए हैं॥9॥

ॐ ह्रीं श्रीमन्दरमेरूसंबंधिषोडशजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा– **शांतीधारा के लिए, क्षीरोदधि का नीर।**
चढ़ा रहे हम जिन चरण, मिट जाए भव पीर॥

शान्तये शांतिधारा

दोहा– **सुरभित लेकर पुष्प यह, अर्चा करते नाथ।**
पुष्पांजलि करके विशद, झुका रहे पद माथ॥

पुष्पांजलिं क्षिपेत्॥

(प्रत्येक अर्घ्य)

दोहा– **मन्दर मेरू में विशद, शाश्वत् हैं जिनधाम।**
उनमें जो जिनबिम्ब हैं, उनको सतत प्रणाम॥

(मण्डस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

(शम्भू छन्द)

पूर्व दिशा के पुष्कराद्ध में, मन्दर मेरू रहा महान्।
भद्रशाल वन पूर्व दिशा में, चैत्यालय है महिमावान॥
शोभित हैं जिनबिम्ब मनोहर, जिसमें रत्नमयी मनहार।
अर्घ्य चढ़ाकर पूजा करते, जिनके चरणों बारम्बार॥1॥

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीप मन्दरमेरूसंबंधित भद्रशालवन पूर्वदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्व दिशा के पुष्कराद्ध में, मन्दर मेरू रहा महान्।
भद्रशाल वन दक्षिण दिश में, चैत्यालय है महिमावान॥
शोभित हैं जिनबिम्ब मनोहर, जिसमें रत्नमयी मनहार।
अर्घ्य चढ़ाकर पूजा करते, जिनके चरणों बारम्बार॥2॥

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीप मन्दरमेरूसंबंधित भद्रशालवन दक्षिणदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्व दिशा के पुष्करार्द्ध में, मन्दर मेरू रहा महान्।
भद्रशाल वन पश्चिम दिश में, चैत्यालय है महिमावान।।
शोभित हैं जिनबिम्ब मनोहर, जिसमें रत्नमयी मनहार।
अर्घ्य चढ़ाकर पूजा करते, जिनके चरणों बारम्बार।।3।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीप मन्दरमेरूसंबंधित भद्रशालवन पश्चिमदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्व दिशा के पुष्करार्द्ध में, मन्दर मेरू रहा महान्।
भद्रशाल वन उत्तर दिश में, चैत्यालय है महिमावान।।
शोभित हैं जिनबिम्ब मनोहर, जिसमें रत्नमयी मनहार।
अर्घ्य चढ़ाकर पूजा करते, जिनके चरणों बारम्बार।।4।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीप मन्दरमेरूसंबंधित भद्रशालवन उत्तरदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(अडिल्ल छन्द)

पूर्व दिशा के पुष्करार्द्ध शुभ जानिए,
मन्दर मेरू जिसमें अतिशय मानिए।
पूरब में नन्दन वन अतिशयकार है,
जहाँ पूज्य जिन मंदिर अति मनहार है।।5।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीप मन्दरमेरूसंबंधित नंदनवन पूर्वदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्व दिशा के पुष्करार्द्ध शुभ जानिए,
मन्दर मेरू जिसमें अतिशय मानिए।
दक्षिण में नन्दन वन अतिशयकार है,
जहाँ पूज्य जिन मंदिर अति मनहार है।।6।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीप मन्दरमेरूसंबंधित नंदनवन दक्षिणदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्व दिशा के पुष्करार्द्ध शुभ जानिए,
मन्दर मेरू जिसमें अतिशय मानिए।
पश्चिम में नन्दन वन अतिशयकार है,
जहाँ पूज्य जिन मंदिर अति मनहार है।।7।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीप मन्दरमेरूसंबंधित नंदनवन पश्चिमदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्व दिशा के पुष्करार्द्ध शुभ जानिए,
मन्दर मेरू जिसमें अतिशय मानिए।
उत्तर में नन्दन वन अतिशयकार है,
जहाँ पूज्य जिन मंदिर अति मनहार है।।8।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीप मन्दरमेरूसंबंधित नंदनवन उत्तरदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(भुजंग प्रयात)

पुष्करार्द्ध पूरब शुभ दीप जिन बताया,
मंदर सुमेरू जिसमें शुभकार गाया।
श्रेष्ठ वन सौमनस पूरब में गाया,
जिसमें जिनालय शुभ रत्नमय बताया।।9।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीप मन्दरमेरूसंबंधित सौमनसवन पूर्वदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्करार्द्ध पूरब शुभ दीप जिन बताया,
मंदर सुमेरू जिसमें शुभकार गाया।
श्रेष्ठ वन सौमनस दक्षिण में गाया,
जिसमें जिनालय शुभ रत्नमय बताया।।10।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीप मन्दरमेरूसंबंधित सौमनसवन दक्षिणदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्करार्द्ध पूरब शुभ दीप जिन बताया,
मंदर सुमेरू जिसमें शुभकार गाया।
श्रेष्ठ वन सौमनस पश्चिम में गाया,
जिसमें जिनालय शुभ रत्नमय बताया।।11।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीप मन्दरमेरूसंबंधित सौमनसवन पश्चिमदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्करार्द्ध पूरब शुभ दीप जिन बताया,
मंदर सुमेरू जिसमें शुभकार गाया।
श्रेष्ठ वन सौमनस उत्तर में गाया,
जिसमें जिनालय शुभ रत्नमय बताया।।12।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीप मन्दरमेरूसंबंधित सौमनसवन उत्तरदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(तोटक छन्द)

पुष्करार्द्ध द्वीप पूरब में जानो, मंदर मेरू जिसमें मानो।
पूरब पाण्डुक वन में प्यारा, चैत्यालय शोभित है न्यारा।।13।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीप मन्दरमेरूसंबंधित पाण्डुकवन पूर्वदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्करार्द्ध द्वीप पूरब में जानो, मंदर मेरू जिसमें मानो।
दक्षिण पाण्डुक वन में प्यारा, चैत्यालय शोभित है न्यारा।।14।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीप मन्दरमेरूसंबंधित पाण्डुकवन दक्षिणदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्करार्द्ध द्वीप पूरब में जानो, मंदर मेरू जिसमें मानो।
पश्चिम पाण्डुक वन में प्यारा, चैत्यालय शोभित है न्यारा।।15।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीप मन्दरमेरूसंबंधित पाण्डुकवन पश्चिमदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्करार्द्ध द्वीप पूरब में जानो, मंदर मेरू जिसमें मानो।
उत्तर पाण्डुक वन में प्यारा, चैत्यालय शोभित है न्यारा।।16।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीप मन्दरमेरूसंबंधित पाण्डुकवन उत्तरदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

।।शान्तयेशांतिधारा पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्।।

जाप्य–ॐ ह्रीं अर्हं शाश्वत् जिनालयस्थसर्वजिनबिंबेभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा– **मन्दरगिरी से चार दिश, श्री जिन भवन विशाल।**
पूजा करते भाव से, गाते हैं जयमाल।।

(तोटक छन्द)

कहयो पुष्करार्ध दीप शुभकार, दिशा पूरब में अपरम्पार।
जयो मेरू मन्दर मनहार, बना जिसमें जिनगृह शुभकार।।
रहे जिनबिम्ब अकृत्रिम सार, जयो जिन वन्दन बारम्बार।
कहा गिरी मन्दर शुभ कनकाभ, रहे जिनमंदिर शुभ रत्नाभ।।
सहस्र चौरासी योजन मान, उत्तुंग वन चार युक्त पहिचान।
रहे सोलह जिसमें जिनगेह, करें जिनसे भवि जीव स्नेह।।

(चौपाई)

पृथ्वीतल पर वन भद्रशाल, वन वेदी जिसमें है विशाल।
है भांति भांति के तरु महान, पक्षी कलरव करते प्रधान।।
सौधर्म इन्द्र आदिक सुदेव, जो वनों में रहते हैं सदैव।
जिनबिम्ब तोरणों पर विशाल, जिनके चरणों में विनत भाल।।
वापी में सुन्दर भरा नीर, कई जल पीते हैं राहगीर।
पुष्करिणी में शुभ खिलें फूल, जो वायू के संग रहे झूल।।
वन भद्रशाल में दिशा चार, जिन भवन अकृत्रिम शुभंकार।
फिर पंचशतक योजन प्रमाण, ऊपर नन्दनवन शोभमान।।
इस वन में गिरी की दिशाचार, शाश्वत् शोभित हैं जिनागार।
योजन साढ़े पचपन हजार, वन रहा सौमनस शुभाकार।।
इसमें जिन मंदिर बने चार, जिनमें जिनवर हैं निराकार।
फिर अट्ठाइस सहस योजनप्रमाण, वनपाण्डुक गाया है महान।।
इन सबमें रचना है विशेष, जिनगृह में सोहें श्री जिनेश।
सुरनर विद्याधर यहाँ आन, ऋद्धीधर मुनि भी करें ध्यान।।
कई देव देवियाँ नृत्यगान, करके करते हैं यशोगान।
पाण्डुकवन की विदिशा चार, शुभ पाण्डु शिलाएँ रहीं चार।।
जिन पर तीर्थंकर का महान, सुर करें न्हवन आके प्रधान।
जय सोलह जिनके रहे धाम, जय जिनबिम्बों को है प्रणाम।।
जय पाण्डु शिलाएँ हैं विशेष, जय पूज्यलोक में हैं जिनेश।
जय जिनवर हैं मंगलस्वरूप, लोकोत्तम जिनका रहा रूप।
हे नाथ! आप दो हमें साथ, तव चरण झुकाते 'विशद' माथ।।
जिनदेव अमंगल हरण हार, इस जग में गाये निराकार।

घत्तानंद छंद

जय सुरगिरी मन्दर, अनुपम सुन्दर, जिनमंदिर जिसपे सोहे।
शोभा है मनहर, जग में शुभकर, जन-जन के मनको मोहे।।

ॐ ह्री श्रीमंदरमेरूसंबंधिषोडशजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

।।शान्तयेशांतिधारा पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्।।

इन्द्रध्वज की पूजा करने, का अवसर शुभ आया है।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा करने, का सौभाग्य जगाया है।।
'विशद' सौख्य शांति पाते वह, जो प्रभु के गुण गाते हैं।
उच्चादर्श प्राप्त करते जो, शिखर पे ध्वजा चढ़ाते हैं।।

इत्याशीर्वादः

मंदर मेरू सम्बन्धी गजदंत जिनालय पूजा–21

स्थापना

मन्दर मेरू विदिशाओं में, रहे चार गजदन्त महान।
शाश्वत् जिन मंदिर चारों पर, जिनमें शोभित हैं भगवान।।
सुर नर किन्नर विद्याधर सब, करते जाकर के गुणगान।
विधिवत पूजन करके हम भी, करते हैं उर में आह्वान।।

ॐ ह्रीं श्रीमन्दरमेरूसंबंधिचतुर्गजदन्तस्थितसिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंब-समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। ॐ ह्रीं श्री...अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। ॐ ह्रीं श्री...अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

(चाल छंद)

श्रद्धा का जल हम लाए, मिथ्या मल धोने आए।
अब जन्म जरादी छूटे, कर्मों का बन्धन टूटे।।
गजदन्त पे जिनगृह गाए, उनके जिनबिम्ब कहाए।
जो हैं जग मंगलकारी, हम पूज रहे मनहारी।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीमन्दरमेरूसंबंधिचतुर्गजदन्तस्थितसिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः जलं निर्व.स्वाहा।

हम चन्दन श्रेष्ठ चढ़ाएँ, भक्ती की खुशबू पाएँ।
भव ताप नशाने आए, चरणों में शीश झुकाए।।
गजदन्त पे जिनगृह गाए, उनके जिनबिम्ब कहाए।
जो हैं जग मंगलकारी, हम पूज रहे मनहारी।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीमन्दरमेरूसंबंधिचतुर्गजदन्तस्थितसिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः चंदनं निर्व.स्वाहा।

अक्षत यह रहे निराले, अक्षय निधि देने वाले।
उत्पाद ध्रौव्य व्यय नाशी, हों केवल ज्ञान प्रकाशी।।
गजदन्त पे जिनगृह गाए, उनके जिनबिम्ब कहाए।
जो हैं जग मंगलकारी, हम पूज रहे मनहारी।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीमन्दरमेरूसंबंधिचतुर्गजदन्तस्थितसिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अक्षतं निर्व.स्वाहा।

आतम की खुशबू पाएँ सुरभित यह पुष्प चढ़ाएँ।
ज्यों पुष्प हैं खुशबू कारी, त्यों आत्म ज्ञान का धारी।।
गजदन्त पे जिनगृह गाए, उनके जिनबिम्ब कहाए।
जो हैं जग मंगलकारी, हम पूज रहे मनहारी।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीमन्दरमेरूसंबंधिचतुर्गजदन्तस्थितसिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः पुष्पं निर्व.स्वाहा।

आये हम क्षुधा मिटाने, लाए नैवेद्य चढ़ाने।
ना पाया कहीं ठिकाना, दर प्रभू आपका पाना।
गजदन्त पे जिनगृह गाए, उनके जिनबिम्ब कहाए।
जो हैं जग मंगलकारी, हम पूज रहे मनहारी।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीमन्दरमेरूसंबंधिचतुर्गजदन्तस्थितसिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः नैवेद्यं निर्व.स्वाहा।

इस मोह में जग भटकाया, ना अन्तर ज्ञान जगाया।
मोहान्ध नशाने आये, यह दीप जलाकर लाए।।
गजदन्त पे जिनगृह गाए, उनके जिनबिम्ब कहाए।
जो हैं जग मंगलकारी, हम पूज रहे मनहारी।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीमन्दरमेरूसंबंधिचतुर्गजदन्तस्थितसिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः दीपं निर्व.स्वाहा।

ये जग है मोह का मेला, लाये कर्मों का रेला।
कर्मों की धूप जलाएँ, चेतन के गुण प्रगटाएँ।।
गजदन्त पे जिनगृह गाए, उनके जिनबिम्ब कहाए।
जो हैं जग मंगलकारी, हम पूज रहे मनहारी।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीमन्दरमेरूसंबंधिचतुर्गजदन्तस्थितसिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः धूपं निर्व.स्वाहा।

श्रद्धा के फल हम लाते, श्रद्धा से चरण चढ़ाते।
हम मुक्ती फल को पाएँ, जन्मादी रोग नशाएँ।।
गजदन्त पे जिनगृह गाए, उनके जिनबिम्ब कहाए।
जो हैं जग मंगलकारी, हम पूज रहे मनहारी।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीमन्दरमेरूसंबंधिचतुर्गजदन्तस्थितसिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: फलं निर्व.स्वाहा।

भव तारक आप कहाते, शिवपुर की राह दिखाते।
चेतन का ज्ञान जगाओ, कर्मों से मुक्त कराओ।।
गजदन्त पे जिनगृह गाए, उनके जिनबिम्ब कहाए।
जो हैं जग मंगलकारी, हम पूज रहे मनहारी।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीमन्दरमेरूसंबंधिचतुर्गजदन्तस्थितसिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा– **करो प्रभू उपकार, भक्त खड़े हैं सामने।**
देते शांती धार, शांती पाने के लिए।।

शांति शांतिधारा

पुष्पांजलि के साथ, पूजा करते आपकी।
झुका रहे पद माथ, शिवपद पाने के लिए।।

पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

अर्घ्यावली

दोहा– **भव-भव में आँसू बहे, हुआ कभी ना अन्त।**
शिवसुख पाने को तुम्हें, पूज रहे भगवन्त।।

(मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

(शम्भू छंद)

मन्दर मेरू आग्नेय कोंण में, 'सौमनस्य' गजदंत कहा।
रत्नमयी यह पर्वत अनुपम, सप्त कूट संयुक्त रहा।।

जिसके ऊपर सिद्ध कूट में, शोभित हैं जिनबिम्ब महान।
वहाँ नहीं जा सकते हम तो, यहाँ बैठ करते गुणगान।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीमन्दरमेरूसम्बन्धिआग्नेयदिक्स्थितसौमनसगजदन्तपर्वत सिद्धकूट -जिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुर गिरी के नैऋत्य कोंण में, 'विद्युतप्रभ' गजदन्त रहा।
नव कूटों युत तप्त स्वर्णमय, रवि सम सोहे श्रेष्ठ अहा।।
जिसके ऊपर सिद्ध कूट में, शोभित हैं जिनबिम्ब महान।
वहाँ नहीं जा सकते हम तो, यहाँ बैठ करते गुणगान।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीमन्दरमेरूसम्बन्धिनैऋत्यविदिक्स्थितविद्युत्प्रभगजदन्तसिद्धकूट -जिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्णाचल वायव्य कोंण में, 'गंधमादनाचल' अभिराम।
सप्तकूट युत स्वर्ण वर्णमय, सुरनर पूजित हैं जिनधाम।।
जिसके ऊपर सिद्ध कूट में, शोभित हैं जिनबिम्ब महान।
वहाँ नहीं जा सकते हम तो, यहाँ बैठ करते गुणगान।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीमन्दरमेरूसम्बन्धिवायव्यविदिक्स्थितगंधमादनगजदंतपर्वत सिद्धकूट -जिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन्दर गिरी ईशान कोंण में, 'माल्यवन्त' गजदन्त प्रधान।
शुभ वैडूर्यमणी सम अनुपम, जिनगृह अनुपम अचल महान।।
जिसके ऊपर सिद्ध कूट में, शोभित हैं जिनबिम्ब महान।
वहाँ नहीं जा सकते हम तो, यहाँ बैठ करते गुणगान।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीमन्दरमेरूसम्बन्धिईशानविदिक्स्थितमाल्यवंतगजदंतपर्वत सिद्धकूट -जिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **मन्दर मेरू के विदिश, चार कहे गजदन्त।**
उन पर जिनगृह पूजते, पाने भव का अन्त।।

ॐ ह्रीं श्रीमंदरमेरूसंबंधिचतुर्विदिक्स्थितचतुर्गजदंतपर्वतसिद्धकूटजिनालयस्थ-जिनबिंबेभ्य: पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

।।शान्तयेशांतिधारा पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्।।

जाप्य– ॐ ह्रीं अर्हं शाश्वत् जिनालयस्थसर्वजिनबिंबेभ्यो नम:।

जयमाला

दोहा– **जिन चैत्यालय राजते, गजदन्तों में चार।**
जयमाला गाते यहाँ, नत हो बारम्बार।।

चौपाई

मेरू सुदर्शन है सुखदायी, पुष्करार्ध पूरब में भाई।
चार वनों में मंदिर सोहें, भव्यों के जो मन को मोहें।।
विदिशा में गजदन्त कहाए, हाथी दांत समान बताए।
वन वृक्षों से शोभा पाते, सुर नर विद्याधर भी आते।।
प्रथम सौमनस पर्वत गाया, द्वितिय विद्युतप्रभ बतलाया।
निषधालय से मेरू भाई, स्पर्शे जो मंगलदायी।।
गंधमादन गिरी है शुभकारी, माल्यवान अनुपम मनहारी।
नीलगिरी को छूने वाले, मेरूगिरी तक रहे निराले।।
प्रथम और तृतीय पर भाई, सप्त कूट सोहें सुखदायी।
द्वितिय और चतुर्थ पे जानो, नव-नव कूट रहे शुभ मानों।।
मेरू गिरी के पास जो गाये, सिद्धायतन वह कूट कहाए।
जिनगृह उनमें शाश्वत् सोहें, सुर नर मुनियों का मन मोहें।।
अन्य सभी कूटों पर भाई, देवगृहों की है प्रभुताई।
देवगृहों के मध्य निराले, जिनगृह हैं अति शोभा वाले।।
दोनों ओर तलहटी जानो, उपवन वेदी तोरण मानो।
दोनों ओर गिरी पर भाई, वेदी उपवन है सुखदायी।।
चारण ऋषि वन्दन को आवें, विद्याधर जिन के गुण गावें।
इन्द्र स्वर्ग से आते भारी, सचियाँ नृत्य करें शुभकारी।।
जिनबिम्बों के दर्शन पाते, भविजन निज मन कमल खिलाते।
भवि जीवों के मन हर्षाते, 'विशद' भाव से पूज रचाते।।
कीर्ति आपकी यह जग गाये, चरणों में स्थान बनाए।
चरण शरण हम आये स्वामी, कृपा करो हे अन्तर्यामी।।
चाह नहीं कुछ और हमारी, हृदय बसो तुम हे त्रिपुरारी।
हम भी भव से तर जाएगें, मोक्ष महल को हम पाएगें।
हे देवों के देव निराले, तुम ही शिवपद देने वाले।
चरणों में हम शीश झुकाते, तुमको अपने हृदय सजाते।।

(घत्ताछंद)

हे जगत्राता, जगत विधाता, तुमरे गुण जो भी गाते।
पाते सुख साता, मैट असाता, शिव पदवी को वह पाते।।

ॐ ह्रीं श्रीमंदरमेरूसंबंधिविदिक्स्थितचतुर्गजदंतपर्वतसिद्धकूटजिनालयस्थ-सर्वजिनबिंबेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

।।शान्तयेशांतिधारा पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्।।

इन्द्रध्वज की पूजा करने, का अवसर शुभ आया है।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा करने, का सौभाग्य जगाया है।।
'विशद' सौख्य शांति पाते वह, जो प्रभु के गुण गाते हैं।
उच्चादर्श प्राप्त करते जो, शिखर पे ध्वजा चढ़ाते हैं।।

इत्याशीर्वादः

पुष्कर शाल्मलि वृक्ष पूजा–22

स्थापना

पुष्कर द्वीप में पुष्कर तरु शुभ, और शाल्मलि गाये।
सुरगिरी के उत्तर दक्षिण में, भोग भूमि बतलाए।।
सुरतरु की शाखाओं ऊपर, रत्नमयी प्रतिमाएँ।
विशद हृदय में आह्वानन् की, श्रेष्ठ भावना भाएँ।।

ॐ ह्रीं श्रीमन्दरमेरूसम्बन्धिपुष्करवृक्षशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयस्थजिन- बिंबसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। ॐ ह्रीं...अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। ॐ ह्रीं...अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम्।

(गीता छन्द)

कर्म का अंजन लगा है, आज धोने आए हैं।
साम्यभावी नीर निर्मल, कलश में भर लाए हैं।।
जो तरु पुष्कर शाल्मलि की, शाख पर जिनराज हैं।
उनके चरण में अर्घ्य देकर, पूजते हम आज हैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीमन्दरमेरूसम्बन्धिपुष्करशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः जलं निर्व.स्वाहा।

है नित्य निर्मल शांतिमय, शीतल हमारी आत्मा।
तव चरण में शांती मिले, हमको परम परमात्मा।।
जो तरु पुष्कर शाल्मलि की, शाख पर जिनराज हैं।
उनके चरण में अर्घ्य देकर, पूजते हम आज हैं।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीमन्दरमेरूसम्बन्धिपुष्करशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: चंदनं निर्व.स्वाहा।

अक्षय सुखों की चाह ले, अक्षत चरण में लाए हैं।
पाने सहज सुख नाथ! मन में, भाव लेकर आए हैं।।
जो तरु पुष्कर शाल्मलि की, शाख पर जिनराज हैं।
उनके चरण में अर्घ्य देकर, पूजते हम आज हैं।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीमन्दरमेरूसम्बन्धिपुष्करशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: अक्षतं निर्व.स्वाहा।

चारित्र दर्पण सम सभी का, भाव से होता अहा।
जग भ्रमित है इन्द्रिय सुखों में, कर्म का फल यह रहा।।
जो तरु पुष्कर शाल्मलि की, शाख पर जिनराज हैं।
उनके चरण में अर्घ्य देकर, पूजते हम आज हैं।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीमन्दरमेरूसम्बन्धिपुष्करशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: पुष्पं निर्व.स्वाहा।

हम क्षुधा से व्याकुल रहे, ना शांति हमने पाई है।
अब नाश करने की लगन, वह रोग की मन भाई है।।
जो तरु पुष्कर शाल्मलि की, शाख पर जिनराज हैं।
उनके चरण में अर्घ्य देकर, पूजते हम आज हैं।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीमन्दरमेरूसम्बन्धिपुष्करशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: नैवेद्यं निर्व.स्वाहा।

है तिमिर मिथ्या मोह का, ना ज्ञान का दीपक जले।
हम ज्ञान का दीपक जलाएँ, श्वाँस जब तक मम चले।।
जो तरु पुष्कर शाल्मलि की, शाख पर जिनराज हैं।
उनके चरण में अर्घ्य देकर, पूजते हम आज हैं।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीमन्दरमेरूसम्बन्धिपुष्करशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: दीपं निर्व.स्वाहा।

नित्कृष्ट करके कार्य बन्धन, कर्म का हमने किया।
अब नाश करना कर्म का, संकल्प मन में यह लिया।।
जो तरु पुष्कर शाल्मलि की, शाख पर जिनराज हैं।
उनके चरण में अर्घ्य देकर, पूजते हम आज हैं।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीमन्दरमेरूसम्बन्धिपुष्करशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: धूपं निर्व.स्वाहा।

निज चेतना के वृक्ष पर फल, ज्ञान अमृतमय लगे।
हम फल, चढ़ाते आतमा, सोई हमारी अब जगे।।
जो तरु पुष्कर शाल्मलि की, शाख पर जिनराज हैं।
उनके चरण में अर्घ्य देकर, पूजते हम आज हैं।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीमन्दरमेरूसम्बन्धिपुष्करशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: फलं निर्व.स्वाहा।

यह लोक तज परलोक यात्रा, के लिए हम जाएँगे।
यह अर्घ्य अर्पित कर विशद, हम सौख्य शाश्वत् पाएँगे।।
जो तरु पुष्कर शाल्मलि की, शाख पर जिनराज हैं।
उनके चरण में अर्घ्य देकर, पूजते हम आज हैं।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीमन्दरमेरूसम्बन्धिपुष्करशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **क्षीरोदधि सम श्रेष्ठ जल, प्रासुक मिष्ट सुगंध।**
शांतीधारा दे रहे, मिटे मोह का अंध।।

शान्तये शांतिधारा

दोहा– **श्री जिन चरण सरोज में, पारिजात के फूल।**
चढ़ा रहे हम भाव से, शिवपद हो अनुकूल।।

पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

अर्घ्यावली

दोहा– **पृथ्वी कायिक वृक्ष हैं, रत्नमयी शुभकार।**
जिसके श्री जिन गेह को, वन्दन बारम्बार।।

(मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

(शम्भू छंद)

मन्दर मेरू के ईशान में, रत्नमयी पुष्कर तरु जान।
उसकी उत्तर शाखा ऊपर, जिनगृह में सोहें भगवान॥
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य सजाकर, पूजा करते हम शुभकार।
परम अतिन्द्रिय पद पाने को, जिनपद वन्दन बारम्बार॥1॥

ॐ ह्रीं श्रीमन्दरमेरूसम्बन्धिईशानकोणेपुष्करवृक्षस्थितजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मेरूगिरी नैऋत्य कोंण में, वृक्ष शाल्मलि रहा महान।
दक्षिण शाखा ऊपर उसकी, जिनगृह शाश्वत् में भगवान॥
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य सजाकर, पूजा करते हम शुभकार।
परम अतिन्द्रिय पद पाने को, जिनपद वन्दन बारम्बार॥2॥

ॐ ह्रीं श्रीमन्दरमेरूसम्बन्धिनैऋत्यकोणेशाल्मलिवृक्षस्थित जिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्कर और शाल्मलि वृक्षों, का है अगणित तरु परिवार।
पूज रहे उन सबके जिनगृह, विशद भाव से मंगलकार॥
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य सजाकर, पूजा करते हम शुभकार।
परम अतिन्द्रिय पद पाने को, जिनपद वन्दन बारम्बार॥3॥

ॐ ह्रीं श्रीमन्दरमेरूसम्बन्धिपुष्करशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयस्थजिन-बिबेभ्य: पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

।।शान्तयेशांतिधारा पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्।।

जाप्य–ॐ ह्रीं अर्हं शाश्वत् जिनालयस्थसर्वजिनबिंबेभ्यो नम:।

जयमाला

दोहा– **पुष्कर शाल्मलि वृक्ष की, शाखाओं पर चार।**
जिन चैत्यालय चैत्य पद, वन्दन बारम्बार॥

चौपाई

पुष्करार्ध पश्चिम में भाई, मन्दर मेरू है सुखदायी।
पुष्कर शाल्मलि तरु सोहें, जो भविजन के मन को मोहें॥
काल अनादी शाश्वत् गाए, महिमा शास्त्र पुराण बताए।
स्वर्ण मयी परकोटा जानो, रत्नमयी जड़ जिसकी मानो॥

मणियों का है तना निराला, जन जन का मन हरने वाला।
तरु की चारों दिश शाखाएँ, मानों अनन्त चतुष्टय पाएँ॥
रत्नमयी सोहें मनहारी, पुष्प खिले हैं मंगलकारी।
हरितमणी के पत्ते जानो, श्रेष्ठ फलों से शोभित मानो॥
उस पर जिनगृह अनुपम गाए, अकृत्रिम शाश्वत् कहलाए।
त्रय शाखाओं पर शुभ जानो, देवभवन हैं अनुपम मानो॥
चारों ओर है वन का घेरा, पशुओं का है जहाँ बसेरा।
महलों में सुर रहते भाई, जिनकी महिमा अतिशय गाई॥
जलमय वापी है शुभकारी, ह्रवन देव करते मनहारी।
जिनगृह में जिनबिम्ब बताए, एक सौ आठ श्रेष्ठ कहलाए॥
देव वहाँ आकर के भाई, पूजा करते मंगलदायी।
रत्नमयी सिंहासन गाया, प्रभु का कमलासन बतलाया॥
तीन छत्र त्रैलोक्य के स्वामी, आप जगत के अन्तर्यामी।
ढुरते चौंसठ चँवर निराले, जिन महिमा बतलाने वाले॥
तरु अशोक की छाया जानो, शोक रहित करता है मानो।
भामण्डल की आभा भाई, दिखती है सुन्दर सुखदायी॥
पुष्प वृष्टि होती शुभकारी, जहाँ पवन चलती मनहारी।
दुन्दुभि बाद्य गगन गुंजाएँ, जिनवर की महिमा को गाएँ॥
महिमा जिनवर की सुखदायी, सर्व जहाँ में मंगलदायी।
दर्शन के हम भाव बनाए, चरण शरण में प्रभु जी आए॥

दोहा– **पाएँगे हम दर्श यह, है मन में विश्वास।**
अष्ट कर्म का नाश कर, पाना शिवपुर वास॥

ॐ ह्रीं श्रीमन्दरमेरूसंबंधिधातकीशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

।।शांतये शांतिधारा।। पुष्पांजलि:।।

इन्द्रध्वज की पूजा करने, का अवसर शुभ आया है।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा करने, का सौभाग्य जगाया है॥
'विशद' सौख्य शांति पाते वह, जो प्रभु के गुण गाते हैं।
उच्चादर्श प्राप्त करते जो, शिखर पे ध्वजा चढ़ाते हैं॥

इत्याशीर्वाद:

मंदर मेरू संबंधी षोडश वक्षार जिनालय पूजा–23

स्थापना

मन्दार गिरी के पूरब में शुभ, आठ बताए हैं वक्षार।
पश्चिम में भी आठ बताए, रत्नमयी शाश्वत् शुभकार।।
जिनके ऊपर श्रेष्ठ जिनालय, शोभा पाते अपरम्पार।
जिनबिम्बों का आह्वानन् हम, उर में करते बारम्बार।।

ॐ ह्रीं श्रीमन्दरमेरूसंबन्धिषोडशवक्षारपर्वत स्थितसिद्धकूटजिनालयस्थजिन–बिम्बसमूह! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वाननं। ॐ ह्रीं...अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं...अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम्।

(चौपाई)

निर्मल नीर की भरके झारी, चढ़ा रहे हम हे त्रिपुरारी।
गिरी वक्षार के जिन को ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीमन्दरमेरूसंबंधिषोडशवक्षारपर्वत स्थितसिद्धकूटजिनालयस्थजिन–बिंबेभ्यः जलं निर्व.स्वाहा।

शीतल चंदन घिसकर लाए, भव संताप नशाने आए।
गिरी वक्षार के जिन को ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीमन्दरमेरूसंबंधिषोडशवक्षारपर्वत स्थितसिद्धकूटजिनालयस्थजिन–बिंबेभ्यः चंदनं निर्व.स्वाहा।

अक्षय अक्षत से शुभकारी, पूजा करते हम मनहारी।
गिरी वक्षार के जिन को ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीमन्दरमेरूसंबंधिषोडशवक्षारपर्वत स्थितसिद्धकूटजिनालयस्थजिन–बिंबेभ्यः अक्षतं निर्व.स्वाहा।

सुरभित पुष्प चढ़ाने लाए, भव से मुक्ती पाने आए।
गिरी वक्षार के जिन को ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीमन्दरमेरूसंबंधिषोडशवक्षारपर्वत स्थितसिद्धकूटजिनालयस्थजिन–बिंबेभ्यः पुष्पं निर्व.स्वाहा।

सरस श्रेष्ठ नैवेद्य बनाए, क्षुधा नशाने को हम आए।
गिरी वक्षार के जिन को ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीमन्दरमेरूसंबंधिषोडशवक्षारपर्वत स्थितसिद्धकूटजिनालयस्थजिन–बिंबेभ्यः नैवेद्यं निर्व.स्वाहा।

दीप जलाते मंगलकारी, मोह तिमिर का नाशनकारी।
गिरी वक्षार के जिन को ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीमन्दरमेरूसंबंधिषोडशवक्षारपर्वत स्थितसिद्धकूटजिनालयस्थजिन–बिंबेभ्यः दीपं निर्व.स्वाहा।

अग्नी में शुभ धूप जलाएँ, अष्ट कर्म से मुक्ती पाएँ।
गिरी वक्षार के जिन को ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीमन्दरमेरूसंबंधिषोडशवक्षारपर्वत स्थितसिद्धकूटजिनालयस्थजिन–बिंबेभ्यः धूपं निर्व.स्वाहा।

ताजे चढ़ा रहे फल भाई, मुक्ती पद ज्ञायक सुखदायी।
गिरी वक्षार के जिन को ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीमन्दरमेरूसंबंधिषोडशवक्षारपर्वत स्थितसिद्धकूटजिनालयस्थजिन–बिंबेभ्यः फलं निर्व.स्वाहा।

अर्घ्य बनाया यह मनहारी, पद अनर्घ दायक शिवकारी।
गिरी वक्षार के जिन को ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीमन्दरमेरूसंबंधिषोडशवक्षारपर्वत स्थितसिद्धकूटजिनालयस्थजिन–बिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **नीर भरा शिव गंग से, करते शांतीधार।**
शिव पद पाने के लिये, आये जिन के द्वार।।

शांतये शांतिधारा।।

दोहा– **सुरतरु के यह पुष्प ले, चढ़ा रहे जिन पाद।**
मिट जाए मेरा प्रभो!, जरा मरण उत्पाद।।

पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

प्रत्येकार्घ्य

दोहा– **जीवन का आधार है, सत्य अहिंसा त्याग।**
पूजा कर जिनदेव की, खिले भक्ति का बाग॥

(इति मण्डलस्योपरि परिपुष्पांजलि क्षिपेत्)

(चौपाई)

सीता नदि उत्तर तट जान, 'चित्रकूट' वक्षार महान।
गिरी पर सिद्धकूट जिनधाम, जिनबिम्बों को करूँ प्रणाम॥1॥

ॐ ह्रीं श्रीमन्दरमेरूसम्बन्धिपूर्वविदेहस्थितचित्रकूटवक्षारपर्वत सिद्धकूट जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'नलिन कूट' वक्षार महान, कंचन द्युति सम आभावान
गिरी पर सिद्धकूट जिनधाम, जिनबिम्बों को करूँ प्रणाम॥2॥

ॐ ह्रीं श्रीमन्दरमेरूसम्बन्धिपूर्वविदेहस्थितपद्मकूटवक्षारपर्वत सिद्धकूट जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पद्म कूट' वक्षार प्रधान, चार कूट युत रहा महान।
गिरी पर सिद्धकूट जिनधाम, जिनबिम्बों को करूँ प्रणाम॥3॥

ॐ ह्रीं श्रीमन्दरमेरूसम्बन्धिपूर्वविदेहस्थितनलिनकूटवक्षारपर्वत सिद्धकूट जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'एकशैल' वक्षार विशेष, हरा भरा शुभ रहा प्रदेश।
गिरी पर सिद्धकूट जिनधाम, जिनबिम्बों को करूँ प्रणाम॥4॥

ॐ ह्रीं श्रीमन्दरमेरूसम्बन्धिपूर्वविदेहस्थितएककशैलवक्षारपर्वत सिद्धकूट जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सीता नदि के दक्षिण जान, देवारण्य वेदिका मान।
है 'त्रिकूट' वक्षार विशेष, जिसपर जिनगृह रहे जिनेश॥5॥

ॐ ह्रीं श्रीमन्दरमेरूसम्बन्धिपूर्वविदेहस्थितत्रिकूटवक्षारपर्वत सिद्धकूट जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रहा 'वैश्रवण' शुभ वक्षार, जिस पर सिद्ध कूट मनहार।

जिनगृह में जिनजिम्ब विशेष, पूज रहे हम यहाँ जिनेश॥6॥

ॐ ह्रीं श्रीमन्दरमेरूसम्बन्धिपूर्वविदेहस्थितवैश्रवणवक्षारपर्वत सिद्धकूट जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अंजन' है तीजा वक्षार, सिद्ध कूट वन महल अपार।
जिनगृह में जिनजिम्ब विशेष, पूज रहे हम यहाँ जिनेश॥7॥

ॐ ह्रीं श्रीमन्दरमेरूसम्बन्धिपूर्वविदेहस्थितअंजनवक्षारपर्वत सिद्धकूट जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अंजनात्मा' शुभ वक्षार, कूट वेदि वन युत शुभकार।
जिनगृह में जिनजिम्ब विशेष, पूज रहे हम यहाँ जिनेश॥8॥

ॐ ह्रीं श्रीमन्दरमेरूसम्बन्धिपूर्वविदेहस्थितआत्मांजनवक्षारपर्वत सिद्धकूट जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(नरेन्द्र छंद)

अपर विदेह नदी सीतोदा, दक्षिण दिश में गाया।
भद्रशाल वेदी के सन्निध, 'श्रद्धावान' बताया॥
सिद्ध कूट वक्षार गिरी पर, जिसमें जिनगृह गाये।
जिनबिम्बों की पूजा करके, अर्घ्य चढ़ाने लाए॥9॥

ॐ ह्रीं श्रीमन्दरमेरूसम्बन्धिपश्चिमविदेहस्थितश्रद्धावान्वक्षारपर्वत सिद्धकूट जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विजटावान' अचल है मनहर, वेदी उपवन वाला।
शाश्वत् रत्नमयी है अनुपम, सुन्दर दिखे निराला॥
सिद्ध कूट वक्षार गिरी पर, जिसमें जिनगृह गाये।
जिनबिम्बों की पूजा करके, अर्घ्य चढ़ाने लाए॥10॥

ॐ ह्रीं श्रीमन्दरमेरूसम्बन्धिपश्चिमविदेहस्थितविजटावान्वक्षारपर्वत सिद्धकूट जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'आशीविष' वक्षार अकृत्रिम, सुर किन्नर मनहारी।
ऋषि विद्याधर विचरण करते, परमानन्द विहारी॥

सिद्ध कूट वक्षार गिरी पर, जिसमें जिनगृह गाये।
जिनबिम्बों की पूजा करके, अर्घ्य चढ़ाने लाए।।11।।

ॐ ह्रीं श्रीमन्दरमेरूसम्बन्धिपश्चिमविदेहस्थितआशीविषक्षारपर्वत सिद्धकूट जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अचल 'सुखावह' है सुखदायी, अतिरमणीय सुहाना।
गगन गमनचारी सुर मुनि का, होता आना जाना।।
सिद्ध कूट वक्षार गिरी पर, जिसमें जिनगृह गाये।
जिनबिम्बों की पूजा करके, अर्घ्य चढ़ाने लाए।।12।।

ॐ ह्रीं श्रीमन्दरमेरूसम्बन्धिपश्चिमविदेहस्थितसुखावहवक्षारपर्वत सिद्धकूट जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सीतोदा के उत्तर तट पे, भूतारष्य किनारे।
'चन्द्रमाल' शाश्वत् शुभ गाया, कंचन आभा धारे।।
सिद्ध कूट वक्षार गिरी पर, जिसमें जिनगृह गाये।
जिनबिम्बों की पूजा करके, अर्घ्य चढ़ाने लाए।।13।।

ॐ ह्रीं श्रीमन्दरमेरूसम्बन्धिपश्चिमविदेहस्थितचन्द्रमालवक्षारपर्वत सिद्धकूट जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सूर्यमाल' वक्षार सुहाना, सूर्य किरण सम सोहे।
सुर वनिताएँ जिनगुण गावें, सबके मन को मोहे।
सिद्ध कूट वक्षार गिरी पर, जिसमें जिनगृह गाये।
जिनबिम्बों की पूजा करके, अर्घ्य चढ़ाने लाए।।14।।

ॐ ह्रीं श्रीमन्दरमेरूसम्बन्धिपश्चिमविदेहस्थितसूर्यमालवक्षारपर्वत सिद्धकूट जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'नागमाल' गिरी की शोभा का, वर्णन कहा ना जाए।
पुण्यवान सुर नर विद्याधर, जाके हर्ष मनाए।।
सिद्ध कूट वक्षार गिरी पर, जिसमें जिनगृह गाये।
जिनबिम्बों की पूजा सिद्धकूट करके, अर्घ्य चढ़ाने लाए।।15।।

ॐ ह्रीं श्रीमन्दरमेरूसम्बन्धिपश्चिमविदेहस्थितनागमालवक्षारपर्वत सिद्धकूट-जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'देवमाल' वक्षार गिरी पर, देव देवियाँ आवें।
जय जयकार की ध्वनी उच्चारें, नृत्य करें हर्षावें।।

सिद्धकूट वक्षार गिरी पर, जिसमें जिनगृह गाये।
जिनबिम्बों की पूजा करके, अर्घ्य चढ़ाने लाए।।16।।

ॐ ह्रीं श्रीमन्दरमेरूसम्बन्धिपश्चिमविदेहस्थितदेवमालवक्षारपर्वत सिद्धकूट -जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्करार्ध पूरब विदेह में, मन्दर मेरू बताए।
सोलह गिरी वक्षार पास में, जिसके अनुपम गाए।।
सिद्ध कूट वक्षार गिरी पर, जिसमें जिनगृह गाये।
जिनबिम्बों की पूजा करके, अर्घ्य चढ़ाने लाए।।17।।

ॐ ह्रीं श्रीमन्दरमेरूसम्बन्धिषोडशवक्षारपर्वत स्थितसिद्धकूटजिनालय स्थजिनबिंबेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

।।शांतये शांतिधारा।। पुष्पांजलिः।।

जाप्य– ॐ ह्रीं अर्हं शाश्वत् जिनालयस्थसर्वजिनबिंबेभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा– **भक्ती के हम भाव ले, आए शरण में नाथ।**
जयमाला गाते यहाँ, चरण झुकाकर माथ।।

(पद्धरी छंद)

गिरी वक्षार रहे शुभकार, बने जिन पर जिनगृह मनहार।
कहे जिनबिम्ब अकृत्रिम जान, रत्नमय सुन्दर जगत महान।।
बताए सब गिरी ऊपर चार, कहाए कूट सुमंगलकार।
सभी सरिता के ओर महान, बने हैं सिद्ध कूट पहिचान।।
मुनीश्वर आके करते ध्यान, गणीश्वर भी करते गुणगान।
सुरेन्द्र भी सब मिलकर के आन, नागेन्द्रों के सब देव प्रधान।।
नरेश्वर आन झुकावें भाल, नचें सुर अपसरियाँ दे ताल।
सुरासुर किन्नर के भी देव, करें पद वन्दन जो स्वयमेव।।
कहे जिन त्रिभुवन ईश महान, तुम्ही जग तारण देव प्रधान।
रहे शिव तिय के कंत जिनेश, जगत दुखहर्त्ता आप महेश।।
हरो प्रभु मेरे आन क्लेश, करो मुझ पर करुणा अवशेष।
रहे मोहारी जय तुम नाथ, प्रभू मृत्युजय आप सनाथ।।

प्रभू तुम काल अनादि अनन्त, अतः भजते तुमको सब संत।
किया तुमने भव रोग विनाश, किया निज चेतन ज्ञान प्रकाश॥
रहे अघतम हर दीन दयाल, तुम्ही हो जिनवर पूज्य त्रिकाल।
प्रभू प्रगटाए सुदर्शन ज्ञान, रहे सुखानंत सुवीरज वान॥
कहे जन मन को कमल दिनेश, रहे कुमुदाकर आप जिनेश।
प्रभु चिन्तामणि हैं शुभकार, 'विशद' जिन सुरतरु हैं मनहार॥
कहे जिन कामधेनु महिमान, परम चिन्तामणि आप महान।
रहा प्रभू नाम सकल सुखकार, कहा भवदधि से तारण हार॥
बसो उर में अब मेरे आन, करें यह भक्त प्रभू तव ध्यान।
कहाते हो तुम दीनानाथ, झुका तब चरणों में मम माथ॥
नमन तव पद से बारम्बार, करो जिन हम पे यह उपकार।
नहीं फिर से भव में हो आन, करो कुछ ऐसो आप निदान॥
सुनो मेरी प्रभु एक पुकार, नशे अब मेरा यह संसार।
चढ़ाते तव पद में हम अर्घ्य, विशद पाएँ हम सुपद अनर्घ्य॥

(छंदा घत्ता)

जिनवर को ध्याए, कर्म नशाए, पढ़े सुने जो जयमाला।
वह ज्ञान जगाए, शिव सुख पाए, कटे कर्म का भी जाला॥

ॐ ह्रीं श्रीमंदरमेरूसंबंधिषोडशवक्षारपर्वतस्थितषोडशसिद्धकूटजिनालय स्थसर्वजिनबिंबेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

।।शान्तयेशांतिधारा पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्।।

इन्द्रध्वज की पूजा करने, का अवसर शुभ आया है।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा करने, का सौभाग्य जगाया है॥
'विशद' सौख्य शांति पाते वह, जो प्रभु के गुण गाते हैं।
उच्चादर्श प्राप्त करते जो, शिखर पे ध्वजा चढ़ाते हैं॥

इत्याशीर्वादः

मन्दरमेरू चौंतिस विजयार्ध पूजा–24

स्थापना

मन्दर मेरू के पश्चिम में, हैं विदेह बत्तिस शुभकार।
रजताचल हैं उनमें अनुपम, जिन पर हैं जिनगृह मनहार॥

एक-एक भरतैरावत में, रजताचल शुभ रहे महान।
उन पर निजगृह में जिनवर का, करते भाव सहित आह्वान॥

ॐ ह्रीं श्रीमन्दरमेरोः पूर्वपश्चिमदक्षिणोत्तरसम्बन्धिचतुस्त्रिंशत्विजयार्धपर्वत सिद्धकूटजिनालयस्थसर्वजिनबिंबसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। ॐ ह्रीं श्री...अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठ स्थापनं। ॐ ह्रीं श्री...अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

(गीता छंद)

हम नीर निर्मल क्षीर सागर, से कलश भर लाए हैं।
सब रोग जन्मादिक मिटाने, जिन शरण में आए हैं॥
श्रेष्ठ गिरी विजयार्ध पर, जिनराज के जो धाम हैं।
शुभ रत्नमय जिनबिम्ब को, मम् बार-बार प्रणाम हैं॥1॥

ॐ ह्रीं श्रीमन्दरमेरूसम्बन्धिचतुस्त्रिंशत्विजयार्धपर्वत सिद्धकूटजिनालयस्थ -जिनबिंबेभ्यः जलं निर्व.स्वाहा।

चन्दन सुगन्धित नीर में हम, आज घिस कर लाए हैं।
भव ताप का संताप हरने, जिन शरण में आए हैं॥
श्रेष्ठ गिरी विजयार्ध पर, जिनराज के जो धाम हैं।
शुभ रत्नमय जिनबिम्ब को, मम् बार-बार प्रणाम हैं॥2॥

ॐ ह्रीं श्रीमन्दरमेरूसम्बन्धिचतुस्त्रिंशत्विजयार्धपर्वत सिद्धकूटजिनालयस्थ -जिनबिंबेभ्यः चंदनं निर्व.स्वाहा।

अक्षय अखण्डित सौख्य निधि, भण्डार भरने आए हैं।
अक्षत धवल के पुंज हम यह, अर्चना को लाए हैं॥
श्रेष्ठ गिरी विजयार्ध पर, जिनराज के जो धाम हैं।
शुभ रत्नमय जिनबिम्ब को, मम् बार-बार प्रणाम हैं॥3॥

ॐ ह्रीं श्रीमन्दरमेरूसम्बन्धिचतुस्त्रिंशत्विजयार्धपर्वत सिद्धकूटजिनालयस्थ -जिनबिंबेभ्यः अक्षतं निर्व.स्वाहा।

निज आत्म गुण की गंध पाने, सुमन सुरभित लाए हैं।
जिनराज पद पंकज शरण पा, हम विशद हर्षाए हैं॥
श्रेष्ठ गिरी विजयार्ध पर, जिनराज के जो धाम हैं।
शुभ रत्नमय जिनबिम्ब को, मम् बार-बार प्रणाम हैं॥4॥

ॐ ह्रीं श्रीमन्दरमेरूसम्बन्धिचतुस्त्रिंशत्विजयार्धपर्वत सिद्धकूटजिनालयस्थ -जिनबिंबेभ्यः पुष्पं निर्व.स्वाहा।

नैवेद्य यह रसदार ताजे, थाल में भर लाए हैं।
आत्म सुख पीयूष पाने, हम चरण में आए हैं।।
श्रेष्ठ गिरी विजयार्ध पर, जिनराज के जो धाम हैं।
शुभ रत्नमय जिनबिम्ब को, मम् बार-बार प्रणाम हैं।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीमन्दरमेरूसम्बन्धिचतुस्त्रिंशत्विजयार्धपर्वत सिद्धकूटजिनालयस्थ -जिनबिंबेभ्य: नैवेद्यं निर्व.स्वाहा।

दीप तम को दमन करता, देखते हम आए हैं।
तम घना अज्ञान का, अतएव दीप जलाए हैं।।
श्रेष्ठ गिरी विजयार्ध पर, जिनराज के जो धाम हैं।
शुभ रत्नमय जिनबिम्ब को, मम् बार-बार प्रणाम हैं।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीमन्दरमेरूसम्बन्धिचतुस्त्रिंशत्विजयार्धपर्वत सिद्धकूटजिनालयस्थ -जिनबिंबेभ्य: दीपं निर्व.स्वाहा।

यह धूप खेने अग्नि में शुभ, गंधमय हम लाए हैं।
जो हैं अनादी शत्रु मेरे, कर्म हरने आए हैं।।
श्रेष्ठ गिरी विजयार्ध पर, जिनराज के जो धाम हैं।
शुभ रत्नमय जिनबिम्ब को, मम् बार-बार प्रणाम हैं।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीमन्दरमेरूसम्बन्धिचतुस्त्रिंशत्विजयार्धपर्वत सिद्धकूटजिनालयस्थ -जिनबिंबेभ्य: धूपं निर्व.स्वाहा।

हम आत्म गुण वैभव स्वयं का, नित्य पाने आए हैं।
अतएव यह फल आपके, पद में चढ़ाने लाए हैं।।
श्रेष्ठ गिरी विजयार्ध पर, जिनराज के जो धाम हैं।
शुभ रत्नमय जिनबिम्ब को, मम् बार-बार प्रणाम हैं।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीमन्दरमेरूसम्बन्धिचतुस्त्रिंशत्विजयार्धपर्वत सिद्धकूटजिनालयस्थ -जिनबिंबेभ्य: फलं निर्व.स्वाहा।

अनमोल गुण जिन आत्मा के, प्राप्त ना कर पाए हैं।
यह अर्घ्य शुभ करके समर्पित, आज पाने आए हैं।।
श्रेष्ठ गिरी विजयार्ध पर, जिनराज के जो धाम हैं।
शुभ रत्नमय जिनबिम्ब को, मम् बार-बार प्रणाम हैं।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीमन्दरमेरूसम्बन्धिचतुस्त्रिंशत्विजयार्धपर्वत सिद्धकूटजिनालयस्थ -जिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

दोहा– **चिन्मूरत चिन्तामणि, चिदानन्द चिद्रूप।**
शांतीधारा कर मिले, चेतन गुण रस कूप।।
शान्तये शांतिधारा।।

दोहा– **श्री जिन चरण सरोज में, पुष्पांजली करन्त।**
त्रिभुवन में शांती बढ़े, होवे सौख्य अनन्त।।
दिव्य पुष्पांजलि क्षिपेत्।।

(प्रत्येक अर्घ्य)

दोहा– **हैं चौंतिस विजयार्ध पर, श्री जिनवर के धाम।**
अर्घ्य चढ़ा पूजा करें, बारम्बार प्रणाम।।
(मण्डलस्योपरि पुष्पांजलि क्षिपेत्)

(अडिल्ल छंद)

सीता नदि के उत्तर तट पे जानिए, भद्रशाल वन वेदी पास बखानिए।
''कच्छा'' देश विदेह में रजताचल कहा, सिद्ध कूट में श्री जिन का आलय रहा।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीमन्दरमेरूसम्बन्धिपूर्वविदेहस्थकच्छादेशस्थितविजयार्धपर्वत सिद्ध -कूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश ''सुकच्छा' पुष्करार्ध में शुभ कह्यो, क्षेमपुरी में रजताचल अनुपम रहयो।
रजत गिरी पर श्री जिनवर का धाम हैं, जिनबिम्बों को मेरा विशद प्रणाम है।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीमन्दरमेरूसम्बन्धिपूर्वविदेहस्थसुकच्छादेशस्थितविजयार्धपर्वत सिद्ध -कूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्करार्ध में पूर्व मेरू मन्दर कहा, जिसके पूरब देश ''महाकच्छा'' रहा।
रजत गिरी पर श्री जिनवर का धाम है, जिनबिम्बों को मेरा विशद प्रणाम है।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीमन्दरमेरूसम्बन्धिपूर्वविदेहस्थमहाकच्छादेशस्थितविजयार्धपर्वत सिद्ध -कूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश ''कच्छकावती'' मध्य में जानिए, गिरी विजयारध शुभ महिमा युत मानिए।
रजत गिरी पर श्री जिनवर का धाम हैं, जिनबिम्बों को मेरा विशद प्रणाम है।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीमन्दरमेरूसम्बन्धिपूर्वविदेहस्थकच्छकावतीदेशस्थितविजयार्धपर्वत सिद्ध -कूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

''आवर्ता'' शुभ देश मध्य मनहार है, रजतगिरी विजयार्ध श्रेष्ठ शुभकार है॥
रजत गिरी पर श्री जिनवर का धाम हैं, जिनबिम्बों को मेरा विशद प्रणाम है॥5॥

ॐ ह्रीं श्रीमन्दरमेरूसम्बन्धिपूर्वविदेहस्थआवर्तादेशस्थितविजयार्धपर्वत सिद्ध -कूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश ''लांगलावर्ता'' में पहिचानिए, सिद्ध कूट नव जिसके ऊपर मानिए।
रजत गिरी पर श्री जिनवर का धाम हैं, जिनबिम्बों को मेरा विशद प्रणाम है॥6॥

ॐ ह्रीं श्रीमन्दरमेरूसम्बन्धिपूर्वविदेहस्थलांगलावर्तादेशस्थितविजयार्धपर्वत सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश ''पुष्कला'' में रजताचल श्रेष्ठ हैं, सिद्ध कूट में जिनगृह जहाँ यथेष्ट हैं।
रजत गिरी पर श्री जिनवर का धाम हैं, जिनबिम्बों को मेरा विशद प्रणाम है॥7॥

ॐ ह्रीं श्रीमन्दरमेरूसम्बन्धिपूर्वविदेहस्थपुष्कलादेशस्थितविजयार्धपर्वत सिद्ध -कूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश ''पुष्कलावती'' मध्य जानो सही, पुण्डरीकणी नगरी जिसमें शुभ रही।
रजत गिरी पर श्री जिनवर का धाम हैं, जिनबिम्बों को मेरा विशद प्रणाम है॥8॥

ॐ ह्रीं श्रीमन्दरमेरूसम्बन्धिपूर्वविदेहस्थपुष्कलावतीदेशस्थितविजयार्धपर्वत सिद्ध -कूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शम्भू छंद)

''वत्सा देश विदेह क्षेत्र में, गिरी विजयार्ध बताया है।
जिसके ऊपर सिद्धकूट में, चैत्यालय मन भाया है॥
पुष्करार्ध पूरब विदेह में, पुरी सुसीमा है शुभकार।
वहाँ के प्राणी पूजें प्रभु को, पूज रहे हम बारम्बार॥9॥

ॐ ह्रीं श्रीमन्दरमेरूसम्बन्धिपूर्वविदेहस्थवत्सादेशस्थितविजयार्धपर्वत सिद्ध -कूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश सुवत्सा में रजताचल, पर नव कूट बताए हैं।
सिद्ध कूट पर जिन मंदिर में, शाश्वत् जिनवर गाए हैं॥
पुष्करार्ध पूरब विदेह में, पुरी सुसीमा है शुभकार।
वहाँ के प्राणी पूजें प्रभु को, पूज रहे हम बारम्बार॥10॥

ॐ ह्रीं श्रीमन्दरमेरूसम्बन्धिपूर्वविदेहस्थसुवत्सादेशस्थितविजयार्धपर्वत सिद्ध -कूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश ''महावत्सा'' में अनुपम, रजत गिरी शुभकारी है।
सिद्ध कूट के जिन मंदिर में, प्रतिमाएँ मनहारी हैं॥
पुष्करार्ध पूरब विदेह में, पुरी सुसीमा है शुभकार।
वहाँ के प्राणी पूजें प्रभु को, पूज रहे हम बारम्बार॥11॥

ॐ ह्रीं श्रीमन्दरमेरूसम्बन्धिपूर्वविदेहस्थमहावत्सादेशस्थितविजयार्धपर्वत सिद्ध -कूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश ''वत्सकावती'' में सुन्दर, रजताचल शुभकर गाया।
सिद्ध कूट पर जिन चैत्यालय, जिन पूजा कर सुख पाया॥
पुष्करार्ध पूरब विदेह में, पुरी सुसीमा है शुभकार।
वहाँ के प्राणी पूजें प्रभु को, पूज रहे हम बारम्बार॥12॥

ॐ ह्रीं श्रीमन्दरमेरूसम्बन्धिपूर्वविदेहस्थवत्सकावतीदेशस्थितविजयार्धपर्वत सिद्ध -कूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

''रम्या'' देश में रजत गिरी पर, कूट रहे नव मंगलकार।
सिद्ध कूट में जिन चैत्यालय, में जिनवर हैं अपरम्पार॥
पुष्करार्ध पूरब विदेह में, पुरी सुसीमा है शुभकार।
वहाँ के प्राणी पूजें प्रभु को, पूज रहे हम बारम्बार॥13॥

ॐ ह्रीं श्रीमन्दरमेरूसम्बन्धिपूर्वविदेहस्थरम्यादेशस्थितविजयार्धपर्वत सिद्ध -कूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश ''सुरम्या'' में रूपाचल, सब के मन को भाता है।
सिद्ध कूट में जिनबिम्बों की, जो महिमा दिखलाता है॥
पुष्करार्ध पूरब विदेह में, पुरी सुसीमा है शुभकार।
वहाँ के प्राणी पूजें प्रभु को, पूज रहे हम बारम्बार॥14॥

ॐ ह्रीं श्रीमन्दरमेरूसम्बन्धिपूर्वविदेहस्थसुरम्यादेशस्थितविजयार्धपर्वत सिद्ध -कूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुन्दर देश कहा "रमणीया", जिसमें रजत गिरी मनहार।
सिद्ध कूट में जिनगृह अनुपम, जिनवर सोहें अपरम्पार॥
पुष्करार्ध पूरब विदेह में, पुरी सुसीमा है शुभकार।
वहाँ के प्राणी पूजें प्रभु को, पूज रहे हम बारम्बार॥15॥

ॐ ह्रीं श्रीमन्दरमेरूसम्बन्धिपूर्वविदेहस्थरमणीयादेशस्थितविजयार्धपर्वत सिद्ध -कूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश ''मंगलावती'' मध्य में, रजत गिरी नव कूटों वान।
सिद्ध कूट जिनचैत्यालय में, शोभित होते जिन भगवान॥
पुष्करार्ध पूरब विदेह में, पुरी सुसीमा है शुभकार।
वहाँ के प्राणी पूजें प्रभु को, पूज रहे हम बारम्बार॥16॥

ॐ ह्रीं श्रीमन्दरमेरूसम्बन्धिपूर्वविदेहस्थमंगलावतीदेशस्थितविजयार्धपर्वत सिद्ध -कूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौबोला छंद)

पुष्करार्ध मन्दर मेरू के, पश्चिम सीतोदा जानो।
भद्रशाल वन पास वेदि के, 'पद्मा देश' रहा मानो॥
जिसके मध्य रहा रूपाचल, सिद्धकूट में हैं जिनधाम।
भव-भव की जो बाधा नाशें, श्री जिनपद में विशद प्रणाम॥17॥

ॐ ह्रीं श्रीमन्दरमेरूसम्बन्धिपश्चिमविदेहस्थपद्मादेशस्थितविजयार्धपर्वत -सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन्दर मेरू के पश्चिम में, सीतोदा की दांयी ओर।
देश ''सुपद्मा'' छह खण्डों युत, करता सबको भाव विभोर॥
जिसके मध्य रहा रूपाचल, सिद्धकूट में हैं जिनधाम।
भव-भव की जो बाधा नाशें, श्री जिनपद में विशद प्रणाम॥18॥

ॐ ह्रीं श्रीमन्दरमेरूसम्बन्धिपश्चिमविदेहस्थपद्मादेशस्थितविजयार्धपर्वत -सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्करार्ध के पूर्व खण्ड में, सीतोदा के दक्षिण भाग।
देश ''महापदमा है अनुपम, जिसमें हैं छह खण्ड विभाग॥
जिसके मध्य रहा रूपाचल, सिद्धकूट में हैं जिनधाम।
भव-भव की जो बाधा नाशें, श्री जिनपद में विशद प्रणाम॥19॥

ॐ ह्रीं श्रीमन्दरमेरूसम्बन्धिपश्चिमविदेहस्थमहापद्मादेशस्थितविजयार्धपर्वत -सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन्दर मेरू के पश्चिम में, देश ''पद्मकावती'' विशेष।
तीर्थंकर गणपति मुनि पद रज, से सुरभित हैं सर्व प्रदेश॥
जिसके मध्य रहा रूपाचल, सिद्धकूट में हैं जिनधाम।
भव-भव की जो बाधा नाशें, श्री जिनपद में विशद प्रणाम॥20॥

ॐ ह्रीं श्रीमन्दरमेरूसम्बन्धिपश्चिमविदेहस्थपद्मकावतीदेशस्थितविजयार्धपर्वत -सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन्दर मेरू पश्चिम दिश में, ''शंखा देश'' विदेह रहा।
रजतगिरी है मध्य में जिसके, तीन कटनियों सहित कहा॥
नव कूटों के सिद्ध कूट में, चैत्यालय सोहे अभिराम।
रोग शोक दारिद्र विनाशक, श्री जिनेन्द्र पद विशद प्रणाम॥21॥

ॐ ह्रीं श्रीमन्दरमेरूसम्बन्धिपश्चिमविदेहस्थशंखदेशस्थितविजयार्धपर्वत -सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन्दर मेरू के पश्चिम में, 'नलिन' देश है शुभकारी।
रजताचल है मध्य में जिसके, शाश्वत् जो मंगलकारी॥
नव कूटों के सिद्ध कूट में, चैत्यालय सोहे अभिराम।
रोग शोक दारिद्र विनाशक, श्री जिनेन्द्र पद विशद प्रणाम॥22॥

ॐ ह्रीं श्रीमन्दरमेरूसम्बन्धिपश्चिमविदेहस्थनलिनीदेशस्थितविजयार्धपर्वत -सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्करार्ध के पूर्व खण्ड में, सीतोदा के दक्षिण ओर।
'कुमद देश' के मध्य रूप्यगिरी, मन को करता भाव विभोर॥
नव कूटों के सिद्ध कूट में, चैत्यालय सोहे अभिराम।
रोग शोक दारिद्र विनाशक, श्री जिनेन्द्र पद विशद प्रणाम॥23॥

ॐ ह्रीं श्रीमन्दरमेरूसम्बन्धिपश्चिमविदेहस्थकुमुदादेशस्थितविजयार्धपर्वत -सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन्दर मेरू के पश्चिम दिश, में रमणीय है 'सरिता' देश।
रजगगिरी है मध्य भाग में, धर्म की गंगा बहे विशेष॥
नव कूटों के सिद्ध कूट में, चैत्यालय सोहे अभिराम।
रोग शोक दारिद्र विनाशक, श्री जिनेन्द्र पद विशद प्रणाम॥24॥

ॐ ह्रीं श्रीमन्दरमेरूसम्बन्धिपश्चिमविदेहस्थसरितादेशस्थितविजयार्धपर्वत -सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(आल्हा छंद)

सीतोदा के उत्तर दिक् में, देवारण्य निकट पहिचान।
''वप्रा'' देश के मध्य रूप्यगिरी, में सोहें नव कूट महान॥

सीतोदा के तटे कूट पें, सिद्ध कूट है अपरम्पार।
रहा जिनालय जिसमें जिनवर, के पद वन्दन बारम्बार।।25।।

ॐ ह्रीं श्रीमन्दरमेरूसम्बन्धिपश्चिमविदेहस्थवप्रादेशस्थितविजयार्धपर्वत -सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश ''सुवप्रा'' आर्य खण्ड में, ईति भीति से रहित महान।
रजताचल है मध्य देश में, हरा भरा शुभ आभावान।।
सीतोदा के तटे कूट पें, सिद्ध कूट है अपरम्पार।
रहा जिनालय जिसमें जिनवर, के पद वन्दन बारम्बार।।26।।

ॐ ह्रीं श्रीमन्दरमेरूसम्बन्धिपश्चिमविदेहस्थसुवप्रादेशस्थितविजयार्धपर्वत -सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश ''महावप्रा'' सुखदायी, स्वर्ग मोक्ष का है साधन।
रजतगिरी है मध्य में जिसके, सुर सुरेन्द्र भी करें गमन।।
सीतोदा के तटे कूट पें, सिद्ध कूट है अपरम्पार।
रहा जिनालय जिसमें जिनवर, के पद वन्दन बारम्बार।।27।।

ॐ ह्रीं श्रीमन्दरमेरूसम्बन्धिपश्चिमविदेहस्थमहाव्रप्रादेशस्थितविजयार्धपर्वत -सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्करार्ध पूरब में भाई, मन्दर मेरू रहा महान।
देश ''वप्रकावती'' सुहावन, रजत गिरी है जहाँ प्रधान।।
सीतोदा के तटे कूट पें, सिद्ध कूट है अपरम्पार।
रहा जिनालय जिसमें जिनवर, के पद वन्दन बारम्बार।।28।।

ॐ ह्रीं श्रीमन्दरमेरूसम्बन्धिपश्चिमविदेहस्थवप्रकावतीदेशस्थितविजयार्धपर्वत -सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

''गंधा'' देश पूर्व पुष्कर के, है विदेह में अपरम्पार।
है विजयार्ध मध्य में जिसके, महिमा का जिसकी ना पार।।
सीतोदा के तटे कूट पें, सिद्ध कूट है अपरम्पार।
रहा जिनालय जिसमें जिनवर, के पद वन्दन बारम्बार।।29।।

ॐ ह्रीं श्रीमन्दरमेरूसम्बन्धिपश्चिमविदेहस्थगंधादेशस्थितविजयार्धपर्वत -सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश ''सुगन्धा है शुभकारी, पुष्करार्ध पूरब में खास।
मध्य में रजताचल शोभित है, सुर खचरों का जहाँ प्रवास।।

सीतोदा के तटे कूट पें, सिद्ध कूट है अपरम्पार।
रहा जिनालय जिसमें जिनवर, के पद वन्दन बारम्बार।।30।।

ॐ ह्रीं श्रीमन्दरमेरूसम्बन्धिपश्चिमविदेहस्थसुगंधादेशस्थितविजयार्धपर्वत -सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश ''गंधिला'' में जो जन्में, पूर्व कोटि आयू हो प्राप्त।
रूप्य गिरी है मध्य देश में, संयम धारी बनते आप्त।।
सीतोदा के तटे कूट पें, सिद्ध कूट है अपरम्पार।
रहा जिनालय जिसमें जिनवर, के पद वन्दन बारम्बार।।31।।

ॐ ह्रीं श्रीमन्दरमेरूसम्बन्धिपश्चिमविदेहस्थगंधिलादेशस्थितविजयार्धपर्वत - सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

''गंधमालिनी'' देश के मानव, धनुष पाँच सौ ऊँचे जान।
रजताचल है मध्य देश में, सुर नर करें प्रभू गुणगान।।
सीतोदा के तटे कूट पें, सिद्ध कूट है अपरम्पार।
रहा जिनालय जिसमें जिनवर, के पद वन्दन बारम्बार।।32।।

ॐ ह्रीं श्रीमन्दरमेरूसम्बन्धिपश्चिमविदेहस्थगंधिमालिनीदेशस्थितविजयार्धपर्वत - सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्करार्ध पूरब में मन्दर, मेरू के दक्षिण दिश जान।
भरत क्षेत्र के मध्य रजतगिरी, जिस पर हैं नव कूट महान।
पूर्व दिशा के सिद्ध कूट पर, बने जिनालय अति अभिराम।
जन्म जरादिक दुःख नाश के, हेतू करते विशद प्रणाम।।33।।

ॐ ह्रीं श्रीमन्दरमेरूसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थितविजयार्धपर्वत सिद्धकूटजिनालय स्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन्दर मेरू के उत्तर में, ऐरावत है क्षेत्र प्रधान।
है विजयार्ध रूप्य सम अनुपम, त्रय कटनी युत आभावान।।
जिस पर पूर्व दिशा में शाश्वत, जिनगृह सोहे आभावान।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, करते हम जिन का गुणगान।।34।।

ॐ ह्रीं श्रीमन्दरमेरूसम्बन्धिऐरावतक्षेत्रस्थितविजयार्धपर्वत सिद्धकूटजिनालय स्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्करार्ध पूरब विदेह में, मन्दर मेरू के बत्तीस।
भरतैरावत के मिलकर सब, रजताचल होते चौंतीस।।

इन पर सिद्ध कूट में जिनगृह, होते हैं जिनबिम्ब महान।
जिनगृह में हम ध्वजा चढ़ाकर, अर्घ्य चढ़ा करते गुणगान॥35॥

ॐ ह्रीं श्रीमन्दरमेरोः पूर्वपश्चिमदक्षिणोत्तरसम्बन्धिचतुस्त्रिंशत्विजयार्ध-पर्वत सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

।।शान्तयेशांतिधारा पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्।।

जाप्य–ॐ ह्रीं अर्हं शाश्वत् जिनालयस्थसर्वजिनबिंबेभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा– **धन दौलत की चाह ना, चाहें तव आशीष।**
जयमाला गाते यहाँ, चरण झुकाकर शीश॥

(शम्भू छंद)

द्वीप पूर्व पुष्करार्ध खण्ड के, मध्य में मन्दर गिरी गाया।
गिरी के पूरब अपर दिशा में, श्रेष्ठ विदेह सु बतलाया॥
बत्तिस क्षेत्र कहे हैं जिसमें, शाश्वत् रचना रही महान।
भरत क्षेत्र दक्षिण में गाया, उत्तर में ऐरावत जान॥
हैं वक्षार सभी क्षेत्रों में, रजतगिरी सब हैं चौंतीस।
जिन पर जिनगृह सिद्ध कूट में, जिनपद सभी झुकाते शीश॥
पूर्व विदेह में मन्दर गिरी से, सीता नदि बहती मनहार।
आठ क्षेत्र नदि के उत्तर में, भद्रबाहु जिन मंगलकार॥
आठ क्षेत्र दक्षिण में नदि के, जहाँ भुजंगम हैं जिन देव।
अपर विदेह गिरी मन्दर के, सीतोदा नदि बहे सदैव॥
आठ क्षेत्र नदि के दक्षिण में, ईश्वर जिन का जहाँ निवास।
क्षेत्र आठ उत्तर में नदि के, नेमिप्रभ जहँ करते वास॥
पुष्करार्ध वर पूर्व दिशा में, करें जिनेश्वर चार विहार।
बत्तिस कहे विदेह श्रेष्ठतम, छह खण्डों युत अपरम्पार॥
आर्य खण्ड है मध्य सभी में, आर्य जनों का शुभस्थान।
तीर्थंकर का जन्म जहाँ हो, पावन भूमी रही महान।
शाश्वत् तीर्थों में तीर्थंकर, विहरमान होते भगवान।
भविजन को सुख देने वाले, होते भव संकटहारी॥

सुनकर भक्त शरण में आये, कृपा करो हे त्रिपुरारी।
अर्ज सुनो हे नाथ! हमारी, हमने क्या-क्या कष्ट सहे।
भ्रमण किया है तीन लोक में, काल अनन्त निगोद रहे॥
मुश्किल से मम हुआ निकासा, भू जल अग्नी वायु बने।
वनस्पति में श्वाँग धरे कई, सहन किए हैं कष्ट घने॥
त्रस पर्याय रही अति दुर्लभ, जैसे तैसे वह पाई।
दो इन्द्रिय में संखादी लट, तन पाया बहु दुखदायी॥
चींटी खटमल आदिक तन पा, त्रि इन्द्रिय में भटकाए।
मक्खी मच्छर भ्रमरादिक में, चार इन्द्रिय का तन पाए॥
पंचेन्द्रिय में क्रूर पशु हो, दीन हीन को खाया है।
दीन हीन जब बने क्रूर ने, अपना ग्रास बनाया है॥
मरण किया संक्लेश भाव से, नरकों में जा जन्म लिया।
छेदन भेदन मारण तापन, का भारी दुख वहन किया॥
मनुज गती जब मिली भाग्य से, जग से राग लगाया है।
इष्ट वियोग अनिष्ट योग अरु, कष्ट रोग का पाया है॥
कभी हुए निर्धन दुखियारे, कभी नीच कुल उपजाए।
कभी स्वजन परिजन के द्वारा, भारी दुख सहते आए॥
देव गती में भवनत्रिक की, योनी में कई बार गये।
ऊँचे देवों ने आज्ञा दे, श्वाँग धराए नये नये॥
देवगती में समकित बिन कई, बार जन्म हमने पाए।
आप जानते हो स्वामी सब, गिनने में सब ना आए॥
इस प्रकार भव-भव में हमने, दुख ही दुःख उठाए हैं।
कृपा प्राप्त करने हे जिनवर, द्वार आपके आए हैं॥
जब तक मुक्ती ना पा जाएँ, सम्यक् निधि मम पास रहे।
जिन श्रुत गुरु भक्ती में मेरा, नाथ पूर्ण विश्वास रहे॥

दोहा– **चौंतिस गृह वक्षार के, सोहें रजत समान।**
जिनगृह मे जिनबिम्ब का, 'विशद' करें गुणगान॥

ॐ ह्रीं श्रीमन्दरमेरूसंबंधिचतुस्त्रिंशत्विजयार्धपर्वतस्थितसिद्धकूटजिनालयस्थ-जिनबिंबेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

।।शांतये शांतिधारा।। पुष्पांजलिः।।

इन्द्रध्वज की पूजा करने, का अवसर शुभ आया है।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा करने, का सौभाग्य जगाया है।।
'विशद' सौख्य शांति पाते वह, जो प्रभु के गुण गाते हैं।
उच्चादर्श प्राप्त करते जो, शिखर पे ध्वजा चढ़ाते हैं।।

इत्याशीर्वादः

मंदरमेरू संबंधी षट् कुलाचल जिनालय पूजा–25

स्थापना

मंदर गिरी के उत्तर दक्षिण, हिमवनादि नग रहे महान।
कुल पर्वत कहलाए हैं ये, जिन पर जिनगृह रहे प्रधान।।
सुर नर असुर खगाधिप सारे, करते भाव सहित अर्चन।
यहाँ भाव से उन श्री जिन का, करते हम भी आह्वान।।

ॐ ह्रीं श्रीमन्दरमेरूसम्बंधिषट्कुलाचस्थितसिद्धकूटजिनालयस्थसर्वजिनबिंब समूह! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। ॐ ह्रीं...अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं...अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधीकरणं।

(चौबोला छंद)

ज्ञान नीर का श्रुत सागर में, अनुपम गुण भण्डार भरा।
प्रासुक नीर चढ़ाते चरणों, नश जाए मम जन्म जरा।।
रहे कुलाचल पर जिन मंदिर, जिनमें हैं जिनबिम्ब महान।
अर्घ्य चढ़ाते भक्ति भाव से, उनको पाने पद निर्वाण।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीमन्दरमेरूसंबंधिदक्षिणोत्तरदिक्षट्कुलाचलस्थितसिद्धकूट जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः जलं निर्व.स्वाहा।

दिव्य ध्वनि खिरने से लगता, मानो चन्दन बरस रहा।
श्रद्धा ज्ञान जगाते प्राणी, मेरा भी मन तरस रहा।।
रहे कुलाचल पर जिन मंदिर, जिनमें हैं जिनबिम्ब महान।
अर्घ्य चढ़ाते भक्ति भाव से, उनको पाने पद निर्वाण।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीमन्दरमेरूसंबंधिदक्षिणोत्तरदिक्षट्कुलाचलस्थितसिद्धकूट जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः चंदनं निर्व.स्वाहा।

क्षत को अक्षत माना हमने, भव भव दुःख उठाए हैं।
निज का ध्यान लगाया जिनने, वे अक्षय पद पाए हैं।।
रहे कुलाचल पर जिन मंदिर, जिनमें हैं जिनबिम्ब महान।
अर्घ्य चढ़ाते भक्ति भाव से, उनको पाने पद निर्वाण।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीमन्दरमेरूसंबंधिदक्षिणोत्तरदिक्षट्कुलाचलस्थितसिद्धकूट जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अक्षतं निर्व.स्वाहा।

विषय भोग के दावानल ने, हरदम हमें जलाया है।
शीलेश्वर की शरण प्राप्त हो, मन में यही समाया है।।
रहे कुलाचल पर जिन मंदिर, जिनमें हैं जिनबिम्ब महान।
अर्घ्य चढ़ाते भक्ति भाव से, उनको पाने पद निर्वाण।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीमन्दरमेरूसंबंधिदक्षिणोत्तरदिक्षट्कुलाचलस्थितसिद्धकूट जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः पुष्पं निर्व.स्वाहा।

रोगों का गृह है यह जड़ तन, भव-भव में उपचार किए।
परम वैद्य हो आप हमारे, खड़े यहाँ नैवेद्य लिए।।
रहे कुलाचल पर जिन मंदिर, जिनमें हैं जिनबिम्ब महान।
अर्घ्य चढ़ाते भक्ति भाव से, उनको पाने पद निर्वाण।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीमन्दरमेरूसंबंधिदक्षिणोत्तरदिक्षट्कुलाचलस्थितसिद्धकूट जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः नैवेद्यं निर्व.स्वाहा।

सप्त तत्त्व की श्रद्धा के उर, आज सुहाने दीप जले।
आत्म ज्ञान रोशन हो जाए, आए तव पद छाँव तले।।
रहे कुलाचल पर जिन मंदिर, जिनमें हैं जिनबिम्ब महान।
अर्घ्य चढ़ाते भक्ति भाव से, उनको पाने पद निर्वाण।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीमन्दरमेरूसंबंधिदक्षिणोत्तरदिक्षट्कुलाचलस्थितसिद्धकूट जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः दीपं निर्व.स्वाहा।

अष्ट कर्म मेरे विकार हैं, आज समझ में आया है।
कर्म नाश के हेतु आपका, निर्विकार मन भाया है।।
रहे कुलाचल पर जिन मंदिर, जिनमें हैं जिनबिम्ब महान।
अर्घ्य चढ़ाते भक्ति भाव से, उनको पाने पद निर्वाण।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीमन्दरमेरूसंबंधिदक्षिणोत्तरदिक्षट्कुलाचलस्थितसिद्धकूट जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः धूपं निर्व.स्वाहा।

नाथ आपने शिव फल पाया, जिनवाणी से जाना है।
मन में भाव जगे हैं मेरे, हमको वह फल पाना हैं॥
रहे कुलाचल पर जिन मंदिर, जिनमें हैं जिनबिम्ब महान।
अर्घ्य चढ़ाते भक्ति भाव से, उनको पाने पद निर्वाण॥8॥

ॐ ह्रीं श्रीमन्दरमेरूसंबंधिदक्षिणोत्तरदिक्षट्कुलाचलस्थितसिद्धकूट जिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: फलं निर्व.स्वाहा।

भोगों की अभिलाषा में प्रभू, अर्घ्य चढ़ाते आए हैं।
पद अनर्घ्य पाने हे स्वामी, हमने भाव बनाए हैं॥
रहे कुलाचल पर जिन मंदिर, जिनमें हैं जिनबिम्ब महान।
अर्घ्य चढ़ाते भक्ति भाव से, उनको पाने पद निर्वाण॥9॥

ॐ ह्रीं श्रीमन्दरमेरूसंबंधिदक्षिणोत्तरदिक्षट्कुलाचलस्थितसिद्धकूट जिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा–**क्षीरोदधि सम श्वेत, नीर कलश में लाए हैं।**
शांतीधारा हेत, आए हैं जिन पाद में॥
शान्तये शांतिधारा॥

सुमन लिए शुभकार, पुष्पांजलि करते यहाँ।
वन्दन बारम्बार, जिन चरणों में कर रहे॥
॥दिव्य पुष्पांजलि क्षिपेत॥

अर्घ्यावली

सोरठा–**षट् कुलगृह जिनधाम, पुष्करार्ध पूरब दिशा।**
बारम्बार प्रणाम, करके पुष्पांजलि करें॥
(मण्डस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

(नरेन्द्र छंद)

पूरब पुष्कर द्वीप के दक्षिण, में 'हिमवन' गिरी जानो।
ग्यारह कूट सहित पर्वत पर, पद्म सरोवर मानो॥
जिसके मध्य कमल पर गृह में, श्री देवी मनहारी।
सिद्ध कूट में पूज रहे हम, जिनगृह मंगलकारी॥1॥

ॐ ह्रीं श्रीमन्दरमेरूसंबंधिहिमवन्पर्वत स्थितसिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कुल पर्वत 'महाहिमवन' भाई, रजतमयी शुभ गाया।
महा पद्म के बीच कमल पर, सुन्दर महल बताया॥
शाश्वत् अनुपम गिरी पर देवी, ह्री रहती मनहारी।
सिद्ध कूट में पूज रहे हम, जिनगृह मंगलकारी॥2॥

ॐ ह्रीं श्रीमन्दरमेरूसंबंधिमहाहिमवन्पर्वत स्थितसिद्धकूटजिनालयस्थ जिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'निषधगिरी' है तप्त स्वर्ण सम, शुभ नव कूटों वाला।
बीच सरोवर में तिगिञ्छ के, दीखे कमल निराला॥
महल बना है जिसमें रहती, धृति देवी मनहारी।
सिद्ध कूट में पूज रहे हम, जिनगृह मंगलकारी॥3॥

ॐ ह्रीं श्रीमन्दरमेरूसंबंधिनिषधपर्वत स्थितसिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'नीलाचल' वैडूर्य मणी सम, नव कूटों से सोहे।
बीच केशरी ह्रद में सुन्दर, कमल सु मन को मोहे॥
महल बना है जिसमें रहती, कीर्ति देवि मनहारी।
सिद्ध कूट में पूज रहे हम, जिनगृह मंगलकारी॥4॥

ॐ ह्रीं श्रीमन्दरमेरूसंबंधिनीलपर्वत स्थितसिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'रुक्मी' पर्वत रजत वर्ण का, पुण्डरीक ह्रद वाला।
जिसके मध्य कमल है अनुपम, जिस पर महल निराला॥
बुद्धी देवी जिसमें रहती, साथ स्वजन मनहारी।
सिद्ध कूट में पूज रहे हम, जिनगृह मंगलकारी॥5॥

ॐ ह्रीं श्रीमन्दरमेरूसंबंधिरुक्मीपर्वत स्थितसिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

''शिखरी'' पर्वत स्वर्ण कांति सम, ग्यारह कूटों वाला।
महापुण्डरीक ह्रद जिस पर है, जिसमें महल निराला॥
जिसके मध्य लक्ष्मी देवी, रहती है शुभकारी।
सिद्ध कूट में पूज रहे हम, जिनगृह मंगलकारी॥6॥

ॐ ह्रीं श्रीमन्दरमेरूसंबंधिशिखरिपर्वत स्थितसिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन्दर मेरू के उत्तर दक्षिण, कुल पर्वत छह गाये।
जिनके ऊपर सिद्ध कूट में, जिनगृह शुभ बतलाए।।
मणिमय जिनबिम्बों के दर्शन, सुर योगीश्वर पाते।
अर्घ्य चढ़ाकर पूज रहे हम, सादर शीश झुकाते।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीमन्दरमेरूसंबंधिषट्कुलाचलस्थितसिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

।।शान्तयेशांतिधारा पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्।।

जाप्य–ॐ ह्रीं अर्हं शाश्वत् जिनालयस्थसर्वजिनबिंबेभ्यो नम:।

जयमाला

दोहा– **स्वयं सिद्ध जिनगृह बने, स्वयं सिद्ध भगवान।**
जयमाला गाते यहाँ, करते हम गुणगान।।

(पद्धड़ी छंद)

जय पुष्करार्ध पूरब महान, जिसमें विदेह की अलग शान।
है मध्य मेरू मन्दर प्रधान, दक्षिण में हिमवन गिरी मान।।
जिस पर पूरब की दिशा ओर, शुभ सिद्ध कूट करता विभोर।
जिसमें श्री जिन का बना धाम, जिनबिम्बों को शत् शत् प्रणाम।।
नग बीच पद्म सरवर विशाल, जिस मध्य कमल शाश्वत् त्रिकाल।
श्री देवी का जिस पर निवास, कई अन्य कमल भी रहे पास।।
सामानिक परिषद के सुदेव, जिन पर रहते हैं जो सदैव।
इक लाख और चालिस हजार, एक सौ पन्द्रह शुभ कमल सार।।
सब पृथ्वी कायिक हैं प्रधान, उन सबमें जिन मंदिर महान।
त्रय नदियों का जिनसे निकास, आगे दो नदियों का विकाश।।
गिरी तल में गंगादिक महान, कई कुण्ड बने हैं वहाँ जान।
गंगा देवी के महल शीश, जिनजिम्ब रूप में जिनाधीश।।
अभिषेक करे ज्यों नदी धार, जिसकी महिमा का नहीं पार।
इस भांति सभी कुलगिरी मँझार, सारी रचना है इस प्रकार।।
जिनबिम्ब सभी में विराजमान, नासाग्र दृष्टि जिनकी महान।
सिंहासन सोहे कांतिमान, सुर चँवर ढौरते वहाँ आन।।
भामण्डल की शोभा अपार, वहाँ छत्र शीश पे रहे सार।

कई देव बजाते वाद्य आन, जो पुष्प वृष्टि करते प्रधान।।
जय मंगलकारी हैं सुएव, सौभाग्य प्रदायक जो सदैव।
जो पूज्य कहाते हैं त्रिकाल, सुरनर पशु झुकते विनत भाल।।
हम विनती करते बार-बार, अब भव सिन्धू से करो पार।
हम बनें चरण के प्रभू दास, अब शीघ्र करो मम पूर्ण आस।।

(छंद घत्तानंद)

जय आनन्दकारी, जन मनहारी, मंगलकारी जिन स्वामी।
जय शिव कर्त्तारी, जिन अविकारी, ज्ञान पुजारी शिव गामी।।

ॐ ह्रीं श्री मन्दरमेरूसंबंधिषट्कुलाचलस्थितसिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

।।शांतये शांतिधारा।। पुष्पांजलि: क्षिपेत।।

जाप्य–ॐ ह्रीं अर्हं शाश्वत् जिनालयस्थसर्वजिनबिंबेभ्यो नम:।

इन्द्रध्वज की पूजा करने, का अवसर शुभ आया है।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा करने, का सौभाग्य जगाया है।।
'विशद' सौख्य शांति पाते वह, जो प्रभु के गुण गाते हैं।
उच्चादर्श प्राप्त करते जो, शिखर पे ध्वजा चढ़ाते हैं।।

इत्याशीर्वाद:

विद्युन्माली मेरू जिनालय पूजा–26

स्थापना (हरिगीता छंद)

अब द्वीप पुष्कर अर्ध में शुभ, मेरू पंचम जानिए।
पश्चिम दिशा की ओर विद्युन्, मालि शुभ पहिचानिए।।
जिसके चतुर्दिक चार वन में, सोल चैत्यालय कहे।
जिनबिम्ब उनमें रत्नमय, शाश्वत् विशद शामिल रहे।।

दोहा– **श्री जिनवर का आज हम, करते हैं गुणगान।**
भक्ति भाव से निज हृदय, करते हैं आह्वान।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसम्बन्धिषोडशजिनालयस्थजिनबिंबसमूह! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। ॐ ह्रीं...अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनं। ॐ ह्रीं...अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

(ज्ञानोदय छंद)

जन्म मरण से पीड़ित होकर, भव भव में कई दुख पाये।
भेद ज्ञान से प्यास बुझाने, नाथ शरण में हम आए।।
विद्युन्माली गिरी पर शाश्वत, चैत्यालय मंगलकारी।
भक्ति भाव से पूजा करते, उनकी हम जन मनहारी।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसंबंधिषोडशजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: जलं निर्व. स्वाहा।

भवाताप से दग्ध हुए हम, अन्दर में जलते आए।
मिथ्या मार्ग प्राप्त कर भव भव, उस पर ही चलते आए।।
विद्युन्माली गिरी पर शाश्वत, चैत्यालय मंगलकारी।
भक्ति भाव से पूजा करते, उनकी हम जन मनहारी।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसंबंधिषोडशजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: चंदनं निर्व. स्वाहा।

अक्षयपुर के वासी होकर, नश्वर के अभिलाशी हैं।
नाथ आप अक्षय पद धारी, आतम ज्ञान प्रकाशी हैं।।
विद्युन्माली गिरी पर शाश्वत, चैत्यालय मंगलकारी।
भक्ति भाव से पूजा करते, उनकी हम जन मनहारी।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसंबंधिषोडशजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: अक्षतं निर्व. स्वाहा।

भक्ति भाव के पुष्प मनोहर, चरण कमल में अर्पित हैं।
इन्द्रिय मन की मिटे वासना, तव पद आज समर्पित हैं।।
विद्युन्माली गिरी पर शाश्वत, चैत्यालय मंगलकारी।
भक्ति भाव से पूजा करते, उनकी हम जन मनहारी।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसंबंधिषोडशजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: पुष्पं निर्व. स्वाहा।

रसना की लोलुपता में ना, शुद्धी का कुछ ध्यान दिया।
निज आतम का ध्यान किया ना, व्रत संयम ना ग्रहण किया।।

विद्युन्माली गिरी पर शाश्वत, चैत्यालय मंगलकारी।
भक्ति भाव से पूजा करते, उनकी हम जन मनहारी।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसंबंधिषोडशजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

जिन भक्ती के दीप तले निज, भेद ज्ञान की ज्योति जले।
निज पर का हो ज्ञान विशद मम, अन्तर का अब मोह गले।।
विद्युन्माली गिरी पर शाश्वत, चैत्यालय मंगलकारी।
भक्ति भाव से पूजा करते, उनकी हम जन मनहारी।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसंबंधिषोडशजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: दीपं निर्व. स्वाहा।

धूप दशांगी चढ़ा चढ़ाकर, नभ में धूप उड़ाया है।
अज्ञानी हो कर्म किया है, बहु संसार बढ़ाया है।।
विद्युन्माली गिरी पर शाश्वत, चैत्यालय मंगलकारी।
भक्ति भाव से पूजा करते, उनकी हम जन मनहारी।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसंबंधिषोडशजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: धूपं निर्व. स्वाहा।

नाथ आपकी भक्ति तरु में, शाश्वत् शिव फल फलते हैं।
महा मोक्ष वह फल पाते जो, राह आपकी चलते हैं।।
विद्युन्माली गिरी पर शाश्वत, चैत्यालय मंगलकारी।
भक्ति भाव से पूजा करते, उनकी हम जन मनहारी।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसंबंधिषोडशजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: फलं निर्व. स्वाहा।

आठ सिद्ध के गुण पाने यह, अष्ट द्रव्य कर में लाये।
हो प्राप्त हमें ध्रुव धाम विशद, अन्तर में भाव यही भाये।।
विद्युन्माली गिरी पर शाश्वत, चैत्यालय मंगलकारी।
भक्ति भाव से पूजा करते, उनकी हम जन मनहारी।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसंबंधिषोडशजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **श्री जिनेन्द्र का लोक में, है भारी उपकार।**
शांती धारा दे रहे, पाने भव से पार॥
शान्तये शांतिधारा॥

दोहा– **अल्प बुद्धि से हम करें, जिनवर का गुणगान।**
पुष्पांजलि करते यहाँ, पाने शिव सोपान॥
दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्॥

अर्घ्यावली

दोहा– **जिन भक्ती से मोह का, होता पूर्ण विनाश।**
रत्नत्रय का जीव के, होता शीघ्र प्रकाश॥
(मण्डलयोपरि पुष्पांजलि क्षिपेत्)

(छन्द-मोतियादाम)

पुष्करार्द्ध पश्चिम शुभ गाया, विद्युन्माली मेरू बताया।
भद्रशाल वन पूरब जानो, जिसमें मन्दिर अनुपम मानो॥1॥
ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीप विद्युन्मालीमेरूसंबंधित भद्रशालवन पूर्वदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्करार्द्ध पश्चिम शुभ गाया, विद्युन्माली मेरू बताया।
भद्रशाल दक्षिण वन भाई, जिसमें मन्दिर है सुखदाई॥2॥
ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीप विद्युन्मालीमेरूसंबंधित भद्रशालवन दक्षिणदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्करार्द्ध पश्चिम शुभ गाया, विद्युन्माली मेरू बताया।
भद्रशाल पश्चिम वन भाई, जिसमें मन्दिर है सुखदाई॥3॥
ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीप विद्युन्मालीमेरूसंबंधित भद्रशालवन पश्चिमदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्करार्द्ध पश्चिम शुभ गाया, विद्युन्माली मेरू बताया।
भद्रशाल उत्तर वन भाई, जिसमें मन्दिर है सुखदाई॥4॥
ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीप विद्युन्मालीमेरूसंबंधित भद्रशालवन उत्तरदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सृग्विणी छन्द)

पश्चिम पुष्करार्द्ध पावन इक दीप है,
विद्युन्माली मेरू वृक्ष समीप है।
नन्दन वन के पूरब में शुभ जानिए,
रत्नमयी मन्दिर शुभ अनुपम मानिए॥5॥
ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीप विद्युन्मालीमेरूसंबंधित नन्दनवन पूर्वदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पश्चिम पुष्करार्द्ध पावन इक दीप है,
विद्युन्माली मेरू वृक्ष समीप है।
नन्दन वन के दक्षिण में शुभ जानिए,
रत्नमयी मन्दिर शुभ अनुपम मानिए॥6॥
ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीप विद्युन्मालीमेरूसंबंधित नन्दनवन दक्षिणदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पश्चिम पुष्करार्द्ध पावन इक दीप है,
विद्युन्माली मेरू वृक्ष समीप है।
नन्दन वन के पश्चिम में शुभ जानिए,
रत्नमयी मन्दिर शुभ अनुपम मानिए॥7॥
ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीप विद्युन्मालीमेरूसंबंधित नन्दनवन पश्चिमदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पश्चिम पुष्करार्द्ध पावन इक दीप है,
विद्युन्माली मेरू वृक्ष समीप है।
नन्दन वन के उत्तर में शुभ जानिए,
रत्नमयी मन्दिर शुभ अनुपम मानिए॥8॥
ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीप विद्युन्मालीमेरूसंबंधित नन्दनवन उत्तरदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(श्रीछन्द)

पश्चिम पुष्करार्द्ध में जानो, विद्युन्माली मेरू मानो।
पूर्व सुमनस वन में भाई, चैत्यालय सोहे सुखदाई॥9॥
ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीप विद्युन्मालीमेरूसंबंधित सौमनसवन पूर्वदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पश्चिम पुष्करार्द्ध में जानो, विद्युन्माली मेरू मानो।
दक्षिण सुमनस वन में भाई, चैत्यालय सोहे सुखदाई॥10॥

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीप विद्युन्मालीमेरूसंबंधित सौमनसवन दक्षिणदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पश्चिम पुष्करार्द्ध में जानो, विद्युन्माली मेरू मानो।
पश्चिम सुमनस वन में भाई, चैत्यालय सोहे सुखदाई॥11॥

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीप विद्युन्मालीमेरूसंबंधित सौमनसवन पश्चिमदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पश्चिम पुष्करार्द्ध में जानो, विद्युन्माली मेरू मानो।
उत्तर सुमनस वन में भाई, चैत्यालय सोहे सुखदाई॥12॥

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीप विद्युन्मालीमेरूसंबंधित सौमनसवन उत्तरदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छन्द)

पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशा का, सर्व जग में ज्ञात है।
मेरू जिसमें श्रेष्ठ सुन्दर, विद्युन्माली ख्यात है॥
पूर्व पाण्डुक दिशागत वन, में चैत्यालय जानिए।
रत्नमय अनुपम अलौकिक, पूज्य जग में मानिए॥13॥

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीप विद्युन्मालीमेरूसंबंधित पाण्डुकवन पूर्वदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशा का, सर्व जग में ज्ञात है।
मेरू जिसमें श्रेष्ठ सुन्दर, विद्युन्माली ख्यात है॥
दक्षिण पाण्डुक दिशागत वन, में चैत्यालय जानिए।
रत्नमय अनुपम अलौकिक, पूज्य जग में मानिए॥14॥

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीप विद्युन्मालीमेरूसंबंधित पाण्डुकवन दक्षिणदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशा का, सर्व जग में ज्ञात है।
मेरू जिसमें श्रेष्ठ सुन्दर, विद्युन्माली ख्यात है॥

पश्चिम पाण्डुक दिशागत वन, में चैत्यालय जानिए।
रत्नमय अनुपम अलौकिक, पूज्य जग में मानिए॥15॥

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीप विद्युन्मालीमेरूसंबंधित पाण्डुकवन पश्चिमदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशा का, सर्व जग में ज्ञात है।
मेरू जिसमें श्रेष्ठ सुन्दर, विद्युन्माली ख्यात है॥
उत्तर पाण्डुक दिशागत वन, में चैत्यालय जानिए।
रत्नमय अनुपम अलौकिक, पूज्य जग में मानिए॥16॥

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीप विद्युन्मालीमेरूसंबंधित पाण्डुकवन उत्तरदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

विद्युन्माली मेरू जानो, जिसमें जिनगृह सोलह मानो।
पावन हैं जिनमें प्रतिमाएं, जिन पद में हम अर्घ्य चढ़ाएं॥

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसम्बन्धिचतुर्गजदन्त स्थितसिद्धकूटजिनालयस्थ जिनबिंबेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

॥शान्तयेशांतिधारा पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्॥

जाप्य–ॐ ह्रीं अर्हं शाश्वत् जिनालयस्थसर्वजिनबिंबेभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा– **विद्युन्माली मेरू के, चतुर्दिशा वन चार।**
सोडष जिनगृह पूजते, जयमाला उर धार॥

(रोला छंद)

पुष्करार्ध शुभ दीप, पश्चिम दिश में जानो।
विद्युन्माली मेरू मध्य, अनुपम पहिचानो॥
सहस्र चौरासी तुंग, योजन ऊँचा गाया।
रत्नमयी शुभकारी, स्वर्णिम आभा पाया॥
भद्रशाल वन रम्य, भूमी पर मनहारी।
चतुर्दिशा जिन गेह, गाए मंगलकारी॥
पाँच सौ योजन जाय, नन्दन वन आ जाए।

चारों दिश में चार, जिन मंदिर कहलाए।।
साड़े पचपन और सहस, योजन पे भाई।
सौमनस्य वन श्रेष्ठ, आता है सुखदायी।।
चतुर्दिशा में चार, मंदिर इसमें गाए।
सुर नर चक्री इन्द्र, से भी पूज्य बताए।।
योजन सहस अट्ठाइस, इसके आगे जानो।
पाण्डुक वन में चार, जिन मंदिर पहिचानो।।
विदिशाओं में चार, बनी हैं पाण्डु शिलाएँ।
इन्द्र न्हवन को बाल, तीर्थंकर को लाएँ।।
भरतैरावत क्षेत्र, दक्षिण उत्तर गाये।
पूरब अपर विदेह, बत्तिस क्षेत्र कहाए।।
तीर्थ चलाने वाले, जिन तीर्थंकर भाई।
जन्माभिषेक की भूमि, है अनुपम सुखदायी।।
पाण्डुशिलाओं का वन्दन, करते हैं प्राणी।
वह भी पाते वहाँ, न्वहन कहती जिनवाणी।।
प्रति जिनालय में शाश्वत् जिनबिम्ब बताए।
रत्नमयी जो एक सौ, आठ की संख्या पाए।।
धनुष पाँच सौ तुंग, रहे पदमासन भाई।
रत्नमयी सिंहासन, पे तिष्ठें सुखदायी।।
वीतराग छवि सौम्य, रही जिनकी मनहारी।
नाशा दृष्टी ध्यान, मग्न है मंगलकारी।।
शीश पे मणिमय छत्र, श्वेत शोभा को पावें।
चौंसठ चँवर भक्ती से आके यक्ष ढुरावें।।
देव अप्सराए जिन चरणों में भक्ति जगावें।
प्रमुदित होके भक्ति भाव से नाचे गावें।।
भव सिन्धू से पार हेतु प्रभू सेतु कहाए।
अतः नाथ! तव चरणों, हम भी शीश झुकाए।।
नाथ आपके आगे, फीकी सब उपमाएँ।
वे होते भव पार, हृदय श्रद्धान जगाएँ।।

अन्धकार के हेतु नाथ, हो सूरज स्वामी।
तीन लोक के ज्ञाता, हो हे अन्तर्यामी।।
हे त्रैलोकी नाथ, शरण में हम भी आए।।
कृपा करो हे देव! चरण तव शीश झुकाएँ।

(छंद घत्तानंद)

हे जिन अविकारी, करुणाकारी, शिव भर्त्तारी, जगत विभो!
हे शिव पथ गामी, अन्तर्यामी, शिव अनुगामी, आप प्रभो!

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसंबंधिषोडशजिनालयस्थसर्वजिनबिंबेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

।।शान्तयेशांतिधारा पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्।।

इन्द्रध्वज की पूजा करने, का अवसर शुभ आया है।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा करने, का सौभाग्य जगाया है।।
'विशद' सौख्य शांति पाते वह, जो प्रभु के गुण गाते हैं।
उच्चादर्श प्राप्त करते जो, शिखर पे ध्वजा चढ़ाते हैं।।

इत्याशीर्वादः

विद्युन्माली संबंधी चार गजदन्त जिनालय पूजा–27

स्थापना

पश्चिम के पुष्करार्ध में मेरू, विद्युन्माली रहा महान।
विदिशाओं में जिसके अनुपम, फैले हैं गजदन्त प्रधान।।
जिनके ऊपर जिनमंदिर शुभ, शाश्वत् सोहें अपरम्पार।
आह्वानन् करते हम उर में, वन्दन करके बारम्बार।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसम्बन्धिचतुर्गजदंतसिद्धकूटजिनालयस्थ जिनबिंब-समूह! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। ॐ ह्रीं...अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। ॐ ह्रीं...अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(ज्ञानोदय छंद)

प्रासुक जल अर्पण करके, निज शुद्धी पाने आए हैं।
अशुभ भाव हे नाथ! चरण में, आज मिटाने आए हैं।।

गिरी गजदन्त के ऊपर जिनगृह, में जिनवर अविकारी हैं।
मुक्ती पद अब हमें प्राप्त हो, सविनय ढोक हमारी है॥1॥

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसम्बन्धिचतुर्गजदन्तस्थितसिद्धकूट जिनालयस्थ जिनबिंबेभ्य: जलं निर्व.स्वाहा।

भूत भविष्यत के विकल्प में, अब तक जीते आए हैं।
भवाताप हो नाश प्रभू यह, गंध चढ़ाने लाए हैं॥
गिरी गजदन्त के ऊपर जिनगृह, में जिनवर अविकारी हैं।
मुक्ती पद अब हमें प्राप्त हो, सविनय ढोक हमारी है॥2॥

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसम्बन्धिचतुर्गजदन्तस्थितसिद्धकूट जिनालयस्थ जिनबिंबेभ्य: चंदनं निर्व.स्वाहा।

जगत उपाधी की चाहत में, अक्षय पद से दूर रहे।
मिथ्याभाव बनाकर हमने, कर्मों के घन घात सहे॥
गिरी गजदन्त के ऊपर जिनगृह, में जिनवर अविकारी हैं।
मुक्ती पद अब हमें प्राप्त हो, सविनय ढोक हमारी है॥3॥

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसम्बन्धिचतुर्गजदन्तस्थितसिद्धकूट जिनालयस्थ जिनबिंबेभ्य: अक्षतं निर्व.स्वाहा।

इन्द्रिय मन के विषयों की ही, अभिलाषा में भटकाए।
शील शिरोमणि ब्रह्मचर्य है, छोड़ विषय में सुख पाए॥
गिरी गजदन्त के ऊपर जिनगृह, में जिनवर अविकारी हैं।
मुक्ती पद अब हमें प्राप्त हो, सविनय ढोक हमारी है॥4॥

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसम्बन्धिचतुर्गजदन्तस्थितसिद्धकूट जिनालयस्थ जिनबिंबेभ्य: पुष्पं निर्व.स्वाहा।

तन मन की चाहत में हमने, मिष्ठ सरस आहार किया।
क्षुधा रोग ना शांत हुआ मम, विषय भाव को बढ़ा लिया॥
गिरी गजदन्त के ऊपर जिनगृह, में जिनवर अविकारी हैं।
मुक्ती पद अब हमें प्राप्त हो, सविनय ढोक हमारी है॥5॥

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसम्बन्धिचतुर्गजदन्तस्थितसिद्धकूट जिनालयस्थ जिनबिंबेभ्य: नैवेद्यं निर्व.स्वाहा।

झिलमिल लड़ियों के प्रकाश में, बाहर का तम खो जाता।
मिथ्या मोह नाश ना हो तो, अन्तर तम ना मिट पाता॥

गिरी गजदन्त के ऊपर जिनगृह, में जिनवर अविकारी हैं।
मुक्ती पद अब हमें प्राप्त हो, सविनय ढोक हमारी है॥6॥

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसम्बन्धिचतुर्गजदन्तस्थितसिद्धकूट जिनालयस्थ जिनबिंबेभ्य: दीपं निर्व.स्वाहा।

धूप दशांगी जला जलाकर, नभ में धूम्र उड़ाया है।
भेद ज्ञान ना हृदय में जागा, कर्म का बन्ध बढ़ाया है॥
गिरी गजदन्त के ऊपर जिनगृह, में जिनवर अविकारी हैं।
मुक्ती पद अब हमें प्राप्त हो, सविनय ढोक हमारी है॥7॥

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसम्बन्धिचतुर्गजदन्तस्थितसिद्धकूट जिनालयस्थ जिनबिंबेभ्य: धूपं निर्व.स्वाहा।

मेरा-मेरा रटते-रटते, दु:ख अनेकों पाए हैं।
फल पाने की इच्छा में हम, तीन लोक भटकाए हैं॥
गिरी गजदन्त के ऊपर जिनगृह, में जिनवर अविकारी हैं।
मुक्ती पद अब हमें प्राप्त हो, सविनय ढोक हमारी है॥8॥

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसम्बन्धिचतुर्गजदन्तस्थितसिद्धकूट जिनालयस्थ जिनबिंबेभ्य: फलं निर्व.स्वाहा।

पर द्रव्यों के भोग में हमने, जीवन कई गवाएँ हैं।
पर पद की अभिलाषा करके, पद अनर्घ्य ना पाए हैं॥
गिरी गजदन्त के ऊपर जिनगृह, में जिनवर अविकारी हैं।
मुक्ती पद अब हमें प्राप्त हो, सविनय ढोक हमारी है॥9॥

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसम्बन्धिचतुर्गजदन्तस्थितसिद्धकूट जिनालयस्थ जिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा– **जल यह क्षीर समान, धारा देने लाए हैं।**
करते हैं गुणगान, विशद भाव से हे प्रभो!

।।शान्तये शान्तिधारा।।

सुरभित हम यह फूल, पुष्पांजलि को लाए हैं।
शिव पद हो अनुकूल, पूजा करते भाव से॥

दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

(प्रत्येक अर्घ्य)

दोहा– **गजदंतों पर जिन भवन, अकृत्रिम शुभकार।**
अर्घ्य चढ़ा पूजा करें, नत हो बारम्बार॥

(मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

(रोला छंद)

विद्युन्माली मेरू दिश आग्नेय में भाई।
सोमनस्य' गजदंत शोभित है सुखदायी॥
सिद्ध कूट में जिनगृह, गाये हैं मनहारी।
जिनबिम्बों के पद में, नत हो ढोक हमारी॥1॥

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरो: आग्नेयविदिशायांसौमनसगजदन्तस्थितसिद्धकूट -जिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्णाचल नैऋत्य विदिश में है शुभकारी।
'विद्युतप्रभ' गंजदंत, स्वर्णसम अतिशयकारी॥
सिद्ध कूट में जिनगृह, गाये हैं मनहारी।
जिनबिम्बों के पद में, नत हो ढोक हमारी॥2॥

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरो: नैऋत्यविदिशायांविद्युत्प्रभगजदन्तस्थितसिद्धकूट -जिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरगिरी के वायव्य कोंण में जानो भाई।
'गंधमादनाचल' स्वर्णिम सोहे सुखदायी॥
सिद्ध कूट में जिनगृह, गाये हैं मनहारी।
जिनबिम्बों के पद में, नत हो ढोक हमारी॥3॥

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरो: वायव्यविदिशायां गंधमादनगजदन्तस्थितसिद्धकूट -जिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरगिरी के ईशान कोंण में मंगलकारी।
'माल्यवान' गजदंत शोभता है शुभकारी॥
सिद्ध कूट में जिनगृह, गाये हैं मनहारी।
जिनबिम्बों के पद में, नत हो ढोक हमारी॥4॥

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरो: ईशानविदिशायां माल्यवद्गजदन्तस्थितसिद्धकूट -जिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचम सुरगिरी की विदिशा में जानो भाई।
गजदंतों पर जिनगृह सोहें, अतिसुखदायी॥
सिद्ध कूट में जिनगृह, गाये हैं मनहारी।
जिनबिम्बों के पद में, नत हो ढोक हमारी॥5॥

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसम्बन्धिचतुर्गजदन्तस्थितसिद्धकूट जिनालयस्थजिन-बिंबेभ्य: पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

॥शान्तयेशांतिधारा पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्॥

जाप्य– ॐ ह्रीं अर्हं शाश्वत् जिनालयस्थसर्वजिनबिंबेभ्यो नम:।

जयमाला

दोहा– **विद्युन्माली मेरू के, विदिशाओं में चार।**
जिनगृह हैं गजदंत पर, पूज्य हैं अपरम्पार॥

(तोटक छंद)

जय पुष्करार्ध शुभ दीप रहा, पश्चिम विदेह के मध्य अहा।
जय शैल सु पंचम मेरू महा, गजदंत विदिश में शैल रहा॥
जय हस्तिदंत सम श्रेष्ठ रहे, निषिधाचल नील स्पर्श रहे।
जय पंच सौ योजन उच्च रहे, मेरू समीप जिनदेव कहे॥
निषिधाचल नील के पास तथा, चउ सौ योजन है उच्च यथा।
शुभ पंच सौ योजन वान कहे, निषधाचल मेरू के पास रहे॥
जो मेरू तले लम्बे गाये, नदि सीता सीतोदा तक पाए।
जिनके ऊपर जिनधाम कहे, शाश्वत् रत्नोमय शोभ रहे॥
जिनमें जिनबिम्ब सुरत्नमयी, जिनके दर्शन हैं कर्मक्षयी।
जो वीतरागता वान अहा, जिनका होता यश गान महा॥
जिन मंगल ज्योती रूप सही, जिनसे ज्योतिर्मय पूर्ण मही।
गुण के रत्नाकर देव अभी, करुणा सागर हैं देव सभी॥
प्रभु जन्म जरादि विनाश करें, सब रोग शोक जिन आप हरें।
तुम गुण अनन्त के पुंज बने, गणधर आदिक भी तुम्हें नमे॥
सब क्षुधा तृषादी दोष हने, तुम कर्म शत्रु से पूज्य बने।
तुम मूर्ति रहित भी मूर्ति कहे, तुम देह रहित भी कांति लहे॥

तव रत्नमयी जिनबिम्ब रहे, नर सुर पशुअन से पूज्य कहे।
तुमको शुभ इन्द्र चँवर ढुरते, सुर तीन सुछत्र सदा फिरते॥
सिंहासन रत्नमयी जिनका, द्युतमण्डल शोभ रहा तिनका।
मुनि ध्यान करें सम भाव धरें, जिन भक्ति करें निज कर्म हरें॥
कई देव सुरी मिल नृत्य करें, नत होकर जिन के पांय परें।
सुर खेचर जिनपद भक्ति भरें, वसु द्रव्य सु ले जिन पूज करें॥

दोहा– **जिनबिम्बों के पद युगल, वन्दन बारम्बार।**
नाथ! विभव पीड़ा हरो, पहुँचाओ शिव द्वार॥

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालिमेरूसंबंधिचतुर्गजदंतसिद्धकूटजिनालयस्थसर्वजिनबिंबेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

।।शान्तयेशांतिधारा पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्।।

इन्द्रध्वज की पूजा करने, का अवसर शुभ आया है।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा करने, का सौभाग्य जगाया है॥
'विशद' सौख्य शांति पाते वह, जो प्रभु के गुण गाते हैं।
उच्चादर्श प्राप्त करते जो, शिखर पे ध्वजा चढ़ाते हैं॥

इत्याशीर्वादः

विद्युन्मालीमेरु पुष्कर शाल्मलि वृक्ष जिनालय–28

स्थापना

पश्चिम पुष्कर अर्ध दीप में, भव्य मेरू पंचम सोहे।
जिसके उत्तर दक्षिण दिश में, भोग भूमि मन को मोहे॥
उत्तर कुरु ईशान कोंण में, पुष्कर वृक्ष है मंगलकार।
देव कुरू आग्नेय दिशा में, शाल्मलि तरु है शुभकार॥
दोनों वृक्षों की शाखाओं, पर भू कायिक हैं जिनधाम।
जिनबिम्बों का आह्वानन कर, करते भक्ती सहित प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरोः ईशाननैऋत्यकोणसम्बन्धिपुष्करशाल्मलिवृक्षस्थित -जिनालयस्थजिनबिंबसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। ॐ ह्रीं श्री...अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं श्री...अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम्।

(चौबोला छंद)

पर्यायें बनती मिटती हैं, द्रव्य का ना हो कभी विनाश।
भेद ज्ञान बिन जीव भ्रमण कर, करता है इस जग में वास॥
पृथ्वी कायिक तरु शाखा पर, जिनगृह पूज्य बताए हैं।
भक्ति भाव से पूजें जो नर, वे शिव पदवी पाए हैं॥1॥

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसम्बन्धिपुष्करशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयस्थ जिनबिंबेभ्यः जलं निर्व.स्वाहा।

भवाताप के नाश हेतु हम, चन्दन लेकर आन खड़े।
तव पद पूजन से नस जाते, कर्म शत्रु भी बड़े-बड़े॥
पृथ्वी कायिक तरु शाखा पर, जिनगृह पूज्य बताए हैं।
भक्ति भाव से पूजें जो नर, वे शिव पदवी पाए हैं॥2॥

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसम्बन्धिपुष्करशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयस्थ जिनबिंबेभ्यः चंदनं निर्व.स्वाहा।

नाशवान द्रव्यों की आशा, में अखण्ड श्रद्धा खोये।
चर्म चक्षु तो खुले रहे पर, मोहनींद में हम सोये॥
पृथ्वी कायिक तरु शाखा पर, जिनगृह पूज्य बताए हैं।
भक्ति भाव से पूजें जो नर, वे शिव पदवी पाए हैं॥3॥

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसम्बन्धिपुष्करशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयस्थ जिनबिंबेभ्यः अक्षतं निर्व.स्वाहा।

पलभर भोग सुहाने लगते, पर भव-भव में दुख देते।
धन्य महाव्रत धारी हैं जो, विजय काम पर कर लेते॥
पृथ्वी कायिक तरु शाखा पर, जिनगृह पूज्य बताए हैं।
भक्ति भाव से पूजें जो नर, वे शिव पदवी पाए हैं॥4॥

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसम्बन्धिपुष्करशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयस्थ जिनबिंबेभ्यः पुष्पं निर्व.स्वाहा।

क्षुधा रोग से व्याकुल होकर, भोज अनन्तों बार किए।
भूख मिटी ना भोजन करके, बार बार अवतार लिए॥
पृथ्वी कायिक तरु शाखा पर, जिनगृह पूज्य बताए हैं।
भक्ति भाव से पूजें जो नर, वे शिव पदवी पाए हैं॥5॥

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसम्बन्धिपुष्करशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयस्थ जिनबिंबेभ्यः नैवेद्यं निर्व.स्वाहा।

रत्नत्रय का दीप जलाकर, आतम ज्ञान प्रकाश करें।
मोह महातम जग में फैला, उसका पूर्ण विनाश करें।।
पृथ्वी कायिक तरु शाखा पर, जिनगृह पूज्य बताए हैं।
भक्ति भाव से पूजें जो नर, वे शिव पदवी पाए हैं।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसम्बन्धिपुष्करशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयस्थ जिनबिंबेभ्यः दीपं निर्व.स्वाहा।

पर द्रव्यों में नेह लगाया, मेरे पाप का उदय रहा।
अष्ट कर्म का नाश हुआ ना, पर को अपना स्वयं कहा।।
पृथ्वी कायिक तरु शाखा पर, जिनगृह पूज्य बताए हैं।
भक्ति भाव से पूजें जो नर, वे शिव पदवी पाए हैं।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसम्बन्धिपुष्करशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयस्थ जिनबिंबेभ्यः धूपं निर्व.स्वाहा।

कर्म फलों का वेदन करके, हम तो अब घबड़ाए हैं।
आज प्रबल पुण्योदय आया, नाथ शरण में आए हैं।।
पृथ्वी कायिक तरु शाखा पर, जिनगृह पूज्य बताए हैं।
भक्ति भाव से पूजें जो नर, वे शिव पदवी पाए हैं।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसम्बन्धिपुष्करशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयस्थ जिनबिंबेभ्यः फलं निर्व.स्वाहा।

पद अनर्घ्य पाने हे भगवन्, अर्घ्य बनाकर लाए हैं।
निज से निज का मिलन कराने, तव चरणों में आए हैं।।
पृथ्वी कायिक तरु शाखा पर, जिनगृह पूज्य बताए हैं।
भक्ति भाव से पूजें जो नर, वे शिव पदवी पाए हैं।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसम्बन्धिपुष्करशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयस्थ जिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **शांती धारा के लिए, लाए प्रासुक नीर।**
शांतीमय ये जग रहे, हम पाएँ भव तीर।।

शांतये शांतिधारा।।

दोहा– **पुष्पांजलि जिनपद करें, सुरभित पुष्प मँगाय।**
पुष्पित मम जीवन बने, सुगुण विशद महकाय।।

।।पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

(अर्घ्यावली)

दोहा– **जिनबिम्बों की वन्दना, करते हम कर जोर।**
पुष्पांजलि करते विशद, शांती हो चहुँ ओर।।

(मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

पश्चिम पुष्कर दीप में, सुरगिरी के ईशान।
पद्म वृक्ष की शाख पर, उत्तर दिशा महान।।
शाश्वत् श्री जिन गेह में, रत्नमयी भगवान।
अर्घ्य चढ़ा हम पूजते, करते हैं गुणगान।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसम्बन्धिपुष्करशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयस्थ जिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्णाचल नैऋत्य में, शाल्मलि तरु जान।
दक्षिण शाखा पर शुभम्, शाश्वत् हैं जिनधाम।।
उसमें भी जिनबिम्ब हैं, अकृत्रिम अविकार।
अर्घ्य चढ़ा पूजा करें, नत हो बारम्बार।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसम्बन्धिपुष्करशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयस्थ जिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन तरु के परिवार में, अगणित आगम सार।
उन सबमें सुर वृन्द नत, होते हैं शुभकार।।
देव गृहों में भी रहे, जिनगृह मंगलकार।
अर्घ्य चढ़ा हम पूजते, जिनवर के चरणार।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसम्बन्धिसपरिवारपुष्करशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयस्थ जिनबिंबेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्व.स्वाहा।

।।शान्तयेशांतिधारा पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्।।

जाप्य–ॐ ह्रीं अर्हं शाश्वत् जिनालयस्थसर्वजिनबिंबेभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा– **वीतराग विज्ञानता, के धारी भगवान।**
जिनबिम्बों के पद युगल, करते जय जय गान।।

चौपाई

पुष्करार्ध पश्चिम में भाई, पंचम मेरू है सुखदायी।
जम्बू तरु ईशाने जानो, शाल्मलि नैऋत्ये मानो।।
उनकी चउ शाखाएँ सोहें, भवि जीवों के मन को मोहें।
एक शाख पे जिनगृह गाये, शेष पे देव भवन बतलाए।।
जिनमें व्यंतर रहते भाई, सम्यक् रत्न सहित सुखदायी।
अगणित तरु परिवार बताए, सबमें जिनगृह सुरगृह गाये।।
अकृत्रिम जिन भवन निराले, रत्नमयी मन हरने वाले।
भांति-भांति तोरण से सजते, घंटे अरुकिंकणियाँ बजते।।
वीणा और मृदंग निराले, पटह आदि भी बजने वाले।
मंगल कलश धूप घट सोहें, देव देवियों के मन मोहें।।
रत्न मोतियों की मालाएँ, शिखरों पर झण्डे फहराएँ।
दश प्रकार के चिन्हों वाली, रही ध्वजाएँ महिमाशाली।।
जिनगृह की रचना मनहारी, देख के लगती प्यारी प्यारी।
मानस्तंभ द्वार पे सोहें, रत्नमयी मंगलमय जो हैं।।
मानी का जो मान गलाएँ, भव्यों में श्रद्धान जगाएँ।
जैन भवन सन्मार्ग प्रदाता, भवि जीवों के मुक्ती दाता।।
जिन मंदिर में जिन प्रतिमाएँ, एक सौ आठ श्री जिन गाएँ।
नाम जपें जो पाप नशाएँ, बाधाएँ सब दूर भगाएँ।।
भूत प्रेत बाधा परिहारी, जिनगृह होते मंगलकारी।
जिन पूजन अनुपम सुखकारी, जिन दर्शन भव तारण हारी।।
भव्य जीव सुख सम्पत्ति पाते, नर जीवन पा मौज उड़ाते।
जिन चरणों जो ध्यान लगाते, इन्द्रादिक पदवी वह पाते।।
होके धर्म चक्र के धारी, अर्हत् होते मंगलकारी।
मुक्ती रमा को जो परणाते, सिद्ध सुपद पा हर्ष मनाते।।
नाथ आपके हम गुण गाते, पद में सादर शीश झुकाते।
कर्म नाश सारे हो जावें, 'विशद' मोक्ष पद हम भी पावें।।

दोहा– **महिमा अगम है आपकी, हे! मेरे भगवान।**
तुम चरणों की भक्ति कर, मिले सुपद निर्वाण।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालिमेरूसंबंधिपुष्करशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

।।शान्तयेशांतिधारा पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्।।

इन्द्रध्वज की पूजा करने, का अवसर शुभ आया है।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा करने, का सौभाग्य जगाया है।।
'विशद' सौख्य शांति पाते वह, जो प्रभु के गुण गाते हैं।
उच्चादर्श प्राप्त करते जो, शिखर पे ध्वजा चढ़ाते हैं।।

इत्याशीर्वादः

विद्युन्माली मेरू संबंधी षोडश वक्षार जिनालय पूजा–29

स्थापना

पंचम मेरू के पूर्वापर में जानिए, सोलह गिरी वक्षार कनकमय मानिए।
जिनगृह सोलह जिन पर मंगलकार हैं, जिनबिम्बों पद वन्दन बारम्बार है।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसम्बन्धिषोडशवक्षारपर्वत स्थितसिद्धकूटजिनालय-स्थजिनबिंबसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। ॐ ह्रीं...अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं...अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

(चौबोला छन्द)

भव सिन्धू से पार उतरना, भारी मुश्किल काम रहा।
रमण करे निर्मल चेतन में, वह शिव पद को पाए अहा।।
हैं वक्षार गिरी पर जिनगृह, उन्हें पूजने आए हैं।
जिनबिम्बों की अर्चा करने, के सौभाग्य जगाए हैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसम्बन्धिषोडशवक्षारपर्वत स्थितसिद्धकूटजिनालय -स्थजिनबिंबेभ्यः जलं निर्व.स्वाहा।

भवाताप की दाह से हम प्रभू, पीड़ित होते आए हैं।
भव संताप मिटे हे जिनवर, शीतल चंदन लाए हैं।।
हैं वक्षार गिरी पर जिनगृह, उन्हें पूजने आए हैं।
जिनबिम्बों की अर्चा करने, के सौभाग्य जगाए हैं।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसम्बन्धिषोडशवक्षारपर्वत स्थितसिद्धकूटजिनालय -स्थजिनबिंबेभ्यः चंदनं निर्व.स्वाहा।

खण्डित इन्द्रिय के सुख पाकर, सुख अखण्ड को भूल गये।
कितने ही नर भव पाए हैं, सारे वह निर्मूल गये।।
हैं वक्षार गिरी पर जिनगृह, उन्हें पूजने आए हैं।
जिनबिम्बों की अर्चा करने, के सौभाग्य जगाए हैं।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसम्बन्धिषोडशवक्षारपर्वत स्थितसिद्धकूटजिनालय -स्थजिनबिंबेभ्यः अक्षतं निर्व.स्वाहा।

पंचेन्द्रियों के विषयों में हम, मूढ़ हुए भव बढ़ा रहे।
आतम ब्रह्म प्रगट करने यह, पुष्प चरण में चढ़ा रहे।।
हैं वक्षार गिरी पर जिनगृह, उन्हें पूजने आए हैं।
जिनबिम्बों की अर्चा करने, के सौभाग्य जगाए हैं।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसम्बन्धिषोडशवक्षारपर्वत स्थितसिद्धकूटजिनालय -स्थजिनबिंबेभ्यः पुष्पं निर्व.स्वाहा।

क्षुधा रोग भयकारी जग में, उससे हम घबड़ाए हैं।
निज स्वभाव में रमण हेतु, नैवेद्य चढ़ाने लाए हैं।।
हैं वक्षार गिरी पर जिनगृह, उन्हें पूजने आए हैं।
जिनबिम्बों की अर्चा करने, के सौभाग्य जगाए हैं।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसम्बन्धिषोडशवक्षारपर्वत स्थितसिद्धकूटजिनालय -स्थजिनबिंबेभ्यः नैवेद्यं निर्व.स्वाहा।

मोह तिमिर से मोहित हो हम, सम्यक् ज्ञान ना पाए हैं।
विशद ज्ञान रवि प्रगटित करने, दीप जलाकर लाए हैं।।
हैं वक्षार गिरी पर जिनगृह, उन्हें पूजने आए हैं।
जिनबिम्बों की अर्चा करने, के सौभाग्य जगाए हैं।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसम्बन्धिषोडशवक्षारपर्वत स्थितसिद्धकूटजिनालय -स्थजिनबिंबेभ्यः दीपं निर्व.स्वाहा।

ध्यान अग्नि से कर्मों को हम, आज नसाने आए हैं।
निज स्वरूप में रमण हेतु यह, धूप जलाने लाए हैं।।
हैं वक्षार गिरी पर जिनगृह, उन्हें पूजने आए हैं।
जिनबिम्बों की अर्चा करने, के सौभाग्य जगाए हैं।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसम्बन्धिषोडशवक्षारपर्वत स्थितसिद्धकूटजिनालय -स्थजिनबिंबेभ्यः धूपं निर्व.स्वाहा।

पुण्य कर्म के फल की इच्छा, हरदम करते आए हैं।
मोक्ष महाफल पाने को फल, आज चढ़ाने लाए हैं।।
हैं वक्षार गिरी पर जिनगृह, उन्हें पूजने आए हैं।
जिनबिम्बों की अर्चा करने, के सौभाग्य जगाए हैं।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसम्बन्धिषोडशवक्षारपर्वत स्थितसिद्धकूटजिनालय -स्थजिनबिंबेभ्यः फलं निर्व.स्वाहा।

कर्मों के जंगल में भटके, आत्म शान्ति ना प्रगटाई।
पद अनर्घ्य पाने की मन में, सुधी आज मन में आई।।
हैं वक्षार गिरी पर जिनगृह, उन्हें पूजने आए हैं।
जिनबिम्बों की अर्चा करने, के सौभाग्य जगाए हैं।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसम्बन्धिषोडशवक्षारपर्वत स्थितसिद्धकूटजिनालय -स्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **अष्ट कर्म को नाशकर, हुए आप निष्काम।**
शांतीधारा दे रहे, करके चरण प्रणाम।।

शान्तये शांतिधारा।।

तीन लोक में श्रेष्ठ हो, भवि जीवों के नाथ।
पुष्पांजलि करते यहाँ, चरण झुकाकर माथ।।

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

अर्घ्यावली

दोहा– **सुगुण विभूषित आप हो, हे जिनेन्द्र गुण धाम।**
स्वर्णाचल पर शोभते, तव पद विशद प्रणाम।।

(मण्डलस्योपरि परिपुष्पांजलिं क्षिपेत्)

(चौबोला छंद)

पुष्करार्ध में पंचम मेरू, सीता नदी अपरदिश जान।
भद्रशाल वेदी के तट पर, चित्रकूट' वक्षार महान।
चार कूट में सिद्धकूट जो, बना है सरिता तट की ओर।
उसमें जिनबिम्बों को करते, वन्दन हम भी द्वय कर जोर।। 1।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसम्बन्धिपूर्वविदेहस्थचित्रकूटवक्षारपर्वत सिद्धकूट -जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पद्मकूट' वक्षार दूसरा, पुष्करार्ध पश्चिम में जान।
शाश्वत् रत्नमयी है सुन्दर, जिसकी रही निराली शान॥
चार कूट में सिद्ध कूट जो, बना है सरिता तट की ओर।
उसमें जिनबिम्बों को करते, वन्दन हम भी द्वय कर जोर॥2॥

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसम्बन्धिपूर्वविदेहस्थपद्मकूटवक्षारपर्वत सिद्धकूट -जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'नलिन कूट' वक्षार अतुल है, पाप पंक धोने वाला।
चार कूट हैं जिसके ऊपर, सिद्ध कूट जिनगृह वाला॥
जिन चैत्यालय में प्रतिमाएँ, पूज्य रही हैं मंगलकार।
उनके चरणों वन्दन करते, विशद भाव से बारम्बार॥3॥

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसम्बन्धिपूर्वविदेहस्थनलिनकूटवक्षारपर्वत सिद्धकूट -जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'एक शैल' वक्षार अनूपम, जिसकी महिमा अपरम्पार।
सब जन का मन मोहित करता, शाश्वत है जो अतिशयकार॥
चार कूट में सिद्ध कूट जो, बना है सरिता तट की ओर।
उसमें जिनबिम्बों को करते, वन्दन हम भी द्वय कर जोर॥4॥

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसम्बन्धिपूर्वविदेहस्थएकशैलवक्षारपर्वत सिद्धकूट -जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सीता नदि के दक्षिण तट पर, देवारण्य के रहा समीप।
है वक्षार 'त्रिकूट' स्वर्णमय, दिखता मानो जलता दीप॥
चार कूट में सिद्ध कूट जो, बना है सरिता तट की ओर।
उसमें जिनबिम्बों को करते, वन्दन हम भी द्वय का जोर॥5॥

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसम्बन्धिपूर्वविदेहस्थचित्रकूटवक्षारपर्वत सिद्धकूट -जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है वक्षार 'वैश्रवण' अनूपम, शोभित है महिमाशाली।
फल पुष्पों से शोभित होती, तरुवर की डाली डाली॥
चार कूट में सिद्ध कूट जो, बना है सरिता तट की ओर।
उसमें जिनबिम्बों को करते, वन्दन हम भी द्वय का जोर॥6॥

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसम्बन्धिपूर्वविदेहस्थवैश्रवणवक्षारपर्वत सिद्धकूट -जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अंजन' नग वक्षार अकृत्रिम, सुर नर मुनि से शोभ रहा।
विद्याधर भी करें वन्दना, जिन चरणों में श्रेष्ठ अहा॥
चार कूट में सिद्ध कूट जो, बना है सरिता तट की ओर।
उसमें जिनबिम्बों को करते, वन्दन हम भी द्वय का जोर॥7॥

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसम्बन्धिपूर्वविदेहस्थअंजनवक्षारपर्वत सिद्धकूट -जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'आत्माञ्जन' वक्षार आठवाँ, भव्यों के मन को मोहे।
भांति-भांति के ध्वजा कंगूरों, युत जिनगृह जिस पे सोहे॥
चार कूट में सिद्ध कूट जो, बना है सरिता तट की ओर।
उसमें जिनबिम्बों को करते, वन्दन हम भी द्वय का जोर॥8॥

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसम्बन्धिपूर्वविदेहस्थआत्मांजनवक्षारपर्वत सिद्धकूट -जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(छंद जोगीरासा)

पञ्चम मेरू के पश्चिम में, अपर विदेह कहाए।
सीता सीतोदा सरिता से, दो विभाग बट जाए॥
नदि के दक्षिण भद्रशाल तट, 'श्रद्धावान' निराला।
सिद्ध कूट में पूज्य जिनालय, अनुपम आभा वाला॥9॥

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसंबंधिपश्चिमविदेहस्थश्रद्धावानवक्षारपर्वतसिद्धकूट-जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विजटावान' अचल है अनुपम, चार कूट युत भाई।
सिद्ध कूट है कनक कांतिमय, भविजन को सुखदायी॥
नदि के दक्षिण सिद्ध कूट में, जिन मंदिर मनहारी।
जिनमें जिनबिम्बों को नत हो, अतिशय ढोक हमारी॥10॥

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसंबंधिपश्चिमविदेहस्थविजटावान्वक्षारपर्वतसिद्धकूट-जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'आशीविष' वक्षार स्वर्णमय, पाप पंक परिहारी।
स्वर्णाभा युत शोभित अनुपम, सोहे मंगलकारी॥

नदि के दक्षिण सिद्ध कूट में, जिन मंदिर मनहारी।
जिनमें जिनबिम्बों को नत हो, अतिशय ढोक हमारी॥11॥

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसंबंधिपश्चिमविदेहस्थआशीविषवक्षारपर्वतसिद्धकूट-जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है वक्षार 'सुखावह' अनुपम, चार कूट युत सोहे।
जिसकी शोभा वर्णन करके, देव वृन्द मन मोहे॥
नदि के दक्षिण सिद्ध कूट में, जिन मंदिर मनहारी।
जिनमें जिनबिम्बों को नत हो, अतिशय ढोक हमारी॥12॥

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसंबंधिपश्चिमविदेहस्थसुखावहवक्षारपर्वतसिद्धकूट-जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सीतोदा के उत्तर तट पे, भूतारण्य किनारे।
'चन्द्रमाल' वक्षार गिरी की, महिमा कह सुर हारे॥
नदि के दक्षिण सिद्ध कूट में, जिन मंदिर मनहारी।
जिनमें जिनबिम्बों को नत हो, अतिशय ढोक हमारी॥13॥

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसंबंधिपश्चिमविदेहस्थचन्द्रमालवक्षारपर्वतसिद्धकूट-जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सूर्यमाल' वक्षार निराला, है जन-जन मनहारी।
सुरनर मुनि मन हरने वाला, अतिशय मंगलकारी॥
नदि के दक्षिण सिद्ध कूट में, जिन मंदिर मनहारी।
जिनमें जिनबिम्बों को नत हो, अतिशय ढोक हमारी॥14॥

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसंबंधिपश्चिमविदेहस्थसूर्यमालवक्षारपर्वतसिद्धकूट-जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'नाग माल' वक्षार की महिमा, कहने में ना आवे।
कितना भी गुणगान करे वह, आखिर में थक जावे॥
नदि के दक्षिण सिद्ध कूट में, जिन मंदिर मनहारी।
जिनमें जिनबिम्बों को नत हो, अतिशय ढोक हमारी॥15॥

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसंबंधिपश्चिमविदेहस्थनागमालवक्षारपर्वतसिद्धकूट-जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'देवमाल' वक्षार गिरी पर, मुनि जन ध्यान लगावें।
सुर विद्याधर भक्ती रत हो, जिनवर के गुण गावें॥
नदि के दक्षिण सिद्ध कूट में, जिन मंदिर मनहारी।
जिनमें जिनबिम्बों को नत हो, अतिशय ढोक हमारी॥16॥

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसंबंधिपश्चिमविदेहस्थदेवमालवक्षारपर्वतसिद्धकूट-जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्युन्माली मेरूगिरी पर, पूरव पश्चिम भाई।
सोलह गिरी वक्षारों पर शुभ, जिनगृह हैं सुखदायी॥
सिद्ध कूट में शाश्वत जिनगृह, अनुपम शोभा पाते।
वीतराग जिनबिम्ब हैं उनमें, उनको शीश झुकाते॥17॥

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसंबंधिषोडशवक्षारपर्वतसिद्धकूटजिनालयस्थ-जिनबिंबेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

।।शान्तयेशांतिधारा पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्।।

जाप्य–ॐ ह्रीं अर्हं शाश्वत् जिनालयस्थसर्वजिनबिंबेभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा– **जिनवर चिच्चिंतामणी, चिच्चेतन गुण धाम।**
जयमाला गाके विशद, करते चरण प्रणाम॥

(रेखता छन्द)

बने हम मानव कितनी बार, हुआ ना मोह नींद का अंत।
रहे हम विषयों में ही लीन, बनाया हर दम मिथ्या पंथ॥
तिमिर अन्तर में छाया घोर, रहे हम निज से ही अन्जान।
स्वयं हम भटके तीनों लोक, नहीं की निजगुण की पहिचान॥
ज्ञान का अनुपम निज में कोष, लीन है जिसमें आतम राम।
सौख्य है जिसमें भरा अनन्त, रहा जो चिन्मय चित् अभिराम॥
रहे हैं पर से ही प्रतिबद्ध, जगी ना निज में निज की गंध।
कषाएँ, राग द्वेष कर योग, किया है कर्मों का ही बंध॥
रहा जो शाश्वत निज भगवान, करी ना उससे अब तक प्रीति।
भ्रमाये पर पदार्थ को देख, रही संसारी जन की रीति॥

फिरे हम नरक निगोदों बीच, पड़ी है कर्मों की जंजीर।
कर्म का आया उदय विपाक, सदा हम होते रहे अधीर॥
निगोदों मध्य अनन्तों बार, जन्म अरु मरण किया हर बार।
कथा है नरकों की विकराल, कष्ट भोगे हैं बारम्बार॥
पशू गति में पाया वध बंध, कठिन है जिसका कथन अशेष।
जानते हैं जो भोगें जीव, या जाने जिनवर स्वयं विशेष॥
करें क्या स्वर्ग सुखों की बात, बने हम वहाँ पे जाके देव।
विषय भोगों में रहके लीन, मानसिक भोगे दु:ख सदैव॥
बिताये कई सागर पर्यन्त, हुए विषयों से हम संतुष्ट।
अन्त में बिलखे छह-छह माह, विषय करने को हम संपुष्ट॥
कहा है पश्चिम पुस्कर दीप, मेरू विद्युन्माली शुभकार।
पूर्व पश्चिम में जिसके सोल, बताए हैं सुन्दर वक्षार॥
रहे जो शाश्वत अचल अखण्ड, बने जिनके ऊपर जिनधाम।
एक सौ आठ रहे जिनबिम्ब, प्रति जिनगृह में मेरा प्रणाम॥
गये चारों गति में कई बार, किन्तु ना मानी अब तक हार।
स्वयं का भूले हम स्वभाव, कर्म का भटके ले आधार॥
अपरिमित अक्षय वैभववान, स्वयं होता है जग में जीव।
सुने ना यह मतलब की बात, कर्म का जब हो उदय अतीव॥
जगाया तुमने केवलज्ञान, हुए ज्ञाता त्रैलोकी नाथ।
दिखाते हो सबको शिव पंथ, चला है ज्ञानी मेरे साथ॥
बढ़े जो छोड़ जहाँ की चाह, बने वह प्राणी जिन अर्हन्त।
किया निस्पृह हो आतम ध्यान, हुआ उनके कर्मों का अन्त॥
बने शिवपुर के राही श्रेष्ठ, किया है सिद्ध शिला पर वास।
जगे अब मेरा प्रभु उपमान, लगाए बैठे चरणों आस॥
बनें हम योग रहित योगीश, करें अन्तर्आतम का ध्यान।
नहीं जब तक पाया शिव रूप, रहे अन्तर में यह श्रद्धान॥

दोहा– **वीतराग अविकार जिन, परम ब्रह्म परमेश।**
भक्त चरण में खड़े हैं, दो आशीष जिनेश॥

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसंबंधिवक्षारपर्वतसिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

।।शान्तयेशांतिधारा पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्।।

इन्द्रध्वज की पूजा करने, का अवसर शुभ आया है।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा करने, का सौभाग्य जगाया है॥
'विशद' सौख्य शांति पाते वह, जो प्रभु के गुण गाते हैं।
उच्चादर्श प्राप्त करते जो, शिखर पे ध्वजा चढ़ाते हैं॥

इत्याशीर्वाद:

विद्युन्माली के चौंतिस विजयार्ध जिनालय पूजा–30

स्थापना

पश्चिम पुस्कर अर्ध दीप में, शुभ विदेह पूर्वापर जान।
दक्षिण उत्तर भरतैरावत, में विजयार्ध है महिमावान॥
बत्तिस क्षेत्र विदेहों के हैं, भरतैरावत रहे महान।
चौंतिस कनकाचल पर जिनगृह, का हम करते हैं आह्वान॥

दोहा– **जिन चैत्यालय चैत्य की, महिमा अपरम्पार।**
पूजा करते भाव से, पाने भव दधि पार॥

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसंबंधिचतुस्त्रिंशत्विजयार्धपर्वतस्थितसिद्धकूटजिनालय-स्थजिनबिंबेभ्य: आह्वानन अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। ॐ ह्रीं...अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनम्। ॐ ह्रीं...अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

(ज्ञानोदय छंद)

ज्ञानानन्द सरोवर से हम, भक्ति नीर यह लाए हैं।
जनम जरादी से छुटकारा, पाने तव पद आए हैं॥
यह संसार असार जानकर, आज आपके दर आए।
मिली शांति जो द्वार आपके, और कहीं पर ना पाए॥1॥

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसंबंधिचतुस्त्रिंशत्विजयार्धपर्वतस्थितसिद्धकूटजिनालय-स्थजिनबिंबेभ्य: जलं निर्वपामीति स्वाहा।

काल अनादी भवाताप से, दु:ख अनन्त सहे जग में।
निज स्वरूप को जान ना पाए, नहीं चले मुक्ती मग में॥

यह संसार असार जानकर, आज आपके दर आए।
मिलीं शांति जो द्वार आपके, और कहीं पर ना पाए।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसंबंधिचतुस्त्रिंशत्विजयार्धपर्वतस्थितसिद्धकूटजिनालय-स्थजिनबिंबेभ्य: चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्ष अगोचर अक्षय पद को, नहीं आज तक जाना है।
किन्तू अक्षय पद है मेरा, विशद उसी को पाना है।।
यह संसार असार जानकर, आज आपके दर आए।
मिली शांति जो द्वार आपके, और कहीं पर ना पाए।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसंबंधिचतुस्त्रिंशत्विजयार्धपर्वतस्थितसिद्धकूटजिनालय-स्थजिनबिंबेभ्य: अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पर में किया परिणमन अब तक, धर्म उसी को माना है।
तन मन वासित रहा काम से, निज को ना पहिचाना है।।
यह संसार असार जानकर, आज आपके दर आए।
मिली शांति जो द्वार आपके, और कहीं पर ना पाए।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसंबंधिचतुस्त्रिंशत्विजयार्धपर्वतस्थितसिद्धकूटजिनालय-स्थजिनबिंबेभ्य: पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

दोष अठारह रहे सताते, उनसे ना बच पाए हैं।
अन्तर घर को रोशन करने, घृत का दीप जलाए हैं।।
यह संसार असार जानकर, आज आपके दर आए।
मिली शांति जो द्वार आपके, और कहीं पर ना पाए।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसंबंधिचतुस्त्रिंशत्विजयार्धपर्वतस्थितसिद्धकूटजिनालय-स्थजिनबिंबेभ्य: नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तत्त्व ज्ञान की अद्भुत महिमा, नहीं आज तक जानी है।
मोह महामद से मतवाले, होकर की मनमानी है।।
यह संसार असार जानकर, आज आपके दर आए।
मिली शांति जो द्वार आपके, और कहीं पर ना पाए।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसंबंधिचतुस्त्रिंशत्विजयार्धपर्वतस्थितसिद्धकूटजिनालय-स्थजिनबिंबेभ्य: दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

राग द्वेष की मथनी से हम, काल अनादी मथे गये।
धूप जलाते कर्म नाश को, पाएँ हम अब सूत्र नये।।
यह संसार असार जानकर, आज आपके दर आए।
मिली शांति जो द्वार आपके, और कहीं पर ना पाए।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसंबंधिचतुस्त्रिंशत्विजयार्धपर्वतस्थितसिद्धकूटजिनालय-स्थजिनबिंबेभ्य: धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सुखी दुखी हम हुए हमेशा, कर्मों का फल पाए हैं।
आतम अनुभव का फल पाने, द्वार आपके आए हैं।।
यह संसार असार जानकर, आज आपके दर आए।
मिली शांति जो द्वार आपके, और कहीं पर ना पाए।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसंबंधिचतुस्त्रिंशत्विजयार्धपर्वतस्थितसिद्धकूटजिनालय-स्थजिनबिंबेभ्य: फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पर का कर्ता नही है कोई, निज के कर्ता जीव कहे।
पद अनर्घ्य ना पाया हमने, कर्मों के घन घात सहे।।
यह संसार असार जानकर, आज आपके दर आए।
मिली शांति जो द्वार आपके, और कहीं पर ना पाए।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसंबंधिचतुस्त्रिंशत्विजयार्धपर्वतस्थितसिद्धकूटजिनालय-स्थजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **नहीं आप सम लोक में, अनुपम फल दातार।**
शाश्वत फल पाने प्रभू, आए आपके द्वार।।

शान्तये शांतिधारा।।

जिन चरणों की अर्चना, से कल्मस हो दूर।
सुख शांती सौभाग्य से, जीवन हो भरपूर।।

पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

अर्घ्यावली

सोरठा– **रूपाचल चौंतीस, विद्युन्माली मेरू के।**
झुका रहे हम शीश, जिनगृह उन पर जो बने।।

।।मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

चौपाई

सीता नदि उत्तर में जानो, भद्रसाल वन पास है मानो।
'कच्छा' देश रजत गिरी भाई, जिनगृह पूज रहे सुखदायी॥1॥

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसंबंधिपूर्वविदेहस्थकच्छादेशस्थितविजयार्धपर्वत-सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'सुकच्छा' में मनहारी, रजतगिरी है मंगलकारी।
सिद्ध कूट में जिनगृह गाये, श्री जिनेन्द्र पद अर्घ्य चढ़ाए॥2॥

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसंबंधिपूर्वविदेहस्थसुकच्छादेशस्थितविजयार्धपर्वत-सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'महाकच्छा' में भाई, रूपाचल सोहे सुखदायी।
सिद्धकूट में जिनगृह गाये, जिन पद अर्घ्य चढ़ाने लाए॥3॥

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसंबंधिपूर्वविदेहस्थमहाकच्छादेशस्थितविजयार्धपर्वत-सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'कच्छकावति' शुभकारी, जिसमें रजत गिरी मनहारी।
सिद्धकूट में जिन गृह गाये, जिन पद अर्घ्य चढ़ाने लाए॥4॥

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसंबंधिपूर्वविदेहस्थकच्छकावतिदेशस्थितविजयार्धपर्वत-सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश रम्य 'आवर्ता' जानो, जिसमें रजत गिरी पहिचानो।
सिद्ध कूट में जिनगृह गाये, जिन पद अर्घ्य चढ़ाने लाए॥5॥

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसंबंधिपूर्वविदेहस्थआवर्तादेशस्थितविजयार्धपर्वत-सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'लांगलावर्ता' भाई, जिसमें रजताचल सुखदायी।
सिद्ध कूट में जिनगृह गाये, जिन पद अर्घ्य चढ़ाने लाए॥6॥

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसंबंधिपूर्वविदेहस्थलांगलावतीदेशमध्यविजयार्धपर्वत-सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'पुष्कला' रहा निराला, रूपाचल नव कूटों वाला।
सिद्ध कूट में जिनगृह गाये, जिन पद अर्घ्य चढ़ाने लाए॥7॥

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसंबंधिपूर्वविदेहस्थपुष्कलादेशमध्यविजयार्धपर्वत-सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश पुष्कलावति' शुभकारी, है विजयार्ध गिरी मनहारी।
सिद्धकूट में जिनगृह गाये, जिन पद अर्घ्य चढ़ाने लाए॥8॥

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसंबंधिपूर्वविदेहस्थपुष्कलावतीदेशमध्यविजयार्धपर्वत-सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सीता नदि के दक्षिण जानो, देवारण्य पास है मानो।
वत्सा में रूपाचल गाये, जिनगृह जिसपे पूज्य कहाये॥9॥

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसंबंधिपूर्वविदेहस्थवत्सादेशमध्यविजयार्धपर्वत-सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश सुवत्सा जानो भाई, जिसमें रजत गिरी सुखदायी।
जिस पर सिद्ध कूट शुभकारी, जिनगृह पूज्य है मंगलकारी॥10॥

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसंबंधिपूर्वविदेहस्थसुवत्सादेशमध्यविजयार्धपर्वत-सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश महावत्सा में जानो, रूपाचल अनुपम पहिचानो।
जिस पर सिद्ध कूट शुभकारी, जिनगृह पूज्य है मंगलकारी॥11॥

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसंबंधिपूर्वविदेहस्थमहावत्सादेशमध्यविजयार्धपर्वत-सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश वत्सकावति कहलाए, रूप्यगिरी जिसमें मन भाए।
जिस पर सिद्ध कूट शुभकारी, जिनगृह पूज्य है मंगलकारी॥12॥

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसंबंधिपूर्वविदेहस्थवत्सकावतीदेशमध्यविजयार्धपर्वत-सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रम्या देश विदेह में गाया, रजताचल जिसमें बतलाया।
जिस पर सिद्ध कूट शुभकारी, जिनगृह पूज्य है मंगलकारी॥13॥

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसंबंधिपूर्वविदेहस्थरम्यादेशमध्यविजयार्धपर्वत-सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश सुरम्या है शुभकारी, जिसमें रूपाचल मनहारी।
जिस पर सिद्ध कूट शुभकारी, जिनगृह पूज्य है मंलकारी॥14॥

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसंबंधिपूर्वविदेहस्थसुरम्यादेशमध्यविजयार्धपर्वत-सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रमणीया है देश निराला, रूपाचल जिसमें शुभ आला।
जिस पर सिद्ध कूट शुभकारी, जिनगृह पूज्य हैं मंगलकारी।।15।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसंबंधिपूर्वविदेहस्थरमणीयादेशमध्यविजयार्धपर्वत-सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश मंगलावति जिन गाए, जिसमें रूप्यगिरी मन भाए।
जिस पर सिद्ध कूट शुभकारी, जिनगृह पूज्य है मंगलकारी।।16।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसंबंधिपूर्वविदेहस्थमंगलावतीदेशमध्यविजयार्धपर्वत-सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(रोलाछन्द)

पंचम मेरू सीतोदा के, दक्षिण गाया।
भद्रशाल के पास 'पद्मा' देश बताया।।
जिसपे श्री जिन धाम, है भव ताप निवारी।
वीतराग जिनबिम्ब, के पद ढोक हमारी।।17।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसंबंधिपश्चिमविदेहस्थपद्मादेशमध्यविजयार्धपर्वत-सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'सु पद्मा' माहि रजत गिरी शुभकारी।
अनुपम आभावान सोहे जो मनहारी।
जिसपे श्री जिन धाम, है भव ताप निवारी।
वीतराग जिनबिम्ब, के पद ढोक हमारी।।18।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसंबंधिपश्चिमविदेहस्थसुपद्मादेशमध्यविजयार्धपर्वत-सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महापदमा' शुभकार, देश विदेह में जानो।
रजताचल मनहार, नव कूटों युत मानों।।
जिसपे श्री जिन धाम, है भव ताप निवारी।
वीतराग जिनबिम्ब, के पद ढोक हमारी।।19।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसंबंधिपश्चिमविदेहस्थमहापद्मादेशमध्य-विजयार्धपर्वतसिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'देश पद्मकावति' मध्य, रूपाचल गाया।
नव कूटों युत श्रेष्ठ, सबके मन को भाया।।

जिसपे श्री जिन धाम, है भव ताप निवारी।
वीतराग जिनबिम्ब, के पद ढोक हमारी।।20।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसंबंधिपश्चिमविदेहस्थपद्मकावतीदेशमध्यविजयार्ध-पर्वतसिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

''शंखा'' देश विदेह, में सोहे शुभकारी
रजताचल पर देव, ध्यान करें अनगारी
जिसपे श्री जिन धाम, है भव ताप निवारी।
वीतराग जिनबिम्ब, के पद ढोक हमारी।।21।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसंबंधिपश्चिमविदेहस्थशंखादेशमध्यविजयार्धपर्वत-सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'नलिना' देश विदेह में, विजयार्ध निराला।
नव कूटों युत श्रेष्ठ, मन को हरने वाला।।
जिसपे श्री जिन धाम,है भव ताप निवारी।
वीतराग जिनबिम्ब, के पद ढोक हमारी।।22।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसंबंधिपश्चिमविदेहस्थनलिनादेशमध्यविजयार्धपर्वत-सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'कुमुदा' देश महान, जिसमें रजताचल है।
मन को हरने वाला, मानों स्वर्ण कमल है।।
जिसपे श्री जिन धाम, है भव ताप निवारी।
वीतराग जिनबिम्ब, के पद ढोक हमारी।।23।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसंबंधिपश्चिमविदेहस्थकुमुदादेशमध्यविजयार्धपर्वत-सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सरिता' देश के मध्य, रजताचल मन मोहे।
नव कूटों से युक्त, लता पुष्पों से सोहे।।
जिसपे श्री जिनधाम, है भव ताप निवारी।
वीतराग जिनबिम्ब, के पद ढोक हमारी।।24।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसंबंधिपश्चिमविदेहस्थसरितादेशमध्यविजयार्धपर्वत-सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

पुष्करार्ध पञ्चम सुमेरू, मध्य में शुभ जानिए।
है देश 'वप्रा' में रजतगिरी, कूट नव युत मानिए।
शुभ नदी सीतोदा के तट पे, श्री जिन का धाम है।
उसमें रहे जिनबिम्ब जिनको, विनत होके प्रणाम है।।25।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसंबंधिपश्चिमविदेहस्थवप्रादेशमध्यविजयार्धपर्वत-सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्करार्ध पश्चिम 'सुवप्रा' में रजत गिरी है अहा।
नवकूट में सिद्ध कूट अनुपम, रत्नमय शाश्वत रहा।।
शुभ नदी सीतोदा के तट पे, श्री जिन का धाम है।
उसमें रहे जिनबिम्ब जिन को, विनय सहित प्रणाम है।।26।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसंबंधिपश्चिमविदेहस्थसुवप्रादेशमध्यविजयार्धपर्वत-सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'महावप्रा' में अनुपम, रजतगिरी शुभकार है।
गंधर्व सुरगण पूजते, जिन पद करें जयकार हैं।।
शुभ नदी सीतोदा के तट पे, श्री जिन का धाम है।
उसमें रहे जिनबिम्ब जिन को, विनय सहित प्रणाम है।।27।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसंबंधिपश्चिमविदेहस्थमहावप्रादेशमध्यविजयार्धपर्वत-सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है देश 'वप्रिका वती' में शुभ, रजत गिरी अति सोहनी।
ऋषि गण विचरते हैं जहाँ पर, शुभ छवि मन मोहनी।।
शुभ नदी सीतोदा के तट पे, श्री जिन का धाम है।
उसमें रहे जिनबिम्ब जिन को, विनय सहित प्रणाम है।।28।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसंबंधिपश्चिमविदेहस्थवप्रकावतीदेशमध्यविजयार्ध-पर्वतसिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है देश 'गंधा' श्रेष्ठ मनहर, रूप्य गिरी जिसमें रही।
सुर खचर किन्नर भक्ति करने, भाव से आते सही।।

शुभ नदी सीतोदा के तट पे, श्री जिन का धाम है
उसमें रहे जिनबिम्ब जिन को, विनय सहित प्रणाम है।।29।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसंबंधिपश्चिमविदेहस्थगंधादेशमध्यविजयार्धपर्वत-सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जानो 'सुगंधा' देश में, विजयार्ध गिरी अनुपम अहा।
नवकूट हैं जिसपे सुसुन्दर , श्रेष्ठ शाश्वत जो रहा।।
शुभ नदी सीतोदा के तट पे, श्री जिन का धाम है
उसमें रहे जिनबिम्ब जिन को, विनय सहित प्रणाम है।।30।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसंबंधिपश्चिमविदेहस्थसुगंधादेशमध्यविजयार्धपर्वत-सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है 'गंधिला' शुभ देश में, विजयार्ध गिरी अति सोहनी।
रचना है अनुपम श्रेष्ठ गिरी की, नेत्र प्रिय शुभ मोहनी।।
शुभ नदी सीतोदा के तट पे, श्री जिन का धाम है
उसमें रहे जिनबिम्ब जिन को, विनय सहित प्रणाम है।।31।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसंबंधिपश्चिमविदेहस्थगंधिलादेशमध्यविजयार्धपर्वत-सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है 'गंध मालिन' देश में, विजयार्ध गिरी रूपा मयी।
जाके वहाँ सुर नर मुनीश्वर, को दिशा मिलती नई।।
शुभ नदी सीतोदा के तट पे, श्री जिन का धाम है।
उसमें रहे जिनबिम्ब जिन को, विनय सहित प्रणाम है।।32।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसंबंधिपश्चिमविदेहस्थगंधमालिनीदेशमध्यविजयार्ध-पर्वतसिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौबोला छंद)

भरत क्षेत्र में हिमवन गिरी से, गंगा सिन्धू बहती है।
रजतगिरी की गुफा तले से, बाहर होकर रहती है।।
आर्य खण्ड में नगर अयोध्या, तीर्थकर की जन्म मही।
रजताजल के जिनगृह जिनवर, की पूजा है कर्म क्षयी।।33।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसंबंधिभरतक्षेत्रमध्यविजयार्धपर्वतसिद्धकूटजिनालय-स्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऐरावत के शिखरी पर्वत, से रक्ता रक्तोदा आन।
रूप्य गिरी की गुफातले से, बाहर बहती रही महान॥
आर्य खण्ड में नगर अयोध्या, तीर्थंकर की जन्म मही।
रजताजल के जिनगृह जिनवर, की पूजा है कर्म क्षयी॥34॥

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसंबंधिऐरावतक्षेत्रमध्यविजयार्धपर्वतसिद्धकूटजिनालय-स्थजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूरव पश्चिम में विदेह शुभ, बत्तिस बतलाए भगवान।
दक्षिण उत्तर भरतैरावत, में दो हैं विजयार्ध महान॥
इन चौंतिस के चौंतिस जिनगृह, रत्नमयी शाश्वत मनहार।
पूज रहे हम भक्ति भाव से, यहाँ बैठ कर बारम्बार॥35॥

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसंबंधिपूर्वपश्चिमदक्षिणोत्तरदिक्चतुस्त्रिंशत्विजयार्ध-पर्वतसिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

।।शान्तयेशांतिधारा पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्।।

जाप्य–ॐ ह्रीं अर्हं शाश्वत् जिनालयस्थसर्वजिनबिंबेभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा– **चैत्यालय विजयार्ध गिरी, के हैं मंगलकार।**
गुणमाला गाके यहाँ, पूज रहे मनहार॥

चौपाई

पुष्करार्ध पश्चिम में गाया, विद्युन्माली मेरू बताया।
शत् इन्द्रों से पूजित जानो, जिसमें पूरव पश्चिम मानो॥
बत्तिस रूपाचल शुभ गाए, भरतैरावत में भी पाए।
रूपाचल चौंतिस शुभकारी , जिन पर जिनगृह मंगलकारी
पंचम गिरी के पूर्व में भाई, सीता नदी बहे सुखदायी
सीता के उत्तर शुभ जानो, वीरसेन वसुक्षेत्र में मानों
आठ क्षेत्र उत्तर में गाये, उनमें महाभद्रजिन पाए
पञ्चम गिरी के ऊपर भाई, सीतोदा बहती सुखदायी
गिरी में पहली कटनी गाई, भवन बने अभियोग के भाई॥

दूजी विद्याधर की जानो, नगर एक सौ दश पहिचानो।
तीजी पे नव कूट बताए, सिद्ध कूट जिनपे कहलाए॥
अष्ट कूट में सुरगृह जानो, सिद्ध कूट में जिनगृह मानो।
रूपाचल चाँदी सम गाए, जिसमें खचर निवास बताए॥
वन उपवन वेदी मय सोहें, रत्नमयी रचना मन मोहे।
बत्तिस गिरी विदेह के गाए, शाश्वत कर्मभूमि कहलाए।
भरतैरावत के गिरी में जानो, परिवर्तन होता यह मानो।
चौथे काल सम रचना गाई, आदि अन्त सदृश बतलाई॥
जाती कुल साधित विद्याएँ, विद्याधार तीनों यह पाएँ।
त्रय कारण से विद्या पाएँ, गमनादिक में रूप बनाएँ॥
सार्थक नाम अतः यह पाते, मानव विद्याधर कहलाते।
अकृत्रिम चैत्यालय जावें, जिन वन्दन करके हर्षावे॥
कोई-कोई दीक्षा पावें,कर्म काटकर शिवपुर जावें।
जिनगृह में प्रतिमाएँ जानो, रत्नमयी अतिशय पहिचानो॥
सुर नर विद्याधर सब आवें, मिथ्यातम को दूर भगावें।
दर्शन कर सद्दर्शन पावे, जिन पूजा करके हर्षावें॥
भेद ज्ञान मन में प्रगटावें, निज चेतन का ध्यान लगावें।
भव के सारे पाप नशावें, शिवकारी शुभ पुण्य जगावें॥
इन्द्र चक्रवर्ति पद धारी, क्रमशः होते हैं नर नारी।
वह सब सिद्ध शिला पे जाते, सुख अनन्त अव्यय वह पाते॥

दोहा– **रजत गिरी चौंतीस पर, हैं जिनगृह चौंतीस।**
उनमें जो जिनबिम्ब हैं, उन्हें झुकाते शीश॥

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसंबंधिचतुस्त्रिंशत्विजयार्धपर्वतसिद्धकूटजिनालयस्थ-जिनबिंबेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

।।शान्तयेशांतिधारा पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्।।

इन्द्रध्वज की पूजा करने, का अवसर शुभ आया है।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा करने, का सौभाग्य जगाया है॥
'विशद' सौख्य शांति पाते वह, जो प्रभु के गुण गाते हैं।
उच्चादर्श प्राप्त करते जो, शिखर पे ध्वजा चढ़ाते हैं॥

इत्याशीर्वादः

विद्युन्माली मेरू षट्कुलाचल पूजा–31

स्थापना गीताछन्द

पश्चिम सुपुष्कर दीप में, जिनवर कुलाचल छह कहे।
जिनधाम जिन पर श्रेष्ठतम, जिनबिम्ब शाश्वत शुभ रहे।।
स्थापना करते हृदय में, प्राप्त होवे जिन शरण।
है भावना अन्तिम हमारी, पाएँ हम पण्डित मरण।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसंबंधिषट्कुलाचलपर्वत स्थितसिद्धकूटजिनालयस्थ-जिनबिंबसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। ॐ ह्रीं...अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं...अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

(चाल मेरी भावना)

पद्माकर का जल अति निर्मल, छान के जिसको गरम किया।
जन्म जरादिक नाश हेतु प्रभू, श्री चरणों में चढ़ा दिया।।
छहों कुलाचल पर जिनगृह में, जिनवर की पूजा करते।
जिनके दर्शन भवि जीवों के, अन्तर का कल्मष हरते।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसम्बंधिषट्कुलाचलस्थितसिद्धकूटजिनालयस्थजिन-बिंबेभ्यः जलं निर्व.स्वाहा।

केशर में कर्पूर मिलाकर, जिन के पद हम चर्च रहे।
भवाताप के नाश हेतु हम, भक्ति भाव से अर्च रहे।।
छहों कुलाचल पर जिनगृह में, जिनवर की पूजा करते।
जिनके दर्शन भवि जीवों के, अन्तर का कल्मष हरते।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसम्बंधिषट्कुलाचलस्थितसिद्धकूटजिनालयस्थजिन-बिंबेभ्यः चंदनं निर्व.स्वाहा।

धवल चाँदनी सम तन्दुल यह, पूजा करने को लाए।
अक्षय पद के भाव बनाकर, चरण शरण में हम आए।।

छहों कुलाचल पर जिनगृह में, जिनवर की पूजा करते।
जिनके दर्शन भवि जीवों के, अन्तर का कल्मष हरते।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसम्बंधिषट्कुलाचलस्थितसिद्धकूटजिनालयस्थजिन-बिंबेभ्यः अक्षतं निर्व.स्वाहा।

कल्पवृक्ष के सुमन सुगन्धित, सुरभित लाए खिले-खिले।
काम वाण हो नाश हमारा, नाथ! मुझे नव लब्धि मिले।।
छहों कुलाचल पर जिनगृह में, जिनवर की पूजा करते।
जिनके दर्शन भवि जीवों के, अन्तर का कल्मष हरते।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसम्बंधिषट्कुलाचलस्थितसिद्धकूटजिनालयस्थजिन-बिंबेभ्यः पुष्पं निर्व.स्वाहा।

घृत मेवा के मधुर मधुर, नैवेद्य बनाकर हम लाए।
क्षुधा रोग हो शांत हमारा, पूजा कर मन हर्षाए।।
छहों कुलाचल पर जिनगृह में, जिनवर की पूजा करते।
जिनके दर्शन भवि जीवों के, अन्तर का कल्मष हरते।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसम्बंधिषट्कुलाचलस्थितसिद्धकूटजिनालयस्थजिन-बिंबेभ्यः नैवेद्यं निर्व.स्वाहा।

घृत कपूर का दीप जलाते, मोह महातम दूर करें।
भेद ज्ञान प्रगटित हो मेरा, अन्तर भ्रान्ती पूर्ण हरें।।
छहों कुलाचल पर जिनगृह में, जिनवर की पूजा करते।
जिनके दर्शन भवि जीवों के, अन्तर का कल्मष हरते।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसम्बंधिषट्कुलाचलस्थितसिद्धकूटजिनालयस्थजिन-बिंबेभ्यः दीपं निर्व.स्वाहा।

धूप जलाकर के अग्नी में, अष्ट कर्म का नाश करें।
भाव कर्म जो लगे अनादी, उनका पूर्ण विनाश करे।।
छहों कुलाचल पर जिनगृह में, जिनवर की पूजा करते।
जिनके दर्शन भवि जीवों के, अन्तर का कल्मष हरते।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसम्बंधिषट्कुलाचलस्थितसिद्धकूटजिनालयस्थजिन-बिंबेभ्यः धूपं निर्व.स्वाहा।

सुरभित सरस मधुर फल से यह, हमने थाल भराए हैं।
मोक्ष महाफल प्राप्त करें हम, पूजा करने आए हैं।।
छहों कुलाचल पर जिनगृह में, जिनवर की पूजा करते।
जिनके दर्शन भवि जीवों के, अन्तर का कल्मष हरते।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसम्बंधिषट्कुलाचलस्थितसिद्धकूटजिनालयस्थजिन -बिंबेभ्य: फलं निर्व.स्वाहा।

जल चन्दन अक्षत आदिक का, हमने अर्घ्य बनाया है।
पद अनर्घ्य पाने तव पद में, हमने आन चढ़ाया है।।
छहों कुलाचल पर जिनगृह में, जिनवर की पूजा करते।
जिनके दर्शन भवि जीवों के, अन्तर का कल्मष हरते।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसम्बंधिषट्कुलाचलस्थितसिद्धकूटजिनालयस्थजिन -बिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **वीतराग विज्ञान हे, शिव पद दाता नाथ।**
शान्ती धारा दे रहे, चरण झुकाते माथ।।

।।शान्तये शांतिधारा।।

पुष्पांजलि करते यहाँ, लाए सुगन्धित फूल।
यही भावना भा रहे, कर्म होंय निर्मूल।।

।।पुष्पांजलि क्षिपेत्।।

प्रत्येक अर्घ्य

कुलाचलों पर शोभते, अकृत्रिम जिनधाम।
पूजा को अर्पित सुमन, शत् शत् बार प्रणाम।।

(मण्डलस्योपरि पुष्पांजलि क्षिपेत्)

ज्ञानोदय छंद

पंचम सुरगिरी के दक्षिण में, 'हिमवन गिरी' है स्वर्ण समान।
ग्यारह कूट हैं जिसपे अनुपम, सिद्ध कूट में जिन भगवान।।
पदम सरोवर मध्य कमल पे, श्री देवी का है स्थान।
जिन मन्दिर जिनबिम्ब पूजते, अर्घ्य चढ़ा करते गुणगान।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसम्बन्धिहिमवन्पर्वत सिद्धकूटजिनालयस्थजिन -बिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सुरगिरी के दक्षिण में कुलगिरी, 'महाहिमवन' है रजत समान।
आठ कूट हैं जिसपे अनुपम, सिद्ध कूट में जिन भगवान।।
महापद्म के मध्य सरोवर, कमल पे ह्री देवी का वास।
अर्घ्य चढ़ाते जिन चरणों में, होवे आतम ज्ञान प्रकाश।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसम्बन्धिमहाहिमवनपर्वत सिद्धकूटजिनालयस्थजिन -बिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तप्त स्वर्ण सम 'निषध' गिरी है, दक्षिण में सुरगिरी के खास।
मध्य तिगिंछ सरोवर में शुभ, धृति देवी भी करे निवास।।
नव कूटों में सिद्ध कूट पर, जिनगृह में सोहें भगवान।
जिनमन्दिर जिनबिम्ब पूजते, अर्घ्य चढ़ा करते गुणगान।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसम्बन्धिनिषधपर्वत सिद्धकूटजिनालयस्थजिन -बिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'नीलाचल' विद्युन्माली के, उत्तर में वैडूर्य समान।
मध्य केशरी द्रह पंकज पे, देवि कीर्ति का है स्थान।।
नव कूटों में सिद्ध कूट पर, जिनगृह में सोहें भगवान।
जिनमन्दिर जिनबिम्ब पूजते, अर्घ्य चढ़ा करते गुणगान।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसम्बन्धिनीलपर्वत सिद्धकूटजिनालयस्थजिन -बिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पंचम सुरगिरी के उत्तर में, 'रूक्मी' गिरी है रजत समान
पुण्डरीक द्रह मध्य कमल पे, बुद्धी देवी का स्थान।
आठ कूट में सिद्धकूट पे, जिनगृह में सोहें भगवान।।
जिनमन्दिर जिनबिम्ब पूजते, अर्घ्य चढ़ा करते गुणगान।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसम्बन्धिरुक्मिपर्वत सिद्धकूटजिनालयस्थजिन -बिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

विद्युन्माली गिरी के उत्तर, 'शिखरी' पर्वत हेम समान।
मध्य सरोवर कमल बीच में, लक्ष्मी देवी रहे महान।।
ग्यारह कूट में सिद्ध कूट पे जिनगृह में सोहें भगवान।
जिनमन्दिर जिनबिम्ब पूजते, अर्घ्य चढ़ा करते गुणगान।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसम्बन्धिशिखरीपर्वत सिद्धकूटजिनालयस्थजिन -बिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पुष्करार्ध पश्चिम में सुरगिरी, विद्युन्माली रहा महान।
उत्तर दक्षिण में कुल पर्वत , पे जिनगृह में हैं भगवान।।
इन कूटों में सिद्धकूट पर, जिनगृह में सोहें भगवान।
जिनमन्दिर जिनबिम्ब पूजते, अर्घ्य चढ़ा करते गुणगान।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसम्बन्धिषट्कुलाचलसिद्धकूटजिनालयस्थजिन-बिंबेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

।।शान्तयेशांतिधारा पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्।।

जाप्य–ॐ ह्रीं अर्हं शाश्वत् जिनालयस्थसर्वजिनबिंबेभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा– **हम पर हे प्रभु! आपके, हैं अनन्त उपकार।**
पार करो भव सिन्धु से, बोल रहे जयकार।।

(छन्द मत्तसवैया)

पुष्करार्ध पश्चिम में मेरू, विद्युन्माली मध्य रहा।
दक्षिण उत्तर में कुलगिरी का, जिसके शुभ स्थान कहा।।
पूरव से पश्चिम यह फैले, रत्न खचित जो बतलाए।
ऊर्ध्व अधो विस्तार तुल्य है, ऊपर जो समतल गाए।।
बने सरोवर जिनके ऊपर, जिनसे सरिताएँ बहतीं।
बीच सरोवर में कमलों पर, श्री आदिक सुरियाँ रहतीं।।
पृथ्वी कायिक कमल बने यह, जिनके ऊपर महल कहे।
चारों ओर सरोवर में कई, लघू कमल भी अन्य रहे।।
सामानिक परिषद देवों का, जिनके ऊपर रहा निवास।
जिन चरणों की भक्ती करके, करते मन की पूरी आस।।
कुलाचलों के मध्य भाग में, शाश्वत् जिनगृह बतलाए।
रत्न जड़ित हैं महिमा शाली, अकृत्रिम जो कहलाए।।
एक सौ आठ रही प्रतिमाएँ, वीतराग महिमा शाली।
भांति-भांति के महामनोहर, शाश्वत शुभ रत्नों वाली।।
पर्वत पर मन्दिर की शोभा, देख देव हर्षाते हैं।
इन्द्र शिखर पर ध्वजा चढ़ाने, हर्षित होकर आते हैं।।

अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर, निज परिवार सहित आते।
श्री जिनेन्द्र की पूजा अर्चा, करके नित प्रति गुण गाते।।
नाथ! आपकी महिमा सुनकर, के हम चरणों में आए।
अष्ट द्रव्य पूजा करने को, हाथ में अपने यह लाए।।
रागी द्वेषी इस जग के कई, देव पूजते आये हैं।
शांति मिली ना हमको किंचित्, दुखों से हम अकुलाए हैं।।
चउ गतियों में भटक लिया, ना चैन कहीं भी पाये हैं।
आतम सुख पाने हे स्वामी, यह भक्त शरण में आये हैं।।

दोहा– **भक्त पुकारें आपको, सुन लो दीनानाथ।**
मोक्ष मार्ग में हे प्रभू, आप निभाओ साथ।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसंबंधिषट्कुलाचलसिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

।।शान्तयेशांतिधारा पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्।।

इन्द्रध्वज की पूजा करने, का अवसर शुभ आया है।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा करने, का सौभाग्य जगाया है।।
'विशद' सौख्य शांति पाते वह, जो प्रभु के गुण गाते हैं।
उच्चादर्श प्राप्त करते जो, शिखर पे ध्वजा चढ़ाते हैं।।

इत्याशीर्वादः

विद्युन्माली मेरू इष्वाकार जिनालय पूजन–32

स्थापना

पुष्करार्ध शुभ दीप में उत्तर, दक्षिण में गिरी इष्वाकार।
शाश्वत है जो स्वर्ण वर्णमय, वृक्षों से शोभित मनहार।।
जिन मंदिर दोनों गिरी ऊपर, शोभित होते आभावान।
उनमें जो जिनबिम्ब विराजे, उनका हम करते आह्वान।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसंबंधिदक्षिणोत्तरइष्वाकारपर्वत सिद्धकूटजिनालय –स्थजिनबिंबसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। ॐ ह्रीं...अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। ॐ ह्रीं...अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधीकरणं।

(हरिगीता छंद)

हम जन्म लेकर के मरण, करते रहे संसार में।
हे नाथ! भव से पार करने, आये तुमरे द्वार में।।
अब मुक्ति पथ की राह हमको, हे प्रभू जी दीजिए।
यह भक्त करते प्रार्थना प्रभु, शरण अपनी लीजिए।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसंबंधिइष्वाकारपर्वत सिद्धकूटजिनालयस्थ जिन-बिंबेभ्य: जलं निर्व.स्वाहा।

चर्चित किया चंदन बहुत, पर ताप मिट पाया नहीं।
शीतल सुगन्धित गंध केशर, काम कुछ आया नहीं।।
हे नाथ! हमको मोक्ष पथ की, राह अनुपम दीजिए।
यह भक्त करते प्रार्थना, प्रभु शरण में ले लीजिए।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसंबंधिइष्वाकारपर्वत सिद्धकूटजिनालयस्थ जिन-बिंबेभ्य: चंदनं निर्व.स्वाहा।

इन्द्रिय सुखों की कामना में, मोक्ष सुख ना पाए हैं।
पर भाव में अटके प्रभू, संसार में भटकाए हैं।।
हे नाथ! हमको मोक्ष पथ की राह अनुपम दीजिए।
यह भक्त करते प्रार्थना, प्रभु शरण में ले लीजिए।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसंबंधिइष्वाकारपर्वत सिद्धकूटजिनालयस्थ जिन-बिंबेभ्य: अक्षतं निर्व.स्वाहा।

यह पुष्प अर्पित कर रहे प्रभू, चाह विषयों की घटे।
यह काम शत्रू लगा मेरे, साथ उसका अब हटे।।
हे नाथ! हमको मोक्ष पथ की, राह अनुपम दीजिए।
यह भक्त करते प्रार्थना, प्रभु शरण में ले लीजिए।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसंबंधिइष्वाकारपर्वत सिद्धकूटजिनालयस्थ जिन-बिंबेभ्य: पुष्पं निर्व.स्वाहा।

चिर काल से जड़ वस्तुओं का, स्वाद लेते हम रहे।
अतएव कर्मों के अनादी, घात हमने कई सहे।।
हे नाथ! हमको मोक्ष पथ की, राह अनुपम दीजिए।
यह भक्त करते प्रार्थना, प्रभु शरण में ले लीजिए।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसंबंधिइष्वाकारपर्वत सिद्धकूटजिनालयस्थ जिन-बिंबेभ्य: नैवेद्यं निर्व.स्वाहा।

दीपक जलाकर तम हमेशा, हम मिटाते आए हैं।
अब मोह तम का नाश करने, दीप अनुपम लाए हैं।।
हे नाथ! हमको मोक्ष पथ की, राह अनुपम दीजिए।
यह भक्त करते प्रार्थना, प्रभु शरण में ले लीजिए।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसंबंधिइष्वाकारपर्वत सिद्धकूटजिनालयस्थ जिन-बिंबेभ्य: दीपं निर्व.स्वाहा।

हम कर्म की अब धूप खेने, ज्ञान घट में लाए हैं।
शुभ भाव से हे नाथ! पद में, अर्चना को आए हैं।।
हे नाथ! हमको मोक्ष पथ की, राह अनुपम दीजिए।
यह भक्त करते प्रार्थना, प्रभु शरण में ले लीजिए।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसंबंधिइष्वाकारपर्वत सिद्धकूटजिनालयस्थ जिन-बिंबेभ्य: धूपं निर्व.स्वाहा।

चिर काल से हम कर्म का फल, प्राप्त कर अकुलाए हैं।
अब मोक्ष फल पाने शरण में, हे प्रभो! हम आए हैं।।
हे नाथ! हमको मोक्ष पथ की, राह अनुपम दीजिए।
यह भक्त करते प्रार्थना, प्रभु शरण में ले लीजिए।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसंबंधिइष्वाकारपर्वत सिद्धकूटजिनालयस्थ जिन-बिंबेभ्य: फलं निर्व.स्वाहा।

अब आत्म वैभव प्राप्त करने, की कला सिखलाइये।
मम् अर्घ्य यह स्वीकार लो प्रभू, ज्ञान धार बहाइये।।
हे नाथ! हमको मोक्ष पथ की, राह अनुपम दीजिए।
यह भक्त करते प्रार्थना, प्रभु शरण में ले लीजिए।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसंबंधिइष्वाकारपर्वत सिद्धकूटजिनालयस्थ जिन-बिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **सूर्य किरण पाके कमल, खिलते हैं चहुँ ओर।**
शांती धारा दे रहे, होकर भाव विभोर।।

।।शान्तये शांतिधारा।।

दोहा– **नाथ आपका दर्श कर, भक्त करें जयकार।**
पुष्पांजलि देते चरण, हम भी बारम्बार।।

।।पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

अर्घ्यावली

दोहा– **वीतराग मुद्रा प्रभू, प्रगटाए श्रद्धान।**
भक्ति शक्ति दातार है, करें विशद कल्याण॥

(मण्डलस्योपरि पुष्पांजलि क्षिपेत्)

(चौबोला छंद)

वर द्वीप धातकी दक्षिण में, नग इष्वाकार रहा पावन।
लवणोद से कालोदधि छूवे, स्वर्णाभा युत है मनभावन॥
हैं चार कूट में सिद्ध कूट, जिसमें जिनगृह अतिशय कारी।
जिनबिम्ब एक सौ आठ रहे, हम पूज रहे मंगलकारी॥1॥

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरोः दक्षिणदिशि इष्वाकारपर्वत स्थितसिद्धकूट जिनालयस्थजिबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ दीप धातकी उत्तर में, लवणोदधि से कालोदधि जान।
गिरी इष्वाकार सहस्र योजन, विस्तृत चउ शतक उच्च्य है मान॥
है चार लाख योजन लम्बा, स्वर्णाभ कूट शुभ चार कहे।
है सिद्ध कूट में जिन मन्दिर, जिनपद में झुकता माथ रहे॥2॥

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरोः उत्तरदिशि इष्वाकारपर्वत स्थितसिद्धकूट जिनालयस्थजिबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्करार्ध में उत्तर दक्षिण, दो पर्वत हैं इष्वाकार।
सुर किन्नर का वास जहाँ है, कूट बने दोनों पर चार॥
एक-एक कूटों में जिनगृह, जिनमें हैं जिनबिम्ब महान।
उनके चरणों अर्घ्य चढ़ाकर, करते भाव सहित गुणगान॥3॥

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरोः दक्षिणोत्तरदिशायां सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

।।शांतये शांतिधारा। पुष्पांजलिः।।

जाप्य– ॐ ह्रीं अर्हं शाश्वत् जिनालयस्थसर्वजिनबिंबेभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा– **अकृत्रिम जिनगृहों की, फैली कीर्ति विशाल।**
जिनगृह इष्वाकार पे, गाते हम जयमाल॥

(चौबोला छंद)

शुभ दीप धातकी खण्ड मध्य, उत्तर से दक्षिण जानो।
लवणोदधि से कालोदधि तक, लम्बे फैले ऐसा मानो॥
जिनके ऊपर हैं हरे वृक्ष, जो कलियों से शोभा पाते।
विचरण करते हैं वनचारी, पक्षी मानो गाना गाते॥
दोनों पर्वत के ठीक मध्य, गिरी ऊपर शुभ जिनधाम बने।
जिनगृह में वेदी के ऊपर, शुभकारी श्रेष्ठ वितान तने॥
सिंहासन पर जिनबिम्ब श्रेष्ठ, जिन महिमा को दर्शाते हैं।
जिनबिम्ब एक सौ आठ रहे, भविजन जिन दर्शन पाते हैं॥
हो जाते नेत्र सफल उनके, जो जिन दर्शन कर लेते हैं।
हो जाता मस्तक धन्य अहो, जो ढोक चरण में देते हैं॥
जिस हृदय में प्रभु का वास रहा, वह जिन मन्दिर कहलाता है।
जो मुख से प्रभु गुणगान करे, वह मुख पावन हो जाता है॥
जो कर से पूजा करते हैं, वे हाथ सफल हो जाते हैं।
वे जीव धन्य हो जाते हैं, जो कर से ध्वजा चढ़ाते हैं॥
जो यात्रा कर के तीर्थों की, पैरों को सफल बनाते हैं।
वे शिवपथ के राही बनते, वह पैर पूज्य हो जाते हैं॥
इस तन को पाकर के प्राणी, जो तीर्थ वन्दना करते हैं।
वह तीर्थ स्वयं हो जाते हैं, औरों के संकट हरते हैं॥
इस तन को पाकर जो प्राणी, निज आतम ध्यान लगाते हैं।
इस मिट्टी के तन को पाकर, वह मोक्ष महल को पाते हैं॥
यह तन मिट्टी का पुतला है, अब इसको नहीं सजाना है।
स्वरूप जानकर इस तन का, वैराग्य भावना भाना है॥
संसार देह या भोगों का, चिन्तन नित प्रति अब करना है।
तज मोह महा मिथ्या कलंक, भव सिन्धू पार उतरना है॥

दोहा– **कर्म भार से दव रहा, मेरा आतम राम।**
भव सिन्धू से हे प्रभु! हमको दो विश्राम॥

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरूसंबंधिइष्वाकारपर्वतसिद्धकूटजिनालयस्थसर्वजिन-बिंबेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

।।शान्तयेशांतिधारा पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्।।

इन्द्रध्वज की पूजा करने, का अवसर शुभ आया है।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा करने, का सौभाग्य जगाया है।।
'विशद' सौख्य शांति पाते वह, जो प्रभु के गुण गाते हैं।
उच्चादर्श प्राप्त करते जो, शिखर पे ध्वजा चढ़ाते हैं।।

इत्याशीर्वादः

मानुषोत्तर पर्वत चतुर्दिक जिनालय पूजन–33

स्थापना

पुष्कर वर शुभ दीप तीसरा, जो है सोलह योजन मान।
मानुषोत्तर पर्वत चूड़ी सम, मध्य में शोभित रहा महान।।
जिसकी चतुर्दिशा में अनुपम, शोभित होते हैं जिनधाम।
आह्वानन् करते जिनगृह का, करके बारम्बार प्रणाम।।

ॐ ह्रीं श्रीपुष्करद्वीपमध्यस्थितमानुषोत्तरपर्वत सम्बन्धिचतुर्दिकसिद्धकूट जिनालयस्थजिनबिंबसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। ॐ ह्रीं...अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। ॐ ह्रीं...अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधीकरणं...।

(त्रिभंगी छंद)

जन्मादिक नाशी, ज्ञान प्रकाशी, श्री जिनेन्द्र करुणाधारी।
श्रद्धा से आये, नीर चढ़ाए, हम जिनेन्द्र पद शुभकारी।।
जिनबिम्ब सहारे, तारण हारे, शिव सुख के जो कारण हैं।
कर्मों के नाशक, धर्म प्रकाशक, परमेश्वर जग तारण हैं।।1।।

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वत स्थितसिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः जलं निर्व.स्वाहा।

शीतल यह चन्दन, भवहर कृन्दन, अन्तर की ज्वाला शांत करे।
मिथ्यात्व कषाएँ, उदय ना आएँ, जिन अर्चन उपशांत करे।।
जिनबिम्ब सहारे, तारण हारे, शिव सुख के जो कारण हैं।
कर्मों के नाशक, धर्म प्रकाशक, परमेश्वर जग तारण हैं।।2।।

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वत स्थितसिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः चंदनं निर्व.स्वाहा।

अक्षय पद धारी, कर्म निवारी, प्रभू आप सम हमें करो।
प्रभु आत्म समर्पण, अक्षत अर्पण, करते सारे पाप हरो।।
जिनबिम्ब सहारे, तारण हारे, शिव सुख के जो कारण हैं।
कर्मों के नाशक, धर्म प्रकाशक, परमेश्वर जग तारण हैं।।3।।

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वत स्थितसिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अक्षतं निर्व.स्वाहा।

हे सच्चे योगी, निज गुण भोगी, तव दर्शन मन को भाए।
हम काम नशाने, शिव सुख पाने, दिव्य सुमन लेकर आए।।
जिनबिम्ब सहारे, तारण हारे, शिव सुख के जो कारण हैं।
कर्मों के नाशक, धर्म प्रकाशक, परमेश्वर जग तारण हैं।।4।।

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वत स्थितसिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः पुष्पं निर्व.स्वाहा।

हे जिन अविकारी, महिमा धारी, आतम रस चखने वाले।
नैवेद्य चढ़ाते, शीश झुकाते, हे नाथ क्षुधा हरने वाले।।
जिनबिम्ब सहारे, तारण हारे, शिव सुख के जो कारण हैं।
कर्मों के नाशक, धर्म प्रकाशक, परमेश्वर जग तारण हैं।।5।।

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वत स्थितसिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः नैवेद्यं निर्व.स्वाहा।

हे केवल ज्ञानी, शिव सुख दानी, मोह महातम दूर करो।
अज्ञान हटाओ, ज्ञान जगाओ, विशद ज्ञान भरपूर करो।।
जिनबिम्ब सहारे, तारण हारे, शिव सुख के जो कारण हैं।
कर्मों के नाशक, धर्म प्रकाशक, परमेश्वर जग तारण हैं।।6।।

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वत स्थितसिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः दीपं निर्व.स्वाहा।

कर्मों की ज्वाला, विषमय प्याला, पीकर भव-भव भटक रहे।
हम कर्म सताए, बहु दुख पाए, भव सिन्धू में अटक रहे।।
जिनबिम्ब सहारे, तारण हारे, शिव सुख के जो कारण हैं।
कर्मों के नाशक, धर्म प्रकाशक, परमेश्वर जग तारण हैं।।7।।

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वत स्थितसिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः धूपं निर्व.स्वाहा।

यह फल शुभकारी, है मनहारी, ताजे हम लेकर आये।
शिव फल को पाने, ज्ञान जगाने, चरणों में हम सिरनाये।।

जिनबिम्ब सहारे, तारण हारे, शिव सुख के जो कारण हैं।
कर्मों के नाशक, धर्म प्रकाशक, परमेश्वर जग तारण हैं॥8॥

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वत स्थितसिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः फलं निर्व.स्वाहा।

जल चन्दन लाए, पुष्प मंगाए, अक्षत फल चरु दीप जले।
हम अर्घ्य बनाएँ, चरण चढ़ाए, मोक्ष महल की ओर चले॥
जिनबिम्ब सहारे, तारण हारे, शिव सुख के जो कारण हैं।
कर्मों के नाशक, धर्म प्रकाशक, परमेश्वर जग तारण हैं॥9॥

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वत स्थितसिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

दोहा– **चरण कमल जिन आपके, पूजें जब तक श्वाँस।**
मोक्ष महाफल प्राप्त हो, पूरी कर दो आस॥

शान्तये शांतिधारा॥

दोहा– **अविकारी तुम हो प्रभू, हों मम दूर विकार।**
पुष्पांजलि करते चरण, पाने को भव पार॥

॥पुष्पांजलिं क्षिपेत्॥

अर्घ्यावली

दोहा– **देती है हमको प्रभू, आग राग की पीर।**
पुष्पांजलि करते यहाँ, पाएँ ज्ञान का नीर॥

(मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

(ज्ञानोदय छंद)

मानुषोत्तर पर्वत के ऊपर, पूर्व दिशा में मनिहारी।
जिनगृह में जिनबिम्ब विराजे, पूज रहे हम शुभकारी॥
मानुषोत्तर पर्वत के आगे, मानव का है नहीं गमन।
हम परोक्ष ही अर्घ्य चढ़ाते, चरणों में है विशद नमन॥1॥

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वत पूर्वदिक्सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यो अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

दक्षिण दिश में मानुषोत्तर पे, हरा भरा वन मंगलकार।
गिरी पे मध्य बना जिन मंदिर, पूज रहे हम बारम्बार॥
मानुषोत्तर पर्वत के आगे, मानव का है नहीं गमन।
हम परोक्ष ही अर्घ्य चढ़ाते, चरणों में है विशद नमन॥2॥

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वत दक्षिणदिक्सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

पश्चिम दिशा में मध्य गिरी पर, शोभित होता है जिनधाम।
जिनबिम्बों की पूजा करते, करके चरणों सतत् प्रणाम॥
मानुषोत्तर पर्वत के आगे, मानव का है नहीं गमन।
हम परोक्ष ही अर्घ्य चढ़ाते, चरणों में है विशद नमन॥3॥

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वत पश्चिमदिक्सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

उत्तर दिशा रही मनहारी, मानुषोत्तर की आभावान।
जिनगृह में शोभा पाते हैं अविकारी जिनबिम्ब महान॥
मानुषोत्तर पर्वत के आगे, मानव का है नहीं गमन।
हम परोक्ष ही अर्घ्य चढ़ाते, चरणों में है विशद नमन॥4॥

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वत उत्तरदिक्सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

चूड़ी सदृश मानुषोत्तर की, चतुर्दिशाओं में जिनधाम।
गिरी के ऊपर मध्य भाग में, दिलवाते भव से विश्राम॥
मानुषोत्तर पर्वत के आगे, मानव का है नहीं गमन।
हम परोक्ष ही अर्घ्य चढ़ाते, चरणों में है विशद नमन॥5॥

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वत चतुर्दिकसिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

॥शान्तयेशांतिधारा पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्॥

जाप्य–ॐ ह्रीं अर्हं शाश्वत् जिनालयस्थसर्वजिनबिंबेभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा– **गुण अनन्त के कोष हैं, तीर्थंकर भगवान।**
जयमाला गाते यहाँ, पाने पद निर्वाण॥

(चाल छंद)

पुष्करवर दीप में जानो, मानुषोत्तर पर्वत मानो।
जो वलयाकार है गाया, जिसकी विचित्र है माया॥
सत्तरह सौ इक्किस भाई, योजन जिसकी ऊँचाई।
चारों दिश में शुभकारी, मन्दिर सोहें मनहारी॥
जिनबिम्ब रहे अविकारी, जिनगृह में मंगलकारी।
हम चरण वन्दना करते, नत हो पद माथा धरते॥
तुम दुखियों के सुख दाता, भक्ती कर मिलती साता।
जो भक्त शरण में आवें, वे मन चाहा फल पावें॥
तव वीतराग छवि प्यारी, दुखियों के संकट हारी।
सौभाग्य उदय जब आये, तब जिनदर्शन मिल पाए॥
महिमा सुनकर हम आए, चरणों में शीश झुकाए।
सुर नर विद्याधर आते, पद सादर शीश झुकाते॥
जो जय जय कार लगाते, भक्ती से महिमा गाते।
परिवार साथ में लाते, शिखरों पर ध्वजा चढ़ाते॥
जो अष्ट द्रव्य शुभकारी, ले रत्न श्रेष्ठ मनहारी।
पूजा करके हर्षाते, स्वर से संगीत बजाते॥
जो नृत्य आरती करते, मन का कालुष सब हरते।
ऐसे तन्मय हो जाते, मानो निज में खो जाते॥
है प्रभू की ये प्रभुताई, तुम जानो सब हे भाई।
होते प्रभू कर्म विनाशी, निज आतम ज्ञान प्रकाशी॥
जो शिव पदवी को पाते, इस जग को राह दिखाते।
यह काल अनादी जानो, क्रम चलता आया मानो॥
जो माया मोह को छोड़े, जिनपद से नाता जोड़े।
वह जग का वैभव पावें, अपना सौभाग्य जगावें॥
ये पुण्य की है वलिहारी, पाते श्रद्धा के धारी।

नर संयम को अपनावें, अनुक्रम से शिव पद पावें॥
हम विशद भावना भाते, पद सादर शीश झुकाते।
शिव पद हम भी पा जाएँ, ना भव वन में भटकाएँ॥

दोहा– **मन की इच्छा पूर्ण हो, हे मेरे भगवान।**
भव सागर से पार हो, पाएँ पद निर्वाण॥

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतस्योपरि उत्तरदिक्सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

।।शान्तयेशांतिधारा पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्।।

इन्द्रध्वज की पूजा करने, का अवसर शुभ आया है।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा करने, का सौभाग्य जगाया है॥
'विशद' सौख्य शांति पाते वह, जो प्रभु के गुण गाते हैं।
उच्चादर्श प्राप्त करते जो, शिखर पे ध्वजा चढ़ाते हैं॥

इत्याशीर्वादः

नन्दीश्वर द्वीप जिनालय समुच्चय पूजन–34

स्थापना

नंदीश्वर के चतुर्दिशा में, तेरह-तेरह गिरी शुभकार।
अंजन गिरी के चतुर्दिशा में, दधिमुख चार कहे मनहार॥
दधी मुखों के बाह्य कोंण में, रतिकर दो दो रहे महान।
जिन पर जिनगृह में जिनबिम्बों, का हम करते हैं आह्वान॥

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपसंबंधिपूर्वदिक्त्रयोदशजिनालयस्थजिनबिंबसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। ॐ ह्रीं...अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। ॐ ह्रीं...अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम्।

चौपाई

निर्मल नीर की भरके झारी, जन्म जरा की नाशन कारी।
नंदीश्वर के जिन को ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते॥1॥

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपसम्बन्धिद्विपञ्चाशत्जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतल चन्दन घिसकर लाए, भव संताप नशाने आए।
नंदीश्वर के जिन को ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते॥2॥

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपसम्बन्धिद्विपञ्चाशत्जिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय अक्षत से शुभकारी, पूजा करते हम मनहारी।
नंदीश्वर के जिन को ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते॥3॥

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपसम्बन्धिद्विपञ्चाशत्जिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित पुष्प चढ़ाने लाए, भव से मुक्ती पाने आए।
नंदीश्वर के जिन को ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते॥4॥

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपसम्बन्धिद्विपञ्चाशत्जिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस श्रेष्ठ नैवेद्य बनाए, क्षुधा नशाने को हम आए।
नंदीश्वर के जिन को ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते॥5॥

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपसम्बन्धिद्विपञ्चाशत्जिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप जलाते मंगलकारी, मोह तिमिर का नाशन कारी।
नंदीश्वर के जिन को ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते॥6॥

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपसम्बन्धिद्विपञ्चाशत्जिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नी में शुभ धूप जलाएँ, अष्ट कर्म से मुक्ती पाएँ।
नंदीश्वर के जिन को ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते॥7॥

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपसम्बन्धिद्विपञ्चाशत्जिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ताजे चढ़ा रहे फल भाई, मुक्ती पद दायक सुखदायी।
नंदीश्वर के जिन को ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते॥8॥

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपसम्बन्धिद्विपञ्चाशत्जिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्य बनाया यह मनहारी, पद अनर्घ्य दायक शिवकारी।
नंदीश्वर के जिन को ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते॥9॥

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपसम्बन्धिद्विपञ्चाशत्जिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **नीर भरा शिव गंग से, करते शांती धार।**
शिव पद पाने के लिए, आये जिन के द्वार॥

॥शान्तये शांतिधारा॥

दोहा– **सुर तरु के यह पुष्प ले, चढ़ा रहे जिन पाद।**
मिट जाए मेरा प्रभो, भव से व्यय उत्पाद॥

॥पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्॥

नन्दीश्वर द्वीप पूर्वदिक् जिनालय पूजन–35

स्थापना (अडिल्य छंद)

नंदीश्वर शुभ द्वीप सु अष्टम जानिए,
बावन जिनगृह जिसके ऊपर मानिए।
पूर्व दिशा में तेरह जिनके धाम हैं,
जिनबिम्बों को मेरा विशद प्रणाम है॥

दोहा– **आह्वानन् स्थापना, सन्निधि करण के साथ।**
तिष्ठाते हम हृदय में, झुका चरण में माथ॥

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपसंबंधिपूर्वदिक्त्रयोदशजिनालयस्थजिनबिंबसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। ॐ ह्रीं...अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनं। ॐ ह्रीं...अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम्।

तर्ज–मात तू दया करके

जन्मादी रोग मिटे, जल चरण चढ़ाते हैं।
लाकर श्रद्धा का जल, त्रय धार कराते हैं॥
हम भक्त आपके हैं, चरणों सिरनाते हैं।
शिव पदवी हम पाएँ, यह भाव बनाते हैं॥1॥

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपसम्बन्धिपूर्वदिक्त्रयोदशजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन का लेप किया, पर राग ना मिट पाया।
यह दास चरण में अब, प्रभु भक्त बना आया।।
हम भक्त आपके हैं, चरणों सिरनाते हैं।
शिव पदवी हम पाएँ, यह भाव बनाते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपसम्बन्धिपूर्वदिक्त्रयोदशजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

जग के पद अस्थिर है, क्षण भंगुर नश जाते।
तव पूजा करते जो, वह अक्षय पद पाते।।
हम भक्त आपके हैं, चरणों सिरनाते हैं।
शिव पदवी हम पाएँ, यह भाव बनाते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपसम्बन्धिपूर्वदिक्त्रयोदशजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नत्रय के तरु पे, निज ज्ञान सुमन खिलते।
शुभ ज्ञान सुरभि पाने, अलि बनकर भवि मिलते।।
हम भक्त आपके हैं, चरणों सिरनाते हैं।
शिव पदवी हम पाएँ, यह भाव बनाते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपसम्बन्धिपूर्वदिक्त्रयोदशजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु क्षुधा रोग नाशी, ना कवलाहार करें।
शरणागत का पल में, जिनवर उद्धार करें।।
हम भक्त आपके हैं, चरणों सिरनाते हैं।
शिव पदवी हम पाएँ, यह भाव बनाते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपसम्बन्धिपूर्वदिक्त्रयोदशजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैतन्य गगन में शुभ, रवि ज्ञान चमकता है।
मोहान्ध महानाशी, शुभ दीप दमकता है।।
हम भक्त आपके हैं, चरणों सिरनाते हैं।
शिव पदवी हम पाएँ, यह भाव बनाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपसम्बन्धिपूर्वदिक्त्रयोदशजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों की शक्ती ने, हे नाथ सताया है।
बल है अनन्त मेरा, ना ज्ञान में आया है।।
हम भक्त आपके हैं, चरणों सिरनाते हैं।
शिव पदवी हम पाएँ, यह भाव बनाते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपसम्बन्धिपूर्वदिक्त्रयोदशजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

शिवफल के दाता तुम, हे नाथ कहाते हो।
आनन्द का शुभ निर्झर, प्रभु आप बहाते हो।।
हम भक्त आपके हैं, चरणों सिरनाते हैं।
शिव पदवी हम पाएँ, यह भाव बनाते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपसम्बन्धिपूर्वदिक्त्रयोदशजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: फलं निर्वपामीति स्वाहा।

विषयों की चाहत में, सदियों से दु:ख सहे।
ना पद अनर्घ्य पाया, भटकाते सतत रहे।।
हम भक्त आपके हैं, चरणों सिरनाते हैं।
शिव पदवी हम पाएँ, यह भाव बनाते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपसम्बन्धिपूर्वदिक्त्रयोदशजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **चन्द्र चाँदनी से धवल, हैं प्रभु कांतीमान।**
शांती धारा दे यहाँ, करते हम गुणगान।।
।।शान्तये शांतिधारा।।

दोहा– **तीन लोक में पूज्य तुम, हम हैं पूजक नाथ।**
पुष्पांजलि करके विशद, चरण झुकाते माथ।।
।।पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

अर्घ्यावली

दोहा– **जिनगृह में जिनबिम्ब शुभ, शोभित हैं द्युतिमान।**
पुष्पांजलि करते विशद, क्षमा करो भगवान।।
(मण्डलस्योपरि पुष्पांजलि क्षिपेत्)

पूर्व दिशा के 13 जिनालय

(छंद-जोगीराशा)

जिन चरणों की अर्चा से कई, होते हैं अतिशय।
पूर्व दिशा में अंजनगिरी पर, श्री जिन चैत्यालय॥
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, अर्चा हम करते।
विशद भाव से जिन चरणों में, अपना सिर धरते॥1॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वदिक् अंजनगिरीजिनालयस्थ जिनबिंबेभ्यो अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

अंजनगिरी की चतुर्दिशा में, चार वापिकाएँ।
एक लाख योजन जलपूरित, अति शोभा पाएँ॥
पूर्व दिशा में नन्दा वापी, पर दधिमुख सोहे।
अकृत्रिम जिनबिम्ब आठोत्तर, शत् मन को मोहे॥2॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे नंदावापिकामध्य पूर्व दधिमुखपर्वतस्थित जिनालयस्थ जिनबिंबेभ्यो अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

नन्दा वापी के ईशान में, रतिकर गिरी जानो।
जिस पर जिन चैत्यालय जिन युत, शाश्वत् शुभ मानो॥
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, अर्चा को लाए।
कृत्रिम रचना करके हम भी, पूजा को आए॥3॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे नंदावापीईशानकोणे रतिकरपर्वतस्थित जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यो अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

नन्दा वापि के आग्नेय में, रतिकर शुभ जानो।
जिन चैत्यालय जिस पर जिन युत, शाश्वत् शुभ मानो॥
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर अर्चा को लाए।
कृत्रिम रचना करके हम भी, पूजा को आए॥4॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे नंदावापीआग्नेयकोणे रतिकरपर्वतस्थित जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यो अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

दक्षिण नन्दावति वापी में, दधिमुख शुभ जानो।
जिन चैत्यालय पूजनीय शुभ, शाश्वत् है मानो॥

अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, अर्चा को लाए।
कृत्रिम रचना करके हम भी, पूजा को आए॥5॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे नंदावतीवापिकामध्य दक्षिण दधिमुखपर्वतस्थित जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यो अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

आग्नेय में नन्दावति वापी, के रतिकर सोहें।
रत्नमयी जिनबिम्ब शोभते, सब का मन मोहें॥
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, अर्चा को लाए।
कृत्रिम रचना करके हम भी, पूजा को आए॥6॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे नंदावतीवापिआग्नेयकोणे रतिकरपर्वतस्थित जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यो अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

नन्दावति नैऋत्य कोंण में, रतिकर शुभ गाया।
त्रिभुवन पूज्य जिनालय जिस पर, शाश्वत् बतलाया॥
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, अर्चा को लाए।
कृत्रिम रचना करके हम भी, पूजा को आए॥7॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे नंदावतीवापिनैऋत्यकोणे रतिकरपर्वतस्थित जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यो अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

पश्चिम में नन्दोत्तरा वापी, में दधिमुख जानो।
रत्नों के जिनबिम्ब मनोहर, जिनगृह भी मानो॥
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, अर्चा को लाए।
कृत्रिम रचना करके हम भी, पूजा को आए॥8॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे नंदोत्तरावापिकामध्य पश्चिम दधिमुखपर्वतस्थित जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यो अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

नैऋत्य कोंण नन्दोत्तरा वापि, के रतिकर सोहें।
जिन चैत्यालय और चैत्य शुभ, सबका मन मोहें॥
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, अर्चा को लाए।
कृत्रिम रचना करे हम भी, पूजा को आए॥9॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे नंदोत्तरावापिकानैऋत्यकोणे रतिकरपर्वतस्थित जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यो अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

नन्दोत्तरा वापी वायव्य में, रतिकर शुभ गाए।
जिन मंदिर के मध्य जिनेश्वर, जिसमें बतलाए॥

अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, अर्चा को लाए।
कृत्रिम रचना करके हम भी, पूजा को आए॥10॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे नंदोत्तरावापिकावायव्यकोणे रतिकरपर्वतस्थित जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यो अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

उत्तर नन्दीघोषा वापी, में दधिमुख भाई।
जिन चैत्यालय में जिन पूजा, जानो सुखदाई॥
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, अर्चा को लाए।
कृत्रिम रचना करके हम भी, पूजा को आए॥11॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे नन्दीघोषावापिकामध्य उत्तर दधिमुखपर्वतस्थित जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यो अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

नन्दीघोषा के वायव्य में, रतिकर बतलाया।
अकृत्रिम जिन चैत्यालय शुभ, चैत्य युक्त गाया॥
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, अर्चा को लाए।
कृत्रिम रचना करके हम भी, पूजा को आए॥12॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे नन्दीघोषावायव्यकोणे रतिकरपर्वतस्थित जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यो अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

नन्दीघोषा के ईशान में, रतिकर गिरी भाई।
जिस पर जिन चैत्यालय अनुपम, भविजन सुखदाई॥
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, अर्चा को लाए।
कृत्रिम रचना करके हम भी, पूजा को आए॥13॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे नन्दीघोषा-ईशानकोणे रतिकरपर्वतस्थित जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यो अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

दोहा– **नन्दीश्वर शुभ द्वीप में, पूरव के जिन धाम।**
पूज रहे जिन बिम्ब हम, करके चरण प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वदिक त्रयोदश जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्व.स्वाहा।

॥शान्तयेशांतिधारा पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्॥

जाप्य–ॐ ह्रीं अर्हं शाश्वत् जिनालयस्थसर्वजिनबिंबेभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा– **बुद्धिहीन हम हैं प्रभू, फिर भी हैं वाचाल।**
पूरब के जिनबिम्ब की, गाते हैं जयमाल॥

(वीर छन्द)

अष्टम दीप रहा नंदीश्वर, जिसकी पूरब दिशा प्रधान।
अंजन गिरी दधिमुख रतिकर के, तेरह पर्वत रहे महान॥
जिनके ऊपर बने जिनालय, मंगलमय हैं मंगल कार।
जिनबिम्बों के पद में वन्दन, विशद भाव से बारम्बार॥
राग द्वेष में पड़कर हे प्रभु, बढ़ा रहे अपना संसार।
निज स्वरूप का भान करा दो, होगा प्रभू बड़ा उपकार॥
जड़ वस्तू से प्रीती करके, पाया भारी भव आताप।
किया परिग्रह संचित हमने, हे जिन! पाया है संताप॥
आती हुई चंचला लक्ष्मी, क्षण भर सौख्य दिलाती है।
जीवन भर रक्षण की चिंता, हमको सतत सताती है॥
दुखदायी भोगों के पीछे, मोहित होकर भाग रहे।
मोह नींद में सोये हैं हम, नहीं स्वयं ही जाग रहे॥
इच्छाओं का अंत नहीं है, निशदिन हमें सतातीं हैं।
मोहित करके मानो हमको, बारम्बार बुलातीं हैं॥
पापों की जड़ जड़ पदार्थ हैं, निश दिन पाप कराते हैं।
पापी मन को मोहित करके, तीनों लोक घुमाते हैं॥
भौतिक सुख इस जग का सारा, पाप बढ़ाने वाला है।
वर्तमान में अच्छा लगता, पर भविष्य अति काला है॥
सुख के साधन का आकर्षण, हर पल मोहित करता है।
अच्छे अच्छे ज्ञानी जीवों, की मति को जो हरता है॥
हिंसादिक पाँचों पापों का, सिर पर भार उठाता है।
जिसके भार से दबकर प्राणी, दुर्गति में ही जाता है॥
कभी पुण्य के संचय द्वारा, मानव दौलत पाता है।
प्राप्त विषय सामग्री पाकर, मन में लोभ बढ़ाता है।

पुण्य पाप का खेल निराला, प्राणी खेला करते हैं।।
इसी खेल में काल अनादी, जीव जन्मते मरते हैं।
भौतिक साधन नहीं साधना, आत्म साधना पाना है।
चेतन का स्वभाव ज्ञान है, निज स्वभाव जगाना है।।

दोहा– **नहीं आत्मा से बड़ा, शांती का आधार।**
आत्म रमण करके विशद, प्राणी हों भव पार।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वदिक त्रयोदश जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

।।शान्तयेशांतिधारा पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्।।

इन्द्रध्वज की पूजा करने, का अवसर शुभ आया है।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा करने, का सौभाग्य जगाया है।।
'विशद' सौख्य शांति पाते वह, जो प्रभु के गुण गाते हैं।
उच्चादर्श प्राप्त करते जो, शिखर पे ध्वजा चढ़ाते हैं।।

इत्याशीर्वादः

नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिक् जिनालय पूजा–36

स्थापना

अष्टम दीप रहा नंदीश्वर, जिसकी दक्षिण दिशा महान।
तेरह गिरी पे तेरह जिनगृह, में शोभित होते भगवान।।
शाश्वत् रत्नमयी अविकारी, वीतराग मय आभावान।
हृदय कमल में जिनबिम्बों का, करते भाव सहित आह्वान।।

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशिजिनालयस्थजिनबिंब समूह! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। ॐ ह्रीं...अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं...अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधीकरणं।

(नरेन्द्र छंद)

सरिता का निर्मल पावन जल, तन की प्यास बुझाता।
चेतन की जो प्यास बुझाए, वह शिव पद को पाता।।

नंदीश्वर के चैत्यालय की, हम पूजा को आए।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य मनोहर, श्रेष्ठ बनाकर लाए।।

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिक्त्रयोदशजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भव ज्वाला में झुलस रहे हम, हमें बचाओ स्वामी।
इन्द्रिय सुख हम नहीं चाहते, शिव सुख दो शिवगामी।।
नंदीश्वर के चैत्यालय की, हम पूजा को आए।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य मनोहर, श्रेष्ठ बनाकर लाए।।

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिक्त्रयोदशजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण अक्षय हैं मम चेतन के, जान नहीं हम पाए।
अक्षय निधि पाने हे स्वामी, द्वार आपके आए।।
नंदीश्वर के चैत्यालय की, हम पूजा को आए।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य मनोहर, श्रेष्ठ बनाकर लाए।।

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिक्त्रयोदशजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

अभिमानी है काम भंयकर, तीखे तीर चलाए।
दर्शन करके नाथ! आपका, चरणों में झुक जाए।।
नंदीश्वर के चैत्यालय की, हम पूजा को आए।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य मनोहर, श्रेष्ठ बनाकर लाए।।

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिक्त्रयोदशजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

भूख मिटी न व्यंजन खाकर, क्षुधा रोग है भारी।
आतम अनुभव का चरु पाने, आए शरण तिहारी।।
नंदीश्वर के चैत्यालय की, हम पूजा को आए।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य मनोहर, श्रेष्ठ बनाकर लाए।।

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिक्त्रयोदशजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जीवन में मिथ्यात्व कर्म से, छाया है अंधियारा।

ज्ञान दीप से नाथ आपके, पाना है उजियारा।।
नंदीश्वर के चैत्यालय की, हम पूजा को आए।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य मनोहर, श्रेष्ठ बनाकर लाए।।

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिक्त्रयोदशजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट कर्म विध्वंस हेतु यह, चिन्मय धूप जलाते।
चरण कमल में प्रभू आपके, सादर शीश झुकाते।।
नंदीश्वर के चैत्यालय की, हम पूजा को आए।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य मनोहर, श्रेष्ठ बनाकर लाए।।

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिक्त्रयोदशजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अशुभ कर्म के द्वारा जग में, बार-बार भटकाए।
संवर और निर्जरा करके, शिव पथ पाने आए।।
नंदीश्वर के चैत्यालय की, हम पूजा को आए।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य मनोहर, श्रेष्ठ बनाकर लाए।।

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिक्त्रयोदशजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: फलं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभू आपके दर्शन करके, निज दर्शन को आए।
पद अनर्घ्य पाने हे स्वामी, अर्घ्य सजाकर लाए।।
नंदीश्वर के चैत्यालय की, हम पूजा को आए।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य मनोहर, श्रेष्ठ बनाकर लाए।।

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिक्त्रयोदशजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **नाथ मेरी आराधना, कर लो अब स्वीकार।**
शांती धारा से मिले, भव सिन्धू का पार।।

।।शान्तये शांतिधारा।।

दोहा– **शरण आपके हम खड़े, लेकर सुरभित फूल।**
शिव पद के राही बनें, मुक्ती हो अनुकूल।।

।।पुष्पांजलि क्षिपेत्।।

अर्घ्यावली

दोहा– **पूजन कर अर्घ्यावली, करते हैं आरम्भ।**
अष्ट द्रव्य के अर्घ्य अब, करते हैं प्रारम्भ।।

(मण्डलस्योपरि पुष्पांजलि क्षिपेत)

(शम्भू छंद)

दक्षिण दिश में नन्दीश्वर के, जिनगृह तेरह रहे महान्।
विनय सहित पूजा करने को, उनका हम करते गुणगान।।
दक्षिण दिश में अंजनगिरी शुभ, शोभित होती है मनहार।
जिस पर चैत्यालय प्रतिमाएँ, पूज रहे हम बारम्बार।।1।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशी अंजनगिरीजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्ये अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

अंजनगिरी के पूर्व दिशा में, अरजावापी है शुभकार।
दधिमुख पर्वत पर चैत्यालय, चैत्य शोभते मंगलकार।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, पूजा करते हम शुभकार।
विशद भाव से अर्चा करते, जिन चरणों में बारम्बार।।2।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशी अरजावापिकामध्यपूर्वदधिमुखपर्वत जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

अरजा वापी जल से पूरित, जिसका कोंण रहा ईशान।
रतिकर पर चैत्यालय अनुपम, जिसमें शोभित हैं भगवान।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, पूजा करते हम शुभकार।
विशद भाव से अर्चा करते, जिन चरणों में बारम्बार।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशी अरजावापिकाईशानकोणे रतिकरपर्वतस्थित जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

आग्नेय में अरजावापी, के रतिकर है मंगलकार।
जिन चैत्यालय जिस पर सोहें, शोभित होते हैं मनहार।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, पूजा करते हम शुभकार।
विशद भाव से अर्चा करते, जिन चरणों में बारम्बार।।4।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशी अरजावापिकाआग्नेयकोणे रतिकरपर्वतस्थित जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्ये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अंजनगिरी के दक्षिण में शुभ, विरजा वापी रही महान्।
दधिमुख पर्वत पर चैत्यालय, में जिन का करते गुणगान॥
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, पूजा करते हम शुभकार।
विशद भाव से अर्चा करते, जिन चरणों में बारम्बार॥5॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशी विरजावापिकादक्षिणदधिमुखपर्वतस्थित जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

विरजा वापी अग्नि कोंण में, रतिकर पर्वत रहा विशेष।
जिन चैत्यालय जिस पर अनुपम, जहाँ विराजित श्री जिनेश॥
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, पूजा करते हम शुभकार।
विशद भाव से अर्चा करते, जिन चरणों में बारम्बार॥6॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशी विरजावापिकाआग्नेयकोणे रतिकरपर्वतस्थित जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

विरजा के नैऋत्य कोंण में, रतिकर दूजा रहा महान्।
जिस पर जिनगृह में शोभित हैं, अकृत्रिम जिनबिम्ब प्रधान॥
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, पूजा करते हम शुभकार।
विशद भाव से अर्चा करते, जिन चरणों में बारम्बार॥7॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशी विरजावापिकानैऋत्यकोणे रतिकरपर्वतस्थित जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पश्चिम में अंजनगिरी के शुभ, वापी रही अशोका नाम।
दधिमुख के ऊपर चैत्यालय, में जिनको हम करें प्रणाम॥
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, पूजा करते हम शुभकार।
विशद भाव से अर्चा करते, जिन चरणों में बारम्बार॥8॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशी अशोकावापिकामध्य पश्चिम दधि मुखपर्वत जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

वापी के नैऋत्य कोंण में, रतिकर पर्वत सोहें लाल।
जिस पर चैत्यालय है अनुपम, शोभ रहे जिनबिम्ब विशाल॥
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, पूजा करते हम शुभकार।
विशद भाव से अर्चा करते, जिन चरणों में बारम्बार॥9॥

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशी अशोकावापिकानैऋत्यकोणे रतिकरपर्वतस्थित जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

वापी के वायव्य कोंण में, रतिकर दूजा रहा महान्।
चैत्यालय में जिनबिम्बों की, महिमा कौन करे गुणगान॥
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, पूजा करते हम शुभकार।
विशद भाव से अर्चा करते, जिन चरणों में बारम्बार॥10॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशी अशोकावापिकावायव्यकोणे रतिकरपर्वतस्थित जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अंजनगिरी के उत्तर दिश में, दधिमुख पर्वत रहा विशाल।
वापी रही वीतशोक शुभ, जिनगृह पूजित रहे त्रिकाल॥
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, पूजा करते हम शुभकार।
विशद भाव से अर्चा करते, जिन चरणों में बारम्बार॥11॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशी वीतशोकावापिकामध्य-उत्तरदधि मुखपर्वतस्थित जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

नाम वीतशोक वापी का, कोंण रहा वायव्य विशेष।
रतिकर पर चैत्यालय अनुपम, जिसमें शोभित हैं तीर्थेश॥
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, पूजा करते हम शुभकार।
विशद भाव से अर्चा करते, जिन चरणों में बारम्बार॥12॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशी वीतशोकावापिकावायव्यकोणे रतिकरपर्वतस्थित जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

नाम वीतशोका वापी का, जिसका कोंण रहा ईशान।
रतिकर गिरी पर जिन चैत्यालय, में शोभित हैं जिन भगवान॥
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, पूजा करते हम शुभकार।
विशद भाव से अर्चा करते, जिन चरणों में बारम्बार॥13॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशी वीतशोकवापिकाईशानकोणे रतिकरपर्वतस्थित जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सोरठा– हैं तेरह जिन गेह, नंदीश्वर दक्षिण दिशा।
पूजें जो सस्नेह, वह पावें सुख-संपदा॥

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशि त्रयोदशजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

॥शान्तयेशांतिधारा पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्॥

जाप्य–ॐ ह्रीं अर्हं शाश्वत् जिनालयस्थसर्वजिनबिंबेभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा– **नंदीश्वर शुभ दीप में, पर्वत हैं उत्ताल।**
जिनगृह में जिनबिम्ब की, गाते हम जयमाल॥

(शम्भू छंद)

हम निश्चल अनुराग लिए, प्रभु पूजा करने आये हैं।
सौभाग्य सुयश जागे स्वामी, यह आशा मन में लाए हैं॥
हम कर्म ताप से संतापित हैं जिनवर की छाया शीतल।
प्रभु की आभा से सारा ये, हो रहा प्रकाशित अवनीतल॥
नन्दीश्वर अष्टम द्वीप कहा, दक्षिण दिश में गिरीवर तेरह।
जिनके ऊपर जिन मन्दिर हैं, आगम में कथन बताया यह॥
जिनबिम्ब एक सौ आठ श्रेष्ठ, प्रति जिन मंदिर में राज रहे।
वे हैं अनादि से इस जग में, देवों के बाजे बाज रहे॥
अंजन सम अंजन गिरी सोहे, शुभ चारों ओर सरोवर है।
कंचन जल जिसमें भरा हुआ, लगता सुन्दर जो मनहर है॥
फिर चारों दिश में जंगल है, जंगल में मंगल देव करें।
फल फूल भार से झुके तरु, देवों के मन में मोद भरें॥
नन्दीश्वर द्वीप की रचना शुभ, जिनवर वाणी से जानी है।
देवों का गमन वहाँ होता, ना जाए मनुज यह मानी है॥
भक्ती करने को देव कई, नन्दीश्वर दीप में जाते हैं।
श्रद्धा से नत होकर जिन पद, जो पूजा पाठ रचाते हैं॥
हैं रत्नमयी जिनबिम्ब श्रेष्ठ, जन-जन के मन को भाते हैं।
अतएव चरण में भक्त देव, स्वर्गों से दौड़े आते हैं॥
तन मानव सम सुन्दर सोहे, नख होंठ लाल हैं कृष्ण केश।
ऊँची प्रतिमाएँ पंच शतक, योजन है छवि जिनकी विशेष॥
जो कोटि सूर्य की आभा से, भी प्रतिमाएँ हैं तेज वान।
यदि चन्द्र करोड़ों निकल जायें, उनसे भी शीतल शीलवान॥
लगता तीर्थंकर बैठे हैं, सबको उपदेश सुनाएँगे।
प्रभु दिव्य देशना देकर के, सबके सौभाग्य जगाऐंगे॥

वह सम्यक् दर्शन पा लेते, जो दर्शन करने जाते हैं।
प्रभु के चरणों में विशद जीव, रत्नत्रय की निधि पाते हैं॥
हे नाथ! आपके चरणों की, धूली हम माथ चढ़ाएगें।
राही बनकर के शिव पथ के, हम शिवपुर धाम बनाएँगे॥

दोहा– **नंदीश्वर दक्षिण दिशा, में जिनवर के धाम।**
पूज रहे हम भाव, से करते चरण प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशि त्रयोदशजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

।।शान्तयेशांतिधारा पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्।।

इन्द्रध्वज की पूजा करने, का अवसर शुभ आया है।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा करने, का सौभाग्य जगाया है॥
'विशद' सौख्य शांति पाते वह, जो प्रभु के गुण गाते हैं।
उच्चादर्श प्राप्त करते जो, शिखर पे ध्वजा चढ़ाते हैं॥

इत्याशीर्वाद:

नन्दीश्वर द्वीप पश्चिमदिक् जिनालय पूजन–37

स्थापना

नंदीश्वर के पश्चिम दिश में, तेरह जिनगृह रहे महान।
अंजनगिरी दधिमुख रतिकर गिरी, के ऊपर जिनमें भगवान॥
वीतराग अविनाशी अनुपम, शोभित होते आभावान।
जिन अर्चा के भाव बनाकर, करते हम उर में आह्वान॥

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशि त्रयोदशजिनालयस्थसर्वजिनबिंब-समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। ॐ ह्रीं श्री...अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनं। ॐ ह्रीं श्री...अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

(सखी छंद)

हम नीर चढ़ाने लाए, जन्मादि नशाने आए।
है राग आग दुखकारी, संताप बढ़ावन कारी॥

हम नंदीश्वर में जाएँ, जिनपद में शीश झुकाएँ।
अब आठों कर्म नशाएँ, ना भव सागर भटकाएँ।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशि त्रयोदशजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन भव ताप निवारी, हम चढ़ा रहे शुभकारी।
जो निज स्वभाव को ध्याये, वह शीतल गुण प्रगटाए।।
हम नंदीश्वर में जाएँ, जिनपद में शीश झुकाएँ।
अब आठों कर्म नशाएँ, ना भव सागर भटकाएँ।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशि त्रयोदशजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यो चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय अक्षत मनहारी, हम चढ़ा रहे शिवकारी।
हम निज स्वभाव को पाएँ, अक्षय पद में रम जाएँ।।
हम नंदीश्वर में जाएँ, जिनपद में शीश झुकाएँ।
अब आठों कर्म नशाएँ, ना भव सागर भटकाएँ।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशि त्रयोदशजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

भव सन्तति सदा बढ़ाई, नहि शील सम्पदा पाई।
शुभ शील सुमन पा जाएँ, सुरभित यह पुष्प चढ़ाए।।
हम नंदीश्वर में जाएँ, जिनपद में शीश झुकाएँ।
अब आठों कर्म नशाएँ, ना भव सागर भटकाएँ।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशि त्रयोदशजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

संज्ञा अहार दुखदायी, है क्षुधा रोग भी भाई।
हो नाश हमारा स्वामी, हे शिव पथ के अनुगामी।।
हम नंदीश्वर में जाएँ, जिनपद में शीश झुकाएँ।
अब आठों कर्म नशाएँ, ना भव सागर भटकाएँ।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशि त्रयोदशजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छाया है मोह अँधेरा, हम चाहें ज्ञान सबेरा।
निश्चय पुरुषार्थ जगाएँ, शिवपुर में धाम बनाएँ।।
हम नंदीश्वर में जाएँ, जिनपद में शीश झुकाएँ।
अब आठों कर्म नशाएँ, ना भव सागर भटकाएँ।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशि त्रयोदशजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

सदियों से कर्म सताते, चऊ गति में भ्रमण कराते।
हम उन पर अब जय पाएँ, शाश्वत् स्वरूप प्रगटाएँ।।
हम नंदीश्वर में जाएँ, जिनपद में शीश झुकाएँ।
अब आठों कर्म नशाएँ, ना भव सागर भटकाएँ।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशि त्रयोदशजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

जब कर्म उदय में आते, फल अपना देकर जाते।
शिव फल की आश जगाए, हे नाथ शरण में आए।।
हम नंदीश्वर में जाएँ, जिनपद में शीश झुकाएँ।
अब आठों कर्म नशाएँ, ना भव सागर भटकाएँ।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशि त्रयोदशजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चन्दन आदि मिलाए, उनसे शुभ अर्घ्य बनाए।
हम पद अनर्घ्य हे स्वामी, पा जाएँ अन्तर्यामी।।
हम नंदीश्वर में जाएँ, जिनपद में शीश झुकाएँ।
अब आठों कर्म नशाएँ, ना भव सागर भटकाएँ।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशि त्रयोदशजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **अधिकारी जिन धर्म के, धर्माध्यक्ष महान।**
देते शांतीधार हम, पावें पद निर्वाण।।

।।शान्तये शांतिधारा।।

दोहा– **उत्तम कांती धारते, अमल गुणों की खान।**
पुष्पांजलि करते यहाँ, संबल दो भगवान।।

।।पुष्पांजलि क्षिपेत्।।

अर्घ्यावली

दोहा– **इन्द्रादिक से पूज्य हैं, विश्व वंद्य मुनिनाथ।**
अर्घ्य चढ़ाते हम यहाँ, चरण झुकाते माथ॥

(मण्डलस्योपरि पुष्पांजलि क्षिपेत्)

(चौबला छंद)

नंदीश्वर की पश्चिम दिशा में, तेरह जिनगृह रहे प्रधान।
पूजा करते भक्ति भाव से, पाने हम निज का स्थान॥
कृष्ण वर्ण अंजनगिरी के शुभ, चैत्यालय को है वन्दन।
एक शतक वसु जिन प्रतिमाओं, को हम सादर करें नमन्॥1॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशी अंजनगिरीजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यो अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

(छंद-टप्पा)

विजया वापी दधिमुख पर्वत, दधि सम है भाई।
दस सहस्र योजन ऊँचाई, शाश्वत् सुखदाई॥
जिनालय पूजों हो भाई।
एकशतकवसुजिनप्रतिमाएँ, पूज्य कही भाई-जिना0...॥2॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशी अंजनगिरी विजयावापीमध्य पूर्व दधि मुखपर्वतस्थित जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

विजया वापी के ईशान में, रतिकर है भाई।
एक सहस्र योजन ऊँचाई, शाश्वत् सुखदाई॥
जिनालय पूजों हो भाई।
एकशतकवसुजिन प्रतिमाएँ, पूज्य कहीं भाई-जिना0...॥3॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशी विजयावापीईशानकोणे रतिकरपर्वतस्थित जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

आग्नेय में विजयावापी, के रतिकर भाई।
जिसके ऊपर जिन चैत्यालय, सोहे सुखदाई॥
जिनालय पूजों हो भाई।
एकशतकवसुजिनप्रतिमाएँ, पूज्य कहीं भाई-जिना0...॥4॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशी विजयावापी आग्नेयकोणे रतिकरपर्वतस्थित जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

अंजनगरि दक्षिण वापी के, वैजयन्ती भाई।
दधिमुख पर्वत से शोभित है, शाश्वत् जो भाई॥
जिनालय पूजों हो भाई।
एकशतकवसुजिन प्रतिमाएँ, पूजय कहीं भाई-जिना0...॥5॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशी अंजनगिरीवैजयंतीवापिका दक्षिण दधि-मुखपर्वतस्थित जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

आग्नेय में वैजयन्ती शुभ, वापी के भाई।
रतिकर पर्वत पर जिनगृह शुभ, शाश्वत् सुखदाई॥
जिनालय पूजों हो भाई।
एकशतकवसुजिन प्रतिमाएँ, पूज्य कहीं भाई-जिना0...॥6॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशी वैजयन्तीवापिकाआग्नेयकोणे रतिकर-पर्वतस्थित जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

नैऋत्य कोंण में वैजयन्ती शुभ, वापी के भाई।
जिनगृह रतिकर गिरी पर सोहे, भविजन सुखदाई॥
जिनालय पूजों हो भाई।
एकशतकवसुजिन प्रतिमाएँ, पूज्य कहीं भाई-जिना0...॥7॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशी वैजयंतीवापिकानैऋत्यकोणे रति-करपर्वतस्थित जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

अंजनगिरी पश्चिम में वापी, है जयन्ति भाई।
दधिमुख पर्वत पर चैत्यालय, चैत्य श्रेष्ठ ध्यायी॥
जिनालय पूजों हो भाई।
एकशतकवसुजिन प्रतिमाएँ, पूज्य कहीं भाई-जिना0...॥8॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशी अंजनगिरीवैजयंतीवापिका पश्चिम दधि-मुखपर्वतस्थित जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

वापी सजल वैजन्ती के, नैऋत्य कोंण भाई।
रतिकर पर्वत पर जिनमंदिर, में प्रतिमा गाई॥
जिनालय पूजों हो भाई।
एकशतकवसुजिन प्रतिमाएँ, पूजय कहीं भाई-जिना0...॥9॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दश्वरद्वीपे पश्चिमदिशी वैजयंतीवापिकानैऋत्यकोणे रति-करपर्वतस्थित जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

श्रेष्ठ जयन्ती वापी के शुभ, वायव्य कोंण भाई।
अकृत्रिम रतिकर पर्वत पर, मन्दिर सुखदाई॥
जिनालय पूजों हो भाई।
एकशतकवसुजिन प्रतिमाएँ, पूज्य कहीं भाई-जिना0...॥10॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशी वैजयंतीवापिकावायव्यकोणे रति-करपर्वतस्थित जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

अन्जनगिरी उत्तर में वापी, अपराजिता गाई।
इसमें दधिमुख पर्वत शाश्वत, मन्दिर सुखदाई॥
जिनालय पूजों हो भाई।
एकशतकवसुजिन प्रतिमाएँ, पूज्य कहीं भाई-जिना0...॥11॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशी अंजनगिरी अपराजितावापिका उत्तर दधि मुखपर्वतस्थित जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

अपराजिता वापी वायव्य में, रतिकर है भाई।
जिनगृह में प्रतिमाएँ अनुपम, सोहे सुखदाई॥
जिनालय पूजों हो भाई।
एकशतकवसुजिन प्रतिमाएँ, पूजय कहीं भाई-जिना0...॥12॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशी अपराजितावापिकावायव्यकोणे रति-करपर्वतस्थित जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

अपराजिता वापी ईशान में, रतिकर है भाई।
जिनगृह में प्रतिमाएँ पूजें, हृदय हषार्ठ॥
जिनालय पूजों हो भाई।
एकशतकवसुजिन प्रतिमाएँ, पूज्यकहीं भाई-जिना0...॥13॥

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशी अपराजितावापिकाईशानकोणे रति-करपर्वतस्थित जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

दोहा– **तेरह पश्चिम दिशा में, नंदीश्वर के धाम।**
जिन मंदिर अनुपम रहे, जिनको विशद प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशि त्रयोदशजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य–ॐ ह्रीं अर्हं शाश्वत् जिनालयस्थसर्वजिनबिंबेभ्यो नमः।

जयमाला

अधिकारी जिनधर्म के, श्री पति हे भगवान।
जयमाला गाते यहाँ, करो नाथ कल्याण॥

(वीर छंद)

भव्य जीव संसार दशा को, देख स्वयं वैराग्य धरें।
यह संसार असार जानकर, सर्व परिग्रह त्याग करें॥
संयम के धारी होकर के, निज आतम का ध्यान करें।
शिव पथ के राही होकर के, स्व-पर का कल्याण करें॥
सम्यक् तप को धारण करके, निज को स्वयं तपाते हैं।
कर्म निर्जरा करके क्षण-क्षण, आतम शुद्ध बनाते हैं॥
कर्म घातिया नाश करें फिर, केवल ज्ञान प्रकाश करें।
दिव्य देशना देकर स्वामी, मोहे तिमिर को आप हरें॥
मोक्ष प्राप्त करने की सारी, विधी आप करते सम्पूर्ण।
एक समय में सिद्ध शिला पर, जा होते सुख से आपूर्ण॥
पहले योग अभाव करें फिर, प्रकृति बहत्तर करते नाश।
अन्तिम समय नाश तेरह भी, करते हैं शिवपुर में वास॥
अ इ उ ऋ लृ उच्चारण, में जितना लगता है काल।
उतने समय में क्रिया पूर्ण कर, पाते निज पद महा विशाल॥
सिद्ध चक्र में शामिल होते, सुख अनन्त पाले सत्वर।
सिद्ध अनन्तानन्त काल तक, आप रहेंगे अजर अमर॥
लख चौरासी उत्तर गुण भी, साथ प्राप्त कर आप अनन्त।
नित्य निरञ्जन पद प्रगटाते, काल अनादि अनन्तानन्त॥
भव रज घातें निज पद पाकर, हो जाते है सिद्ध महन्त।
जिन शासन के रक्षक बनकर, महामहिम होते भगवन्त॥
तन कपूर वत उढ़े मात्र नख, केश रहें इस धरती पर।
सिद्धों की श्रेणी में जावें, आनन्दामृत वर्षा कर॥
मायामय रचना कर तन की, देव बोलते जय जयकार।
मुकुटानल से असुर देव फिर, करते हैं अग्नी संस्कार॥

प्रभु की वीतराग मुद्रा को, जिन प्रतिमाएँ प्रगटातीं।
साक्षात् तीर्थंकर जिन के, हमको दर्शन दिलवातीं।।
तीर्थंकर के पथ पर चलकर, हम भी शिव पदवी पाएँ।
कर्म श्रृखला काट शीघ्र ही, सिद्ध शिला पर हम जाएँ।।

दोहा– **आत्म तत्त्व प्रगटित करें, करके कर्म विनाश।**
इस जग को तजकर करें, सिद्ध शिला पर वास।।

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशि त्रयोदशजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

।।शांतये शांतिधारा।। पुष्पांजलि: क्षिपेत्।।

इन्द्रध्वज की पूजा करने, का अवसर शुभ आया है।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा करने, का सौभाग्य जगाया है।।
'विशद' सौख्य शांति पाते वह, जो प्रभु के गुण गाते हैं।
उच्चादर्श प्राप्त करते जो, शिखर पे ध्वजा चढ़ाते हैं।।

इत्याशीर्वाद:

नन्दीश्वर उत्तर दिक् जिनालय पूजा–38

स्थापना (रोला छंद)

नन्दीश्वर शुभ दीप उत्तर दिश में गाये।
तेरह जिनके गेह, सब में जिन बतलाए।।
महिमा अपरम्पार शाश्वत हैं अविकारी।
आह्वानन् कर आज, पद में ढोक हमारी।।

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिशि त्रयोदशजिनालयस्थजिनबिंब समूह! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। ॐ ह्रीं...अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनम्। ॐ ह्रीं...अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधीकरणं।

(वीर छन्द)

परिशुद्ध नीर यह शुद्धातम सा, हम आज चढ़ाने लाए हैं।
हम पीड़ित हैं जन्मादिक से, यह रोग नशाने आए हैं।।

हे नाथ! आपके चरणों में, हम निज का वैभव प्राप्त करें।
भव रोग अनादी दुख देते, अति शीघ्र लगे वह रोग हरें।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे उत्तरदिशि त्रयोदशजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा।

हम क्रोधानल में जलते हैं, अब समता गन्ध प्रदान करो।
यह चन्दन चरणों चढ़ा रहे, प्रभु शिव पद का अब दान करो।।
हे नाथ! आपके चरणों में, हम निज का वैभव प्राप्त करें।
भव रोग अनादी दुख देते, अति शीघ्र लगे वह रोग हरें।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे उत्तरदिशि त्रयोदशजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यो चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं चन्द्रकिरण सम अक्षत यह, हम चढ़ा रहे अक्षय कारी।
प्रभु अक्षय पद शुभ प्राप्त करें, जो तीन लोक में मनहारी।।
हे नाथ! आपके चरणों में, हम निज का वैभव प्राप्त करें।
भव रोग अनादी दुख देते, अति शीघ्र लगे वह रोग हरें।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे उत्तरदिशि त्रयोदशजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यो अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु भोगों के भ्रसरों ने मिलकर, चैतन्य सुमन का घात किया।
अब काम वाण विध्वंश हेतु, हे प्रभू आपका साथ लिया।।
हे नाथ! आपके चरणों में, हम निज का वैभव प्राप्त करें।
भव रोग अनादी दुख देते, अति शीघ्र लगे वह रोग हरें।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे उत्तरदिशि त्रयोदशजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

है अन्तर भोगी योगी में, भोगी भोगों को जीते हैं।
योगी योगों में लीन रहें, जो समता रस को पीते हैं।।
हे नाथ! आपके चरणों में, हम निज का वैभव प्राप्त करें।
भव रोग अनादी दुख देते, अति शीघ्र लगे वह रोग हरें।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे उत्तरदिशि त्रयोदशजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रद्धान ज्ञान चारित्र सुतप, से ज्ञान दीप प्रजलाएँगे।
जो शाश्वत है अक्षय अखण्ड, हम मोक्ष महा पद पाएँगे॥
हे नाथ! आपके चरणों में, हम निज का वैभव प्राप्त करें।
भव रोग अनादी दुख देते, अति शीघ्र लगे वह रोग हरें॥6॥

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे उत्तरदिशि त्रयोदशजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु दिव्य दशांगी धूपों से, तेरा प्रासाद महकता है।
उपमान शरण में भव्यों का, आ जाने से ही जगता है॥
हे नाथ! आपके चरणों में, हम निज का वैभव प्राप्त करें।
भव रोग अनादी दुख देते, अति शीघ्र लगे वह रोग हरें॥7॥

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे उत्तरदिशि त्रयोदशजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

तुमने सुरम्य शुभ नगरी में, जाकर के हे प्रभू वास किया।
जो शिव पद पाए जीव सभी, उनको तुमने ही साथ दिया॥
हे नाथ! आपके चरणों में, हम निज का वैभव प्राप्त करें।
भव रोग अनादी दुख देते, अति शीघ्र लगे वह रोग हरें॥8॥

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे उत्तरदिशि त्रयोदशजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पापी मन पावन करने को, यह पावन अर्घ्य बनाते हैं।
हम पद अनर्घ्य पाने स्वामी, यह अनुपम अर्घ्य चढ़ाते हैं॥
हे नाथ! आपके चरणों में, हम निज का वैभव प्राप्त करें।
भव रोग अनादी दुख देते, अति शीघ्र लगे वह रोग हरें॥9॥

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे उत्तरदिशि त्रयोदशजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **चिर कालिक चैतन्य में, रहते आप निमग्न।**
शांतीधारा दे रहे करो कर्म सब मग्न॥
॥शान्तये शांतिधारा॥

दोहा– **चेतन चिन्मय हे प्रभू, चित् विलाश चितलीन।**
पुष्पांजलि करते विशद, कर्म करो सब क्षीण॥
॥पुष्पांजलि क्षिपेत्॥

अर्घ्यावली

दोहा– **हे चिन्मय चिद्रूप जिन, ज्ञाता दृष्टा नाथ।**
अर्घ्य चढ़ाते भाव से, चरण झुकाते माथ॥
(मण्डलस्योपरि पुष्पांजलि क्षिपेत्)

(चौपाई)

मध्य में अञ्जन गिरी शुभ गई, कृष्ण रंग की जो कहलाई।
चैत्यालय जिस पर शुभकारी, पूज रहे हम मंगलकारी॥1॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिशी अंजनगिरीस्थित जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

अञ्जनगिरी के पूरब जानो, रम्यावापी अनुपम मानो।
दधिमुख पर चैत्यालय भाई, हैं जिनबिम्ब पूज्य सुखदाई॥2॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिशी अंजनगिरीपूर्वरम्यावापीमध्य दधि मुखपर्वतस्थित जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

रम्यावापी कोंण में भाई, दिशा श्रेष्ठ ईशान बताई।
रतिकर पर चैत्यालय गाये, तीन लोक में पूज्य बताए॥3॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिशी रम्यावापीईशानकोणे रतिकरपर्वतस्थित जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

रम्यावापी कोंण में जानो, आग्नेय में रतिकर मानो।
जिन प्रतिमाएँ हैं मनहारी, जिन चरणों में ढोक हमारी॥4॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिशी रमयावापी आग्नेयकोणे रतिकरपर्वतस्थित जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

अञ्जनगिरी दक्षिण में भाई, रमणीय वापी सुखदाई।
दधिमुख पर चैत्यालय गाये, चैत्यलोक में पूज्य बताए॥5॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिशी अंजनगिरीदक्षिणदिक्रमणीयावापिका मध्यदधिमुखपर्वतस्थित जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

रमणीया वापी शुभ जानो, आग्नेय में रतिकर मानो।
शाश्वत् जिसमें मन्दिर गाये, चैत्य पूज्य उनमें बतलाए॥6॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिशी अंजनगिरीपश्चिमदिक्रमणीयापिकामध्य दधिमुखपर्वतस्थित जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

रमणीया नैऋत्य में भाई, जिनगृह में रतिकर सुखदाई।
हैं जिनबिम्ब पूज्य मनहारी, तीन लोक में मंगलकारी॥7॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिशी रमणीयावापिकानैऋत्यकोणे रतिकरपर्वतस्थित जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

(गीतिका छन्द)

वापिका सुप्रभा पश्चिम, दिशा अञ्जनगिरी कही।
गिरी दधिमुख पे जिनालय, जिन की शुभ महिमा रही॥
जो तरण-तारण भव निवारण, लोक में जिनवर कहे।
हम अर्घ्य देते जिन चरण में, धर्म की गंगा बहे॥8॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिशी अंजनगिरी पश्चिम सुप्रभावापिकामध्येदधि मुखपर्वतस्थित जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

वापिका शुभ सुप्रभा के, नैऋत्य में रतिकर कहा।
जैन मन्दिर में प्रभू जिन, देव का आसन रहा॥
जो तरण-तारण भव निवारण, लोक में जिनवर कहे।
हम अर्घ्य देते जिन चरण में, धार्म की गंगा बहे॥9॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिशी सुप्रभावापिकानैऋत्यकोणे रतिकरपर्वतस्थित जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

सुप्रभा के कोंण वायव्य, में गिरी रतिकर कही।
गिरी श्रेष्ठ सुन्दर जिनालय, की विशद महिमा रही॥
जो तरण-तारण भव निवारण, लोक में जिनवर कहे।
हम अर्घ्य देते जिन चरण में, धर्म की गंगा बहे॥10॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिशी सुप्रभावापिकावायव्यकोणे रतिकरपर्वतस्थित जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अधर्यं निर्व.स्वाहा।

सर्वतोभद्रा सुवापी, गिरी अन्जन उत्तरम्।
बीच दधिमुख पर जिनालय, में श्री जिनवर परम्॥

जो तरण-तारण भव निवारण, लोक में जिनवर कहे।
हम अर्घ्य देते जिन चरण में, धर्म की गंगा बहे॥11॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिशी अंजनगिरीउत्तरदिक्सर्वतोभद्रावापिका मध्य दधिमुखपर्वत जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

सर्वतोभद्रा सुवापी, कोंण वायव्य में कही।
अचल रतिकर पर जिनालय, बिम्ब की महिमा रही॥
जो तरण-तारण भव निवारण, लोक में जिनवर कहे।
हम अर्घ्य देते जिन चरण में, धर्म की गंगा बहे॥12॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिशी सर्वतोभद्रावापिकावायव्यकोणे रतिकरपर्वतस्थित जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

सर्वतोभद्रा सुवापी, श्रेष्ठ दिश ईशान में।
गिरी रतिकर पर जिनालय, जिन रहें मम ध्यान में॥
जो तरण-तारण भव निवारण, लोक में जिनवर कहे।
हम अर्घ्य देते जिन चरण में, धर्म की गंगा बहे॥13॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिशी सर्वतोभद्रावापिकाईशानकोणे रतिकरपर्वतस्थित जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

दोहा– **नन्दीश्वर उत्तर दिशा, में तेरह जिन धाम।**
जिनबिम्बों को भाव से, करते विशद प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिशी त्रणोदश जिनालयस्थ जिन जिम्बेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(शम्भू छन्द)

चम्पक आम्र अशोक सप्तछद, शोभित होते वन में चार।
नन्दीश्वर की चतुर्दिशा में बावन जिन मन्दिर शुभकार॥
पूरब पश्चिम उत्तर दक्षिण, तेरह-तेरह का विस्तार।
एक सौ आठ बिम्ब प्रति मंदिर, के पद वन्दन बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्री अष्टमद्वीपनन्दीश्वर संबंधित द्विपंचाशज्जिनालयस्थ सहस षड्शतक शोडष जिनबिंबेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य–ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपस्थद्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनबिंबेभ्यो नमः स्वाहा।

जयमाला

दोहा– **दर्शन कैसे हों प्रभो! हम बैठे हैं दूर।**
जयमाला गाते विशद, भावों से भरपूर।।

(चाल टप्पा)

नन्दीश्वर के जिनबिम्बों की, फैली प्रभुताई।
अर्चा करने देव अठाई, में जाते भाई।।
सभी मिल पूजा हो भाई।।
दक्षिण दिश के तेरह जिनगृह, पूजो मिल भाई॥ सभी...॥1॥
निज परिवार साथ में लाके, पूजें हर्षाई।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, हैं मंगलदायी॥सभी..॥2॥
रत्नमयी जो द्रव्य मनोहर, लाते हैं भाई।
जिन अर्चा करते है जिनने, भाव शुद्धि पाई॥ सभी....॥3॥
चमत्कार दिखलाने वाली, जिन मुद्रा पाई।
सुर नरेन्द्र देवेन्द्रों ने भी, शुभ महिमा गाई॥ सभी....॥4॥
अनुपम अचल चैत्य हैं शाश्वत, जिनगृह में भाई।
देवों ने जिनगृह के ऊपर, ध्वज आ फहराई॥ सभी....॥5॥
काम धेनु चिन्तामणी सुरतरु, सम महिमा गाई।
भक्त जनों ने श्री जिनपद में, ऋद्धि सिद्धि पाई॥ सभी....॥6॥
नर विद्याधर ने जाने की, शक्ती नहिं पाई।
श्रद्धावान श्रावकों ने यहाँ, रचना करवाई॥ सभी....॥7॥
जिन दर्शन की श्रेष्ठ भावना, हमने भी भाई।
शिव पद के राही बन जाएँ, बनके अनुयायी॥ सभी मिल....॥8॥
'विशद' भाव से अर्चा करके, जिनपद में भाई।
परम्परा से संयम धरके, मुक्ती श्री पाई॥ सभी मिल....॥9॥

(घत्ता छंद)

जय जय अविकारी, मंगलकारी, श्री जिनवर की प्रतिमाएँ।
जो हैं भवहारी, शिव कर्तारी, जिन के हम दर्शन पाएँ।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे उत्तरदिशि त्रयोदशजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

।।शांतये शांतिधारा।। पुष्पांजलिः क्षिपेत्।।

इन्द्रध्वज की पूजा करने, का अवसर शुभ आया है।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा करने, का सौभाग्य जगाया है।।
'विशद' सौख्य शांति पाते वह, जो प्रभु के गुण गाते हैं।
उच्चादर्श प्राप्त करते जो, शिखर पे ध्वजा चढ़ाते हैं।।

इत्याशीर्वादः

कुण्डल गिरी चतुर्दिक जिनालय पूजन–39

स्थापना

कुण्डल द्वीप रहा ग्यारहवाँ, चूड़ी सदृश वलयाकार।
कुण्डलगिरी है मध्य में जिसके, कनक वर्ण मय अपरम्पार॥
तुंग शिखर पर चारों दिश में, शोभित होते जिन के धाम।
जिनबिम्बों का आह्वानन् कर, करते बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्रीकुण्डलपर्वतस्योपरि सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबसमूह! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। ॐ ह्रीं...अत्र तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। ॐ ह्रीं...अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधीकरणं।

(विष्णुपद छंद)

जन्म मरण के नाश हेतु प्रभु, चरणों जल लाए।
राग आग से जले अनादी, शरण नाथ आए॥
कर्म क्षयंकर आप कहाए, हे जिनवर स्वामी।
भव दुख से अब हमे छुड़ाओ, हे! अन्तर्यामी॥1॥

ॐ ह्रीं श्रीकुण्डलगिरीसिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः जलं निर्व.स्वाहा।

चन्दन से भी अनुपम सुरभित, जिन गुण हैं भाई।
भवाताप के नाश हेतु जिन, पद पूजो भाई॥
कर्म क्षयंकर आप कहाए, हे जिनवर स्वामी।
भव दुख से अब हमे छुड़ाओ, हे! अन्तर्यामी॥2॥

ॐ ह्रीं श्रीकुण्डलगिरीसिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः चंदनं निर्व.स्वाहा।

नश्वर पद का क्षयकर अक्षय, पद पाने आए।
धवल मनोहर अक्षय अक्षत, श्रेष्ठ यहाँ लाए॥

कर्म क्षयंकर आप कहाए, हे जिनवर स्वामी।
भव दुख से अब हमे छुड़ाओ, हे! अन्तर्यामी।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीकुण्डलगिरीसिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: अक्षतं निर्व.स्वाहा।

खिलने वाले सुमन शाम को, निश्चय मुरझाते।
ज्ञानोपवन में खिलें फूल जो, हर दम महकाते।।
कर्म क्षयंकर आप कहाए, हे जिनवर स्वामी।
भव दुख से अब हमे छुड़ाओ, हे! अन्तर्यामी।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीकुण्डलगिरीसिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: पुष्पं निर्व.स्वाहा।

भोजन करके क्षुधा मिटेगी, यह जग ने जाना।
ज्ञानमृत से रोग नाश हो, हमने पहचाना।।
कर्म क्षयंकर आप कहाए, हे जिनवर स्वामी।
भव दुख से अब हमे छुड़ाओ, हे! अन्तर्यामी।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीकुण्डलगिरीसिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: नैवेद्यं निर्व.स्वाहा।

हो प्रवेश चेतन गृह में अब, मन में यह आया।
अत: चरण में रत्नमयी यह, दीपक प्रजलाया।।
कर्म क्षयंकर आप कहाए, हे जिनवर स्वामी।
भव दुख से अब हमे छुड़ाओ, हे! अन्तर्यामी।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीकुण्डलगिरीसिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: दीपं निर्व.स्वाहा।

कर्मों का स्वरूप जानकर, आज यहाँ आए।।
हो विनाश इनका हे स्वामी, चरणों सिरनाए।।
कर्म क्षयंकर आप कहाए, हे जिनवर स्वामी।
भव दुख से अब हमे छुड़ाओ, हे! अन्तर्यामी।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीकुण्डलगिरीसिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: धूपं निर्व.स्वाहा।

सुफल पुण्य का पाने हमने, बहु पुरुषार्थ किया।
मोक्ष महाफल का आस्वादन, अब तक नहीं लिया।।
कर्म क्षयंकर आप कहाए, हे जिनवर स्वामी।
भव दुख से अब हमे छुड़ाओ, हे! अन्तर्यामी।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीकुण्डलगिरीसिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: फलं निर्व.स्वाहा।

पर द्रव्यों में अटक रहे हम, निज से अन्जाने।
चरण शरण में आये हैं प्रभू, पद अनर्घ पाने।।

कर्म क्षयंकर आप कहाए, हे जिनवर स्वामी।
भव दुख से अब हमे छुड़ाओ, हे! अन्तर्यामी।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीकुण्डलगिरीसिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

दोहा– **तारागण में सूर्य सम, शोभित होते नाथ।**
शांती पाने हम खड़े, चरण झुकाते माथ।।
।।शान्तये शांतिधारा।।

दोहा– **महिमा वर्णन में कोई, दिखता नहीं समर्थ।**
पुष्पांजलि करते चरण, हम शिव पद के अर्थ।।
।।पुष्पांजलि क्षिपेत्।।

अर्घ्यावली

दोहा– **कुण्डल गिरी के शीश पर, हैं श्री जिन के धाम।**
पुष्पांजलि कर पूजते, करके विशद प्रणाम।।
(मण्डलस्योपरि पुष्पांजलि क्षिपेत्)

कुण्डल गिरी पर पूर्व दिशा में, पाँच कूट बतलाए हैं।
अभ्यन्तर के सिद्ध कूट पर, जिन मन्दिर जी गाए हैं।।
शोभित हैं जिनबिम्ब एक सौ, आठ परम मंगलकारी।
जिनपद अर्घ्य चढ़ाकर करते, वन्दन हम भी शुभकारी।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीकुण्डलगिरीपूर्वदिक्सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कुण्डलगिरी कुण्डल सम ऊँची, सहस पचहत्तर है योजन।
पाँच कूट हैं दक्षिण दिश में, हैं जिनगृह अभ्यन्तर पावन।।
शोभित हैं जिनबिम्ब एक सौ, आठ परम मंगलकारी।
जिनपद अर्घ्य चढ़ाकर करते, वन्दन हम भी शुभकारी।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीकुण्डपर्वतस्योपरि दक्षिणदिक्सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

अकृत्रिम कुण्डल गिरी ऊपर, अकृत्रिम है जिन का धाम।
पंच कूट में सिद्ध कूट पर, अभ्यन्तर पश्चिम दिश जान।।

शोभित हैं जिनबिम्ब एक सौ, आठ परम मंगलकारी।
जिनपद अर्घ्य चढ़ाकर करते, वन्दन हम भी शुभकारी॥3॥

ॐ ह्रीं श्रीकुण्डपर्वतस्योपरि पश्चिमदिक्सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

कुण्डल गिरी पर उत्तर दिश में, जिन मंदिर हैं महिमावंत।
पंच कूट के अभ्यन्तर में, अकृत्रिम हैं जिन अरहंत॥
शोभित हैं जिनबिम्ब एक सौ, आठ परम मंगलकारी।
जिनपद अर्घ्य चढ़ाकर करते, वन्दन हम भी शुभकारी॥4॥

ॐ ह्रीं श्रीकुण्डपर्वतस्योपरि उत्तरदिक्सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

कुण्डल गिरी पे पूरव पश्चिम, उत्तर दक्षिण दिशा महान।
अभ्यन्तर के कूटों पर जिन, मन्दिर में सोहें भगवान॥
शोभित हैं जिनबिम्ब एक सौ, आठ परम मंगलकारी।
जिनपद अर्घ्य चढ़ाकर करते, वन्दन हम भी शुभकारी॥5॥

ॐ ह्रीं श्रीकुण्डपर्वतस्योपरि चतुर्दिक्सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्व.स्वाहा।

।।शांतये शांतिधारा।। पुष्पांजलिः क्षिपेत्।।

जाप्य–ॐ ह्रीं अर्हं शाश्वत् जिनालयस्थसर्वजिनबिंबेभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा– **त्रिभुवन के स्वामी प्रभो! परम ज्योति अर्हन्त।**
जयमाला गाते यहाँ, हो कर्मों का अन्त॥

(छंद तामरस)

कुण्डल गिरी जिनधाम नमस्ते, करके चरण प्रणाम नमस्ते।
श्री जिनेन्द्र के गेह नमस्ते, जिनपद में कर नेह नमस्ते॥
पूरव के जिनराज नमस्ते, तारण तरण जहाज नमस्ते।
दक्षिण कीन्हें वास नमस्ते, करते पूरण आस नमस्ते॥
पश्चिम के तीर्थेश नमस्ते, जिनपद युगल विशेष नमस्ते।

उत्तर के भगवान नमस्ते, करते हम गुणगान नमस्ते॥
वीतराग अरहंत नमस्ते, तीर्थंकर गुणवन्त नमस्ते।
ज्ञान ध्यान गुणवान नमस्ते, वीतराग विज्ञान नमस्ते॥
सम्यक् चारित धार नमस्ते, महाव्रतीअनगार नमस्ते।
मिथ्या मोह विनाश नमस्ते, करते ज्ञान प्रकाश नमस्ते॥
मुक्ती रमा पति वीर नमस्ते, परमौदार्य शरीर नमस्ते।
दयावान गुणधीर नमस्ते, जय जय गुण गम्भीर नमस्ते॥
आतम ब्रह्म विहार नमस्ते, हरते आप विकार नमस्ते।
कर्म मर्म परिहार नमस्ते, जय जय अधम उद्धार नमस्ते॥
देवों के भी देव नमस्ते, संकटहार सदैव नमस्ते।
ऋद्धीधार ऋषीश नमस्ते, वाणी पति वागीश नमस्ते॥
दिव्य देशना वान नमस्ते, जय अर्हत् भगवान नमस्ते।
भवि जीवों के शरण नमस्ते, हे जिन तारण तरण नमस्ते॥
चरणों आते इन्द्र नमस्ते, अर्चा करें शतेन्द्र नमस्ते।
हे प्रभु जगताधार नमस्ते, पद में बारम्बार नमस्ते॥
अतिशय महिमावान नमस्ते, गुण अनन्त की खान नमस्ते।
अकृत्रिम जिन धाम नमस्ते, करते विशद प्रणाम नमस्ते॥

(छंद घत्तानंद)

जय जय जिन स्वामी, अन्तर्यामी, परमधरम धन के धारी।
जय शिव पथ गामी, चरण नमामी, वीतराग जिन अविकारी॥

ॐ ह्रीं श्रीकुण्डपर्वतस्योपरि चतुर्दिक्सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

।।शांतये शांतिधारा।। पुष्पांजलिः क्षिपेत्।।

इन्द्रध्वज की पूजा करने, का अवसर शुभ आया है।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा करने, का सौभाग्य जगाया है॥
'विशद' सौख्य शांति पाते वह, जो प्रभु के गुण गाते हैं।
उच्चादर्श प्राप्त करते जो, शिखर पे ध्वजा चढ़ाते हैं॥

इत्याशीर्वादः

रुचक गिरी चतुर्दिक जिनालय पूजा–40

स्थापना

तेरहवाँ है दीप रुचकवर, जिसके मध्य गिरि वलयाकार!
अचल रुचकवर सहस चौरासी, योजन है जिसका विस्तार॥
ऊँचाई इतनी ही जानो, जिसके, ऊपर हैं जिनधाम।
जिनबिम्बों का आह्वानन् कर, करते पद में विशद प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्रीरुचकवरपर्वत स्योपरि सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। ॐ ह्रीं...अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं...अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

(ज्ञानोदय छंद)

है स्वभाव जल का शीतल शुभ, तन मन को निर्मल करता।
निज स्वरूप में रहे लीन जो, जन्म जरादिक वह हरता॥
नाथ आपके चरण शरण की, भक्ती शिव फल देती है।
भक्तों के जीवन के संकट, क्षण भर में हर लेती है॥1॥

ॐ ह्रीं श्रीरुचकवरपर्वतस्योपरि सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन सम शीतल हे जिनवर, भक्त हृदय शीतल करते।
भव सन्ताप आप करुणाकर, क्षण में पूर्ण रूप हरते॥
नाथ आपके चरण शरण की, भक्ती शिव फल देती है।
भक्तों के जीवन के संकट, क्षण भर में हर लेती है॥2॥

ॐ ह्रीं श्रीरुचकवरपर्वतस्योपरि सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

नश्वर पद में अटक रहे हम, शाश्वत् पद ना जान सके।
नहीं मिला विश्राम जरा भी, भटक-भटक कर स्वयं थके॥
नाथ आपके चरण शरण की, भक्ती शिव फल देती है।
भक्तों के जीवन के संकट, क्षण भर में हर लेती है॥3॥

ॐ ह्रीं श्रीरुचकवरपर्वतस्योपरि सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

सुमन चढ़ाते हैं हम जो भी, सारे वह मुरझा जाते।
ज्ञान सुमन हे नाथ! आप हो, सदा सदा ही महकाते॥
नाथ आपके चरण शरण की, भक्ती शिव फल देती है।
भक्तों के जीवन के संकट, क्षण भर में हर लेती है॥4॥

ॐ ह्रीं श्रीरुचकवरपर्वतस्योपरि सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

जड़ पुदगल को छोड़ प्रभू अब, समता रस का पान करें।
क्षुधा रोग यह लगा अनादी, इसकी सत्ता पूर्ण हरें॥
नाथ आपके चरण शरण की, भक्ती शिव फल देती है।
भक्तों के जीवन के संकट, क्षण भर में हर लेती है॥5॥

ॐ ह्रीं श्रीरुचकवरपर्वतस्योपरि सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह तिमिर में सत्य शिवं का, ज्ञान नहीं हो पाता है।
विशद ज्ञान का दीपक क्षण में, तम को पूर्ण नशाता है॥
नाथ आपके चरण शरण की, भक्ती शिव फल देती है।
भक्तों के जीवन के संकट, क्षण भर में हर लेती है॥6॥

ॐ ह्रीं श्रीरुचकवरपर्वतस्योपरि सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

ध्यान अग्नि से कार्य शुभाशुभ, का विनाश हो जाता है।
धूप सुगन्धित है निज गुण ही, भव्य जीव जो पाता है॥
नाथ आपके चरण शरण की, भक्ती शिव फल देती है।
भक्तों के जीवन के संकट, क्षण भर में हर लेती है॥7॥

ॐ ह्रीं श्रीरुचकवरपर्वतस्योपरि सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अज्ञानी कुछ कार्य के पीछे, कल की आशा रखते हैं।
निस्पृह होकर अर्चा करने, वाले शिवफल चखते हैं॥
नाथ आपके चरण शरण की, भक्ती शिव फल देती है।
भक्तों के जीवन के संकट, क्षण भर में हर लेती है॥8॥

ॐ ह्रीं श्रीरुचकवरपर्वतस्योपरि सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पद अनर्घ जब तक ना पाया, हे प्रभु दर पे आयेंगे।
अर्घ्य चढ़ाते हैं तव पद में, निश्चय शिव पद पाएँगे।।
नाथ आपके चरण शरण की, भक्ती शिव फल देती है।
भक्तों के जीवन के संकट, क्षण भर में हर लेती है।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीरुचकवरपर्वतस्योपरि सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **विशद ज्ञान के कोष जिन, करुणा के भण्डार।**
शिव पद पाने के लिए, देते शांती धार।।

।।शान्तये शांतिधारा।।

दोहा– **तुमने पाए सुगुण जिन, कीन्हें दोष विनाश।**
पुष्पांजलि करते यहाँ, पाने शिवपुर वास।।

।।पुष्पांजलि क्षिपेत्।।

अर्घ्यावली

दोहा– **रुचक गिरी पर चतुर्दिक, हैं जिनेन्द्र के धाम।**
अर्घ्य चढ़ाते हम यहाँ, करते चरण प्रणाम।।

(नरेन्द्र छंद)

तेरहवाँ है दीप रुचकरवर, अतिशय शोभा कारी।
वलयाकार रुचक गिरि सोहे, मध्य में जन मनहारी।।
पूर्व दिशा में जिन चैत्यालय, जिसके ऊपर पाएँ।
एक सौ आठ जिनेश्वर प्रतिमा, के पद अर्घ्य चढ़ाएँ।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीरुचकवरपर्वतस्योपरि पूर्वदिक्सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दक्षिण दिश में रुचक गिरी पर, रत्नमयी मनहारी।
जिनमन्दिर जिनबिम्बों युत है, अतिशय महिमाकारी।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य यहाँ पर, जिनपद आज चढ़ाते।
तीन योग से नत हो चरणों, सादर शीश झुकाते।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीरुचकवरपर्वतस्योपरि दक्षिणदिक्सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्णाभा मय रुचक गिरी पर, पश्चिम दिश मे भाई।
सिद्ध कूट में जिन मन्दिर शुभ, शोभित है सुखदायी।।

अष्ट द्रव्य का अर्घ्य यहाँ पर, जिनपद आज चढ़ाते।
तीन योग से नत हो चरणों, सादर शीश झुकाते।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीरुचकवरपर्वतस्योपरि पश्चिमदिक्सिद्धकूटजिनालयस्थ जिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्णमयी कांती युत शाश्वत, रुचक गिरी पर जानो।
उत्तर दिश में जिनगृह अनुपम, जिन प्रतिमा युत मानो।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य यहाँ पर, जिनपद आज चढ़ाते।
तीन योग से नत हो चरणों, सादर शीश झुकाते।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीरुचकवरपर्वतस्योपरि उत्तरदिक्सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वलयाकार रुचक गिर सुन्दर, कंचन वर्ण बताई।
पूरव दक्षिण पश्चिम उत्तर, चउ दिश जिनगृह भाई।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य यहाँ पर, जिनपद आज चढ़ाते।
तीन योग से नत हो चरणों, सादर शीश झुकाते।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीरुचकवरपर्वतस्योपरि चतुर्दिकसिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

।।शांतये शांतिधारा।। पुष्पांजलि: क्षिपेत्।।

जाप्य–ॐ ह्रीं अर्हं शाश्वत् जिनालयस्थसर्वजिनबिंबेभ्यो नम:।

जयमाला

दोहा– **रुचक गिरी पर जो रहे, श्री जिनेन्द्र के धाम।**
गाते हम गुणमाल यह, करते चरण प्रणाम।।

(चौपाई)

दीप रुचकवर है शुभकारी, वलयाकार रहा मनहारी।
रुचक गिरी पर जिनगृह जानो, चार दिशाओं में शुभ मानो।।
जिनगृह में जिन मंगलकारी, शोभा पाते जिन अविकारी।
देव लोग भक्ती को जाते, श्री जिनवर की महिमा गाते।।
अष्ट द्रव्य का पात्र सजाते, भक्ति भाव से पूज रचाते।
जिन चरणों में शीश झुकातें, भाव सहित जयकार लगाते।।
हम भी शरण प्राप्त कर स्वामी, बनें मोक्ष पथ के अनुगामी।
जागे यह सौभाग्य हमारा, तव पद का मिल जाए सहारा।।
यही भाव लेकर हम आये, अष्ट द्रव्य का थाल सजाए।

भाव बना जो चरणों आते, अपने वह सौभाग्य सजाते॥
जो श्रद्धा के सुमन चढ़ाते, वह जीवन में शांती पाते।
आप जगत में हो कल्याणी, तुमसे जीवन पाते प्राणी॥
किसी को नाग नरेश बनाते, किसी को स्वर्ग निवास दिलाते।
कोई पाए तुमसे माया, कोई पाए शीतल छाया॥
कोई चरण शरण को पाए, सेवा कर सौभाग्य जगाए।
कोई दिव्य देशना पाते, कोई दर्शन कर हर्षाते॥
शिवपुर की तुम राह दिखाते, भक्तों को भगवान बनाते।
जब से द्वार आपके आये, आप मेरे आराध्य कहाए॥
कृपा दृष्टि मुझ पर प्रभू कीजे, चरण शरण में हमको लीजे।
शिव पथ के राही बन जाएँ, भव सिन्धू से मुक्ती पाएँ॥
जग में तुम हो पार करैया, पार लगाओ मेरी नैया।
अपने सारे कर्म नशाए, 'विशद' ज्ञान पा शिवपुर जाएँ॥

दोहा– जीवन पावन हो मेरा, पावन मन वच काय।
पावन हो मम आत्मा, मुक्ती पद मिल जाय॥

ॐ ह्रीं श्रीरुचकवरपर्वतस्योपरि दक्षिणदिक्सिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिंबेभ्य: जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

।।शांतये शांतिधारा।। पुष्पांजलि: क्षिपेत्।।

इन्द्रध्वज की पूजा करने, का अवसर शुभ आया है।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा करने, का सौभाग्य जगाया है॥
'विशद' सौख्य शांति पाते वह, जो प्रभु के गुण गाते हैं।
उच्चादर्श प्राप्त करते जो, शिखर पे ध्वजा चढ़ाते हैं॥

इत्याशीर्वाद:

समुच्चय जयमाला

दोहा– पर्वत जिनगृह जिन सभी, शाश्वत् रहे त्रिकाल।
विशद समुच्चय अब यहाँ, गाते हैं जयमाल॥

(पद्धड़ी छंद)

जिनगृह जिनवर के मूर्तिमंत, जिनका होता ना आदि अंत।
है तेज निराला सूर्यकान्त, जिन शांती सुधामय चद्रकांत॥

जयवन्त पंच मेरू प्रधान, जिनगृह जिन में अस्सी महान।
विंशति कहलाए नागदंत, तरु दश गाते हैं जैन संत॥
वक्षार कहे अस्सी महान, जिनगृह जिनवर की रही शान।
सत्तर इक सौ हैं जैन धाम, रजताचल पर जिनको प्रणाम॥
शुभ रहे कुलाचल श्रेष्ठ तीस, जिनगृह में झुकते नराधीश।
इष्वाकारों पर रहे चार, जिनकी महिमा का नहीं पार॥
मानुषोत्तर गिरी पर भी महान, चारों दिश में जिनगृह प्रधान।
यह ढाई द्वीप के हैं विशेष, जिनगृह में शोभित हैं जिनेश॥
नन्दीश्वर अष्टमद्वीप जान, जिसकी है अपनी अलग शान।
जिसकी बतलाई दिशा चार, तेरह-तेरह हैं जिनागार॥
पूरव अंजन गिरि मध्य एक, जिनगृह को वन्दन माथ टेक।
दधिमुख बतलाए दिशा चार, जिन पर सोहें शुभ जिनागार॥
दधिमुख के कोनों में महान, वसु रतिकर शोभित हैं प्रधान।
चारों ही दिश में इस प्रकार, पावन होते हैं जिनागार॥
कुण्डलगिरी कुण्डल के समान, है दीप ग्यारहवें में महान।
जिसके ऊपर भी बने चार, जिन प्रतिमाओं के जिनागार॥
है रुचक गिरी की अलग शान, चारों दिश में जिन गेहमान।
जिनगृह अट्ठावन शतक चार, सब बतलाए हैं इस प्रकार॥
मंदिर का उत्तम शुभ प्रमाण, लघु का भी करते हैं बखान।
सौ योजन के लम्बे महान, योजन पचास चौड़ाई जान॥
ऊँचाई पचहत्तर है प्रमाण, योजन जिनगृह की श्रेष्ठ मान।
मेरू के नन्दन भद्रशाल, नन्दीश्वर के पावन विशाल॥
इनका उत्तम जानो प्रमाण, आगे का मध्यम कहा मान।
मध्यम लम्बे योजन पचास, चौड़ाई पच्चिस रही खास॥
ऊँचे साड़े सैंतीस जान, जैनागम का यह कथन मान।
वन सुमनस होवे या वक्षार, गिरीवर होवे या इस्वाकार॥
मानुषोत्तर कुण्डलगिरी जान, शुभ रुचक गिरी महान।
आगे जघन्य कहते प्रमाण, मध्यम से आधा रहा मान॥
पाण्डुक वन के जिनगृह महान, जिनका आता इसमें विधान।
रूपाचल जम्बू आदि वृक्ष, केवल ज्ञानी गाते प्रत्यक्ष॥
लम्बाई जानो एक कोष, चौड़ाई जिनकी अर्ध कोष।
है पोंन कोष ऊँचे विशेष, जिनगृह में सोहें श्री जिनेश॥
जिनको घेरे हैं तीन साल, हैं चार दिशा में चार द्वार।
वीथिका में मानस्तंभ एक, नव-नव स्तूपों युक्त नेक॥

मणि कोट प्रथम अन्तराल जान, ध्वज द्वितिय कोट अन्तराल मान।
है तृतिय कोट के मध्य भाग, शुभ चैत्य भूमिका है विभाग॥
प्रति मन्दिर में है गर्भ गेह, शत आठ कहे जिनराज ये।
सिंहासन है जिसमें महान, जिसके ऊपर जिन विद्यमान॥
वैडूर्य मणी के वने केश, हैं दंत वज्रमय शुभ विशेष।
बतलाए ओंष्ठ मूंगे समान, कोंपल सम पग कर हैं महान॥
दश ताल प्रमित लक्षण विशेष, मानो हमको वह रहे देख।
हैं उच्च पाँच सौ धनुष देव, पद्मासन में सोहें सदैव॥
बत्तीस युगल में यक्ष आन, शुभ चँवर ढौरते हैं महान।
श्री देवी श्रुत देवी विचार, सर्वाण्ह यक्ष अरु सनत कुमार॥
इनकी भी मूर्ती रही पास, जो दोय पार्श्व में करें वास।
हैं अष्ट द्रव्य महामंगलीक, अत्यन्त रहे जो शोभनीक॥
प्रत्येक एक सौ आठ जान, शुभ देवच्छंद सोहे महान।
द्वारों पर दोनों पार्श्व जान, चौबिस हजार हैं धूपदान॥
मणिमय मालाएँ अठ हजार, हैं स्वर्णमाल चौबिस हजार।
मुख मण्डप में सोलह हजार, घट हेम के शोभित हैं अपार॥
मालाएँ धूप घट की महान, इतनी बतलाई हैं प्रधान।
मणिमय किंकणियों युक्त जान, जहाँ श्रेष्ठ घंटिकाएँ महान॥
इत्यादिक महिमा युक्त द्वार, पूरव का जानो इस प्रकार।
दक्षिण उत्तर में लघू द्वार, मालादिक आधे वस्तु सार॥
मंदिर में जाए पृष्ट भाग, मालादि का जानो विभाग।
मणिमय मालाएँ अठ हजार, शुभ कनक माल चौबिस हजार॥
मुख मण्डप के भी अग्र आय, प्रेक्षा मण्डप शोभा दिखाय।
वन्दन अभिषेक मण्डप अनादि, क्रीड़ा संगीत के हैं ग्रहादि॥
गुण नर्तन गृह भी हैं विशाल, शुभ चित्र भवन जानो त्रिकाल।
मणि पीठ पे हैं स्तूप सार, शुभ पद्म वेदियाँ हैं अपार॥
प्रत्येक चार द्वारों संयुक्त, स्तूप हैं बारह वेदि युक्त।
स्तूप रत्नमय हैं विशेष, जिनके अन्दर सोहें जिनेश॥
मणि पीठ पे मणिमय तीन शाल, सिद्धार्थ चैत्य तरु हैं विशाल।
चउ योजन का स्कंध लम्ब, इक योजन चौड़ें रत्न खम्ब॥
द्वादश योजन लम्बी महान, महा शाखाएँ चउ हैं प्रधान।
भूकाय तरू कोई लघु शाख, द्वादश योजन विस्तार भाग॥
फल फूल पत्र रत्नादि वान, परिवार वृक्ष भी कई जान।
इक लाख और चालिस हजार, हैं बीस एक सौ और सार॥

सिद्धार्थ वृक्ष पर सिद्ध बिम्ब, हैं चैत्य पे जिन अरहंत बिम्ब।
चउ दिश में जानो चार-चार, प्रतिमा के आगे ध्वज अपार॥
जिन भवन के चारों दिशा ओर, दश चिन्ह शोभते गरुण मोर।
रवि शशि वृष हस्ती सिंहराज, शुभ कमल चक्र अरु हंसराज॥
ध्वज एक सौ आठ प्रति चिन्हवान, लघु प्रति ध्वज हैं इतने महान।
सब ध्वज बतलाए लाख चार, अस्सी अठ सौ सत्तर हजार॥
ध्वज रत्न मई कई रंग रूप, रत्नों से निर्मित हैं अनूप।
ध्वज खम्ब सोल योजन प्रमाण, इक कोष रहे चौड़े महान।
ध्वज पीठ के आगे भवन मांहि, चउ सरवर की शोभा दिखाहिं॥
मणिमय प्रसाद दो उभय जान, तोरण आगे मणिमय महान।
माला अरु घंटी युक्त जान, मणिमय जिनगृह जिनबिम्ब मान॥
है प्रथम कोट के बाद चार, वन शोभा पाते हैं अपार।
सप्तच्छद चम्पक आम जान, शुभ हैं अशोक जिसमें प्रधान॥
है दश प्रकार के कल्प वृक्ष, वन मध्य शोभते चैत्य वृक्ष।
फिर चौथी वीथी मध्य भाग, शुभ मानस्तम्भ के अग्रभाग॥
जिनबिम्ब शोभते हैं महान, है मानस्तम्भ कई विभव वान।
इत्यादिक वर्णन कहा अल्प, मुझ अज्ञानी का रहा जल्प॥
गणधर पाते हैं ज्ञान चार, फिर भी कहने में रहे हार।
जिह्वा असंख्य पाके महान, वर्णन कर पाना कठिन जान॥
हम तो अज्ञानी हैं अनाथ, लघु वर्णन कीन्हा यहाँ नाथ।
तव भक्ती को प्रभु हृदय हार, धारण कर वन्दन बार-बार॥
हम जोड़ रहे प्रभु दोय हाथ, दो जन्म जन्म तक मुझे साथ।
विनती पर देना प्रभू ध्यान, अब पायें हम भी 'विशद' ज्ञान॥

दोहा– भाव शुद्धि से भव नशे, कहते हैं तीर्थेश।
चरण वन्दना कर विशद, पाओ निज स्वदेश॥

ॐ ह्रीं मध्यलोकसंबंधि चतु:शताष्टपंचाशत् जिनचैत्यालयस्थजिनबिंबेभ्यो नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

।।शांतये शांतिधारा।। पुष्पांजलिः क्षिपेत्।।

इन्द्रध्वज की पूजा करने, का अवसर शुभ आया है।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा करने, का सौभाग्य जगाया है॥
'विशद' सौख्य शांति पाते वह, जो प्रभु के गुण गाते हैं।
उच्चादर्श प्राप्त करते जो, शिखर पे ध्वजा चढ़ाते हैं॥

इत्याशीर्वादः

(आरती इन्द्रध्वज विधान की)

तर्ज–भक्ति वेकरार है...

सिद्धों का दरबार है, अतिशय मंगलकार है।
भक्ति भाव से आज यहाँ पर, हो रही जय जयकार है॥
भूत भविष्यत वर्तमान, के त्रैकालिक जिन सिद्ध कहे।
अष्ट कर्म से रहित प्रभू जी, ज्ञान शरीरी आप रहे॥ सिद्धों का...॥

मध्य लोक में मणिमय शाश्वत, जैन गेह अविचल गाये।
जिनमें श्री जिनबिम्ब रत्नमय, अनुपम शुभ शोभा पाये॥ सिद्धों का...॥

चार सौ अट्ठावन शुभ जिनगृह, तेरह दीपों में गाये।
जिनवर एक सौ आठ एक जिन, गृह में पावन बतलाए॥ सिद्धों का...।

कनक मयी सिंहासन पर जिन, पद्मासन से शोभ रहे।
काल अनादि अनन्त प्रभू जी, प्रातिहार्य संयुक्त कहे॥ सिद्धों का...॥

श्री देवी श्रुत देवी प्रभू के, आर्श्व पार्श्व शोभा पाएँ।
उभय लक्ष्मी धारी हैं जिन, ऐसी महिमा बतलाएँ॥ सिद्धों का...॥

भक्ति भाव से इन्द्र सभी मिल, अर्चा करने आते हैं॥
जिन मंदिर के ऊपर खुश हो, अनुपम ध्वजा चढ़ाते हैं॥ सिद्धों का...॥

इन्द्र ध्वज विधान करके हम, जिनकी आरति गाते हैं।
'विशद' भाव से नत हो चरणों, सादर शीश झुकाते हैं॥ सिद्धों का...॥

---

lk/kuk dks J¼k dk vk/kkj nsdj rks ns[kks]
mikluk dks HkfDr ls J`axkj djds rks ns[kksA
rqEgkjk ;g thou peu gks tk;sxk esjs cU/kq]
Hkkouk dks vkpj.k dk migkj nsdj rks ns[kksAA

प्रशस्ति

(चौबोला छन्द)

कर्म घातिया नाश करें जो, बनते वह प्राणी अर्हन्त।
सिद्ध शिला पर शोभित होते, त्रिभुवन वंदित सिद्ध अनन्त॥

अकृत्रिम है ढाई द्वीप में, शाश्वत श्रीजिनवर के धाम
रत्नत्रय कृत्रिम बिम्बों पद, मेरा बारम्बार प्रणाम॥

लोकालोक के मध्य में अनुपम, मध्य लोक है अपरम्पार।
जम्बूद्वीप में भरत क्षेत्र है, आर्य खण्ड जिसमें शुभकार॥

राजधानी दिल्ली भारत की, शंकर नगर यहाँ पर आन।
क्षुल्लक दीक्षा हुआ महोत्सव, पूर्ण हुआ यह यहाँ विधान॥

वीर निर्वाण पच्चिस सौ भाई, उन्तालिस यह रहा प्रधान।
माघ कृष्ण एकादशि पावन, इन्द्र ध्वज यह लिखा विधान॥

मूल संघ कुन्दकुन्द अम्नाय में, सेन गच्छ गाया शुभकार।
जिसमें हुए आचार्य अनेकों, जिनको वन्दन बारम्बार॥

आदि सागराचार्य अंकली, कर को करते पद वन्दन।
महाचार्य महावीर कीर्ति अरु, विमल सिन्धु को विशद नमन॥

विमल सिन्धु के शिष्य हुए हैं, विराग सागर जी जिनका नाम।
मुनि दीक्षा दी जिनने हमको, उनके पद में विशद प्रणाम॥

पट्टाचार्य विमल सिन्धू के, भरत सागर जी हुए ऋषीश।
पद आचार्य प्रतिष्ठा दाता, के पद झुका रहे हम शीश॥

देव शास्त्र गुरु का शुभ मेरे, सिर पर यह आशीश रहा।
जैनागम का ज्ञान मिला अरु, काव्य शास्त्र की कला अहा॥

अल्प बुद्धि के बालक हैं हम, लेखन का कुछ कार्य किया।
पद्यानुवाद कुछेक ग्रन्थों का, करने में समय दिया॥

चौबिस जिनवर के विधान की, रचना में उपयोग लगा।
अन्य श्रेष्ठ रचनाओं के शुभ, करने में मेरा भाग्य जगा॥

श्री विश्व भूषणाचार्य रचित, संस्कृत में इन्द्रध्वज विधान।
हिन्दी में ज्ञानमती आर्यिका, स्वस्ति भूषण ने लिखा जान॥

श्री मार्दव सागर मुनिवर का, रचना का आग्रह शुभ आया।
अतएव इन्द्रध्वज यह विधान, शुभ भावों से जो लिख पाया॥

जिन आगम सागर है अथाह, जिसका दिखता कहीं पार नहीं।
फिर भी इस ग्रन्थ के लेखन में, रह गई हो मुझसे त्रुटी कहीं॥

विद्वत जन पढ़कर के त्रुटि को, शुभ भाव के साथ सुधार करें।
तज राग द्वेष मिथ्या कलंक, जैनागम का उपकार करें॥

इस मध्य लोक में अकृत्रिम, शाश्वत शुभ गिरीराज कहे।
उनके ऊपर अकृत्रिम ही, शाश्वत श्री जिनके धाम रहे॥

शुभ जम्बूद्वीप आदी करके, तेरहवाँ दीप रहा पावन।
शुभ द्वीप रुचकवर में गिरीवर, अनुपम फैला है मन भावन॥

इन सबकी यथायोग्य रचना, का वर्णन शुभ इसमें गाया।
कर सकें वन्दना सब परोक्ष, ऐसा विचार मन में आया॥

भवि जीव करो तुम यह विधान, मण्डल की रचना कर पावन।
पाओ शिव मारग शीघ्र 'विशद', होवे ना फिर जग में आवन॥

दोहा– जब तक सूरज चाँद है, धरती अरु आकाश।
जैन धर्म का श्रेष्ठतम, फैले ''विशद'' प्रकाश॥

जमीं न होती यदि तो आकाश न होता,
दीप में जलन न होती तो प्रकाश न होता।
मिटना कोई बुरी बात नहीं है मेरे बंधु,
यदि अधः पतन नहीं होता तो विकास न होता॥

प. पू. १०८ आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज की पूजन

स्थापना

पुण्य उदय से हे! गुरुवर, दर्शन तेरे मिल पाते हैं।
श्री गुरुवर के दर्शन करके, हृदय कमल खिल जाते हैं॥
गुरु आराध्य हम आराधक, करते उर से अभिवादन।
मम् हृदय कमल से आ तिष्ठो, गुरु करते हैं हम आह्वानन्॥

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

सांसारिक भोगों में फँसकर, ये जीवन वृथा गंवाया है।
रागद्वेष की वैतरणी से, अब तक पार न पाया है॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, निर्मल जल हम लाए हैं।
भव तापों का नाश करो, भव बंध काटने आये हैं॥

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोध रूप अग्नि से अब तक, कष्ट बहुत ही पाये हैं।
कष्टों से छुटकारा पाने, गुरु चरणों में आये हैं॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, चंदन घिसकर लाये हैं।
संसार ताप का नाश करो, भव बंध नशाने आये हैं॥

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय संसार ताप विध्वंशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वा.।

चारों गतियों में अनादि से, बार-बार भटकाये हैं।
अक्षय निधि को भूल रहे थे, उसको पाने आये हैं॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, अक्षय अक्षत लाये हैं।
अक्षय पद हो प्राप्त हमें, हम गुरु चरणों में आये हैं॥

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

काम बाण की महावेदना, सबको बहुत सताती है।
तृष्णा जितनी शांत करें वह, उतनी बढ़ती जाती है॥

विशद सिंधु के श्री चरणों में, पुष्प सुगंधित लाये हैं।
काम बाण विध्वंश होय गुरु, पुष्प चढ़ाने आये हैं।।

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय कामबाण पुष्पं निर्व. स्वा.।

काल अनादि से हे गुरुवर! क्षुधा से बहुत सताये हैं।
खाये बहु मिष्ठान जरा भी, तृप्त नहीं हो पाये हैं।।
विशद सिंधु के श्री चरणों में, नैवेद्य सुसुन्दर लाये हैं।
क्षुधा शांत कर दो गुरु भव की! क्षुधा मेटने आये हैं।।

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वा.।

मोह तिमिर में फंसकर हमने, निज स्वरूप न पहिचाना।
विषय कषायों में रत रहकर, अंत रहा बस पछताना।।
विशद सिंधु के श्री चरणों में, दीप जलाकर लाये हैं।
मोह अंध का नाश करो, मम् दीप जलाने आये हैं।।

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय मोहान्धकार विध्वंशनाय दीपं निर्व. स्वा.।

अशुभ कर्म ने घेरा हमको, अब तक ऐसा माना था।
पाप कर्म तज पुण्य कर्म को, चाह रहा अपनाना था।।
विशद सिंधु के श्री चरणों में, धूप जलाने आये हैं।
आठों कर्म नशाने हेतू, गुरु चरणों में आये हैं।।

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्व. स्वा.।

पिस्ता अरु बादाम सुपाड़ी, इत्यादि फल लाये हैं।
पूजन का फल प्राप्त हमें हो, तुमसा बनने आये हैं।।
विशद सिंधु के श्री चरणों में, भाँति-भाँति फल लाये हैं।
मुक्ति वधु की इच्छा करके, गुरु चरणों में आये हैं।।

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय मोक्ष फल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रासुक अष्ट द्रव्य हे गुरुवर! थाल सजाकर लाये हैं।
महाव्रतों को धारण कर लें, मन में भाव बनाये हैं।।
विशद सिंधु के श्री चरणों में, अर्घ समर्पित करते हैं।
पद अनर्घ हो प्राप्त हमें गुरु, चरणों में सिर धरते हैं।।

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– **विशद सिंधु गुरुवर मेरे, वंदन करूँ त्रिकाल।**
मन-वन-तन से गुरु की, करते हैं जयमाला।।

गुरुवर के गुण गाने को, अर्पित है जीवन के क्षण-क्षण।
श्रद्धा सुमन समर्पित हैं, हर्षायें धरती के कण-कण।।
छतरपुर के कुपी नगर में, गूँज उठी शहनाई थी।
श्री नाथूराम के घर में अनुपम, बजने लगी बधाई थी।।
बचपन में चंचल बालक के, शुभादर्श यूँ उमड़ पड़े।।
ब्रह्मचर्य व्रत पाने हेतु, अपने घर से निकल पड़े।।
आठ फरवरी सन् छियानवे को, गुरुवर से संयम पाया।
मोक्ष ज्ञान अन्तर में जागा, मन मयूर अति हर्षाया।।
पद आचार्य प्रतिष्ठा का शुभ, दो हजार सन् पाँच रहा।
तेरह फरवरी बंसत पंचमी, बने गुरु आचार्य अहा।।
तुम हो कुंद-कुंद के कुन्दन, सारा जग कुन्दन करते।
निकल पड़े बस इसलिए, भवि जीवों की जड़ता हरते।।
मंद मधुर मुस्कान तुम्हारे, चेहरे पर बिखरी रहती।
तव वाणी अनुपम न्यारी है, करुणा की शुभ धारा बहती है।।
तुममें कोई मोहक मंत्र भरा, या कोई जादू टोना है।
है वेश दिगम्बर मनमोहक अरु, अतिशय रूप सलौना है।।
हैं शब्द नहीं गुण गाने को, गाना भी मेरा अन्जाना।
हम पूजन स्तुति क्या जाने, बस गुरु भक्ति में रम जाना।।
गुरु तुम्हें छोड़ न जाएँ कहीं, मन में ये फिर-फिरकर आता।
हम रहें चरण की शरण यहीं, मिल जाये इस जग की साता।।
सुख साता को पाकर समता से, सारी ममता का त्याग करें।
श्री देव-शास्त्र-गुरु के चरणों में, मन-वच-तन अनुराग करें।।
गुरु गुण गाएँ गुण को पाने, औ सर्वदोष का नाश करें।
हम विशद ज्ञान को प्राप्त करें, औ सिद्ध शिला पर वास करें।।

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वा.।

दोहा– **गुरु की महिमा अगम है, कौन करे गुणगान।**
मंद बुद्धि के बाल हम, कैसे करें बखान।।

(इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज की आरती

(तर्ज:–माई री माई मुंडरे पर तेरे बोल रहा कागा...)

जय-जय गुरुवर भक्त पुकारें, आरति मंगल गावें।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे॥
गुरुवर के चरणों में नमन्....4 मुनिवर के....

ग्राम कुपी में जन्म लिया है, धन्य है इन्दर माता।
नाथूराम जी पिता आपके, छोड़ा जग से नाता॥
सत्य अहिंसा महाव्रती की...2, महिमा कही न जाये।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे॥
गुरुवर के चरणों में नमन्....4 मुनिवर के....

सूरज सा है तेज आपका, नाम रमेश बताया।
बीता बचपन आयी जवानी, जग से मन अकुलाया॥
जग की माया को लखकर के....2, मन वैराग्य समावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे॥
गुरुवर के चरणों में नमन्...4 मुनिवर के....

जैन मुनि की दीक्षा लेकर, करते निज उद्धारा।
विशद सिंधु है नाम आपका, विशद मोक्ष का द्वारा॥
गुरु की भक्ति करने वाला...2, उभय लोक सुख पावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे॥
गुरुवर के चरणों में नमन्....4 मुनिवर के....

धन्य है जीवन, धन्य है तन-मन, गुरुवर यहाँ पधारे।
सगे स्वजन सब छोड़ दिये हैं, आतम रहे निहारे॥
आशीर्वाद हमें दो स्वामी....2, अनुगामी बन जायें।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे॥
गुरुवर के चरणों में नमन्...4 मुनिवर के...जय...जय॥

रचयिता : **श्रीमती इन्दुमती गुप्ता**, श्योपुर

प.पू. साहित्य रत्नाकर आचार्य श्री 108 विशदसागर जी महाराज द्वारा रचित पूजन महामंडल विधान साहित्य सूची

1. श्री आदिनाथ महामण्डल विधान
2. श्री अजितनाथ महामण्डल विधान
3. श्री संभवनाथ महामण्डल विधान
4. श्री अभिनन्दननाथ महामण्डल विधान
5. श्री सुमतिनाथ महामण्डल विधान
6. श्री पद्मप्रभ महामण्डल विधान
7. श्री सुपार्श्वनाथ महामण्डल विधान
8. श्री चन्द्रप्रभू महामण्डल विधान
9. श्री पुष्पदंत महामण्डल विधान
10. श्री शीतलनाथ महामण्डल विधान
11. श्री श्रेयांसनाथ महामण्डल विधान
12. श्री वासुपूज्य महामण्डल विधान
13. श्री विमलनाथ महामण्डल विधान
14. श्री अनन्तनाथ महामण्डल विधान
15. श्री धर्मनाथ जी महामण्डल विधान
16. श्री शांतिनाथ महामण्डल विधान
17. श्री कुंथुनाथ महामण्डल विधान
18. श्री अरहनाथ महामण्डल विधान
19. श्री मल्लिनाथ महामण्डल विधान
20. श्री मुनिसुव्रतनाथ महामण्डल विधान
21. श्री नमिनाथ महामण्डल विधान
22. श्री नेमिनाथ महामण्डल विधान
23. श्री पार्श्वनाथ महामण्डल विधान
24. श्री महावीर महामण्डल विधान
25. श्री पंचपरमेष्ठी विधान
26. श्री णमोकार मंत्र महामण्डल विधान
27. श्री सर्वसिद्धीप्रदायक श्री भक्तामर महामण्डल विधान
28. श्री सम्मेद शिखर विधान
29. श्री श्रुत स्कंध विधान
30. श्री यागमण्डल विधान
31. श्री जिनबिम्ब पंचकल्याणक विधान
32. श्री त्रिकालवर्ती तीर्थंकर विधान
33. श्री कल्याणकारी कल्याण मंदिर विधान
34. लघु समवशरण विधान
35. सर्वदोष प्रायश्चित विधान
36. लघु पंचमेरू विधान
37. लघु नंदीश्वर महामण्डल विधान
38. श्री चंवलेश्वर पार्श्वनाथ विधान
39. श्री जिनगुण सम्पतिविधान
40. एकीभाव स्तोत्र विधान
41. श्री ऋषि मण्डल विधान
42. श्री विषापहार स्तोत्र महामण्डल विधान
43. श्री भक्तामर महामण्डल विधान
44. वास्तु महामण्डल विधान
45. लघु नवग्रह शांति महामण्डल विधान
46. सूर्य अरिष्टनिवारक श्री पद्मप्रभ विधान
47. श्री चौंसठ ऋद्धि महामण्डल विधान
48. श्री कर्मदहन महामण्डल विधान
49. श्री चौबीस तीर्थंकर महामण्डल विधान
50. श्री नवदेवता महामण्डल विधान
51. वृहद ऋषि महामण्डल विधान
52. श्री नवग्रह शांति महामण्डल विधान
53. कर्मजयी श्री पंच बालयति विधान
54. श्री तत्वार्थसूत्र महामण्डल विधान
55. श्री सहस्त्रनाम महामण्डल विधान
56. वृहद नंदीश्वर महामण्डल विधान
57. महामृत्युंजय महामण्डल विधान
59. श्री दशलक्षण धर्म विधान
60. श्री रत्नत्रय आराधना विधान
61. श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान
62. अभिनव वृहद कल्पतरू विधान
63. वृहद श्री समवशरण मण्डल विधान
64. श्री चारित्र लब्धि महामण्डल विधान
65. श्री अनन्तव्रत महामण्डल विधान
66. कालसर्पयोग निवारक मण्डल विधान
67. श्री आचार्य परमेष्ठी महामण्डल विधान
68. श्री सम्मेद शिखर कूटपूजन विधान
69. त्रिविधान संग्रह–1
70. त्रि विधान संग्रह
71. पंच विधान संग्रह
72. श्री इन्द्रध्वज महामण्डल विधान
73. लघु धर्म चक्र विधान
74. अर्हंत महिमा विधान
75. सरस्वती विधान
76. विशद महाअर्चना विधान
77. विधान संग्रह (प्रथम)
78. विधान संग्रह (द्वितीय)
79. कल्याण मंदिर विधान (बड़ा गांव)
80. श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ विधान
81. विदेह क्षेत्र महामण्डल विधान
82. अर्हंत नाम विधान
83. सम्यक् अराधना विधान
84. श्री सिद्ध परमेष्ठी विधान
85. लघु नवदेवता विधान
86. लघु मृत्युँजय विधान
87. शान्ति प्रदायक शान्तिनाथ विधान
88. मृत्युञ्जय विधान
89. लघु जम्बू द्वीप विधान
90. चारित्र शुद्धिव्रत विधान
91. क्षायिक नवलब्धि विधान
92. लघु स्वयंभू स्तोत्र विधान
93. श्री गोम्मटेश बाहुबली विधान
94. वृहद निर्वाण क्षेत्र विधान
95. एक सौ सत्तर तीर्थंकर विधान
96. तीन लोक विधान
97. कल्पद्रुम विधान
98. श्री चौबीसी निर्वाण क्षेत्र विधान
99. श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर विधान
100. श्री सहस्त्रनाम विधान (लघु)
101. श्री त्रैलोक्य मण्डल विधान (लघु)
102. श्री तत्वार्थ सूत्र विधान (लघु)
103. पुण्यास्त्रव विधान
104. सप्तऋषि विधान
105. तेरहद्वीप विधान
106. श्री शान्ति,कुन्थु,अरहनाथ मण्डल विधान
107. श्रावकव्रत दोष प्रायश्चित विधान
108. तीर्थंकर पंचकल्याणक तीर्थ विधान
109. सम्यक् दर्शन विधान
110. श्रुतज्ञान व्रत विधान
111. ज्ञान पच्चीसी व्रत विधान
112. विशद पञ्चागम संग्रह
113. जिन गुरु भक्ती संग्रह
114. धर्म की दस लहरें
115. स्तुति स्तोत्र संग्रह
116. विराग वंदन
117. बिन खिले मुरझा गए
118. जिंदगी क्या है
119. धर्म प्रवाह
120. भक्ती के फूल
121. विशद श्रमण चर्या
122. रत्नकरण्ड श्रावकाचार चौपाई
123. इष्टोपदेश चौपाई
124. द्रव्य संग्रह चौपाई
125. लघु द्रव्य संग्रह चौपाई
126. समाधितन्त्र चौपाई
127. शुभषितरत्नावली
128. संस्कार विज्ञान
129. बाल विज्ञान भाग–3
130. नैतिक शिक्षा भाग–1, 2, 3
131. विशद स्तोत्र संग्रह
132. भगवती आराधना
133. चिंतवन सरोवर भाग–1
134. चिंतवन सरोवर भाग–2
135. जीवन की मन:स्थितियाँ
136. आराध्य अर्चना
137. आराधना के सुमन
138. मूक उपदेश भाग–1
139. मूक उपदेश भाग–2
140. विशद प्रवचन पर्व
141. विशद ज्ञान ज्योति
142. जरा सोचो तो
143. विशद भक्ती पीयूष
144. विजोलिया तीर्थपूजन आरती चालीसा संग्रह
145. विराटनगर तीर्थपूजन आरती चालीसा संग्रह